भूरिं त इन्द्र वीर्यं१ तव स्मस्यस्य स्तोतुर्मघवन्कामुमा पृण ।
अनु ते द्यौर्बृहती वीर्यं मम इयं च ते पृथिवी नेम ओजसे ॥ ५ ॥
त्वं तमिन्द्र पर्वतं महामुरुं वज्रेण वज्रिन्पर्वशश्चकर्तिथ ।
अवासृजो निवृताः सर्तवा अपः सत्रा विश्वं दधिषे केवलं सहः ॥ ६ ॥ (७४)

हे इन्द्र (**ते वीर्यं भूरि**) तेरा पराक्रम बडा है। (**तव स्मसि**) हम भी तेरे ही हैं। हे (**मघवन्**) धनवान् इन्द्र ! (**अस्य स्तोतुः कामं आ पृण**) इस स्तोताकी इच्छा पूर्ण कर। (**बृहती द्यौः ते वीर्यं अनु**) बडी द्यौ तेरे पराक्रमका अनुमान कराती है (**इयं च पृथिवी**) और यह पृथिवी भी (**ते ओजसे नेमे**) तेरी शक्तिके सामने झुकी है ॥ ५ ॥

हे (**वज्रिन् इन्द्र**) वज्रधारी इन्द्र ! (**त्वं तं महां उरुं पर्वतं**) तूने उस महान् विशाल पर्वतके- मेघके- (**वज्रेण पर्वशः चकर्तिथ**) वज्रसे टुकडे टुकडे कर डाले। और (**अपः**) जलोंको जो (**निवृताः**) रुके प्रवाह थे उनको (**सर्तवा अवासृजः**) बहनेके लिये छोड दिया। (**विश्वं केवलं सहः सत्रा दधिषे**) संपूर्ण शक्तिको तू साथ साथ धारण करता है ॥ ६ ॥

इस सूक्तमें जो वीरके गुण बताये हैं वे ये हैं—

१ **मंहिष्ठः**— महान्, श्रेष्ठ,

२ **बृहत्**— बडा,

३ **बृहद्रयिः**— बहुत धन जिसके पास है।

४ **सत्य-शुष्मः**— सच्चा बल जिसके पास है, अपने बलसे जो निःसंदेह अपने कर्तव्य करता ही रहता है।

५ **तवस्**-- शक्तिमान्,

६ **यस्य दुर्धरं राधः**— जिसका दुर्धर अदम्य सामर्थ्य है, सिद्धि प्राप्त करनेका सामर्थ्य जिसमें अतुल है।

७ **विश्व-आयुः**— सब मानवोंके हितके लिये जो कार्य करता है,

८ **शवः**— सामर्थ्य, बल,

९ **ते इष्टये विश्वं अनु असत् ह**— तेरे इष्ट करनेके लिये सब तैयार रहते हैं।

१० **इन्द्रस्य हिरण्ययः हर्यतः वज्रः ऋथित**— इन्द्रका तेजस्वी वज्र सबका चूर्ण कर सकता है।

११ **भीमः**— भयंकर,

१२ **यस्य धाम नाम इन्द्रियं ज्योतिः अवसे अकारि**— जिसका धाम और नाम इन्द्रके सामर्थ्यकी ज्योति यशके लिये प्रकट करता है।

१३ **पुरुष्टुतः**— बहुतों द्वारा प्रशंसित,

१४ **प्रभू-वसुः**— बहुत धनवाला,

१५ **वयं त्वा आरभ्य चरामसि**— हम तेरे आधारसे चलते हैं।

१६ **नहि त्वदन्यः गिरः सघत्**— तेरे सिवाय दूसरा कोई हमारी स्तुतियोंका स्वीकार कर नहीं सकता।

१७ **गिर्वणः**— प्रशंसाके योग्य।

१८ **हे इन्द्र ! ते वीर्यं भूरि**— हे इन्द्र ! तेरा पराक्रम बडा है।

१९ **तव स्मसि**— हम तेरे हैं।

२० **हे मघवन् ! स्तोतुः कामं आ पृण**— हे इन्द्र ! स्तोताकी इच्छा पूर्ण कर।

२१ **बृहती द्यौः ते वीर्यं अनु**— यह बडी द्यौ तेरे सामर्थ्यका प्रकाश करती है।

२२ **इयं पृथिवी ते ओजसे नेमे**— यह पृथिवी तेरे सामर्थ्यके सामने नमती है।

२३ **हे वज्रिन् ! इन्द्र ! त्वं तं महां ऊरुं पर्वतं वज्रेण पर्वशः चकर्तिथ**— हे वज्रधारी इन्द्र ! तूने उस बडे महान् पर्वत-मेघ-के वज्रसे टुकडे टुकडे किये।

२४ **विश्वं केवलं सहः सत्रा दधिषे**— सब बल सामर्थ्य तू साथ साथ अपनेमें धारण करता है।

[सूक्त १६]

(ऋषिः — १-१२ अयास्यः । देवता — बृहस्पतिः ।)

(ऋ. १०।६८।१-१२)

उदप्रुतो न वयो रक्षमाणा वावदतो अभ्रियस्येव घोषाः ।
गिरिभ्रजो नोर्मयो मदन्तो बृहस्पतिमभ्यर्का अनावन् ॥ १ ॥
सं गोभिराङ्गिरसो नक्षमाणो भग इवेदर्यमणं निनाय ।
जने मित्रो न दम्पती अनक्ति बृहस्पते वाजयाशूँरिवाजौ ॥ २ ॥
साध्वर्या अतिथिनीरिषिरा स्पार्हाः सुवर्णा अनवद्यरूपाः ।
बृहस्पतिः पर्वतेभ्यो वितूर्या निर्गा ऊपे यवमिव स्थविभ्यः ॥ ३ ॥
आप्रुषायन्मधुन ऋतस्य योनिमवक्षिपन्नर्क उल्कामिव द्योः ।
बृहस्पतिरुद्धरन्नश्मनो गा भूम्या उद्नेव वि त्वचं बिभेद ॥ ४ ॥
अप ज्योतिषा तमो अन्तरिक्षादुद्नः शीपालमिव वात आजत् ।
बृहस्पतिरनुमृश्या वलस्याभ्रमिव वातु आ चक्र आ गाः ॥ ५ ॥
यदा वलस्य पीयतो जसुं भेद्बृहस्पतिरग्नितपोभिरर्कैः ।
दुद्भिर्न जिह्वा परिविष्टमादद्दाविर्निधीँरकृणोदुस्रियाणाम् ॥ ६ ॥

(सूक्त १६)

(उदप्रुतः वयः न) जलमें तैरनेवाले पक्षियोंकी तरह (रक्षमाणाः) अपनी रक्षा करते हुए (वावदतः अभ्रियस्य घोषाः इव) गर्जनेवाले मेघोंकी गर्जनाके समान और (गिरि-भ्रजः मदन्तः ऊर्मयः न) पर्वतोंसे गिरनेवाले आनन्दपूर्ण जलप्रवाहोंके समान (अर्काः बृहस्पतिं अभि अनावन्) हमारे स्तोत्र बृहस्पतिकी स्तुति करते हैं ॥ १ ॥

(आंगिरसः गोभिः सं नक्षमाणः) अंगरस विद्याको जाननेवाला गौओंके साथ रहता है । (भगः इव अर्यमणं इत् निनाय) भगके- ऐश्वर्यवान्के समान अर्यमाको- श्रेष्ठ मनवालेको हमारे पास लाता है। (जने मित्रः न) जनसमूहमें मित्रकी तरह (दंपती अनक्ति) पति पत्नी सजाकर प्रकाशते हैं । (आजौ आशून् इव) युद्धमें घोडोंके समान, हे बृहस्पते ! (वाजय) हमें बलवान् बना ॥ २ ॥

(साधु-आर्याः) सज्जनोंके पास रहनेवाली, (अतिथिनीः) अतिथिके पास ले जाने योग्य, (इषिराः) दूधरूपी अन्न देनेवाली (स्पार्हाः) इच्छा करने योग्य, (सुवर्णाः) उत्तम रंगवाली, (अनवद्यरूपाः) अनिंदनीय सुंदर रूपवाली (गाः पर्वतेभ्यः वितूर्य) गौओंको पर्वतोंसे लाकर (निः ऊपे) फैलाते हैं (स्थविभ्यः यवं इव) कोठियोंसे लाकर जौ को जैसा फैलाते हैं ॥ ३ ॥

(अर्कः ऋतस्य योनिं मधुना अवक्षिपन्) सूर्य जैसा यज्ञके स्थानको मधुसे भरता है, (द्योः उल्कां इव) द्युलोकसे उल्काको नीचे फेंकता है वैसा बृहस्पति (आप्रुषायन्) सींचता है, (बृहस्पतिः अश्मनः गाः उद्धरन्) बृहस्पति चट्टानसे गौओंका उद्धार करता है, (भूम्याः त्वचं उद्ना इव बिभेद) भूमिकी त्वचाको जलके समान तोडता है [जिससे पर्याप्त घास उत्पन्न होता है ।] ॥ ४ ॥

(ज्योतिषा तमः अन्तरिक्षात् अप आजत्) प्रकाशसे अन्धकारको अन्तरिक्षसे हटाता है, (वातः उद्नः शीपालं इव) वायु जैसा पानीसे शैवालको हटाता है; (बृहस्पतिः अनुमृश्य, वलस्य गाः आ चक्रे) वैसा बृहस्पति विचार करके वलकी गौओंको लाकर फैलाता है (वातः अभ्रं इव) वायु जैसा मेघको फैलाता है ॥ ५ ॥

(यदा) अब (अग्नितपोभिः अर्कैः) अग्निके समान ताप करनेवाले अस्त्रोंसे- मंत्रोंसे (पीयतः वलस्य जसुं

बृहस्पतिरमत हि त्यदासां नाम स्वरीणां सदने गुहा यत् ।
आण्डेव भित्त्वा शकुनस्य गर्भमुदुस्रियाः पर्वतस्य त्मनाजत् ॥ ७ ॥
अश्नापिनद्धं मधु पर्यपश्यन्मत्स्यं न दीन उदनि क्षियन्तम् ।
निष्टज्जभार चमसं न वृक्षाद्बृहस्पतिर्विरवेणा विकृत्य ॥ ८ ॥
सोषामविन्दत्स स्वः सो अग्निं सो अर्केण वि बबाधे तमांसि ।
बृहस्पतिर्गोवपुषो बलस्य निर्मज्जानं न पर्वणो जभार ॥ ९ ॥
हिमेव पर्णा मुषिता वनानि बृहस्पतिनाकृपयद्बलो गाः ।
अनानुकृत्यमपुनश्चकार यात्सूर्यामासा मिथ उच्चरातः ॥ १० ॥
अभि श्यावं न कृशनेभिरश्वं नक्षत्रेभिः पितरो द्यामपिंशन् ।
रात्र्यां तमो अदधुर्ज्योतिरह्नबृस्पतिर्भिनदद्रिं विदद्गाः ॥ ११ ॥
इदमकर्म नमो अभ्रियाय यः पूर्वीरन्वानोनवीति ।
बृहस्पतिः स हि गोभिः सो अश्वैः स वीरेभिः स नृभिर्नो वयो धात् ॥ १२ ॥ (८३)

भेद) लडनेवाले बलके शास्त्रको तोड दिया, तब (**दद्भिः परिविष्टं जिह्वा आदद्**) दातोंसे चबाये हुए अन्नको जिह्वा खाती है, उस तरह (**उस्रियाणां निधीः आविः अकृणोत्**) गौओंके निधियोंको [जो बलके आधीन थे उनको सब लोगोंके हितार्थ] प्रकट किया ॥ ६ ॥

(**बृहस्पतिः आसां स्वरीणां**) बृहस्पतिने जब इन हंबारव करनेवाली गौओंका (**नाम अमत**) नाम-पता-जान लिया (**यत् सदने गुहा**) जो गुप्त सदनमें था, (**पर्वतस्य त्मना उस्रिया उत् आजत्**) पर्वतकी गुहामेंसे स्वयं गौवोंको बाहर निकाला, जैसा (**शकुनस्य आण्डा भित्त्वा गर्भं**) पक्षीके अण्डेको तोडकर बच्चा स्वयं बाहर आता है ॥ ७ ॥

(**अश्ना पिनद्धं मधु**) पत्थरसे ढके हुए मधुको-किलेमें बंद गौको- (**पर्यपश्यत्**) बृहस्पतिने वैसा देखा, (**दीने उदनि क्षियन्तं मत्स्यं न**) थोडे जलमें रहनेवाले मत्स्यको जैसे देखते हैं। (**बृहस्पतिः विरवेण विकृत्य**) बृहस्पतिने विशेष शब्द करनेवाले वज्रसे- उस किलेको- तोडकर (**वृक्षात् चमसं न**) वृक्षसे चमस बनाते हैं उस तरह उस किलेसे (**तत् निः जभार**) उस मधुको-गौओंको-बाहर निकाल लाया ॥ ८ ॥

(**स उषां अविन्दत्**) उस बृहस्पतिने उषाको प्राप्त किया, (**सः स्वः**) उसने प्रकाशको और (**सः अग्निं**) उसने अग्निको प्राप्त किया, पश्चात् (**सः अर्केण तमांसि वि बबाधे**) उसने सूर्यसे अन्धेरेको विनष्ट किया। (**बृहस्पतिः**) बृहस्पतिने (**बलस्य गोवपुषः**) बलके गोरूप धारण करनेवालेके शरीरसे (**पर्वणः न**) जोडोंसे चर्बी निकालते हैं वैसे (**मज्जानं निर्जभार**) चर्बीको निकाल लिया [अर्थात् बलको मारा।] ॥ ९ ॥

(**हिमा इव**) हिमकालमें (**पर्णा मुषिता वनानि**) पान गिर गये इस कारण वन [दुःखी दीखते हैं उस तरह] (**बृहस्पतिना**) बृहस्पतिने छीनी गई (**गाः बलः कृपयत्**) गौओंके लिये बल दुःखी हुआ। (**अनानुकृत्यं अपुनः चकार**) जिसका कोई अनुकरण न कर सके, जो फिर होनेवाला नहीं, ऐसा यह कर्म हुआ। (**यात् सूर्यामासा मिथः उच्चरातः**) सूर्य और चन्द्र जिसका स्वयं वारंवार उच्चारण करते हैं [ऐसा यह कर्म हुआ है।] ॥ १० ॥

(**कृशनेभिः श्यावं अश्वं न**) आभूषणोंसे श्याम घोडेको सजाते हैं वैसे (**पितरः नक्षत्रेभिः द्यां अभि अपिंशन्**) पितरोंने नक्षत्रोंसे द्युलोकको सजाया। (**रात्र्यां तमः अदधुः**) रात्रीमें अन्धकार और (**अह्न् ज्योतिः**) दिनमें प्रकाशको रखा। (**बृहस्पतिः अद्रिं भिनद्**) बृहस्पतिने पर्वतको तोडा और (**गाः विदद्**) गौवें प्राप्त की ॥ ११ ॥

(**इदं अभ्रियाय नमः अकर्म**) यह हमने मेघको तोडने-

वाले [बृहस्पति] के लिये नमस्कार किया । **यः पूर्वीः अन्वानोनवीति**) जो पूर्वके अनुक्रमसे उपदेश करता है (**सः बृहस्पति**) वह बृहस्पति (**गोभिः सः अश्वैः**) गौओं और घोडों तथा (**सः वीरेभिः सः नृभिः**) वह वीरपुत्रों और नेताओंके साथ (**नः वयः धात्**) हमें दीर्घ-आयु देवे ॥ १२ ॥

इस सूक्तमें जो वीरताके कर्मोंका उल्लेख आया है वे वीरत्वके कर्म बृहस्पतिने किये हैं । यह बृहस्पति इन्द्रके समान ही वज्रका प्रयोग करता है । इन्द्रके समान ही बलको मारता है और किलेमें बंद रही गौवोंको मुक्त करता है ।

१ हे बृहस्पते ! वाजौ आशून् इव वाजय— हे बृहस्पते ! युद्धमें घोडोंकी तरह हमें बलवान् कर ।

२ पर्वतेभ्य गाः बृहस्पतिः निः उपे— पर्वतकी गुफासे बृहस्पतिने गौवें छुडाईं ।

३ साध्वर्याः अतिथिनीः इषिराः स्पार्हाः सुवर्णाः अवद्यरूपाः— सज्जनोंके पास रहने योग्य, अतिथिके योग्य, दुधारू, स्पृहणीय, उत्तम रंगवाली, सुंदर रूपवाली ये गौवें थी । वे बलने चुराई थी उनको पर्वतकी गुफामें रखा था, वहांसे बृहस्पतिने छुडाईं ।

४ बृहस्पतिः अश्मनः गाः उदरन्— बृहस्पतिने पत्थरोंकी गुहामेंसे गौवें छुडायी ।

५ बृहस्पतिः अनुमृश्य बलस्य गाः आ चके— बृहस्पतिने विचार करके बलकी अधीनतासे गौओंको छुडाया ।

६ बृहस्पतिः अग्नितपोभिः अर्कैः बलस्य पीयतः जसुं भत्— बृहस्पतिने अग्निके समान अस्त्रोंसे बलके शत्रुका भेद किया ।

७ उस्रियाणां निधीः आविः अकृणोत्— गौवोंके निधिको प्रकट किया । गौवोंको बाहर निकाला ।

८ बृहस्पतिः स्वरीणां आसां सदने गुहो यत् नाम त्यद् अमत— बृहस्पतिने हंभारव करनेवाली गौवोंका स्थान पर्वतकी गुहामें है यह जान लिया ।

९ उस्रियाः पर्वतस्य त्मना अजत्— गौवें पर्वतकी गुहासे स्वयं बाहर आ गयीं ।

१० अश्ना पिनद्धं मधु पर्यपश्यत् बृहस्पतिः विरवेण विकृत्य तत् निः जभार— पत्थरसे मधु टका है, गुहामें गौवें बंद है, यह बृहस्पतिने देखा, विशेष शब्द करनेवाले वज्रसे उस गुहाको तोडा और गौवोंको बाहर निकाला ।

११ बृहस्पतिः गोवपुषः बलस्य मज्ञानं पर्वणः नि जभार— बृहस्पतिने गोरूपधारी बलकी मज्जा बाहर निकाली और पर्व तोड दिये ।

१२ बृहस्पतिना गाः बलः अकृपयत्— बृहस्पतिने गौवोंको खुला किया इससे बलको बडा दुःख हुआ ।

१३ अनानुकृत्यं अपुनः चकार, यात् सूर्यामासा मिथ उच्चरातः— यह कृत्य जो बृहस्पतिने किया, उसका कोई अनुकरण कर नहीं सकता, न कोई फिर ऐसा कर सकता है, इसका वर्णन सूर्य और चन्द्र वारंवार करते हैं ।

१४ बृहस्पतिः अद्रिं भिनत्, गाः विदत्— बृहस्पतिने पर्वतको तोडा और गौवें प्राप्त कीं ।

१५ इदं अभ्रियाय नमः अकर्म— यह हम अभ्रमें स्थित बृहस्पतिको नमस्कार करते हैं ।

१६ बृहस्पतिः गोभिः अश्वैः वीरेभिः नृभिः नः वयो धात्— बृहस्पति गौवों, घोडों, वीर पुत्रों और नेताओंके साथ हमें पूर्ण आयु देवे ।

इस सूक्तमें बृहस्पतिका यह प्रशंसनीय कर्म है ऐसा वर्णन है। यह बृहस्पति वज्र वर्तता है, किला तोडता है, बलको मारता है और गौवोंको खुला करता है। ऐसे ही इन्द्रके कर्म अन्यत्र वेदमंत्रोंमें कहे हैं। बृहस्पतिको 'अभ्रिय' १२ वें मंत्रमें कहा है। अभ्रमें रहनेवाला सूर्य होता है। विद्युत् भी मेघोंमें रहती है।

यह तथा ऐसे वर्णनके सूक्त आलंकारिक वर्णनके माने जाते है। 'बल' मेघ है, विद्युत् वज्र है, सूर्य किरणें गौवें हैं। उषाके पूर्व ये सूर्यकिरण रूपी गौवें बलने अपने किलेमें बंद की थीं। यह ज्ञानपतिने खोली और बाहर निकालीं।

स उषा अविंदत्, स स्वः, सः अग्निं, सः अर्केण तमांसि वि बबाधे (मंत्र ९)— उस बृहस्पतिने प्रथम उषा, पश्चात् प्रकाश, अग्नि और पश्चात् सूर्य लाया और अन्धकारको दूर किया । इस मंत्रसे स्पष्ट है कि रात्रीके अन्धेरेने, मेघोंने किरणोंको छिपाया था । सूर्य आनेसे वह बल राक्षस मर गया और गोरूपी किरणें स्वेच्छा विहार करने लगी ।

यह सूक्त तथा ऐसे वर्णन करनेवाले अन्य सूक्त इस अलंकारके वर्णन समझने योग्य हैं ।

[सूक्त १७]

(ऋषिः — १-११ कृष्णः, १२ वसिष्ठः । देवता — इन्द्रः ।)

(ऋ. १०।४३।१-११)

अच्छा॑ म॒ इन्द्रं॑ म॒तयः॑ स्व॒र्विदः॑ स॒धीची॒र्विश्वा॑ उश॒तीर॑नूषत ।
परि॑ ष्वजन्ते॒ जन॑यो॒ यथा॒ पति॑ मर्यं॑ न शुन्ध्यु॑ं म॒घवा॑नमू॒तये॑ ॥ १ ॥

न घा॑ त्वद्रि॒गप॑ वेति मे॒ मन॒स्त्वे इत्काम॑ं पुरुहूत शिश्रय ।
राजे॑व दस्म॒ नि ष॒दोऽधि॑ ब॒र्हिष्य॒स्मिन्त्सु सो॑मे॒ऽवपा॑नमस्तु ते ॥ २ ॥

वि॒षू॒वृदि॑न्द्रो अम॑तेरु॒त क्षु॒धः स इद्रा॒यो म॒घवा॒ वस्व॑ ईशते ।
तस्येद्रि॒मे प्र॑व॒णे स॒प्त सि॑न्ध॒वो वयो॑ वर्धन्ति वृ॒षभ॑स्य शु॒ष्मिणः॑ ॥ ३ ॥

वयो॒ न वृ॒क्षं सु॑प॒लाश॒मास॑दन्त्सो॒मास॒ इन्द्रं॑ म॒न्दिन॑श्चमू॒षदः॑ ।
प्रैषा॒मनी॑कं॒ शव॑सा॒ दवि॑द्युतद्वि॒दत्स्व१॒॑र्मन॑वे॒ ज्योति॒रार्य॑म् ॥ ४ ॥

कृ॒तं न श्वघ्नी॒ वि चि॑नोति॒ देव॑ने स॒वं॑ यन्म॒घवा॒ सूर्यं॑ जय॑त् ।
न तत्ते॑ अ॒न्यो अनु॑ वी॒र्यं॑ शक॒न्न पु॑रा॒णो भ॑घवन्नो॒त नू॒तनः॑ ॥ ५ ॥

(सूक्त १७)

(**मे मतयः**) मेरी बुद्धिपूर्वक की हुई स्तुतियां (**स्वर्विदः सधीचीः**) आत्मज्ञानसे युक्त सीधी (**विश्वाः उशतीः**) सब कामना युक्त (**अच्छा इन्द्रं आ अनूषत**) अच्छी तरह इन्द्रको प्राप्त होती हैं। ये स्तुतियां (**मघवानं ऊतये**) इन्द्रको अपनी रक्षाके लिये इन्द्रके पास वैसी जाती हैं (**शुन्ध्युं न मर्यं पतिं**) स्वच्छ पवित्र मानव पतिको (**यथा जनयः परि ष्वजन्ते**) जैसी स्त्रियां आलिंगन देती हैं ॥ १ ॥

हे (**पुरुहूत**) सबके द्वारा जिसकी स्तुति होती है ऐसे इन्द्र! (**मे मनः त्वद्रिक्**) मेरा मन तेरे पास आकर (**न घ अपवेति**) वापस नहीं फिरता, (**त्वे इत् कामं शिश्रय**) तेरे ऊपर ही मैंने अपनी कामना रखी है। हे (**दस्म**) दर्शनीय! (**राजा इव बर्हिषि अधि निषदः**) राजाके समान इस आसनपर बैठ। (**अस्मिन् सोमे ते सु अवपानं अस्तु**) इस सोमरसमें तेरा उत्तम पान हो ॥ २ ॥

(**अमतेः उत क्षुधः**) दुर्बुद्धि और भूखको (**इन्द्रः विषुवृत्**) इन्द्र सब प्रकारसे शत्रुको दूर करनेवाला है। (**सः इत् मघवा वस्वः रायः ईशते**) वह इन्द्र निश्चयसे निवासक धनका स्वामी है। (**इमे सप्त सिन्धवः**) ये सात नदियां (**प्रवणे**) नीचले मार्गमें बहती हुई (**तस्य वृषभस्य शुष्मिणः इत्**) उस बलवान् और उत्साही वीरके (**वयः वर्धन्ति**) शक्तिको बढाती हैं ॥ ३ ॥

(**सुपलाशं वृक्षं वयः आसदन् न**) उत्तम पत्तोंवाले वृक्षपर पक्षी बैठते हैं उस तरह (**मदिनः चमूषदः सोमासः इन्द्रं**) आनंद बढानेवाले पात्रमें रखे सोमरस इन्द्रका आश्रय करते हैं। (**एषां अनीकं शवसा प्रदविद्युतत्**) इनका सैन्य बलसे चमकता रहा और (**आर्यं स्वः ज्योतिः मनवे विदत्**) आत्मज्ञान पूर्ण आर्य तेज मनुष्यके लिये प्राप्त हुआ ॥ ४ ॥

(**देवने श्वघ्नी कृतं न विचिनोति**) खेलमें जुवा खेलनेवाला जीतनेवाले पासेको जैसा इकट्ठा करता है उस प्रकार (**यत् संवर्गं सूर्यं मघवा जयत्**) सबको समेटनेवाले सूर्यको इन्द्रने जीता। (**मघवन्**) हे इन्द्र! (**न पुराणः न उत नूतनः**) पुराणा वा नया (**अन्यः ते तत् वीर्यं न अनुशकन्**) दूसरा कोई तेरे वीरताकी बराबरी नहीं कर सकता है ॥ ५ ॥

विशंविशं मघवा पर्यशायत जनानां धेना अवचाकशद्वृषा ।
यस्याहं शक्रः सवनेषु रण्यति स तीव्रैः सोमैः सहते पृतन्यतः ॥ ६ ॥

आपो न सिन्धुमभि यत्समक्षरन्त्सोमास इन्द्रं कुल्या इव ह्रदम् ।
वर्धन्ति विप्रा महो अस्य सादने यवं न वृष्टिर्दिव्येन दानुना ॥ ७ ॥

वृषा न क्रुद्धः पतयद्रजःसा यो अर्यपत्नीरकृणोदिमा अपः ।
स सुन्वते मघवा जीरदानवेऽविन्दज्ज्योतिर्मनवे हविष्मते ॥ ८ ॥

उज्जायतां परशुर्ज्योतिषा सह भूया ऋतस्य सुदुघा पुराणवत् ।
वि रोचतामरुषो भानुना शुचिः स्वर्ण शुक्रं शुशुचीत सत्पतिः ॥ ९ ॥

गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।
वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम ॥ १० ॥

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधराद्घायोः ।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ॥ ११ ॥

(मघवा विशं विशं पर्यशायत) इन्द्र प्रत्येक प्रजा- जनको प्राप्त होता है (वृषा जनानां धेना अवचाकशत्) वह शक्तिमान इन्द्र लोगोंकी वाणीको सुनता है। (यस्य अहं सवनेषु शक्रः रण्यति) जिसके सोमयागमें समर्थ इन्द्र आनन्द मनाता है, (सः तीव्रैः सोमैः पृतन्यतः सहते) वह तीखे सोमरसोंसे शत्रुसेनाको जीत लेता है ॥ ६ ॥

(आपः न सिन्धुं अभि) जैसे जलप्रवाह नदीकी ओर जाते हैं, और (कुल्या ह्रदं इव) जैसे नाले तालाबके पास जाते हैं, वैसे (सोमासः इन्द्रं समक्षरन्) सोमरस इन्द्रके पास बहते हैं। (सादने विप्राः अस्य महः वर्धयन्ति) यज्ञशालामें ब्राह्मण इस इन्द्रके महत्वको बढाते हैं, जैसी (दिव्येन दानुना वृष्टिः यवं न) आकाशसे दानरूप आयी वृष्टि जौको बढाती है ॥ ७ ॥

(क्रुद्धः वृषा न) क्रुद्ध हुए सांडके समान (रजःसु आ पतयत्) सारे स्थानोंमें जो पहुंचता है, (यः इमाः आपः अर्यपत्नीः अकृणोत्) जिसने इन जलप्रवाहोंको आर्योंकी पत्नी रूप बनाया- आर्योंका सहायक बनाया, (सः मघवा) उस इन्द्रने (सुन्वते जीरदानवे हविष्मते मनवे) सोमयाग करनेवाले, दान देनेवाले, हवि अर्पण करनेवाले मनुष्यके लिये (ज्योतिः अविन्दत्) प्रकाश प्रकट किया ॥ ८ ॥

(ज्योतिषा सह परशुः उज्जायतां) ज्योतिके साथ वज्र ऊपर चढे, विजय प्राप्त करे; (ऋतस्य सुदुघाः पुराणवत् भूयाः) यज्ञकी दुधारू गौवें पुराणी जैसी- परिचित जैसी होवें। (अरुषः शुचिः भानुना विरोचतां) पवित्र अग्नि अपने लाल तेजसे प्रकाशे; उसी तरह (सत्पतिः स्वः न शुक्रं शुशुचीत) सज्जनोंका पालक इन्द्र सूर्यके समान शुद्ध रीतिसे चमके ॥ ९ ॥

हे (पुरुहूत) बहुतों द्वारा प्रशंसित इन्द्र ! (वयं गोभिः दुरेवां अमतिं तरेम) हम गौओंसे दुर्गति और निर्बुद्धताको दूर करेंगे, (विश्वां क्षुधं यवेन) सब भूखको जौसे दूर करेंगे, (वयं राजभिः) हम क्षत्रियोंके साथ (प्रथमाः) मुखिया होकर (अस्माकेन वृजनेन धनानि जयेम) अपने निज बलसे धनोंको जीतेंगे ॥ १० ॥

(बृहस्पतिः नः अघायोः) बृहस्पति हमें पापीसे (पश्चात् उत्तरस्मात् अधरात्) पीछेसे ऊपरसे और नीचेसे (परि पातु) बचावे। (नः सखा इन्द्रः) हमारा मित्र इन्द्र (पुरस्तात् उत मध्यतः) हमें सामनेसे और

बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य ।
धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ १२ ॥ (ऋ. ७।९७।१०) (२८)

॥ इति द्वितीयोऽनुवाकः ॥ २ ॥

मध्यसे बचावे और (**सखिभ्यः वरिवः कृणोतु**) हमारे मित्रोंके लिये धन देवे ॥ ११ ॥

हे बृहस्पते ! (**युवं इन्द्रः च**) तू और इन्द्र दोनों (**दिव्यस्य उत पार्थिवस्य वस्वः**) दिव्य और पार्थिव धनके (**ईशाथे**) स्वामी हैं। इसलिये (**स्तुवते कीरये चित् रयिं धत्तं**) स्तुति करनेवाले ज्ञानीके लिये धन दो। और (**सदा नः यूयं स्वस्तिभिः पात**) सदा हमारी तुम कल्याणोंके साथ रक्षा करो ॥ १२ ॥ (ऋ. ७।९७।१०)

इस सूक्तमें बृहस्पति और इन्द्रको लक्ष्य करके जो वीरके गुण कहे हैं वे ये हैं—

१ मे स्वर्विदः सध्रीचीः विश्वा उशतीः मतयः इन्द्रं अच्छ अनूषत— आत्मज्ञानसे युक्त, सरलता युक्त, सब सत्प्रवृत्तीवाली मेरी स्तुतियां इन्द्रकी ही होती हैं।

२ यथा जनयः शुन्ध्युं मर्यं पतिं परि ष्वजन्ते— जैसी स्त्रियां शुद्ध मानव पतिको ही आलिंगन देती हैं, उस तरह मेरी स्तुतियां इन्द्रकी ही स्तुति करती हैं।

३ मघवानं ऊतये— इन्द्रकी स्तुति हम अपनी रक्षाके लिये करते हैं।

४ हे पुरुहूत ! त्वे इत् मे मनः कामं शिश्रय, न घा त्वद्रिग् अपवेत्ति— हे बहुतों द्वारा प्रशंसित इन्द्र ! तेरे ऊपर मेरा मन यथेच्छ आश्रय करता है, और वह तेरेसे कभी पीछे हटता नहीं।

५ हे दस्म ! राजा इव बर्हिषि अधि निषद्— हे दर्शनीय ! राजाके समान तू इस आसन पर बैठ।

६ इन्द्रः अमतेः उत क्षुधः विषूवृत्— इन्द्र दरिद्रता और भूखको दूर करता है।

७ सः मघवा वस्वः रायः ईशते— वह धनवान् इन्द्र निवास करनेवाले धनोंका स्वामी है।

८ इमे सप्त सिन्धवः प्रवणे वृषभस्य शुष्मिणः तस्य वयः वर्धन्ति— ये सात नदियां जैसी नीचेके स्थानमें बढती हैं, उस तरह उस बलवान् समर्थ इन्द्रका बल बढाती हैं।

९ एषां अनीकं शवसा दविद्युतत्— इनका सैन्य बलसे चमका।

१० मनवे आर्यं स्वः ज्योतिः विदत्— मानवके लिये आर्य तेज प्राप्त किया।

११ मघवा सूर्यं जयत्— इन्द्रने सूर्यको प्राप्त किया।

१२ न पुराणः व उत नूतनः अन्यः ते तत् वीर्यं न अनुशकत्— पुराणा या नया कोई दूसरा तेरे वीर्यका अनुकरण नहीं कर सकता।

१३ विशंविशं मघवा पर्यशायत— प्रत्येक मनुष्यको इन्द्र देखता है।

१४ जनानां धेना वृषा अवचाकशत्— मानवोंका कहना बलवान् इन्द्र सुनता है।

१५ स पृतन्यतः सहते— वह सेना समेत आनेवाले शत्रुका पराभव करता है।

१६ सादने विप्राः महः वर्धन्ति— यज्ञमें ज्ञानी इसका महत्व बढाते हैं।

१७ क्रुद्धः वृषा न रजःसु आ पतयत्- क्रोधित बैलकी तरह यह सब स्थानोंमें जाता है।

१८ स मघवा जीरदानवे मनवे ज्योतिः अविन्दत्— वह धनवान् इन्द्र दानी मानवके लिये प्रकाश देता है।

१९ परशुः ज्योतिषा सह उज्जायताम्— शस्त्र तेजसे विजयी हो।

२० ऋतस्य सुदुघा भूयाः- यज्ञकी गौवें बहुत हों।

२१ शुचिः भानुना अरुषः विरोचताम्— शुद्ध अपने तेजसे चमके।

२२ सत्पतिः स्वः न शुक्रं शुशुचीत— सज्जनोंका पालक आत्मज्योतिके समान विशुद्ध रीतिसे प्रकाशता रहे।

२३ गोभिः दुरेवां अमतिं तरेम— गौओंसे दरिद्रताको और बुद्धिहीनताको दूर करेंगे।

२४ यवेन विश्वां क्षुधं तरेम— जौसे सब प्रकारकी भूखको दूर करेंगे।

२५ वयं राजभिः प्रथमा अस्माकेन वृजनेन धनानि जयेम— हम क्षत्रियोंके साथ रहकर पहिले होकर हमारे प्रबल प्रयत्नसे धनोंको जीतेंगे।

२६ बृहस्पतिः अघायोः नः परि पातु- ज्ञानपति पापीसे हमारी रक्षा करे।

[सूक्त १८]

(ऋषिः — १-३ मेधातिथिः प्रियमेधश्च; ४-६ वसिष्ठः । देवता — इन्द्रः ।)

वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः । कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते ॥ १ ॥
न घेमन्यदा पपन वज्रिन्नपसो नविष्टौ । तवेदु स्तोमं चिकेत ॥ २ ॥
इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति । यन्ति प्रमादमतन्द्राः ॥ ३ ॥
वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्र णोनुमो वृषन् । विद्धी त्वस्य नो वसो ॥ ४ ॥
मा नो निदे च वक्तवेऽर्यो रन्धीरराव्णे । त्वे अपि क्रतुर्मम ॥ ५ ॥
त्वं वर्मासि सप्रथः पुरोयोधश्च वृत्रहन् । त्वया प्रति ब्रुवे युजा ॥ ६ ॥ (१०४)

---

२७ इन्द्रः नः सखा सखिभ्यः वरिवः कृणोतु— इन्द्र हमारा मित्र हम मित्रोंके लिये धन देवे ।

२८ बृहस्पते युवं इन्द्रः च दिव्यस्य उत पार्थिवस्य वस्वः ईशाथे — हे बृहस्पते ! तू और इन्द्र मिलकर तुम दोनों दिव्य और पार्थिव धनके स्वामी हो । वसु- जिससे मनुष्य यहां सुखसे बस सकता है वह धन ।

२९ स्तुवसे कीरये रयिं धत्तं— स्तुति करनेवाले ज्ञानीको धन दो ।

३० यूयं सदा नः स्वस्तिभिः पातं— तुम सदा हमारा रक्षण कल्याणोंके साथ करो ।

॥ यहां द्वितीय अनुवाक समाप्त ॥

(सूक्त १८)

हे इन्द्र ! (वयं उ तत्-इत्-अर्थाः) हम उस-तुम्हारी मित्रताके प्रयोजन सिद्ध करनेके इच्छुक (त्वायन्तः सखायः) तेरे पास आनेकी इच्छावाले तेरे मित्र (कण्वाः) कण्व गोत्रके लोग-ज्ञानीजन- (उक्थेभिः त्वा जरन्ते) स्तोत्रोंसे तेरी स्तुति करते हैं ॥ १ ॥ (ऋ. ८।२।१६)

हे (वज्रिन्) वज्रधारी इन्द्र ! (अपसः नविष्टौ) इस यज्ञकर्ममें (न घ ईं अन्यत् आपपन) किसी अन्यकी मैंने स्तुति नहीं की । (तव इत् उ स्तोमं चिकेत) तेरी स्तुति करना ही मैं जानता हूं ॥ २ ॥ (ऋ. ८।२।१७)

(देवाः सुन्वन्तं इच्छन्ति) देव यज्ञकर्ताको चाहते हैं, (स्वप्नाय न स्पृहयन्ति) आलसी मनुष्यको चाहते नहीं । (अतन्द्राः प्र-मादं यन्ति) आलस्य छोडनेवाले ही विशेष आनन्द देनेवाले सोमको प्राप्त करते हैं ॥ ३ ॥ (ऋ. ८।२।१८)

हे इन्द्र ! हे (वृषन्) शक्तिमान् ! (वयं त्वायवः) हम तेरे पास आनेवाले तेरी (अभि प्र णोनुमः) ही स्तुति करते हैं । हे (वसो) बसानेवाले ! (नः अस्य तु विद्धि) हमारे इस कर्मको जान ॥ ४ ॥ (ऋ. ७।३१।४)

(अर्यः) तू श्रेष्ठ हो, इसलिये (निदे वक्तवे) निन्दक, बुरा भाषण करनेवाले और (अ-राव्णे) कंजूसके (नः मा रन्धीः) अधीन हमें मत रख, (मम क्रतुः त्वे अपि) मेरा संकल्प-मेरा कर्म तेरे लिये ही है ॥ ५ ॥ (ऋ. ७।३१।५)

(त्वं सप्रथः वर्म असि) तू मेरा बडा कवच है, हे (वृत्रहन्) वृत्रको मारनेवाले इन्द्र ! तू (पुरो-योधः च) आगे बढकर युद्ध करनेवाला है । (त्वया युजा प्रति ब्रुवे) तेरे साथ रहकर मैं शत्रुओंको उत्तर देता हूं ॥ ६ ॥ (ऋ. ७।३१।६)

इस सूक्तमें वीरताके वर्णन ये हैं—

१ हे वज्रिन्— वज्रधारी इन्द्र !

२ वृषन्— बलवान्,

३ वसु— बसानेवाला, सबका आधार,

४ त्वं सप्रथः वर्म असि— तू हमारा विशाल कवच है,

५ वृत्रहन्— वृत्रको मारनेवाला,

६ पुरोयोधः— आगे होकर शत्रुसे युद्ध करनेवाला, शत्रु पर आक्रमण करके उसके साथ युद्ध करनेवाला ।

भक्तिका वर्णन इस सूक्तमें यह है—

१ वयं तदिदर्थाः त्वायन्तः सखायः— हम तेरे पास आनेवाले, तेरे प्राप्तिका उद्देश मनमें रखनेवाले तेरे मित्र हैं ।

२ त्वा जरन्ते— तेरी स्तुति करते हैं ।

३ न अन्यत् आपपन— मैं दूसरेकी स्तुति नहीं करता ।

[सूक्त १९]

(ऋषिः — १-७ विश्वामित्रः। देवता — इन्द्रः।)
(ऋ. ३।३७।१-७)

वार्त्रहत्याय शवसे पृतनाषाह्याय च । इन्द्र त्वा वर्तयामसि ॥ १ ॥
अर्वाचीनं सु ते मन उत चक्षुः शतक्रतो । इन्द्र कृण्वन्तु वाघतः ॥ २ ॥
नामानि ते शतक्रतो विश्वाभिर्गीर्भिरीमहे । इन्द्राभिमातिषाह्ये ॥ ३ ॥
पुरुष्टुतस्य धामभिः शतेन महयामसि । इन्द्रस्य चर्षणीधृतः ॥ ४ ॥
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे पुरुहूतमुप ब्रुवे । भरेषु वाजसातये ॥ ५ ॥
वाजेषु सासहिर्भव त्वामीमहे शतक्रतो । इन्द्र वृत्राय हन्तवे ॥ ६ ॥
द्युम्नेषु पृतनाज्ये पृत्सुतूर्षु श्रवःसु च । इन्द्र साक्ष्वाभिमातिषु ॥ ७ ॥ (१११)

---

४ तव स्तोमं चिकेत— तेरा स्तोत्र ही हम जानते हैं।

५ वयं त्वायवः अभि प्र णोनुमः— हम तेरे पास आते और तुझे ही प्रणाम करते हैं।

६ नः अस्य विद्धि— हमारे इस स्तोत्रको तू जान।

७ मम क्रतुः त्वं अपि— मेरा यज्ञ तेरे लिये ही है।

८ इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं- देव यज्ञकर्ताको चाहते हैं।

९ स्वप्नाय न स्पृहयन्ति— देव सुस्तको चाहते नहीं।

१० अतन्द्राः प्र-मादं यन्ति—उद्योगी विशेष आनन्दको प्राप्त करते हैं।

११ निदे वक्वे अराव्णे नः मा रन्धीः— निन्दक, दुष्ट भाषी तथा कंजूसके अधीन हमें देकर हमारा नाश न कर।

(सूक्त १९)

(**वार्त्र-हत्याय**) शत्रुओंको मारनेके लिये, (**शवसे**) बल प्राप्तिके लिये, (**पृतनाषाह्याय**) शत्रुसेनाओंको जीतनेके लिये, हे इन्द्र! (**त्वा आ वर्तयामसि**) तुझे हम अपनी ओर मोड लाते हैं ॥ १ ॥

हे (**शतक्रतो इन्द्र**) सैकडों शक्तियोंवाले इन्द्र! (**वाघतः**) तेरे उपासक (**ते मनः उत चक्षुः**) तेरे मनको और चक्षुको (**अर्वाचीनं सु कृण्वन्तु**) इधरकी ओर उत्तम रीतिसे करें ॥ २ ॥

हे (**शतक्रतो इन्द्र**) सैकडों शक्तियोंवाले इन्द्र! (**अभिमाति-षाह्ये**) शत्रुओंपर विजय पानेके लिये (**विश्वाभिः गीर्भिः**) सब वाणियोंसे (**ते नामानि ईमहे**) तेरे नामोंको हम लेते हैं ॥ ३ ॥

(**पुरुष्टुतस्य**) अनेकों द्वारा प्रशंसित (**चर्षणी-धृतः**) मनुष्योंको सहारा देनेवाले (**इन्द्रस्य**) इन्द्रके (**शतेन धामभिः**) सौ स्थानों या सामर्थ्योंसे (**महयामसि**) उसकी महिमा गाते हैं ॥ ४ ॥

(**पुरुहूतं इन्द्रं**) बहुतों द्वारा प्रशंसित इन्द्रको (**वृत्राय हन्तवे**) शत्रुको मारनेके लिये और (**भरेषु वाजसातये**) युद्धोंमें धन प्राप्त करनेके लिये (**उप ब्रुवे**) बुलाते हैं ॥ ५ ॥

हे (**शतक्रतो इन्द्र**) सैकडों कर्म करनेवाले इन्द्र! (**वाजेषु सासहिः भव**) तू युद्धोंमें शत्रुको जीतनेवाला हो। (**वृत्राय हन्तवे**) वृत्रको मारनेके लिये (**त्वां ईमहे**) तुझे बुलाते हैं ॥ ६ ॥

(**द्युम्नेषु**) धन प्राप्त करनेमें, (**पृतनाज्ये**) सेनाके साथ युद्ध करनेके समय, (**पृत्सु तूर्षु**) सेनाओंका शीघ्र पराभव करनेके समय, (**श्रवःसु च**) यश प्राप्तिके समय, (**अभिमातिषु**) शत्रुओंका सामना करनेके समय, हे इन्द्र! (**साक्ष्व**) हमारे साथ रह ॥ ७ ॥

इसमें वीरताके निर्देश ये हैं—

१ **वार्त्र-हत्य**— शत्रुको मारना,
२ **शवः**— बल,
३ **पृतना-साह्य**— शत्रुसेनाका पराभव करना,
४ **शतक्रतुः**— सैकडों शक्तिवाला,
५ **अभिमाति-साह्य**— शत्रुका पराभव करना,
६ **चर्षणी-धृत्**— मनुष्योंका आधार,
७ **वृत्राय हन्तवे**— वृत्र, शत्रुको मारना,

[सूक्त २०]

(ऋषिः — १-४ विश्वामित्रः; ५-७ गृत्समदः । देवता — इन्द्रः ।)

शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युम्निनं पाहि जागृविम् । इन्द्र सोमं शतक्रतो ॥ १ ॥
इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु । इन्द्र तानि त आ वृणे ॥ २ ॥
अगन्निन्द्र श्रवो बृहद् द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम् । उत्ते शुष्मं तिरामसि ॥ ३ ॥
अर्वावतो न आ गह्यथो शक्र परावतः । उ लोको यस्ते अद्रिव इन्द्रेह त आ गहि ॥ ४ ॥
इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभी षदप चुच्यवत् । स हि स्थिरो विचर्षणिः ॥ ५ ॥
इन्द्रश्च मृळयाति नो न नः पश्चादघं नशत् । भद्रं भवाति नः पुरः ॥ ६ ॥
इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत् । जेता शत्रून्विचर्षणिः ॥ ७ ॥ (११८)

---

८ भरेषु वाजसातये— युद्धोंमें धन प्राप्त करना,
९ वाजेषु सासहिः— युद्धोंमें विजयी,
१० पृतनाज्यं— शत्रुसेनाका पराभव,
११ पृत्सु तूर्षु— शीघ्र पराभव करनेके लिये,
१२ अभिमाति— शत्रुको जीतना ।

भक्ति— १ ते मनः चक्षुः अर्वाचीनं कृण्वन्तु— तेरा मन और आंख हमारी ओर आकर्षित हो,
२ ते नामानि ईमहे— तेरे नाम लेते हैं ।
३ शतेन धामभिः महयामसि— सैकडों स्थानोंसे तेरी महिमा गाते हैं ।
४ त्वां ईमहे— तेरी प्रार्थना करते हैं ।
५ साक्ष्व— हमारे साथ रह ।

(सूक्त २०)

हे (**शतक्रतो इन्द्र**) हे सैकडों सामर्थ्यवान् इन्द्र ! (**नः ऊतये**) हमारी रक्षा करनेके लिये (**शुष्मिन्तमं**) बल बढानेवाले (**द्युम्निनं**) चमकीले तेजस्वी, (**जागृविं सोमं**) सावधान रखनेवाले सोमरसको (**पाहि**) पी ॥ १ ॥ (ऋ. ३।३७।८)

हे शतक्रतो इन्द्र ! (**पञ्चसु जनेषु**) पांच प्रकारके जनोंमें (**या ते इंद्रियाणि**) जो तेरी शक्तियां हैं, (**तानि ते आ वृणे**) उनको तुझसे मैं प्राप्त करता हूं ॥ २ ॥ (ऋ. ३।३७।९)

हे इन्द्र ! (**बृहत् श्रवः अगन्**) तूने बडा यश प्राप्त किया है । (**दुष्टरं द्युम्नं दधिष्व**) दुस्तर तेजको धारण कर । (**ते शुष्मं उत् तिरामसि**) तेरे उत्साहको हम बहुत बढाते हैं ॥ ३ ॥ (ऋ. ३।३७।१०)

हे (**शक्र**) सामर्थ्यवान् ! (**अर्वावतः नः आ गहि**) पाससे हमारे पास आ (**अथ उ परावतः**) और दूरसे भी आ । हे (**अद्रिवः इन्द्र**) पहाडी किलेमें रहनेवाले इन्द्र ! (**यः ते उ लोकः**) जो तेरा स्थान हो (**ततः इह आ गहि**) वहांसे यहां आ ॥ ४ ॥ (ऋ. ३।३७।११)

हे (**अंग**) प्रिय ! (**इन्द्रः महत् भयं**) इन्द्र बडे भयके (**अभी-षद्**) साथ मुकाबला करता है और उसको (**अप चुच्यवत्**) दूर भगाता है, (**हि सः स्थिरः विचर्षणिः**) क्योंकि वह स्थिर है और सबका देखनेवाला है ॥ ५ ॥ (ऋ. २।४१।१०)

(**इन्द्रः च नः मृळयाति**) इंद्र हमें सुखी करता है इसलिये (**अघं नः पश्चात् न नशत्**) पाप हमारे पीछे नहीं लगता और (**भद्रं नः पुरः भवाति**) कल्याण हमारे सन्मुख रहेगा ॥ ६ ॥ (ऋ. २।४१।११)

(**इन्द्रः सर्वाभ्यः आशाभ्यः परि**) इन्द्र सब दिशाओंसे (**अभयं करत्**) निर्भयता करता है क्योंकि वह (**शत्रून् जेता विचर्षणिः**) शत्रुओंको जीतनेवाला और सबका विशेष रीतिसे देखभाल करनेवाला है ॥ ७ ॥ (ऋ. २।४१।१२)

इस सूक्तमें वीर इन्द्रके गुण ये वर्णन किये हैं—
१ **शतक्रतुः**— सैकडों शक्तिवाला, सैकडों कर्मोंका कर्ता,
२ **इन्द्रः**— (**इन्-द्रः**) शत्रुका विदारण करनेवाला,
३ **शक्रः**— सामर्थ्यवान्,
४ **अंगः**— प्रिय,
५ **नः ऊतये**— हमारी रक्षा करनेके लिये यत्न कर,

[सूक्त २१]

(ऋषिः — १-११ सव्यः। देवता — इन्द्रः।)

(ऋ. १।५३।१-११)

न्यू३षु वाचं प्र महे भरामहे गिर इन्द्राय सदने विवस्वतः।
नू चिद्धि रत्नं ससतामिवाविदन्न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते ॥ १ ॥
दुरो अश्वस्य दुर इन्द्र गोरसि दुरो यवस्य वसुन इनस्पतिः।
शिक्षानरः प्रदिवो अकामकर्शनः सखा सखिभ्यस्तमिदं गृणीमसि ॥ २ ॥
शचीव इन्द्र पुरुकृद्द्युमत्तम तवेदिदमभितश्चेकिते वसु।
अतः संगृभ्याभिभूत आ भर मा त्वायतो जरितुः काममूनयीः ॥ ३ ॥

---

६ पञ्चसु जनेषु ते इंद्रियाणि आ वृणे— पञ्च अर्नोमें जो तेरी शक्तियां हैं उनको मैं प्राप्त करता हूं।

७ बृहत् श्रवः अगन्— तुम्हारा यश बडा है।

८ दुष्टरं द्युम्नं दधीष्व— तू दुस्तर तेज धारण करता है।

९ ते शुष्मं उत् तिरामसि— तेरे बलका हम बहुत वर्णन करके बढाते हैं।

१० अद्रिवः— वज्रधारी, किलेमें रहनेवाला,

११ महत् भयं अभीषद् अप चुच्यवत्— बडे भयका मुकाबला करके उसको दूर करता है।

१२ सः हि स्थिरः विचर्षणिः— वह स्थिर रहता है और सब प्रजाका विशेष निरीक्षण करता है।

१३ इन्द्रः नः मृलयाति— इन्द्र हमें सुखी करता है।

१४ अघं नः पश्चात् न नशत्— इस कारण पाप हमारा पीछा नहीं करता।

१५ भद्रं भवाति नः पुरः— कल्याण हमारे सामने रहता है।

१६ इन्द्रः सर्वाभ्यः आशाभ्यः अभयं करत्— इन्द्र सब दिशाओंसे निर्भयता करता है।

१७ शत्रून् जेता विचर्षणिः— वह इन्द्र शत्रुओंको जीतनेवाला और सब प्रजाजनोंकी देखभाल करता है।

सोमका वर्णन—

१ शुष्मिन्तमः— बल बढानेवाला,

२ द्युम्नी— चमकीला, तेजस्वी, अंधेरेमें चमकनेवाला,

३ जागृविः— सावध रखनेवाला, सुस्ती आने न देने वाला। सोमरसके पीनेसे ये लाभ होते हैं।

❀

(सूक्त २१)

(**महे वाचं नि सु प्र भरामहे**) महान् इन्द्रके लिये हम उत्तम स्तुति करेंगे। (**विवस्वतः सदने इन्द्राय गिरः**) विवस्वान्के स्थानमें इन्द्रके लिये स्तुतियें होती रहती हैं। (**ससतां इव**) सोनेवालोंके रत्न जैसे चोर चुराता है, उस तरह (**नू चित् हि रत्नं अविदन्**) शीघ्र ही उस भक्तने रत्न इन्द्रसे प्राप्त किया। (**दुष्टुतिः द्रविणोदेषु न शस्यते**) निन्दा धनका दान करनेवालोंके लिये योग्य नहीं होती ॥ १ ॥

हे इन्द्र! (**अश्वस्य दुरः**) तू घोडोंका दान करता है, (**गोः दुरः असि**) तू गौओंका दाता है, (**यवस्य दुरः**) तू जौका दाता है, (**वसुनः इनः पतिः**) तू धनका स्वामी और रक्षक है, (**शिक्षानरः प्रदिवः**) तू पुराने कालसे मानवोंका सहायक है, (**अ-काम-कर्शनः**) भक्तोंकी कामनाओंको पूर्ण करनेवाला तू (**सखिभ्यः सखा**) मित्रोंके लिये मित्र है अतः (**तं इदं गृणीमसि**) उसकी यह स्तुति हम गाते हैं ॥ २ ॥

हे (**शचीव पुरुकृत् द्युमत्तम इन्द्र**) शक्तिमन्, बहुत कर्मोंको करनेवाले तेजस्वी इन्द्र! (**तव इत् इदं वसु अभितः चेकिते**) तेरा ही यह सब धन है जो चारों ओर प्रतीत होता है। हे (**अभिभूते**) सबको पराभूत करनेवाले! (**अतः संगृभ्य आ भर**) इसलिये इस धनको इकट्ठा करके भर दे। (**त्वायतः जरितुः कामं मा ऊनयीः**) तेरी भक्ति करनेवाले स्तोताकी कामनामें न्यूनता न कर ॥ ३ ॥

एभिर्द्युभिः सुमना एभिरिन्दुभिर्निरुन्धानो अमतिं गोभिरश्विना ।
इन्द्रेण दस्युं दुरयन्त इन्दुभिर्युतद्वेषसः समिषा रभेमहि ॥ ४ ॥
समिन्द्र राया समिषा रभेमहि सं वाजेभिः पुरुश्चन्द्रैरभिद्युभिः ।
सं देव्या प्रमत्या वीरशुष्मया गोअग्रयाश्वावत्या रभेमहि ॥ ५ ॥
ते त्वा मदा अमदन्तानि वृष्ण्या ते सोमासो वृत्रहत्येषु सत्पते ।
यत्कारवे दश वृत्राण्यप्रति बर्हिष्मते नि सहस्राणि बर्हयः ॥ ६ ॥
युधा युधमुप घेदेषि धृष्णुया पुरा पुरं समिदं हंस्योजसा ।
नम्या यदिन्द्र सख्या परावति निबर्हयो नमुचिं नाम मायिनम् ॥ ७ ॥
त्वं करञ्जमुत पर्णयं वधीस्तेजिष्ठयातिथिग्वस्य वर्तनी ।
त्वं शता वङ्गृदस्याभिनत्पुरोऽनानुदः परिषूता ऋजिश्वना ॥ ८ ॥
त्वमेतां जनराज्ञो द्विर्दशाबन्धुना सुश्रवसोपजग्मुषः ।
षष्टिं सहस्रा नवतिं नव श्रुतो नि चक्रेण रथ्या दुष्पदावृणक् ॥ ९ ॥

(एभिः द्युभिः सुमनाः) इन तेजोंसे उत्तम मननशील हो, (एभिः इन्दुभिः) इन सोमरसोंसे प्रसन्नचित्त हो, (गोभिः अश्विना अमतिं निरुन्धानः) गौओं और घोडोंके साथ हमारी निर्बुद्धतामय दरिद्रताको प्रतिबंध कर। (इन्दुभिः दस्युं) सोमरसोंके बलसे शत्रुको (इन्द्रेण) इन्द्रकी सहायतासे (दरयन्तः) फाडते हैं, (युत-द्वेषसः इषा सं रभेमहि) और शत्रुओंको दूर करके अन्नके साथ हम संयुक्त होंगे ॥ ४ ॥

हे इन्द्र ! (राया सं) हम धनसे युक्त हों, (इषा सं रभेमहि) अन्नसे युक्त हों, (अभिद्युभिः पुरुश्चन्द्रैः वाजेभिः सं) तेजस्वी आल्हाददायक शक्तियोंके साथ हम युक्त हों तथा (गो-अग्रया अश्वावत्या वीरशुष्मया) गौओंकी प्रधानता और घोडोंसे युक्त तथा वीरोंके बलसे प्रभावी (देव्या प्रमत्या सं रभेमहि) सौभाग्यमयी दिव्यशक्तिसे हम संयुक्त हों ॥ ५ ॥

हे (सत्पते) सज्जनोंके स्वामी ! (वृत्रहत्येषु) वृत्रोंके मारनेके कर्मोंमें (ते मदाः ते सोमासः त्वा अमदन्) उन आनन्ददायक सोमरसोंने तुझे आनन्द दिया और (तानि वृष्ण्या) उन वीरोचित कर्मोंने तुझे प्रसन्न किया। (यत् कारवे बर्हिष्मते) जो तूने यज्ञकर्ता स्तोताके लिये (दश सहस्राणि वृत्राणि) दस हजार वृत्र सैन्योंको (अप्रति नि बर्हयः) अप्रतिम रीतिसे मार डाला ॥ ६ ॥

तू (युधा युधं धृष्णुया) युद्ध करनेके उत्साहसे युद्धके प्रति शत्रुको धर्षण करनेकी तैयारीसे (घ इत् उप एषि) जाता है। (पुरा इदं पुरं ओजसा सं हंसि) अपने किलेसे शत्रुके इस किलेको अपने बलसे तोडता है। हे इन्द्र ! (यत् नम्या सख्या) शत्रुको नमानेवाले मित्रके साथ (परावति) दूर रहनेवाले (नमुचिं नाम मायिनं) मायावी नमुचिको (नि बर्हयः) मार डाला ॥ ७ ॥

(अतिथिग्वस्य वर्तनी) अतिथिको गौ देनेवालेके मार्गमें आनेवाले (करञ्जं उत पर्णयं) करञ्जको और पर्णयको (त्वं तेजिष्ठया वधीः) तूने तेज शस्त्रसे मार डाला। (ऋजिश्वना परिषूता) ऋजिश्वाने घेरी हुई (अनानुदः वंगृदस्य) अदानशील वंगृदके (शता पुरः) सौ किले (त्वं अभिनत्) तूने तोड दिये ॥ ८ ॥

(अबन्धुना सुश्रवसा उपजग्मुषः) बिना सहाय अकेले सुश्रवाने हमला किये हुए (एतान् द्विः दश जनराज्ञः) इन बीस जनराजोंको तथा उनके (षष्टिं सहस्रा नवतिं नव) साठ हजार निनानवें सैनिकोंको (दुष्पदा रथ्या चक्रेण) असह्य रथचक्रसे तुमने (नि अवृणक्) मार डाला, इसलिये (श्रुतः) तुम्हारी प्रख्याति हुई ॥ ९ ॥

त्वमाविथ सुश्रवसं तवोतिभिस्तव त्रामभिरिन्द्र तूर्वयाणम् ।
त्वमस्मै कुत्समतिथिग्वमायुं महे राज्ञे यूने अरन्धनायः ॥ १० ॥
य उदचींन्द्र देवगोपाः सखायस्ते शिवतमा असाम ।
त्वां स्तोषाम त्वया सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ॥ ११ ॥ (१२९)

(**त्वं तव ऊतिभिः**) तू अपनी रक्षासाधनोंसे (**सुश्रवसं आविथ**) सुश्रवाकी रक्षा की, और हे इन्द्र! (**तव त्रामभिः तूर्वयाणं**) तूने अपनी रक्षाओंसे तूर्वयाणकी रक्षा की। (**त्वं अस्मै महे यूने राज्ञे**) तूने इस महान् तरुण राजाका हित करनेके लिये (**कुत्सं अतिथिग्वं आयुं**) कुत्स, अतिथिग्व, आयुको (**अरन्धनायः**) वशमें किया ॥ १० ॥

हे इन्द्र! (**उदचि**) वेदमंत्रके पाठमें (**ये देवगोपाः**) तुझ देवके द्वारा सुरक्षित हुवे जो (**ते सखायाः**) तेरे मित्र हम हैं वे (**शिवतमाः असाम**) उत्तम कल्याणसे युक्त हों। (**त्वां स्तोषामः**) हम तेरी स्तुति करते हैं। (**त्वया सुवीराः**) तेरे साथ रहनेसे उत्तम वीर पुत्रपौत्रोंसे युक्त होकर हम (**द्राघीयः आयुः प्रतरं दधानाः**) दीर्घ आयुको अधिक लंबी बनाकर धारण करनेवाले हों ॥ ११ ॥

इस सूक्तमें वीरताका वर्णन करनेवाले ये मंत्रभाग हैं—

१ **अश्वस्य दुरः, गोः दुरः असि, यवस्य दुरः**— घोडे, गौवें और जौका तू देनेवाला है।

२ **वसुनः इनस्पतिः**— धनका तू स्वामी है।

३ **शिक्षानरः प्रदिवः अकामकर्शनः**— सतत मानवोंका सहायक और उनके कामनाओंकी पूर्ति करनेवाला है।

४ **सखिभ्यः सखा**— मित्रोंका तू मित्र है।

५ **शचीव इन्द्र! पुरुकृत् द्युमत्तम**— हे शक्तिमान् तेजस्वी इन्द्र! अनेक कर्मोंके कर्ता तू हो।

६ **तव इत् इदं अभितः वसु चेकिते**— यह जो चारों ओर धन है वह तेरा ही है ऐसा सब जानते हैं।

७ **अतः संगृभ्य, हे अभिभूत! आ भर**— इसलिये जमा करके, हे वीर! हमें धन लाकर भर दे।

८ **त्वायतः जरितुः कामं मा ऊनयीः**— तेरे आश्रयमें आये स्तोताकी इच्छामें न्यून न हो।

९ **एभिः द्युभिः सुमनाः**— इन तेजस्वी विचारोंसे उत्तम मनवाला हो।

१० **अमतिं गोभिः निरुद्धानः**— दरिद्रताको गौओंसे प्रतिबंधित कर।

११ **दस्युं दरयन्त**— शत्रुको हम फाडते हैं।

१२ **युतद्वेषसः इषा संरभेमहि**— द्वेषियोंको दूर करके अन्नको प्राप्त करेंगे।

१३ **राया सं, इषा सं रभेमहि**— धन और अन्नसे हम युक्त हों।

१४ **अभिद्युभिः पुरुध्यन्द्रैः वाजेभिः सं रभेमहि**— दिव्य तेजस्वी बलोंके साथ हम युक्त हों।

१५ **गो अग्रय अश्वावत्या वीरशुष्मया देव्या प्रमत्या सं रभेमहि**— गौएं जिसमें अग्रस्थान रखतीं हैं, घोडोंसे जो युक्त हैं, वीरोंके बलसे युक्त दिव्य बुद्धिसे हम संगत हों।

१६ **हे सत्पते! वृत्रहत्येषु तानि ते वृष्ण्या ते अमदन्**— हे सज्जनोंके पालक! वृत्रोंको मारनेके समय तेरे पौरुष कर्म तुझे आनन्दित करते हैं।

१७ **यत्कारवे बर्हिष्मते दश सहस्राणि वृत्राणि अप्रति नि बर्हयः**— जो तूने यज्ञकर्ता कविके हित करनेके लिये दस हजार वृत्र सैन्योंको अप्रतिम रीतिसे मारा।

१८ **युधा युधं धृष्णुया उप एषि**— एक युद्धसे दूसरे युद्धके प्रति तू धैर्यसे जाता है।

१९ **पुरा इदं पुरं ओजसा सं हंसि**— एक किलेसे दूसरे किलेको बलसे तोडता है।

२० **हे इन्द्र! सख्या नम्या परावति मायिनं नमुचिं नि बर्हयः**— मित्रके साथ दूर रहे मायावी-कपटी नमुचिको तूने मारा।

२१ **त्वं करंजं उत पर्णयं तेजिष्ठया वधीः**— तूने करंज और पर्णयको तेजस्वी शस्त्रसे मारा।

२२ **त्वं वंगृदस्य ऋजिश्वना परिषूता शता पुरः अभिनत्**— तू वंगृदकी ऋजिश्वाने घेरी हुई सौ नगरें तोड दीं।

२३ **त्वं एतान् जनराज्ञः द्विः दश अबन्धुना सुश्रवसा उपजग्मुषः षष्टिं सहस्रा नवतिं नव रथ्या चक्रेण दुष्पदा नि आवृणक्**— तूने इन बीस जन राजाओंको, जो अकेले सुश्रवाके साथ लढ रहे थे, उनको तथा उनके

[सूक्त २२]

(ऋषिः — १-३ त्रिशोकः, ४-६ प्रियमेधः । देवता — इन्द्रः ।)

अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये । तृम्पा व्यश्नुही मदम् ॥ १ ॥
मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन् । माकीं ब्रह्मद्विषो वनः ॥ २ ॥
इह त्वा गोपरीणसा महे मन्दन्तु राधसे । सरो गौरो यथा पिब ॥ ३ ॥
अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे । सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ॥ ४ ॥
आ हरयः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि । यत्राभि संनवामहे ॥ ५ ॥
इन्द्राय गावो आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु । यत्सीमुपह्वरे विदत् ॥ ६ ॥ (१३५)

साठ हजार निन्यानवे सैनिकोंको असह्य रथचक्रके मारसे मार डाला ।

२४ त्वं सुश्रवसं तवोतिभिः आविथ— तूने अपनी रक्षा साधनोंसे सुश्रवाकी रक्षा की ।

२५ तव त्रामभिः तूर्वयाणं— तेरे रक्षा साधनोंसे तूर्वयाणकी रक्षा की ।

२६ त्वं कुत्सं अतिथिग्वं आयुं असै महे यूने राधे अरन्धयः— तूने कुत्स, अतिथिग्व और आयुको इस बडे तरुण राजाके लिये मारा ।

२७ हे इन्द्र ! देवगोपाः ते सखायः शिवतमा असाम— हे इन्द्र! देवोंसे सुरक्षित हुए हम उत्तम कल्याणसे युक्त हों ।

२८ त्वया सुवीराः द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः— तुम्हारी सहायतासे हम उत्तम वीर पुत्रपौत्रोंसे युक्त होकर अपनी दीर्घ आयुको अधिक दीर्घ बनाकर धारण करेंगे ।

इनमें वीरत्वके निर्देश पाठक देखें ।

(सूक्त २२)

हे (**वृषभ**) शक्तिमन्! (**अभि सुते**) सोमरस निकालने पर (**पीतये**) पीनेके लिये (**त्वा सुतं सृजामि**) तेरे पास इस रसको भेजता हूं । (**तृम्प**) इससे तृप्त हो, (**मदं व्यश्नुहि**) आनंददायक इस रसको पी ॥ १ ॥ (ऋ. ८।४५।२२)

(**अविष्यवः मूराः**) अपना संरक्षण चाहनेवाले मूढ (**त्वा मा दभन्**) तुझे मत दबावें । (**उपहस्वानः मा आ दभन्**) उपहास करनेवाले तुझे न दबावें । (**माकीं वनः**) ज्ञानका द्वेष करनेवाले तुझे न प्राप्त कर सकें ॥ २ ॥ (ऋ. ८।४५।२३)

हे इन्द्र ! (**इह**) यहां (**गोपरीणसा त्वा**) गोदुग्धसे मिश्रित सोमरससे तुझे (**महे राधसे मदन्तु**) बडे धन प्राप्तिके लिये प्रसन्न रखें । (**गौरो यथा सरः**) मृग जैसा तालाबपर पीता है वैसा तू इस रसको (**पिब**) पी ॥ ३ ॥ (ऋ. ८।४५।२४)

(**गोपतिं**) गौओंके पालक, (**सत्यस्य सूनुं**) सत्यके प्रचारक, (**सत्पतिं**) सज्जनोंके पालक (**इन्द्रं**) इन्द्रकी (**गिरा अभि प्र अर्च**) अपनी वाणीसे स्तुति कर (**यथा विदे**) जैसी जानते हैं ॥ ४ ॥ (ऋ. ८।६९।४)

(**अरुषीः हरयः आ ससृज्रिरे**) लाल घोडे उसको ला रहे हैं । (**बर्हिषि अधि**) वह आकर आसनपर बैठा है । (**यत्र अभि संनवामहे**) जहां हम मिलकर उसकी स्तुति गाते हैं ॥ ५ ॥ (ऋ. ८।६९।५)

(**वज्रिणे इन्द्राय**) वज्रधारी इन्द्रके लिये (**गावः मधु आशिरं दुदुह्रे**) गौवें मधुर दूध दुहती हैं । (**यत् सीं उपह्वरे विदत्**) जो उसको समीपमें पाया ॥ ६ ॥ (ऋ. ८।६९।६)

इस सूक्तमें वीरताका वर्णन यह है—

१ **वृषभः**— बैल जैसा शक्तिमान् इन्द्र ।
२ **गोपतिः**— गौओंका पालक ।
३ **सत्यस्य सूनुः**— सत्यका प्रचारक,
४ **सत्पति**— सत्यका, सज्जनोंका पालक,
५ **वज्री इन्द्रः**— वज्रधारी इन्द्र,
६ **वज्रिणे इन्द्राय गावः मधु आशिरं दुदुह्रे**— वज्रधारी इन्द्रके लिये गौवें मीठा दूध देती हैं ।

[सूक्त २३]

(ऋषिः — १-९ विश्वामित्रः। देवता — इन्द्रः।)

(ऋ. ३।४१।१-९)

आ तू न॑ इन्द्र मद्र्य॒ग्घुवा॒नः सोम॑पीतये । हरि॑भ्या याह्यद्रिवः ॥ १ ॥
स॒त्तो होता॑ न ऋ॒त्वियस्तिस्ति॒रे ब॒र्हिरा॑नु॒षक्। अयु॑ज्रन्प्रा॒तर॒द्रय॑ः ॥ २ ॥
इ॒मा ब्रह्म॑ ब्रह्मवाहः क्रि॒यन्त॒ आ ब॒र्हिः सी॑द। वी॒हि शू॑र पुरो॒ळाश॑म् ॥ ३ ॥
रा॒रन्धि सव॑नेषु ण ए॒षु स्तोमे॑षु वृत्रहन् । उ॒क्थेष्वि॑न्द्र गिर्वणः ॥ ४ ॥
म॒तय॑ः सोम॒पामु॒रुं रि॒हन्ति॒ शव॑स॒स्पति॑म् । इन्द्रं॒ वत्सं॒ न मा॒तर॑ः ॥ ५ ॥
स मं॑दस्वा ह्यन्ध॒सो राध॑से तु॒न्वा॑ महे । न स्तो॒तार॑ं नि॒दे क॑रः ॥ ६ ॥
व॒यमि॑न्द्र त्वा॒यवो॑ ह॒विष्म॑न्तो जरामहे । उ॒त त्वम॑स्म॒युर्वसो ॥ ७ ॥
मारे अ॒स्मद्वि मु॑मुचो॒ हरि॑प्रियार्वाङ् या॑हि । इन्द्र॑ स्वधावो॒ मत्स्वे॒ह ॥ ८ ॥
अ॒र्वाञ्चं॑ त्वा सु॒खे रथे॒ वह॑तामिन्द्र के॒शिना॑ । घृ॒तस्नू॒ ब॒र्हिरा॒सदे॑ ॥ ९ ॥ (१४४)

(सूक्त २३)

हे (**अद्रिवः इन्द्र**) वज्रधारी इन्द्र ! (**नः सोमपीतये हुवानः**) हमारे सोमपानके लिये बुलाया हुआ तू (**मद्यक्**) मेरे पास (**हरिभ्यां आ याहि**) घोडोंसे आ जावो ॥ १ ॥

(**नः ऋत्वियः होता**) हमारा ऋत्विक होता (**सत्तः**) बैठ गया है, (**बर्हिः आनुषक् तिस्तिरे**) आसन योग्य रीतिसे फैलाया है, (**प्रातः अद्रयः अयुज्रन्**) प्रातःकालसे ही पत्थर [सोमरस निकालनेके लिये] जोडे गये हैं ॥ २ ॥

हे (**ब्रह्मवाहः**) मन्त्रोंके धारक ! (**इमा ब्रह्म क्रियन्ते**) ये मंत्र पाठ किये जाते हैं (**बर्हिः आ सीद**) आसनपर बैठ। हे शूर ! (**पुरोळाशं वीहि**) इस अन्नको खा ॥ ३ ॥

हे (**वृत्रहन्**) वृत्रको मारनेवाले (**गिर्वणः इन्द्र**) स्तुतिके योग्य इन्द्र ! (**नः एषु**) हमारे इन (**सवनेषु स्तोमेषु उक्थेषु**) सवनों, स्तोत्रों और गीतोंमें (**रारन्धि**) आनन्द प्राप्त कर ॥ ४ ॥

(**मातरः वत्सं न**) माताएं बछडेको प्यार करती हैं, उस तरह (**सोमपां** , सोमरस पीनेवाले (**उरुं शवसस्पतिं**) विशाल बलके स्वामी इन्द्रको (**मतयः रिहन्ति**) स्तुतियें वर्णन करती हैं। प्यार करती हैं ॥ ५ ॥

(**सः अन्धसः मन्दस्व हि**) वह तू इस सोमरससे आनन्दित हो, (**तन्वा महे राधसे**) शरीरसे बडे धनके लिये यत्नवान् बन। (**स्तोतारं निदे न करः**) स्तुति करनेवालेकी निन्दा हो ऐसा न कर ॥ ६ ॥

हे इन्द्र ! (**वयं त्वायवः हविष्मन्तः जरामहे**) हम तेरा आश्रय करके हवि लेकर तेरी स्तुति करते हैं। हे (**वसो**) वसानेवाले ! (**उत त्वं अस्मयुः**) तू हमारा सहायक हो ॥ ७ ॥

हे (**हरि-प्रिय**) घोडोंको प्यार करनेवाले ! (**मा आरे अस्मत् मुमुचः**) उनको हमसे दूर न छोड। (**अर्वाङ् याहि**) पास आ। हे (**स्वधावः इन्द्र**) अपनी धारक शक्तिके रक्षक इन्द्र ! (**इह मत्स्व**) यहां आनन्दित हो ॥ ८ ॥

हे इन्द्र ! (**केशिना घृतस्नू**) बडे बालोंवाले, घी जैसा जिनके शरीरसे रस स्रवता है ऐसे घोडे (**बर्हिः आसदे**) आसन पर बैठनेके लिये (**सुखे रथे**) सुखकारक रथमें (**त्वा अर्वाञ्चं वहतां**) तुझे इधर लावें ॥ ९ ॥

१ **अद्रिवः**— वज्रधारी, अथवा पहाडी किलेमें रहनेवाला,
२ **शूरः**— शूरवीर,
३ **वृत्रहन्**— वृत्रको मारनेवाला,
४ **शवसः पतिः**— बलका स्वामी,
५ **वसुः**— वसानेवाला,
६ **हरिप्रियः**— घोडोंपर प्रेम करनेवाला,
७ **स्व-धा-वः**— निज शक्तिसे युक्त।

[सूक्त २४]

(ऋषिः — १-९ विश्वामित्रः । देवता — इन्द्रः ।)

(ऋ. ३।४२।१-९)

उप॑ नः सु॒तमा ग॑हि सो॒ममिन्द्र॒ गवा॑शिरम् । हरि॑भ्यां॒ यस्ते॑ अस्म॒युः ॥ १ ॥
तमिन्द्र॒ मदु॒मा ग॑हि ब॒र्हिष्ठां ग्रा॒वभिः॑ सु॒तम् । कु॒विन्न्व॑स्य तृ॒ष्णवः॑ ॥ २ ॥
इन्द्रमि॒त्था गिरो॒ ममाच्छा॑गुरि॒षिता॒ इतः॑ । आवृ॑ते॒ सोम॑पीतये ॥ ३ ॥
इन्द्रं॒ सोम॑स्य॒ पी॒तये॒ स्तोमे॑भि॒रिह हु॑वामहे । उ॒क्थेभिः॑ कु॒विदा॒गम॑त् ॥ ४ ॥
इन्द्र॒ सोमाः॑ सु॒ता इ॒मे तान्दे॑धिष्व शतक्रतो । ज॒ठरे॑ वाजिनीवसो ॥ ५ ॥
वि॒द्मा हि त्वा॒ धनं॑जयं वा॒जेषु॑ दधृ॒षं क॑वे । अधा॑ ते सु॒म्नमी॑महे ॥ ६ ॥
इ॒मम॑मिन्द्र॒ गवा॑शिरं॒ यवा॑शिरं च नः पिब । आग॑त्या॒ वृष॑भिः सु॒तम् ॥ ७ ॥
तु॒भ्येदि॑न्द्र॒ स्व ओक्ये॒३॒ सोमं॑ चोदामि पी॒तये॑ । एष॑ रारन्तु ते हृ॒दि ॥ ८ ॥
त्वां सु॒तस्य॑ पी॒तये॒ प्रत्न॑मिन्द्र हवामहे । कु॒शि॒कासो॑ अव॒स्यवः॑ ॥ ९ ॥ (१५३)

(सूक्त २४)

हे इन्द्र ! (**नः सुतं गवाशिरं सोमं**) हमारे निचोडे दूध मिलाये सोमरसके समीप (**हरिभ्यां**) तुम्हारे दो घोडोंके साथ (**उप आ गहि**) आओ, (**यः ते अस्मयुः**) जो तेरा हमारे पास आनेका स्वभाव है ॥ १ ॥

हे इन्द्र ! (**बर्हिष्ठां ग्रावभिः सुतं**) आसनपर रखे, पत्थरोंसे कूटे (**तं मदं आ गहि**) उस आनन्ददायक सोमरसके समीप आओ । (**कुवित नु अस्य तृष्णवः**) इससे तृप्त होनेवाले बहुत हैं ॥ २ ॥

(**इतः इषिताः मम गिरः**) यहांसे भेजी मेरी स्तुतियां (**इत्था इन्द्रं अच्छ अगुः**) इस तरह इन्द्रके पास सीधी पहुंची हैं, (**आवृते सोमपीतये**) उसको इधर लाने और सोम पीनेके लिये ॥ ३ ॥

(**इन्द्रं सोमस्य पीतये**) इन्द्रको सोमके पीनेके लिये (**स्तोमैः इह हवामहे**) स्तोत्रोंसे यहां हम बुलाते हैं । (**उक्थेभिः कुवित् आगमत्**) स्तोत्रोंसे बुलानेपर वह बहुत वार आया है ॥ ४ ॥

हे (**शतक्रतो वाजिनीवसो इन्द्र**) सैकडों कर्म करनेवाले, सेनाको बसानेवाले इन्द्र ! (**इमे सोमाः सुताः**) ये सोमके रस तैयार हैं । (**तान् जठरे दधिष्व**) उनको पेटमें धारण कर ॥ ५ ॥

हे (**कवे**) ज्ञानी ! (**त्वा धनंजयं**) तुझे हम धनको जीतनेवाला और (**वाजेषु दधृषं**) युद्धोंमें शत्रुको परास्त करनेवाला (**विद्मा**) जानते हैं (**अधा ते सुम्नं ईमहे**) इसलिये तुझसे सुख मांगते हैं ॥ ६ ॥

हे इन्द्र ! (**इमं नः गवाशिरं यवाशिरं च**) इस हमारे गोदुग्ध मिलाये, सत्तु मिलाये (**वृषभिः सुतं**) बलवानोंने निचोडे सोम रसको (**आगत्य पिब**) आकर पी ॥ ७ ॥

हे इन्द्र ! (**स्वे ओकये**) अपने स्थानमें (**पीतये**) पीनेके लिये (**तुभ्य इत् सोमं चोदामि**) तेरे लिये सोमको प्रेरता हूं । (**ते हृदि एष रारन्तु**) यह तेरे हृदयमें आनन्द देवे ॥ ८ ॥

(**अवस्यवः कुशिकासः**) अपनी सुरक्षा चाहनेवाले कुशिक गोत्री हम (**सुतस्य पीतये**) निचोडे सोमरसको पीनेके लिये हे इन्द्र ! (**प्रत्नं त्वां ईमहे**) तुझ पुरातन वीरको हम बुलाते हैं ॥ ९ ॥

इस सूक्तमें नीचे लिखे वर्णन वीरके हैं—

१ **शतक्रतुः**— सैकडों कर्म करनेवाला वीर,

२ **वाजिनीवसुः**— सेनाको बसानेवाला, सैन्यकी उत्तम व्यवस्था करनेवाला, सेनाका संचालन करनेवाला ।

३ **धनंजयः**— शत्रुको जीतकर धन लानेवाला,

[सूक्त २५]

(ऋषिः — १-५ गोतमः, ७ अष्टकः। देवता — इन्द्रः।)

(ऋ. १।८३।१-६)

अश्वावति प्रथमो गोषु गच्छति सुप्रावीरिन्द्र मर्त्यस्तवोतिभिः।
तमित्पृणक्षि वसुना भवीयसा सिन्धुमापो यथाभितो विचेतसः ॥ १ ॥

आपो न देवीरुप यन्ति होत्रियमवः पश्यन्ति विततं यथा रजः।
प्राचैर्देवासः प्र णयन्ति देवयुं ब्रह्मप्रियं जोषयन्ते वरा इव ॥ २ ॥

अधि द्वयोरदधा उक्थ्यं१ वचो यतस्रुचा मिथुना या सपर्यतः।
असंयत्तो व्रते ते क्षेति पुष्यति भद्रा शक्तिर्यजमानाय सुन्वते ॥ ३ ॥

आदङ्गिराः प्रथमं दधिरे वय इद्धाग्नयः शम्या ये सुकृत्यया।
सर्वं पणेः समविन्दन्त भोजनमश्वावन्तं गोमन्तमा पशुं नरः ॥ ४ ॥

---

४ वाजेषु दधृषं— युद्धोंमें धैर्यवान्,

५ कविः— दूरदर्शी, क्रान्तदर्शी, ज्ञानी, शत्रु भविष्यमें क्या करेगा यह पहिलेसे जाननेवाला,

६ प्रत्नः— पुरातन कालसे प्रसिद्ध, अनुभवी।

सोम रस तैयार करनेकी रीति—

१ गवाशिरः— गौका दूध सोमरसमें मिलाया जाता था।

२ मदः— आनन्ददायी, उत्साह बढानेवाला,

३ ग्रावभिः सुतः— पत्थरोंसे कूटकर रस निकालते हैं।

४ जठरे दधिष्व— पेटमें धारण कर, पी।

५ यवाशिरः— जौका आटा मिलाते हैं।

६ वृषभिः सुतः— बलवान् पुरुषोंने रस निकाला।

(सूक्त २५)

हे इन्द्र! (**तव ऊतिभिः**) तेरी सुरक्षाओंसे (**सुप्रावीः मर्त्यः**) उत्तम सुरक्षित हुआ मनुष्य (**अश्वावति गोषु प्रथमः गच्छति**) घोडों और गौओंवालोंमें पहिला होकर जाता है। (**तं इत् भवीयसा वसुना पृणक्षि**) उसको तू पर्याप्त धनसे भर देता है (**यथा सिन्धुं अभितः विचेतसः आपः**) जैसे समुद्रको चारों ओरसे विचार न करनेवाले जलप्रवाह प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥

(**देवीः आपः न**) दिव्य जलप्रवाहोंकी तरह हमारी स्तुतियां (**होत्रियं उपयन्ति**) तुझ होमके योग्यके समीप जाती हैं। (**यथा रजः विततं**) जैसा अन्तरिक्ष लोक फैला हुआ है उस तरह तेरी (**अवः पश्यन्ति**) रक्षण शक्तिको चारों ओर फैली हम देखते हैं। (**देवयुं देवासः प्राचैः प्र णयन्ति**) देवत्व प्राप्त करनेवालेको देव आगे बढाते हैं। (**ब्रह्मप्रियं वरा इव जोषयन्ते**) ब्रह्म जिसको प्रिय है उसको वरोंके समान सब देव प्रसन्न रखते हैं ॥ २ ॥

(**द्वयोः अधि उक्थ्यं वचः अदधाः**) दोनोंके बीचमें स्तुतिके वचन रखे रहते हैं, (**या मिथुना यत स्रुचा सपर्यतः**) जो मिथुन-पति और पत्नी-स्रुचा उठाकर तेरी पूजा करते हैं। (**अ-संयत्तः ते व्रते क्षेति पुष्यति**) उपद्रव रहित होकर तेरे व्रतमें जो रहता है वह पुष्ट होता है, (**सुन्वते यजमानाय भद्रा शक्तिः**) यज्ञ करनेवाले यजमानको कल्याणकारक शक्ति प्राप्त होती है ॥ ३ ॥

(**अङ्गिराः आत् प्रथमं वयः दधिरे**) अंगिरसोंने प्रथम अन्न और बलको धारण किया, (**ये इद्धाग्नयः**) जिन्होंने अग्निको प्रदीप्त करके (**सुकृत्यया शम्या**) उत्तम यज्ञ कर्मोंसे शान्ति स्थापन की, (**नरः**) उन वीरोंने (**गोमन्तं अश्वावन्तं पशुं सर्वं भोजनं**) गौवें, घोडे और अन्य पशुवाले सब भोग्य पदार्थोंको (**पणेः समाविन्दन्त**) पणिसे प्राप्त किया ॥ ४ ॥

यज्ञैरथर्वा प्रथमः पथस्ततेः ततः सूर्यो व्रतपा वेन आजनि ।
आ गा आजदुशना काव्यः सचा यमस्य जातममृतं यजामहे ॥ ५ ॥
बर्हिर्वा यत्स्वपत्याय वृज्यतेऽर्को वा श्लोकमाघोषते दिवि ।
ग्रावा यत्र वदति कारुरुक्थ्यस्तस्येदिन्द्रो अभिपित्वेषु रण्यति ॥ ६ ॥
प्रोग्रां पीतिं वृष्ण इयर्मि सत्यां प्रयै सुतस्य हर्यश्व तुभ्यम् ।
इन्द्र धेनाभिरिह मादयस्व धीभिर्विश्वाभिः शच्या गृणानः ॥ ७ ॥ (अ. २०।१०४।३) (१६०)

(**अथर्वा यज्ञैः प्रथमः पथः तते**) अथर्वाने पहिले यज्ञोंसे मार्ग फैलाया । (**ततः व्रतपाः वेनः सूर्यः आजनि**) पश्चात् व्रतपालक तेजस्वी सूर्य प्रकट हुआ । (**काव्यः उशनाः सचा गाः आ आजत्**) कविपुत्र उशनाने उस यज्ञके साथ गौवोंको चलाया । इस तरह (**यमस्य जातं अमृतं यजामहे**) नियमोंसे कार्य करनेसे उत्पन्न हुए अमृतरूपी यज्ञ कर्म हम करते हैं ॥ ५ ॥

(**यत् बर्हिः स्वपत्याय वृज्यते**) जब कुशा उत्तम कर्म करनेके लिये काटते हैं, (**अर्कः वा श्लोकं दिवि आघोषते**) जब सूक्त बोलनेवाले अपने मंत्रको द्युलोकमें घोषित करते हैं, (**यत्र कारुः उक्थ्यः ग्रावा वदति**) जहां निपुण स्तोता जैसा पत्थर [सोम कूटनेका] शब्द करता है, (**इन्द्रः तस्य अभिपित्वेषु**) इन्द्र उसके समीप रहनेमें (**रण्यति**) आनन्द पाता है ॥ ६ ॥

हे (**हर्यश्व**) लाल घोडोंवाले इन्द्र ! (**वृष्णे तुभ्यं**) बलवान् तुझे (**सत्यां उग्रां पीतिं**) सच्चे उत्साह वर्धक सोम पानके पास (**प्रयै प्र इयर्मि**) जानेके लिये मैं प्रेरित करता हूं । हे इन्द्र ! (**धेनाभिः इह मादयस्व**) स्तुतियोंसे यहां आनन्दित हो, (**विश्वाभिः धीभिः**) सारी बुद्धियोंसे यहां (**शच्या गृणानः**) शक्तिके साथ तुम्हारी स्तुति होती है ॥ ७ ॥

इस सूक्तमें इन्द्रके वीरताके ये वर्णन हैं—

१ **हे इन्द्र ! तव ऊतिभिः सुप्रावीः मर्त्यः अश्वावति गोषु प्रथमः गच्छति**— हे इन्द्र ! तेरी सुरक्षाओंसे सुरक्षित हुआ मनुष्य घोडों और गौवोंवालोंमें पहिला होकर जाता है ।

२ **तं इत् भवीयसा वसुना पृणक्षि**— उस मनुष्यको तू पर्याप्त धनसे भर देता है ।

३ **विततं अधः पश्यन्ति**— तेरा रक्षण सामर्थ्य चारों ओर फैल रहा है यह सब देखते हैं । चारों ओरसे तू सबका रक्षण करता है, यह सब जानते हैं ।

४ **देवासः देवयुः प्राचैः प्र णयन्ति**— देव देवत्व प्राप्त करनेकी इच्छावालेको सीधे मार्गोंसे आगे ले जाते हैं ।

५ **ब्रह्मप्रियं जोषयन्ते**— ज्ञान पर प्रेम रखनेवालेको प्रसन्न रखते हैं ।

६ **असंयतः ते व्रते क्षेति पुष्यति**— जो बंधनरहित है वह तेरे नियममें रहता है और पुष्ट होता है ।

७ **भद्रा शक्तिः यजमानाय**— यजकर्ताको कल्याण करनेवाली शक्ति प्राप्त होती है।

८ **अंगिराः प्रथमं वयः दधिरे**— अंगिरसोंने प्रथम शक्ति प्राप्त की ।

९ **ये इद्धाग्नयः सुकृत्यया शम्याः**— जो अग्नि प्रदीप्त करके यज्ञ करते हैं वे अपने शुभ कर्मसे शान्ति स्थापन करते हैं।

१० **नरः पणेः अश्वावन्तं गोमन्तं पशुं सर्वं भोजनं समविन्दन्त**— वीर नेता लोग पणिके घोडों, गौवों और पशु आदि सब भोग-भोजन आदि अपने कबजेमें करते रहे। पणियोंसे ये भोग अंगिरसोंने वीरतासे प्राप्त किये ।

११ **अथर्वा यज्ञैः प्रथमः पथः ततेः**— अथर्वाने यज्ञोंसे प्रथमतः मार्ग फैलाया । लोगोंको यज्ञका मार्ग बताया ।

१२ **काव्यः उशना सचा गाः आ आजत्**— कविपुत्र उशनाने साथ गौवें भी चलाई ।

१३ **अमृतं यजामहे**— अमर देवका हम यज्ञ कर रहे हैं ।

१४ **हे हर्यश्व इन्द्र ! सत्यां सुतस्य उग्रां पीतिं वृष्णे तुभ्यं इयर्मि**— हे घोडोंवाले इन्द्र ! सच्चे सोमरसका उग्र पान तेरे पास मैं भेजता हूं ।

१५ **शच्या गृणानः**— इन्द्र सामर्थ्यवान् है ऐसी स्तुति होती है ।

[सूक्त २६]

(ऋषिः — १-३ शुनःशेपः; ४-६ मधुच्छन्दाः। देवता — इन्द्रः।)

(ऋ. १।३०।७-९)

योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे । सखाय इन्द्रमूतये ॥ १ ॥
आ घा गमद्यदि श्रवत्सहस्रिणीभिरूतिभिः । वाजेभिरुप नो हवम् ॥ २ ॥
अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम् । यं ते पूर्व पिता हुवे ॥ ३ ॥
युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः । रोचन्ते रोचना दिवि ॥ ४ ॥ (ऋ. १।६।१-३)
युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे । शोणा धृष्णू नृवाहसा ॥ ५ ॥
केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥ ६ ॥ (१६६)

[सूक्त २७]

(ऋषिः — १-६ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ। देवता — इन्द्रः।)

(ऋ. ८।१४।१-६)

यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत् । स्तोता मे गोषखा स्यात् ॥ १ ॥

(सूक्त २६)

(**सखायः**) हम सब मित्र मिलकर (**योगे योगे**) प्रत्येक संयोगमें (**वाजे वाजे**) प्रत्येक संग्राममें (**तवस्तरं**) अधिक शक्तिवाले (**इन्द्रं**) इन्द्रको (**ऊतये हवामहे**) हमारी रक्षा करनेके लिये बुलाते हैं ॥ १ ॥

(**यदि श्रवत्**) यदि वह हमारी प्रार्थना सुनेगा, तो वह (**सहस्रिणीभिः ऊतिभिः**) हजारों संरक्षण सामर्थ्योंके और (**वाजेभिः**) बलोंके साथ (**नः हवं उप आ गमत् घ**) हमारी प्रार्थनाके स्थान पर वह निःसंदेह आ जायगा ॥ २ ॥

(**प्रत्नस्य ओकसः**) पुराने परिचित ऐसे मेरे घरके पास (**तुवि-प्रतिं नरं अनु हुवे**) बहुतोंका सामना करनेवाले नेता इन्द्रको मैं बुलाता हूं, (**यं ते**) जिस तुझको (**पिता**) मेरे पिताने (**पूर्व हुवे**) पहिले बुलाया था ॥ ३ ॥

(**तस्थुषः परिचरन्तं**) स्थावरके चारों ओर घूमनेवाले किरण (**अरुषं ब्रध्नं युञ्जन्ति**) तेजस्वी सूर्यको जोडे जाते हैं। (**रोचना दिवि रोचन्ते**) ये किरण द्युलोकमें प्रकाशते हैं ॥ ४ ॥

(**अस्य रथे विपक्षसा**) इसके रथमें दोनों ओर (**शोणा धृष्णू नृवाहसा काम्या हरी युञ्जन्ति**) लाल रंगके, शूर, वीरको ले जानेवाले प्यारे घोडे जोडते हैं ॥ ५ ॥

(**अकेतवे केतुं कृण्वन्**) अज्ञानीको ज्ञान और (**अपेशसे पेशः**) रूपहीनको रूप बनाते हुए, हे (**मर्याः**) मानवो! (**उषद्भिः सं अजायथाः**) उषाओंके साथ सूर्य उत्पन्न होता है ॥ ६ ॥

❀

इस सूक्तमें वीरताके मंत्रभाग ये हैं—

१ सखायः योगे योगे वाजे वाजे ऊतये तवस्तरं इन्द्रं हवामहे— हम सब एक विचारके लोग एक स्थानपर मिलकर, प्रत्येक संग्राममें तथा प्रत्येक योग्य प्रसंगमें हमारी सुरक्षाके लिये शक्तिमान् इन्द्रको सहायतार्थ बुलाते हैं।

२ यदि श्रवत्, सहस्रणीभिः ऊतिभिः वाजेभिः नः हवं घ उप आ गमत्— यदि वह हमारी प्रार्थना सुनेगा, तो हजारों सुरक्षा साधनोंके साथ और बलोंके साथ वह हमारे समीप निःसंदेह आ जायगा।

३ यं ते पूर्व पिता हुवे, प्रत्नस्य ओकसः तुविप्रतिं नरं अनु हुवे— जिस तुझे मेरे पिताने बुलाया था, उस तेरे परिचित मेरे प्राचीन घरके पास अनेक शत्रुओंका सामना करनेवाले तुझ इन्द्र वीरको मैं बुलाता हूँ।

४ अस्य रथे विपक्षसा शोणा धृष्णू नृवाहसा काम्या हरी युञ्जन्ति— इसके रथको दोनों ओर लाल, शूर, नेताको ले जानेवाले प्रिय घोडे जोते जाते हैं।

५ अकेतवे केतुं कृण्वन्— अज्ञानीको ज्ञान देना, जो अन्धेरेमें है उसको प्रकाश देना।

६ अपेशसे पेशः कृण्वन्— रूपहीनको सुरूप करना।

(सूक्त २७)

हे इन्द्र! (**यथा त्वं**) जैसा तू वैसा (**यत् अहं वस्वः एकः ईशीय इत्**) यदि मैं धनका अकेला एक ही स्वामी

शिक्षेयमस्मै दित्सेयं शचीपते मनीषिणे । यदहं गोपतिः स्याम् ॥ २ ॥
धेनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते । गामश्वं पिप्युषीं दुहे ॥ ३ ॥
न ते वर्ताऽस्ति राधस इन्द्र देवो न मर्त्यः । यद्दित्ससि स्तुतो मघम् ॥ ४ ॥
यज्ञ इन्द्रमवर्धयद्यद्भूमि व्यवर्तयत् । चक्राण ओपशं दिवि ॥ ५ ॥
वावृधानस्य ते वयं विश्वा धनानि जिग्युषः । ऊतिमिन्द्रा वृणीमहे ॥ ६ ॥ (१७२)

[सूक्त २८]

(ऋषिः — १-४ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ । देवता — इन्द्रः ।)
(ऋ. ७ १४।७-१०)

व्यन्तरिक्षमतिरन्मदे सोमस्य रोचना । इन्द्रो यदभिनद्बलम् ॥ १ ॥
उद्गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन्गुहा सतीः । अर्वाञ्चं नुनुदे बलम् ॥ २ ॥

होऊं, तो (मे स्तोता गोपखा स्यात्) मेरा स्तोता गौओंका साथी होगा ॥ १ ॥

यत् अहं गोपतिः स्याम्) यदि मैं गौओंका स्वामी होऊं, हे (शचीपते) शक्तिके स्वामी इन्द्र ! (अस्मै शिक्षेयं) इसको धन दूं और (मनीषिणे दित्सेयं) मननशीलको भी दे दूं ॥ २ ॥

हे इन्द्र ! (सुन्वते यजमानाय) सोमयागी यजमानके लिये (ते सूनृता धेनुः) तेरी सत्यप्रिय गौही है । (पिप्युषी गां अश्वं दुहे) वह पुष्ट होकर गौ और घोडा देती है ॥ ३ ॥

हे इन्द्र ! (न देवः न मर्त्यः) न देव और ना ही मर्त्य (ते राधसे वर्ता अस्ति) तेरे दातृत्वका रोकनेवाला कोई है, (स्तुतः यत् मघं दित्ससि) जब स्तुति करनेपर तू धन देना चाहता है ॥ ४ ॥

(यज्ञः इन्द्रं अवर्धयत्) यज्ञने इन्द्रका महात्म्य बढाया, (यत् भूमिं व्यवर्तयत्) जो इन्द्र भूमिको उपजाऊ बनाता है । (दिवि ओपशं चक्राणः) और द्युलोकमें अपना सामर्थ्य प्रकट करता है ॥ ५ ॥

हे इन्द्र ! (वावृधानस्य) बढनेवाले और (विश्वा धनानि जिग्युषः) सब धनोंको जीतनेवाले ऐसे तेरी (ते ऊतिं) सुरक्षा हमें मिले ऐसा (आ वृणीमहे) हम मांगते हैं ॥ ६ ॥

इन्द्रका महत्व नीचेके मंत्रभागोंसे प्रकट होता है —

१ हे इन्द्र ! न देवः न मर्तः ते राधसे वर्ता अस्ति, स्तुतः यत् मघं दित्सति— न देव और नाही मर्त्य तेरे दातृत्वका विरोध कर सकता है, स्तुति करनेपर जिसको तू धन देना चाहता है ।

२ यज्ञः इन्द्रं अवर्धयत्— यज्ञ इन्द्रकी महिमा बढाता है,

३ भूमिं व्यवर्तयत्— इन्द्रने भूमिको अधिक उपजाऊ बनाया है,

४ दिवि ओपशं चक्राणः— इन्द्रने द्युलोकमें अपना सामर्थ्य प्रकट किया है ।

५ हे इन्द्र ! विश्वा धनानि जिग्युषः वावृधानस्य ते ऊतिं आ वृणीमहे— हे इन्द्र ! सब धनोंको विजयसे प्राप्त करनेवाले और अपनी महिमासे बढनेवाले तेरा रक्षण हमें प्राप्त हो यह हमारी मांग है ।

प्रथम और द्वितीय मंत्रमें 'तेरे जैसा मैं यदि धनोंका स्वामी बनूं तो मैं धनका दान करूंगा' ऐसा कहकर इन्द्रसे भक्त स्पर्धा कर रहा है । यह भक्तिरसका एक उत्तम उदाहरण है । 'मेरा स्तोता गौओंका स्वामी होगा ।' यह वाक्य भी इन्द्रकी बराबरी करनेवाला भक्तका वाक्य है । तृतीय मंत्रमें 'पुष्ट गाय, गौ और घोडा देती है' इसमें गायके बदले घोडा मिलता है ऐसा समझना योग्य है ।

(सूक्त २८)

(इन्द्रः) इन्द्रने (सोमस्य मदे) सोमरस पीनेसे उत्पन्न हुए उत्साहमें (अन्तरिक्षं) अन्तरिक्षको तथा (रोचना) प्रकाशित स्थानोंको (व्यतिरत्) व्याप लिया (यत् बलं अभिनत्) और तब बलको तोड दिया ॥ १ ॥

(अंगिरोभ्यः) अंगिरसोंके लिये (गुहा सतीः गाः आविष्कृण्वन्) गुहामें रहनेवाली गौओंको बाहर निकालकर (उत् आ आजत्) प्रदान किया और (बलं अर्वाञ्चं नुनुदे) बलको नीचे गिरा दिया ॥ २ ॥

इन्द्रेण रोचना दिवो दृळ्हानि दंहितानि च । स्थिराणि न पराणुदे ॥ ३ ॥
अपामूर्मिर्मदन्निव स्तोम इन्द्राजिरायते । वि ते मदा अराजिषुः ॥ ४ ॥ (१७६)

[सूक्त २९]

(ऋषिः — १-५ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ । देवता — इन्द्रः ।)
(ऋ. ८।१४।११-१५)

त्वं हि स्तोमवर्धन इन्द्रास्युक्थवर्धनः । स्तोतॄणामुत भद्रकृत् ॥ १ ॥
इन्द्रमित्केशिना हरी सोमपेयाय वक्षतः । उप यज्ञं सुराधसम् ॥ २ ॥
अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः । विश्वा यदजय स्पृधः ॥ ३ ॥
मायाभिरुत्सिसृप्सत इन्द्र द्यामारुरुक्षतः । अव दस्यूँरधूनुथाः ॥ ४ ॥
असुन्वामिन्द्र संसदं विषूचीं व्यनाशयः । सोमपा उत्तरो भवन् ॥ ५ ॥ (१८१)

(**इन्द्रेण दिवः**) इन्द्रने द्युके स्थानमें (**रोचना दृळ्हानि दंहितानि च**) चमकनेवाले नक्षत्र सुदृढ कर स्थापित किये वे (**स्थिराणि न पराणुदे**) स्थिर किये और वे हटाये नहीं जा सकते ॥ ३ ॥

हे इन्द्र ! (**अपां ऊर्मिः इव**) जलोंकी लहरके समान (**स्तोमः मदन् इव**) यह स्तोत्र आनन्द बढाता हुआ (**अजिरायते**) शीघ्रतासे बाहर आ रहा है, और उससे (**ते मदाः वि अराजिषुः**) तेरे आनन्द विराजते हैं ॥ ४ ॥

वीरताका वर्णन यह है—

१ **वलं अभिनत्**— इन्द्रने वलको तोड दिया ।

२ **वलं अर्वाञ्चं नुनुदे**— इन्द्रने वलको नीचे गिराया ।

३ **अंगिरोभ्यः गुहा सतीः गाः आविष्कृण्वन् आ अजत्**— [वलने गौवें पकड कर अपनी गुहामें बंद करके रखी थीं,] उन गौओंको अंगिरा ऋषिको देनेके लिये इन्द्रने गुहासे उनको बाहर निकाला और अंगिराके पास ले जानेके लिये हंकाला ।

४ **इन्द्रेण दिवः रोचना दृळ्हानि दंहितानि स्थिराणि न पराणुदे**— इन्द्रने द्युलोकमें चमकदार नक्षत्र दृढतासे स्थापित किये, उनको दूसरा कोई हटा नहीं सकता । [यहां यह इन्द्र परमात्मा ही है ।]

(सूक्त २९)

हे इन्द्र ! (**त्वं हि स्तोमवर्धनः**) स्तोत्रों द्वारा जिसका महत्त्व बढता है ऐसा तू है और (**उक्थवर्धनः**) स्तुतियोंसे जिसका यश बढता है ऐसा है । और तू (**स्तोतॄणां उत भद्रकृत्**) स्तोताओंका कल्याण करनेवाला है ॥ १ ॥

(**केशिना हरी**) बालवाले दो घोडे (**इन्द्रं सोमपेयाय वक्षतः**) इन्द्रको सोमपानके लिये ले जाते हैं । (**सुराधसं यज्ञं उप**) उत्तम दाता इन्द्रको यज्ञके पास ले जायेंगे ॥ २ ॥

हे इन्द्र ! (**नमुचेः शिरः**) तुमने नमुचिका सिर (**अपां फेनेन**) जलोंके झागसे (**उदवर्तयः**) उखाड दिया । (**यत् विश्वाः स्पृधः अजयः**) तब सब शत्रुओंको जीता ॥ ३ ॥

हे इन्द्र ! (**द्यां आरुरुक्षतः**) द्युलोकपर चढनेकी इच्छा करनेवाले और (**मायाभिः**) कपटोंसे (**उत्सिसृप्सत**) खिसकनेकी इच्छावाले (**दस्यून्**) शत्रुओंको तूने (**अव अधूनुथाः**) नीचे गिरा दिया ॥ ४ ॥

हे इन्द्र ! (**असुन्वां संसदं**) सोमयाग न करनेवालोंकी सभाको (**विषूचीं व्यनाशयः**) तूने छिन्न भिन्न करके विनष्ट किया और (**सोमपाः उत्तरः भवन्**) सोमरस पीकर तू विजयी हो गया ॥ ५ ॥

इस सूक्तमें इन्द्रके विजयके मंत्रभाग ये हैं—

१ **हे इन्द्र ! स्तोतॄणां भद्रकृत्**— हे इन्द्र ! तू स्तोताओंका कल्याण करता है ।

२ **स्तोमवर्धनः, उक्थवर्धनः**— स्तोत्रोंसे इन्द्रका यश बढता है ।

३ **सुराधाः**— उत्तम धन देनेवाला,

४ **नमुचेः शिरः अपां फेनेन, इन्द्र ! उदवर्तयः**— नमुचिका सिर जलोंके झागके इन्द्रने उखाडकर फेंक दिया ।

[सूक्त ३०]

(ऋषिः — १-५ वरुः सर्वहरिर्वा । देवता — हरिः [इन्द्रः] ।)

(ऋ. १०।९६।१-५)

प्र ते॒ महे॒ विद॑थे शंसिषं॒ हरी॒ प्र ते॑ वन्वे॒ वनु॑षो॒ हर्य॑तं॒ मद॑म् ।
घृ॒तं न यो हरि॑भि॒श्चारु॑ सेच॒त॒ आ त्वा॑ विशन्तु॒ हरि॑वर्पसं॒ गिरः॑ ॥ १ ॥
हरिं॒ हि योनि॑मभि ये स॒मस्व॑रन्हि॒न्वन्तो॒ हरी॑ दि॒व्यं यथा॒ सद॑ः ।
आ यं पृ॒णन्ति॒ हरि॑भि॒र्न धे॒नव॒ इन्द्रा॑य॒ शूष॑ं॒ हरि॑वन्तमर्चत ॥ २ ॥
सो अ॑स्य॒ वज्रो॒ हरि॑तो॒ य आ॑य॒सो हरि॑निकाम॒ो हरि॒रा ग॑भस्त्योः ।
द्यु॒म्नी सु॒शि॒प्रो हरि॑मन्युसायक॒ इन्द्रे॒ नि रू॒पा हरि॑ता मिमिक्षिरे ॥ ३ ॥
दि॒वि न के॒तुरधि॑ धायि हर्य॒तो वि॒द्युच्च॒द्वज्रो॒ हरि॑तो॒ न रꣳ॑हा ।
तु॒ददहि॒ हरि॑शिप्रो॒ य आ॑य॒सः स॒हस्र॑शोका अभवद्धरि॑भ॒रः ॥ ४ ॥

'न-मुचि'– यह रोग या रोगकृमि जो जलदी अपनी पकड छोडता नहीं। 'अपां फेनः'– समुद्र झाग, जलोंका झाग, यह औषध है जिससे पूर्वोक्त रोग दूर होता है।

५ विश्वाः स्पृधः अजयः— सब शत्रुओंको जीत लिया।

६ दस्यून् अव धूनुथाः— शत्रुओंको नीचे गिरा दिया, दूर किया।

७ असुन्वां संसदं विषूचीं व्यनाशयः— अयाज्ञकोंकी सभाको विनष्ट कर दिया।

८ सोमपा उत्तरः भवन्— सोमयाजक उच्च स्थानपर चढे।

'**अपां फेनः**' समुद्र झाग यह औषध है, उससे 'नमुचि' नामक रोग दूर होता है। यह औषध प्रकरण है। वैद्योंको इसका विचार करना चाहिये।

(सूक्त ३०)

(**ते हरी**) तेरे दोनों घोडोंको (**महे विदथे प्र शंसिषं**) बडे यज्ञमें मैं प्रशंसा करता हूं। (**ते वनुषः हर्यतं मदं प्र वन्वे**) तुझे इष्ट आनन्दकारी रसको मैं तैयार करता हूं। (**घृतं न**) घी के समान (**यः हरिभिः चारु सेचते**) जो घोडोंसे आकर प्रेमसे जलको सींचता है, (**हरिवर्पसं त्वा गिरः आ विशन्तु**) ऐसे सुन्दर रूपवाले तुझमें हमारी स्तुतियां प्रविष्ट हों ॥ १ ॥

(**हरिं योनिं ये हि अभि समस्वरन्**) जो ऋषि इन्द्रके आगमनके मूल कारण रूप घोडेकी स्तुति करते रहे (**यथा दिव्यं सदः हिन्वन्तः हरी**) क्योंकि दिव्य यज्ञस्थानके पास इन्द्रको ये ही घोडे लाते हैं। (**यं हरिभिः न धेनवः आ प्रीणन्ति**) जिसको घोडोंके समान गौवें तृप्त करती हैं उस (**इन्द्राय हरिवन्तं शूषं अर्चत**) इन्द्रके संतोषके लिये घोडोंवाले बलकी पूजा करो ॥ २ ॥

(**सः अस्य वज्रः**) वह इस इन्द्रका वज्र (**हरितः यः आयसः**) नीला और फौलादका है (**हरिः निकामः**) यह प्राण हरण करनेवाला वज्र उसको बडा प्यारा है, (**हरिः आ गभस्त्योः**) भुआओंमें यह इन्द्र इस वज्रको पकडता है। (**द्युम्नी सुशिप्रः**) तेजस्वी उत्तम हनु या साफेवाला इन्द्र है, (**हरि-मन्यु-सायकः**) शत्रुके प्राण हरण करनेवाले, क्रोध युक्त बाणको धारण करनेवाले (**इन्द्रे हरिता रूपा निमिमिक्षिरे**) इन्द्रमें सारे तेजस्वी रूप मिले हैं ॥ ३ ॥

(**दिवि हर्यतः केतुः अधि धायि न**) द्युलोकमें सुन्दर ध्वज जैसा लगाते हैं, वैसा वह (**वज्रः हरितः रꣳहा न वि द्युतत्**) सुवर्णका वज्र मानो वेगसे चलता है, (**यः आयसः हरिशिप्रः अहिं तुदत्**) जिस फौलादके वज्रसे सुवर्णके साफेको धारण करनेवाले इन्द्रने अहि नामक शत्रुको मारा। तब (**हरिभरः सहस्रशोकाः अभवत्**) सुवर्णसे भरा वह वज्र सहस्र दीप्तिवाला हो गया ॥ ४ ॥

त्वंत्वंमहर्यथा उपस्तुतः पूर्वेभिरिन्द्र हरिकेश यज्वभिः ।
त्वं हर्यसि तव विश्वमुक्थ्यं१मसामि राधो हरिजात हर्यतम् ॥ ५ ॥ (१८६)

[सूक्त ३१]

(ऋषिः — १-५ वरुः सर्वहरिर्वा । देवता — हरिः [इन्द्रः] ।)
(ऋ. १०।९६।६-१०)

ता वज्रिणं मन्दिनं स्तोम्यं मद इन्द्रं रथे वहतो हर्यता हरी ।
पुरूण्यस्मै सवनानि हर्यत इन्द्राय सोमा हरयो दधन्विरे ॥ १ ॥
अरं कामाय हरयो दधन्विरे स्थिराय हिन्वन्हरयो हरी तुरा ।
अर्वद्भिर्यो हरिभिर्जोषमीयते सो अस्य कामं हरिवन्तमानशे ॥ २ ॥

हे (**हरिकेश इन्द्र**) सुनहरी बालोंवाले इन्द्र ! (**पूर्वेभिः यज्वभिः उपस्तुतः**) पूर्व समयके याजकोंने स्तुति किया हुआ (**त्वं त्वं अहर्यथाः**) तू ही स्तुतिके लिये योग्य है। (**तव विश्वं उक्थ्यं**) तेरी सब स्तुतिके लिये (**त्वं हर्यसि**) तू योग्य है। हे (**हरिजात**) हे दुःख हरण करनेवालोंमें प्रसिद्ध ! (**हर्यतं राधः असामि**) तेजस्वी धन तेरा ही है ॥ ५ ॥

इस सूक्तमें इन्द्रकी वीरताका वर्णन अब देखिये—

१ **इन्द्राय हरिवन्तं शूषं अर्चत**— इन्द्रके शत्रुवध-कारी बलकी पूजा करो।

२ **अस्य वज्रः हरितः आयसः हरिः निकामः**— इस इन्द्रका वज्र सुवर्णसे सुशोभित फौलादका है, वह शत्रुको दूर करनेवाला है इस कारण प्रिय है।

३ **हरिः आ गभस्त्योः**— वह शत्रुका हरण करनेवाला वज्र दोनों हाथोंसे वह पकडता है।

४ **द्युम्नी सुशिप्रः हरि-मन्यु-सायकः**— वह इन्द्र तेजस्वी, उत्तम साफा धारण करनेवाला, शत्रुके प्राण हरण करनेवाला क्रोधी बाण जिसके पास रहता है।

५ **इन्द्रे हरिता रूपा निमिमिक्षिरे**— इन्द्रमें सब चमकीले रूप रहे हैं।

६ **दिवि हर्यतः केतुः न अधि धायि**— आकाशमें सुवर्णका ध्वज जैसा फहके [वैसा इन्द्रका वज्र चमक रहा है।]

७ **हरितः वज्रः रंह्या न विव्यचत्**— सुवर्णका वज्र वेगसे चला।

८ **हरिशिप्रः यः आयसः अहिं तुदत्**— सुवर्णका साफा बांधनेवाले इन्द्रने अपने फौलादके वज्रसे अहिनामक अपने शत्रुको मारा।

९ **हरिभरः सहस्रशोकः अभवत्**— सुवर्णसे भरा हुआ वह वज्र सहस्र तेजोंसे चमकनेवाला हुआ।

१० **त्वं त्वं अहर्यथाः**— तू ही स्तुतिके लिये योग्य है।

११ **त्वं हर्यसि, तव विश्वं उक्थ्यं**— तू स्तुतिके लिये योग्य है, सब स्तुति तुम्हारी है।

१२ **हे हरिजात ! हर्यतं असामि राधः**— हे शत्रुके प्राण हरण करनेवालोंमें प्रसिद्ध इन्द्र ! तेरा धन अवर्णनीय है।

इस सूक्तमें 'इन्द्र' के लिये 'हरि-केश' कहा है। सुवर्णके रंगके केशवाला इन्द्र है। सुवर्णके बालोंवाले लोग जहां होते हैं वहांका यह वीर है। तैत्तिरीय संहितावालोंको 'हिरण्य केशी' कहते हैं। वही भाव 'हरि-केश' में दीखता है।

(सूक्त ३१)

(**ता हर्यता हरी**) वे दोनों प्रिय घोडे (**वज्रिणं मन्दिनं स्तोम्यं इन्द्रं**) वज्रधारी, आनन्द युक्त, स्तुतिके योग्य इन्द्रको (**मदे**) आनन्द प्राप्त करनेके लिये (**रथे वहतः**) रथमें ले आते हैं। (**अस्मै हर्यते इन्द्राय**) इस इच्छा करनेवाले इन्द्रके लिये (**पुरूणि सवनानि**) बहुतसे सवन और (**हरयः सोमाः**) तेजस्वी सोमरस (**दधन्विरे**) बहते हैं ॥ १ ॥

(**कामाय हरयः अरं दधन्विरे**) इन्द्रकी कामनानुसार सोमरस पूर्णतया बहें। (**स्थिराय हरयः हरी तुरा हिन्वन्**) स्थिर इन्द्रके लिये वेगवाले सोमरसोंने दोनों घोडोंको त्वरासे चलाया। (**अर्वद्भिः हरिभिः यः जोषं ईयते**) वेगवाले घोडोंसे जो चुपचाप जाता है, (**सः अस्य हरिवन्तं कामं आनशे**) उस रथने इस इन्द्रकी सोमवाली कामनाको जाना ॥ २ ॥

हरिश्मशारुर्हरिकेश आयसस्तुरस्पेये यो हरिपा अवर्धत ।
अर्वद्भिर्यो हरिभिर्वाजिनीवसुरति विश्वा दुरिता पारिषद्धरी ॥ ३ ॥
स्रुवेव यस्य हरिणी विपेततुः शिप्रे वाजाय हरिणी दविध्वतः ।
प्र यत्कृते चमसे मर्मृजद्धरी पीत्वा मदस्य हर्यतस्यान्धसः ॥ ४ ॥
उत स्म सद्म हर्यतस्य पस्त्योऽरत्यो न वाजं हरिवाँ अचिक्रदत् ।
मही चिद्धि धिषणार्हर्यदोजसा बृहद्वयो दधिषे हर्यतश्चिदा ॥ ५ ॥ (१९१)

[सूक्त ३२]

(ऋषिः — १-३ वरुः सर्वहरिर्वा । देवता — हरिः [इन्द्रः] ।)

आ रोदसी हर्यमाणो महित्वा नव्यंनव्यं हर्यसि मन्म नु प्रियम् ।
प्र पस्त्यमसुर हर्यतं गोराविष्कृधि हरये सूर्याय ॥ १ ॥

(हरि-श्मशारुः) पीली मूछोंवाला (हरि-केशः) पीले बालोंवाला, (आयसः) फौलादका जैसा बना (तुरस्पेये यः हरिपा अवर्धत) त्वरासे पीनेमें जो घोडोंका पालनकर्ता उत्साहसे बढता है, (अर्वद्भिः हरिभिः यः) वेगवान् घोडोंसे जो (वाजिनी-वसुः) सेनाको बसाता है वह (हरी) दोनों घोडोंको (विश्वा दुरिता अति पारिषत्) सारी कठिनाइयोंके पार ले गया ॥ ३ ॥

(स्रुवेव यस्य हरिणी विपेततुः) दो स्रुवोंके समान जिसके दोनों जबडे अलग अलग चलते हैं । (शिप्रे हरिणी वाजाय दविद्युतः) दोनों जबडे वेगके लिये वह अश्व कंपाता है, (यत्कृते चमसे) जिसके लिये चमस तैयार हुए उस (मदस्य हर्यतस्य अन्धसः पीत्वा) आनंदकारक प्रिय अन्नरसको पीकर वह अपने (हरी मर्मृजत्) दोनों घोडोंको पोंछता है ॥ ४ ॥

(उत हर्यतस्य पस्त्योः सद्म स्म) यदि इच्छा करनेवाले इन्द्रका घर द्यौ, और पृथिवीमें है, तो वहांसे (अत्यः वाजं न) घोडा जैसा युद्धमें जाता है वैसा वह (हरिवान् अचिक्रदत्) घोडोंवाला इन्द्र आया है । (मही धिषणा चित्) बडी स्तुतिने (ओजसा अहर्यत्) बलसे उसको इधर लाया है । और (हर्यतः चित् बृहत् वयः आ दधिषे) उस इच्छा करनेवालेने बडी आयु धारण की ॥ ५ ॥

इस सूक्तमें इन्द्रके वीर कर्म ये हैं—

१ हरी वज्रिणं इन्द्रं रथे वहतः— दो घोडे वज्रधारी इन्द्रको रथमें बिठलाकर ले जाते हैं ।

२ स्थिराय हरी तुरा हिन्वन्— युद्धमें स्थिर रहनेवाले इन्द्रको दो घोडे त्वरासे ले चलते हैं ।

३ अर्वद्भिः हरिभिः यः ओषं ईयते— वेगवान् घोडोंसे वह सत्वर जाता है ।

४ अर्वद्भिः हरिभिः यः वाजिनी-वसु— शीघ्रगामी घोडोंसे जो सेनाको बसाता है ।

५ हरी विश्वा दुरिता अति पारिषत्— दो घोडे सब संकटोंको पार करते हैं ।

६ अत्यः वाजं न हरिवान् अचिक्रदत्— घोडा युद्धमें जाता है उस तरह इन्द्र आता है ।

इन्द्रका वर्णन—

१ हरिश्मशारुः— सोनेके रंगके मूछियोंवाला,
२ हरिकेशः — सोनेके रंगके बालवाला,
३ आयसः — फौलादका वज्र धारण करता है,
४ हरिपा— घोडोंका पालन करनेमें कुशल,
५ वाजिनी-वसुः— सैन्योंको अच्छी तरह बसानेवाला,
६ बृहत् वयः दधिषे— बडी आयु धारण करता है ।

(सूक्त ३२)

तू (महित्वा) अपनी महिमासे (रोदसी आ हर्यमाणः) द्युलोक और पृथिवीको भर देता है । तथा (नव्यं नव्यं प्रियं मन्म) नवीन नवीन प्रिय स्तोत्रको तू (हर्यसि) चाहता है । हे (असु-र) जीवन शक्ति देनेवाले इन्द्र ! (हरये सूर्याय) दुःखोंका हरण करनेवाले सूर्यके लिये (गोः हर्यतं पस्त्यं) गौओंके स्पृहणीय बाडेको (प्र आविष्कृधि) प्रकट कर ॥ १ ॥

आ त्वा हर्यन्तं प्रयुजो जनानां रथे वहन्तु हरिशिप्रमिन्द्र ।
पिबा यथा प्रतिभृतस्य मध्वो हर्यन्यज्ञं संधमादे दशोणिम् ॥ २ ॥
अपाः पूर्वेषां हरिवः सुतानामथो इदं सवनं केवलं ते ।
ममद्धि सोमं मधुमन्तमिन्द्र सत्रा वृषं जठर आ वृषस्व ॥ ३ ॥ (१९४)

[सूक्त ३३]

(ऋषिः — १-३ अष्टकः । देवता — इन्द्रः ।)

अप्सु धूतस्य हरिवः पिबेह नृभिः सुतस्य जठरं पृणस्व ।
मिमिक्षुर्यमद्रय इन्द्र तुभ्यं तेभिर्वर्धस्व मदमुक्थवाहः ॥ १ ॥
प्रोग्रां पीतिं वृष्ण इयर्मि सत्यां प्रयै सुतस्य हर्यश्व तुभ्यम् ।
इन्द्र धेनाभिरिह मादयस्व धीभिर्विश्वाभिः शच्या गृणानः ॥ २ ॥
ऊती शचीवस्तव वीर्येण वयो दधाना उशिजः ऋतज्ञाः ।
प्रजावदिन्द्र मनुषो दुरोणे तस्थुर्गृणन्तः सधमाद्यासः ॥ ३ ॥ ऋ. १०।९६।११-१३ (१९७)

॥ इति तृतीयोऽनुवाकः ॥ ३ ॥

महित्वा रोदसी आ हर्यमाणः— वीर अपनी महिमासे विश्वको भर दे ।

नव्यं प्रियं मन्म हर्यसि— नवीन प्रिय स्तुतिके स्तोत्र गाये जाते हैं ।

हरये सूर्याय गोः हर्यतं पस्त्यं प्र आविष्कृधि— गौवोंके वाडेको सूर्य प्रकाशमें खुला कर । सूर्य प्रकाशमें गौवें विचरें ऐसा कर ।

जनानां प्रयुजः हरिशिप्रं त्वा रथे आ वहन्तु— लोगोंके कर्मवीरको रथमें बिठलाकर उस स्थान पर ले आवें ।

सधमादे— लोग साथ साथ बैठें और आनंद प्राप्त करनेकी बातें करें ।

हरिवः— घोडोंवाले वीर हों ।

(सूक्त ३३)

हे (**हरि-वः**) घोडोंवाले वीर ! (**अप्सु धूतस्य**) जलोंमें मिलाये सोमरसका (**इह पिब**) यहां पान कर । (**नृभिः सुतस्य**) मानवोंने निचोडे सोमसे (**जठरं पृणस्व**) पेटको भर दे ॥ १ ॥

हे (**हरि-अश्व**) लाल घोडोंवाले इन्द्र ! (**वृष्णे तुभ्यं सुतस्य**) बलवान् ऐसे तेरे लिये निचोडे (**सत्यां उग्रां पीतिं**) सच्चे उत्साहवर्धक सोमपानके पास (**प्रयै प्र इयर्मि**) जानेके लिये मैं तुझे प्रेरित करता हूं । हे इन्द्र ! (**धेनाभिः इह मादयस्व**) हमारी स्तुतियोंसे आनन्द मना । जब तू (**विश्वाभिः धीभिः**) सब बुद्धियोंसे और (**शच्या गृणानः**) शक्तिके साथ प्रकंपित होता है ॥ २ ॥

(अथर्व. २०।२५।७ देखो)

हे (**शचीवः**) शक्तिमान् इन्द्र ! (**तव ऊती**) तेरे रक्षणके सामर्थ्यसे (**तव वीर्येण**) तेरे वीर्यसे (**वयः दधानाः**) शक्तिको प्राप्त करते हुए (**उशिजः ऋतज्ञाः**) प्रेमसे यज्ञके

[सूक्त ३४]

(ऋषिः — १-१८ गृत्समदः । देवता — इन्द्रः ।)

यो जात एव प्रथमो मनस्वान्देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत् ।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः ॥ १ ॥
यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात् ।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात्स जनास इन्द्रः ॥ २ ॥
यो हत्वाहिमरिणात्सप्त सिन्धून्यो गा उदाजदपधा वलस्य ।
यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान संवृक्समत्सु स जनास इन्द्रः ॥ ३ ॥
येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि यो दासं वर्णमधरं गुहाकः ।
श्वघ्नीव यो जिगीवां लक्षमाददर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः ॥ ४ ॥

ज्ञानी लोग मिले । हे इन्द्र ! (प्रजावत्) प्रजासे युक्त होकर (सधमाद्यासः गृणन्तः) एकत्र आनन्दसे रहनेवाले, तेरी स्तुति करते हुए (मनुषः दुरोणे तस्थुः) मानवोंके रहने योग्य घरमें रहें ॥ ३ ॥

हरिवः— घोड़ोंके साथ रहनेवाला वीर,

शचीवः— सामर्थ्यवान् वीर,

तव ऊती, तव वीर्येण वयः दधानाः— तेरे रक्षणसे सुरक्षित और तेरे पराक्रमसे शक्तिमान् होनेवाले वीर हों ॥

उशिजः क्रताज्ञाः— प्रेमसे साथ बैठकर श्रेष्ठ कर्म करने वाले हों, और ये यज्ञका तत्त्व जाननेवाले हों ।

प्रजावत्— संतानोंसे युक्त हों, कोई संतानहीन न हो ।

सधमाद्यासः गृणन्तः मनुषः दुरोणे तस्थुः— एकत्र रहकर आनंद बढानेवाले, ईश्वरकी स्तुति करनेवाले लोग मानवोंके रहने योग्य घरमें रहें । उत्तम योग्य घरमें आनन्दसे रहें ।

॥ यहां तृतीय अनुवाक समाप्त ॥

(सूक्त ३४)

(यः मनस्वान् प्रथमः देवः) जो बुद्धिमान् पहिला देव (जातः एव) प्रकट होते ही (क्रतुना देवान् पर्यभूषत्) अपने कर्मसे सब देवोंको सुभूषित करता है, (यस्य शुष्मात्) जिसके बलसे और (नृम्णस्य मह्ना) शौर्यकी महिमासे (रोदसी अभ्यसेतां) दोनों लोक कांपते हैं, हे (जनासः) लोगो ! (स इन्द्रः) वह इन्द्र है ॥ १ ॥ (ऋ. २।१२।१)

(यः व्यथमानां पृथिवीं अदृंहत्) जिसने दुःखित पृथिवीको सुदृढ बनाया, (यः प्रकुपितान् पर्वतान् अरम्णात्) जिसने प्रकुपित पर्वतोंको रमणीय बनाया, (यः अन्तरिक्षं वरीयः विममे) जिसने अन्तरिक्षको ऊपर बनाया, (यः द्यां अस्तभ्नात्) जिसने द्युलोकको स्थिर बनाया, हे लोगो ! वह इन्द्र है ॥ २ ॥ (ऋ. २।१२।२)

(यः अहिं हत्वा सप्त सिन्धून् अरिणात्) जिसने मेघको मार कर सात नदियोंको बहाया, (यः वलस्य अपधा गा उदाजत्) जिसने वलकी गुहासे गौओंको ऊपर निकाला, (यः अश्मनः अन्तः अग्निं जजान) जिसने पत्थरोंके अन्दर अग्निको उत्पन्न किया, जो (समत्सु संवृक्) जो संग्रामोंमें शत्रुको घेरता है, हे लोगो ! वह इन्द्र है ॥ ३ ॥ (ऋ. २।१२।३)

(येन इमा विश्वा च्यवना कृतानि) जिसने ये सब भुवन हिलनेवाले बनाये हैं, (यो दासं वर्णं अधरं गुहाकः) जिसने दास वर्णको नीच और गुहामें रहनेवाला किया है, (यः अर्यः जिगीवान्) जो श्रेष्ठ विजयी होकर (श्वघ्नी इव लक्षं पुष्टानि आदद्) व्याधके समान लक्ष्यको और पोषक धनोंको प्राप्त करता है, हे लोगो ! वह इन्द्र है ॥ ४ ॥ (ऋ. २।१२।४)

यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरमुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम् ।
सो अर्यः पुष्टीर्विज इवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः ॥ ५ ॥
यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः ।
युक्तग्राव्णो योऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः ॥ ६ ॥
यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः ।
यः सूर्य य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः ॥ ७ ॥
यं क्रन्दसी संयती विह्वयेते परेऽवर उभया अमित्राः ।
समानं चिद्रथमातस्थिवांसा नाना हवेते स जनास इन्द्रः ॥ ८ ॥
यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते ।
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत्स जनास इन्द्रः ॥ ९ ॥
यः शश्वतो महो अनो दधानानमन्यमानांश्चर्षी जघान ।
यः शर्धते नानुददाति शृध्यां यो दस्योर्हन्ता स जनास इन्द्रः ॥ १० ॥

(**यं घोरं**) जिस भयानकके विषयमें (**पृच्छन्ति**) पूछते हैं कि (**सः कुह इति**) वह कहां रहता है, (**उत एनं आहुः**) और इसके विषयमें कई कहते हैं कि (**न एषः अस्ति इति**) यह है ही नहीं। (**सः अर्यः**) वह श्रेष्ठ (**विज इव पुष्टीः आमिनाति**) पक्षीके समान शत्रुकी पुष्टियोंको विनष्ट भी करता है (**अस्मै श्रत् धत्त**) इसपर श्रद्धा धारण करो, हे लोगो! वही इन्द्र है ॥ ५ ॥ (ऋ. २।१२।५)

(**यः रध्रस्य**) जो उपासकका (**यः कृशस्य**) जो कृशका, (**यः ब्रह्मणः**) जो ज्ञानीका और (**नाधमानस्य कीरेः**) याचना करनेवाले कविका (**चोदिता**) प्रेरक होता है, (**युक्तग्राव्णः सुतसोमस्य यः अविता**) जो पत्थरोंसे सोमरस निकालनेवालेका रक्षक है, जो (**सुशिप्रः**) उत्तम साफा बांधता है, हे लोगो! वह इन्द्र है ॥ ६ ॥ (ऋ. २।१२।६)

(**यस्य प्रदिशि**) जिसके आदेशमें (**अश्वासः**) घोडे आते हैं (**यस्य गावः**) जिसको गौवें, (**यस्य ग्रामाः**) जिसके गांव हैं, (**यस्य विश्वे रथासः**) जिसके सब रथ हैं (**यः सूर्यं उषसं जजान**) जिसने सूर्यको उषाको उत्पन्न किया है, (**यः अपां नेता**) जो जलोंका नेता है, हे लोगो! वह इन्द्र है ॥ ७ ॥ (ऋ. २।१२।७)

(**संयती क्रन्दसी यं विह्वयेते**) आपसमें युद्धके लिये तैयार हुई सेनाएँ जिसको बुलाती हैं। (**परे अवरे उभयाः अमित्राः**) श्रेष्ठ और कनिष्ठ दोनों प्रकारके शत्रु जिसको बुलाते हैं, (**समानं रथं चित् आतस्थिवांसा**) समान रथपर बैठनेवाले वीर (**नाना हवेते**) जिसको नाना प्रकारसे बुलाते हैं, हे लोगो! वह इन्द्र है ॥ ८ ॥ (ऋ. २।१२।८)

(**यस्मात् ऋते जनासः न विजयन्ते**) जिसकी सहायताके विना लोग विजय नहीं प्राप्त कर सकते, (**युध्यमानाः अवसे यं हवन्ते**) युद्ध करनेवाले अपने रक्षणके लिये जिसको बुलाते हैं, (**यः विश्वस्य प्रतिमानं बभूव**) जो विश्वका आदर्श मान दण्ड हुआ है (**यः अच्युत-च्युत्**) जो न हिलनेवालोंको हिलानेवाला है, हे लोगो! वह इन्द्र है ॥ ९ ॥ (ऋ. २।१२।९)

(**यः शर्धा**) जिस वीर धारण करनेवालेने (**शश्वतः महि एनः**) सदासे बडा पाप (**दधानान्**) धारण करनेवाले (**अमन्यमानान्**) अविश्वासियोंको (**जघान**) मारा। (**यः शर्धते**) जो घमंडीकी (**शृध्यां न अनुददाति**) घमंडको नहीं सहता, (**यः दस्योः हन्ता**) जो दस्युका मारनेवाला है, हे लोगो! वह इन्द्र है ॥ १० ॥ (ऋ. २।१२।१०)

❀

यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत् ।
ओजायमानं यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इन्द्रः ॥ ११ ॥

यः शम्बरं पर्यतरत्कसीभिर्योऽचारुकास्नापिबत्सुतस्य ।
अन्तर्गिरौ यजमानं बहुं जनं यस्मिन्नामूर्छत्स जनास इन्द्रः ॥ १२ ॥

यः सप्तरश्मिर्वृषभस्तुविष्मानवासृजत्सर्तवे सप्त सिन्धून् ।
यो रौहिणमस्फुरद्वज्रबाहुर्द्यामारोहन्तं स जनास इन्द्रः ॥ १३ ॥

द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते ।
यः सोमपा निचितो वज्रबाहुर्यो वज्रहस्तः स जनास इन्द्रः ॥ १४ ॥

यः सुन्वन्तमवति यः पचन्तं यः शंसन्तं यः शशमानमूती ।
यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य सोमो यस्येदं राधः स जनास इन्द्रः ॥ १५ ॥

जातो ब्यख्यत्पित्रोरुपस्थे भुवो न वेद जनितुः परस्य ।
स्तविष्यमाणो नो यो अस्मद्व्रता देवानां स जनास इन्द्रः ॥ १६ ॥

(**यः पर्वतेषु क्षियन्तं शंबरं**) जिसने पर्वतोंमें रहनेवाले मेघको (**चत्वारिंश्यां शरदि**) चालीसवें वर्ष (**अन्वविन्दत्**) ढूंढ निकाला, (**यः ओजायमानं अहिं**) जिसने बल बढानेवाले अहिको-मेघको जो (**दानुं शयानं**) दानी और विश्राम करनेवाला था उसको (**जघान**) मारा, हे लोगो ! वह इन्द्र है ॥ ११ ॥ (ऋ. २।१२।११)

(**यः कसीभिः शंबरं पर्यतरत्**) जिसने वज्रोंसे शंबरको-मेघको जीत लिया, (**यः अचारुक-अस्ना**) जो सुन्दर मुखसे (**सुतस्य अपिबत्**) सोमरसको पीता है, (**बहुं जनं यजमानं**) यज्ञ करनेवाले बहुत जनोंको (**अन्तः गिरौ यस्मिन् आ मूर्छत्**) जिस पर्वतमें इसने बढाया, हे लोगो ! वह इन्द्र है ॥ १२ ॥

(**यः सप्तरश्मिः वृषभः**) जो सात किरणोंवाला बलवान् (**तुविष्मान्**) सामर्थ्यवान् देव (**सप्त सिन्धून्**) सात नदियोंको (**सर्तवे अवासृजत्**) बहनेके लिये छोड देता है । (**यः वज्रबाहुः**) जिस वज्रधारीने (**द्यां आरोहन्तं रौहिणं अस्फुरत्**) द्युलोकपर चढनेवाले रौहिणको काटा है, हे लोगो ! वह इन्द्र है ॥ १३ ॥ (ऋ. २।१२।१२)

(**द्यावा पृथिवी अस्मै चित् नमेते**) द्युलोक और पृथिवी इसके सामने नम्र होते हैं (**अस्य शुष्मात् चित् पर्वता भयन्ते**) इसके बलसे पर्वत भयभीत होते हैं । (**यः सोमपाः**) जो सोमपान करनेवाला, (**यः वज्रबाहुः वज्रहस्तः निचितः**) जो वज्रके समान बाहुवाला और हाथमें वज्र धारण करनेवाला प्रसिद्ध है, हे लोगो ! वह इन्द्र है ॥ १४ ॥ (ऋ. २।१२।१३)

(**यः सुन्वन्तं अवति**) जो सोमरस निकालनेवालेकी रक्षा करता है, (**यः पचन्तं**) जो अन्न पकानेवालेकी रक्षा करता है, (**यः शंसन्तं**) जो मंत्र बोलनेवालेकी, (**यः ऊती शशमानं**) जो अपने रक्षणके साथ दान देता है उसकी रक्षा करता है, (**ब्रह्म यस्य वर्धनं**) ज्ञान जिसके यशका वर्धन करता है, (**सोमः यस्य**) सोम जिसका बलवर्धन करता, (**इदं राधः यस्य**) यह हवि जिसका वर्धन करता है, हे लोगो ! वह इन्द्र है ॥ १५ ॥ (ऋ. २।१२।१४)

(**जातः**) प्रकट होते ही (**पित्रोः उपस्थे व्यख्यत्**) मातापिताकी गोदमें रहकर जो प्रसिद्ध होता है, (**यः भुवः**) जो भूमिको और (**परस्य जनितुः न वेद**) श्रेष्ठ उत्पादक को भी नहीं जानता ? (**यः नः स्तविष्यमाणः**) जो हमसे स्तुति होनेपर (**अस्मत् देवानां व्रता**) हमारे देवोंके व्रतोंको पूर्ण करता है, हे लोगो ! वह इन्द्र है ॥ १६ ॥

यः सोमकामो हर्यश्वः सूरिर्यस्माद्रेजन्ते भुवनानि विश्वा ।
यो जघान शम्बरं यश्च शुष्णं य एकवीरः स जनास इन्द्रः ॥ १७ ॥
यः सुन्वते दुध्र आ चिद्वाजं ददर्षि स किलासि सत्यः ।
वयं त इन्द्र विश्वहा प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम ॥ १८ ॥ (२१५)

(**यः सोमकामः**) जो सोम चाहता है। जो (**हर्यश्वः**) भूरे रंगके घोडोंवाला, (**सूरिः**) ज्ञानी है, (**यस्मात् विश्वा भुवनानि रेजन्ते**) जिससे सब भुवन कांपते हैं, (**यः शंबरं जघान**) जिसने शंबरको मारा (**यः च शुष्णं**) जिसने शुष्णको मारा, (**यः एकवीरः**) जो एक मात्र वीर है, हे लोगो ! वह इन्द्र है ॥ १७ ॥

(**यः दुध्रः चित्**) जो दुर्धष होनेपर भी (**सुन्वते पचते वाजं आ ददर्षि**) सोमरस निकालनेवाले और अन्न पकानेवालेके लिये बल तथा अन्न देता है (**सः सत्यः किल असि**) वह निःसंदेह सत्य है । हे इन्द्र ! (**वयं ते विश्वहः प्रियासः**) हम तेरे सर्वदा प्रिय होकर (**सुवीरासः**) अपने वीर पुत्रोंके समेत (**विदथं आ वदेम**) तेरे गीत गाते रहेंगे ॥ १८ ॥ (ऋ. २।१२।१५)

इस सूक्तमें इन्द्रके गुणों और कार्योंका वर्णन किया है जो गुण देखकर इन्द्रको भक्त पहचान सकते हैं । वे गुण ये हैं—

१ यः मनस्वान् प्रथमः देवः— जो बुद्धिमान पहिला देव है । यह पहिला देव है । इससे पूर्व कोई देव नहीं है । सबमें जो आदिम देव है वह यह है । यह ' मनस्वान् ' मननपूर्वक पूर्ण आयोजनापूर्वक सब कार्य करता है ।

२ यः जात एव क्रतुना देवान् पर्यभूषत्— जो प्रकट होते ही [सब देवोंको उत्पन्न करके] अपने सामर्थ्यसे उन सब देवोंको सुन्दर सुभूषित करता है । यह (**प्रथमः देवः**) पहिला देव है; इसके पूर्व कोई देव बने ही नहीं, इसलिये इसको ' पहिला देव ' कहा है । इसने सब देव उत्पन्न किये और उनको सुन्दर भी बनाया । सुभूषित भी किया । अर्थात् सब देवोंमें इस पहिले देवकी शक्ति ही कार्य करती रही जिससे सब अन्य देव शक्तिमान दीखने लगे ।

३ यस्य शुष्मात्, नृम्णस्य मह्ना रोदसी अभ्यसेतां— इस देवकी शक्तिसे, इसके पौरुषकी महिमासे द्युलोक और भूलोक अपने अपने कार्यके करनेमें दत्तचित्त रहते हैं । ' अभ्यस् '- का अर्थ वारंवार वही कार्य करना । भूमिपर तथा आकाशमें वारंवार वे वे कार्य होते रहते हैं । नियमपूर्वक कार्य होते रहते हैं, सूर्यका उदयास्त, वायुका बहना, वृष्टिका होना आदि जो कार्य वारंवार हो रहे हैं वे इस आदिदेवकी आयोजनासे ही हो रहे हैं । और होते रहेंगे ॥ १ ॥

४ यः व्यथमानां पृथिवीं अदृंहत्— जो दुःखी हुई पृथिवीको दृढ बनाता है । इससे स्पष्ट होता है कि पृथिवी प्रारंभमें कष्ट देनेवाली थी । उस पृथिवीको उस देवने (**अदृंहत्**) सुदृढ बनाया । यह पृथिवी आजके समान दृढ नहीं थी । पीछेसे दृढ हुई है ।

५ यः प्रकुपितान् पर्वतान् अरम्णात्— जो प्रकुपित पर्वतोंको रमणीय बनाता है । ज्वालामुखी पर्वत थे, उनको शान्त तथा रमणीय उसी देवने बनाया ।

इस वर्णनसे भूमि प्रथम गरमागरम थी, पर्वत ज्वाला फेंकनेवाले थे, पीछेसे भूमि और पर्वत रमणीय हुए । हरियावल पीछेसे हुई ऐसा दीखता है ॥ २ ॥

६ यः अहिं हत्वा सप्त सिन्धून् अरिणात्— जिसने अहिको मारा और सात नदियोंको चलाया । ' अहि ' मेघका नाम है, ' अहि ' नामक एक जाती भी थी । ' अहि '- कम न होनेवाला ' अ-हि ' पर्वतपर पडे बर्फका भी नाम है । इस पर्वतपर पडे बर्फको पिघलाकर नदियोंको महापुर लाना इन्द्रका या सूर्यका कार्य है ।

७ यः वलस्य अपधा गा उदजात्— जिसने वलने छिपाकर रखी गौवें बाहर निकाली । ' वल ' कौन है इसकी खोज करनी चाहिये । गौवें यहां सूर्यकी प्रकाश किरणें हैं ऐसा प्रतीत होता है । उषःकालमें प्रकाश किरणें नीचे रहती हैं, वे ऊपर आती हैं । वल अन्धकार होगा । उसने प्रकाश किरणें नीचे रखी थी उनको उदय होनेपर सूर्यदेवने ऊपर लायी, यह रूपक अलंकार यहां होगा ।

८ यः अश्मनः अन्तः अग्निं जजान— जिसने पत्थरोंमें अग्नि उत्पन्न किया है । दो पत्थर एक दूसरेपर आघात करनेपर उससे अग्नि उत्पन्न होता है । दो मेघ पास आये तो उनमें विद्युत् अग्निका प्रवाह शुरू होता है । यह उस पहिले देवका सामर्थ्य है ।

९ समत्सु संवृक्— यह पहिला देव संग्रामोंमें शत्रुओंको घेर कर उनका नाश करता है। संग्रामोंमें वीरोंमें बल उत्पन्न करता है जिस बलसे वीर शत्रुको घेरते और उनका नाश कर सकते हैं ॥ ३ ॥

१० येन इमा विश्वा च्यवना कृतानि— जिसने ये सब सूर्य, चन्द्र, भूमि आदि घूमनेवाले बनाये हैं। इस देवकी आयोजनासे यह सब विश्व नियत गतिसे घूम रहा है.

११ यः दासं वर्ण अधरं गुहा कः— जिसने दासको नीच और गुहा निवासी बनाया है। दास ज्ञानहीन है इस कारण नीच है। संस्कारहीन होनेके कारण गुहामें रहता है।

१२ जिगीवान्— आर्यको विजयी बनाया है। यहां 'आर्य और दास' का वर्णन है। '**आर्य**' विजयी है और '**दास**' नीच होते हैं। आगे बढनेवाले और पीछे रहनेवाले यहां संस्कारोंके कारण आनेवाले गुण हैं।

१३ श्वघ्नी इव लक्षं पुष्टानि आदत्— व्याधके समान अपने लक्ष्यपर मन रखता है और पोषक पदार्थ प्राप्त करता है। यही श्रेष्ठ बननेका उपाय है, अपने लक्ष्यपर ध्यान रखना और पोषक धन प्राप्त करना। इससे प्रयत्न करनेवाला श्रेष्ठ बनता है, विजयी बनता है।

१४ यं घोरं पृच्छन्ति स कुह इति— इस महा भयंकर सामर्थ्यवानके विषयमें पूछते हैं कि वह कहां रहता है। मननशील ज्ञानी वह प्रथम प्रकट हुआ देव कहां रहता है इसीका विचार करते रहते हैं।

१५ उत एनं आहुः एषः न अस्ति इति— कई अविचारी लोग कहते हैं कि यह प्रथम प्रकट हुआ ऐसा कोई देव है ही नहीं।

१६ अस्मै अत् धत्त— इस आदिदेवपर श्रद्धा धारण करो, इससे श्रेष्ठता प्राप्त होती है।

१७ स अर्यः— वह श्रेष्ठ होता है, जो इस प्रथम देवपर श्रद्धा रखता है वह श्रेष्ठ होता है और—

१८ विज इव पुष्टीः आमिनाति— पक्षीके समान वह पोषक धन प्राप्त करता। '**विज्**'- पक्षी। पक्षी प्रयत्नसे अपने लिये पुष्टिकारक अन्न प्राप्त करता है, वैसा प्रयत्नशील मानव अपने लिये पोषणके साधन प्राप्त करेगा ॥ ५ ॥

१९ यः रध्रस्य, कृशस्य, नाधमानस्य, ब्रह्मणः कीरेः चोदिता— जो उपासक, कृश, प्रार्थना करनेवाले, ज्ञानी कविको प्रेरणा करनेवाला है। '**रध्र**'- धनी, उदार, निर्धन, उपासक। **नाधमान**- उपासक, प्रार्थना करनेवाला। **कीरिः**- स्तोता, कवि। प्रार्थना, प्रार्थना करनेवाला।

२० सुशिप्रः— उत्तम हनुवाला, उत्तम साफा बांधनेवाला।

२१ युक्तग्रावणः सुतसोमस्य यः अविता— यज्ञकर्ताका संरक्षक। पत्थरोंसे सोमरस निकाल कर उसका जो यज्ञ करता है उसका रक्षक। सोमयज्ञ करनेवालेका रक्षक ॥ ६ ॥

सोमयागमें धर्मसभा होती है और उसमें जनकल्याणके साधनोंका विचार होता है। इस कारण सोमयागकी प्रेरणा प्रभु करता है। अर्थात इससे जनसमुदायका कल्याण होता है।

२२ यस्य प्रदिशि ग्रामाः विदथे रथासः अश्वासः गावः— जिसकी आज्ञामें सब गांव, रथ, घोडे और गौवें रहती हैं। जिसकी आज्ञा सबको माननी पडती है। इतना जिसका सामर्थ्य है।

२३ यः सूर्ये उषसं जजान— जिसने उषा और सूर्यको बनाया,

२४ यः अपां नेता— जो जलोंको चलानेवाला है, जिसकी आज्ञासे नदियां बह रही है और वृष्टि होती है, वह आदिदेव है ॥ ७ ॥

२५ यं क्रन्दसी संयती विह्वयेते— परस्पर युद्ध करनेवाली सेनाएं जिसको अपनी सहायताके लिये बुलाती हैं।

२६ परे अवरे उभया अमित्रा (यं विह्वयेते)— श्रेष्ठ और कनिष्ठ दोनों प्रकारके शत्रु जिसको अपनी सहायताके लिये बुलाते हैं।

२७ समानं रथं आतस्थिवांसा नाना हवेते— समान रथपर बैठनेवाले वीर जिसको अपनी सहायताके लिये बुलाते हैं ॥ ८ ॥

२८ यस्मात् ऋते जनासः न विजयन्ते— जिसकी सहायता न हुई तो वीर लोगोंको जय प्राप्त नहीं होता।

२९ युध्यमानाः अवसे यं हवन्ते— युद्ध करनेवाले वीर जिसको सहायताके लिये बुलाते हैं।

३० यः विश्वस्य प्रतिमानं बभूव— जो विश्वका आदर्श नमूना हुआ है।

३१ यः अच्युत-च्युत्— जो कभी न हिलनेवालोंको भी उखाडकर फेंक देता है ॥ ९ ॥

३२ यः शर्वा शश्वतः मह्नि एनः दधानान्, अमन्यमानान् जघान— जो बलवान् सदासे बडा पाप करनेवाले अविश्वासी नास्तिकोंको नष्ट भ्रष्ट करता है।

३३ यः शर्धते शृण्व्यां न अनुददाति— जो घमंडीको घमंडको नहीं सहता, उसकी घमंड उतार देता है,

३४ यः दस्योः हन्ता— जो दुष्टोंका विनाश करता है ॥ १० ॥

३५ पर्वतेषु क्षियन्तं शंबरं चत्वारिंश्यां शरदि अन्वविन्दत्— पर्वतोंमें रहनेवाले मेघको-बर्फको-चालीसवें वर्षमें जिसने प्राप्त किया।

यहां 'चालीसवें वर्ष मेघको प्राप्त किया' इसका तात्पर्य ध्यानमें नहीं आता। विज्ञानकी दृष्टिसे इसकी खोज वैज्ञानिक करें। 'शंबर' का अर्थ 'मेघ, हिम, बर्फ' आदि प्रसिद्ध है, परन्तु इससे यहां कुछ भी बोध नहीं प्राप्त होता है। संशोधक विज्ञानकी दृष्टिसे इस विषयकी खोज करें।

३६ यः ओजायमानं दानुं शयानं अहिं जघान— जिसने बलवान् होनेवाले दानी सोनेवाले अहिको मारा। 'अहि' का अर्थ- सर्प, मेघ, बर्फ, शत्रु है। जो शत्रु अपना बल बढाता रहा था उसको इन्द्रने मारा। 'अहि' एक मानव जातीका भी नाम है। अहिके विषयमें भी खोज होनी चाहिये ॥ ११ ॥

३७ यः कसीभिः शंबरं पर्यतरात्— जिसने वज्रोंसे शंबरको मारा। यदि 'शंबर' मेघ है तो अनेक वज्र उसके मारनेके लिये किस कारण लगते हैं। (३५ वीं टिप्पणी देखिये।)

३८ यः अचारुकास्ना सुतस्य अपिबत्— जो सुन्दर मुखसे सोमरस पीता है।

३९ यस्मिन् गिरौ अन्तः यजमानं बहुजनं अमूर्छत्— जिस पर्वतके अन्दर बैठकर यज्ञ करनेवाले बहुत जनोंको जिसने बढाया। मूर्छ्- शक्ति प्राप्त करना, बढना ॥१२॥

४० यः सप्तरश्मिः वृषभः तुविष्मान् सप्त सिन्धून् सर्तवे अवासृजत्— जो सात किरणोंवाले बलवान्, सामर्थ्यवान्ने सात नदियोंको बहनेके लिये छोड दिया। **'सप्तरश्मिः'**- सूर्य, सात किरण जिसमें हैं। (टिप्पणी ६ देखो) सूर्य प्रकाशता है और उसकी गर्मीसे बर्फ पिघलकर नदियां बहती हैं।

४१ यः वज्रबाहुः द्यां आरोहन्तं रौहिणं अस्फुरत्- जिस वज्रधारीने द्युलोकपर चढनेवाले सूर्यको स्फुरण चढाया। **'रौहिणः'** सूर्य, ग्रह, शनि आदि ॥ १३ ॥

४२ द्यावापृथिवी अस्मै चित् नमेते— द्यावा पृथिवी इसके सामने नमते हैं। इसके सामने शक्तिहीन दीखते हैं।

४३ अस्य शुष्मात् पर्वता भयन्ते— इसके बलसे पर्वत भयभीत होते हैं।

४४ यः सोमपाः वज्रबाहुः वज्रहस्तः निचितः- जो सोमरस पीनेवाला वज्रसमान बाहुवाला, वज्र हाथमें लेनेवाला प्रसिद्ध है ॥ १४ ॥

४५ यः सुन्वन्तं पचन्तं शंसन्तं शशमानं अवति- जो याजक, पाचक, स्तुति करनेवाले और दाताका रक्षण करता है।

४६ यस्य ब्रह्म, सोमः, राधः वर्धन— जिसका यशगान ज्ञान, यज्ञ और हवि वर्धन करते हैं ॥ १५ ॥

४७ जातः पित्रोः उपस्थे व्यख्यत्— जो प्रकट होते ही मातापिताकी गोदमें दीप्तिमान होता है।

४८ यः भुवः परस्य जनितुः न वेद ?— जो भूमिको और श्रेष्ठ उत्पादकको भी नहीं जानता? अवश्य जानता है।

४९ नः स्तविष्यमाणः यः अस्मत् देवानां व्रता— जिसकी हमारे द्वारा स्तुति होनेपर सब देवोंके व्रतोंको वह परिपूर्ण करता है ॥ १६ ॥

५० सोमकामः हर्यश्वः सूरिः— जो सोमपर प्यार करता है, जिसके भूरे रंगके घोडे हैं जो ज्ञानी है। यहां घोडोंके अर्थ किरण लेना उचित है।

५१ यः शंबरं जघान, यः शुष्णं— जो शंबरको और शुष्णको मारता है। (टिप्पणी ३५-३७ देखो)

५१ यः एकवीरः— जो एक वीर है ॥ १७ ॥

५२ यः दुध्रः चित् सुन्वते पचते वाजं आ दर्दर्षि- जो दुर्धर्ष प्रबल वीर है और यज्ञकर्ता और अन्नदान करनेवालोंके लिये बलवर्धक अन्न देता है।

५४ सः सत्यः किल असि— वही एक सत्यका रक्षक है। उसे असत्य कभी प्रसंद नहीं होता।

५५ वयं ते विश्वहः प्रियासः सुवीरासः विदथं आ वदेम— हम तेरे-प्रभुके-सदा प्रिय हों, उत्तम वीर पुत्रोंसे युक्त हों और तेरे गीत गाते रहें ॥ १८ ॥

इस सूक्तका विशेष मनन

यह सूक्त **'हे जनासः ! स इन्द्रः'** हे लोगो! वह इन्द्र यह है। इस तरह इन्द्रका स्वरूप बतानेवाला है। इसमें इन्द्रके गुण बताये हैं और इन्द्रका वर्णन भी किया है। इन्द्रका स्वरूप निश्चित करनेमें यह सूक्त बडी सहायता देनेवाला है।

१ पहिला देव इन्द्र है।

'मनस्वान् प्रथमः देवः' (मं. १) बुद्धिमान् प्रथम देव इन्द्र है। सब देवोंमें जो प्रथम प्रकट हुआ वह यह इन्द्र है। इससे पूर्व और कोई देव प्रकट नहीं हुआ। सबसे आदिमें

यह देव प्रकट हुआ है, इसलिये हम इसको आदिदेव भी कह सकते हैं।

'जात एव ऋतुना देवान् पर्यभूषत्' (मं. १)- प्रकट होते ही अपने पुरुषार्थसे अन्य देवोंको उत्पन्न करके, उन देवोंको सुभूषित भी इसीने किया, अग्निका तेज, जलमें शान्ति, वायुमें जीवनशक्ति, सूर्यमें तेज, चन्द्रमें आल्हाददायक शान्त और रमणीय प्रकाश रखकर इन देवोंको सुभूषित इस आदि-देवने किया है। ये देव इन गुणोंके कारण उपयोगी तथा सुभूषित हुए हैं।

'यस्य शुष्मात्, नृम्णस्य मह्ना रोदसी अभ्यसेतां (मं. १)— इसके बलसे और पौरुषकी महिमासे द्यु और भूमि अपने अपने कार्य बारंबार उसीके नियममें रहकर करते रहते हैं। जैसा कोई किसी विषयका अभ्यास करता है वैसा ये देव अपने अपने कार्यका अभ्यास करते हैं। बारंबार वही कार्य करते जाते हैं।

'व्यथमानां पृथिवीं अदंहत्, प्रकुपितान् पर्वतान् अरम्णात्' (मं. २)— प्रथम पृथिवी व्यथा देनेवाली थी, आज जैसी शीत है वैसी नहीं थी और पर्वत भी ज्वालामुखी जैसे थे। इस आदि देवने पृथिवीको सुदृढ और शांत बना दी और पर्वतोंको झाडी उत्पन्न करके रमणीय बनाया। ऐसा होनेके लिये कितने वर्ष गये होंगे इसका अनुमान विज्ञानवेत्ता ही कर सकते हैं। पर्वत प्रकुपित थे वे रमणीय हुए हैं। यह सब आदि देवने ही बनाया है। ऐसा कोई दूसरा नहीं कर सकता।

'अहिं हत्वा सप्त सिन्धून् अरिणात् (मं. ३)— अहिको मारकर सप्त सिन्धूको महापूर लाया। नदियां भरकर बहने लगी। मेघसे वृष्टि करके या बर्फको पिघलाकर नदियोंको बहाया।

'बलस्य अपधा गा उदजात्' (मं. ३)— बलने छिपाई गौवें उसके बाडेको तोडकर ऊपर लाया। सूर्यकी किरणें ये गायें हैं। उषःकालमें सूर्य किरणे ऊपर आने लगती हैं। तत्पूर्व वे नीचे रहती हैं। उत्तर ध्रुव प्रदेशमें यह दृश्य अधिक सुंदर दीखता है। उषःकाल ३० दिनतक रहता है। इस समय प्रकाश किरण और अन्धकारका युद्ध हो रहा है और अन्धेरेको नष्ट करके प्रकाशके किरण बाहर आ रहे हैं। यह एक युद्धसा ही होता है। गौवें यहां किरणें हैं।

'अश्मनः अन्तः अग्निं जजान' (मं. ३)— पत्थरोंमें अग्नि रखा है। दो पत्थर एक दूसरेपर मारनेसे अग्नि उत्पन्न होता है। दो मेघोंमें विद्युदग्नि चमकता है। यह सब आदि देवका सामर्थ्य है।

'समत्सु संवृक्' (मं. ३)— संग्रामोंमें शत्रुसेनाको घेरता है। वीरोंके अन्दरका सामर्थ्य इन्द्रसे प्राप्त हुआ सामर्थ्य है। इन्द्र ऐसा करता है।

'इमा विश्वा च्यवना कृतानि' (मं. ४)— ये सब विश्व घूमनेवाले बनाये ये इस आदि देवने ही बनाये हैं। यह सब विश्व अपने नियत गतिसे घूम रहा है वह आदि देवकी योजनाके अनुसार ही है।

'दासं वर्ण गुहा अधरं कः' (मं. ४)— दासको नीच स्थानमें रहनेवाला बनाया। दास वह है कि जो अपने अज्ञानके कारण नाशको प्राप्त होता है। इस कारण जो अज्ञानी होता है वह गुहामें रहता है। बडे घर बना कर रहना यह ज्ञानके बिना नहीं हो सकता। इसलिये दासको उसने नीचे रखा है। जो अज्ञानी होंगे वे नीचे ही रहेंगे।

'यः सूर्यं उषसं जजान, यः अपां नेता' (मं. ७)- जिसने सूर्य और उषाको बनाया, जो जलोंको चलाता है, बादलोंको लाता है।

'यः विश्वस्य प्रतिमानं बभूव' (मं. ९)— जो विश्वके लिये आदर्श नमूना हुआ है। जो **'अच्युतच्युत्'**- स्थिरोंको भी उखाडकर फेंक देता है, ऐसा जो सामर्थ्यवान् है।

'यः सप्तरश्मिः वृषभः तुविष्मान् सप्त सिन्धून् सर्तवे अवासृजत्' (मं. १३)— जो सात किरणोंवाला बलवान् और सामर्थ्यवान् है उसने सात नदियोंको बहनेके लिये छोड दिया। जिसके सामर्थ्यसे ये सात नदियां प्रवाहित हो रही हैं। मानव देहमें दो आंख, दो कान, दो नाक और एक त्वचा ये सात इंद्रियां भी सात आत्मशक्तिके प्रवाह हैं। आत्मा बलवान् और सामर्थ्यवान् है, उसमें सात किरण हैं और उससे ये सात प्रवाह चल रहे हैं। **'सप्त आपः स्वपतो लोकं इयुः तत्र जाग्रतो अस्वप्नजौ सत्रसदौ च देवौ॥** (यजु. ३४।५५)— सात नदियां सोनेके पश्चात् सोनेवाले आत्माके लोकमें जाती है उस समय दो देव- प्राण और अपान- जो इस यज्ञभूमिमें- इस शरीरमें- यज्ञके रक्षणके लिये दिनरात जागते हैं। ऐसा अन्यत्र सात प्रवाहोंका वर्णन आया है वह भी यहां देखने योग्य है। अध्यात्म क्षेत्रमें ये सात ज्ञानसरिताओंके प्रवाह आत्मिक बलसे चलते हैं।

'यः वज्रबाहुः द्यां आरोहन्तं रौहिणं अस्फुरत्' (मं. १३)— जिस वज्रधारी इन्द्रने द्युलोकपर चढनेवाले सूर्यको स्फुरण दिया है। उत्तेजित किया है।

'**द्यावा पृथिवी अस्मै नमेते**' (मं. १४)— द्युलोक और पृथिवी इस आदि देवके सामने नम्र होकर रहते हैं। तथा '**अस्य शुष्मात् पर्वता भयन्ते**' (मं. १४)— इस आदि देवके भयसे पर्वत भी भयभीत होते हैं, इसे डरकर रहते हैं।

उसपर श्रद्धा रखो

इस तरह इस आदि देवका वर्णन इस सूक्तमें है। इस आदि देवके विषयमें लोग पूछते हैं कि '**यं घोरं पृच्छन्ति स कुह इति**' (मं. ५) इस भयंकर शक्तिमान आदि देवके विषयमें पूछते हैं कि यह कहां रहता है ? ऐसा प्रश्न करना योग्य है, पर इस विषयमें श्रद्धा रहनी चाहिये। '**अस्मै श्रद् धत्त**' (मं. ५)— इस आदि देवपर श्रद्धा रखिये। श्रद्धा रखनेसे आपका वह भला करेगा। कई नास्तिक कहते हैं कि '**उत एनं आहुः एष न अस्ति इति**' (मं. ५)— इस आदि देवके विषयमें कई नास्तिक कहते हैं कि वह है हि नहीं। ऐसी अश्रद्धा रखना योग्य नहीं है क्योंकि. वह—

'**स रभ्रस्य, कृशस्य, नाधमानस्य, ब्रह्मणः कीरेः चोदिता**' (मं. ६)— वह निर्धन, कृश, प्रार्थना करनेवाले, ज्ञानी कविके लिये उत्तम प्रेरणा देनेवाला है। उसकी प्रेरणाएं चल रही हैं, उनको श्रद्धासे सुनना चाहिये।

'**स अर्यः**' (मं. ५); **जिगीवान्** (मं. ४)— वह श्रेष्ठ है और सदा विजयी है। '**विज इव पुष्टीः आ मिनाति**' (मं. ५)— पक्षी जैसा अपने लिये पुष्टिकारक अन्न प्राप्त करता है, उस तरह उसका भक्त उसकी शुभ प्रेरणासे अपनी उन्नतिके साधन प्राप्त करता है। '**श्वघ्नी इव लक्षं पुष्टानि आदत्**' (मं. ४)— व्याधके समान अपने लक्ष्यका वेध करे इससे वह अपने पोषक अन्न भरपूर प्राप्त करता है। अपना लक्ष्य ठीक तरह अपने सामने रखना चाहिये और तदर्थ प्रयत्न करना चाहिये।

वह '**अविता**' (मं. ६)— सच्चा संरक्षक है, यज्ञकर्ताका वह अवश्य संरक्षण करता है। इसलिये '**यस्य प्रदिशि ग्रामाः विश्वे रथासः अश्वासः गावः**' (मं. ७)— उसके आदेशमें सब गांव, रथ, घोडे और गौवें अर्थात् संपूर्ण विश्व रहता है। इसीलिये '**यं क्रन्दसी संयती विह्वयेते**' (मं. ८)- दोनों युद्धयमान् सेनाएं अपनी सहायतार्थ इसको बुलाती हैं, तथा '**परे अवरे अमित्राः (यं विह्वयन्ते)**' (मं. ८)— दूरके और पासके शत्रु जिसको अपनी सहायतार्थ बुलाते हैं। '**समानं रथं आतस्थिवांसा नाना हवन्ते**' (मं. ८)— समान रथपर बैठनेवाले नाना प्रकारके वीर युद्धमें सहायार्थ जिसको बुलाते हैं। '**युद्धमानाः यं अवसे हवन्ते**' (मं. ८)— युद्ध करनेवाले वीर अपनी सुरक्षाके लिये जिसकी प्रार्थना करते हैं। '**यस्मात् ऋते जनासः न विजयन्ते**' (मं. ९)- जिसकी सहायता न मिली, तो युद्धमें वीर विजयी नहीं होते। ऐसा उस आदिम देवका सामर्थ्य है। इस कारण उसपर विश्वास रखना योग्य है।

पापीयोंको वह मारता है

'**यः शर्वा शश्वतः महि एनः दधानान् अमन्यमानान् जघान**' (मं. १०)— जो बलवान हमेंशा पापी आचरण करनेवालोंको और अविश्वासियोंको मारता है। '**शर्धते शृध्यां न अनु ददाति**' (मं. १०)- घमंडीको घमंड नहीं सहता, घमंड उतार देता है। यह '**दस्योः हन्ता**' (मं. १०)— दुष्टोंका विनाशक है।

'**शंबरं अन्वविन्दत्, अहिं जघान**' (मं. ११); '**शंबरं पर्यतरत्**' (मं. १२)— शंबर और अहिको इसने मारा। इस तरह दुष्टोंको जो मारता है।

'**अस्य ब्रह्म, सोमः राधः वर्धनं**' (मं. १५)— इसका ज्ञान यज्ञ और हवि संवर्धन करते हैं, उपासक भक्तको बढाते हैं। '**स्तविष्यमाणः यः अस्मत् देवानां व्रता**' (मं. १६)— हमारे द्वारा स्तुति हुई तो हमारे अन्दरके सब देवोंके व्रतोंका पालन वह करता है। हमारे देहमें जो देव हैं उनसे हमारी उन्नतिमें आवश्यक सहायता प्राप्त होती है और उससे हमारी निःसंदेह उन्नति होती है। वह आदि देव '**स सत्यः किल असि**' (मं. १८)— वह सच्चा निःसंदेह है। इस कारण '**वयं ते विश्वहः प्रियासः सुवीरासः विदथं आ वदेम**' (मं. १८)— हम सब सर्वदा तेरे लिये प्रिय होकर रहेंगे और उत्तम वीर पुत्रपौत्रोंके साथ तुम्हारे ही गीत गाते रहेंगे।

उस आदि देवकी भक्ति करेंगे। इस तरह इस सूक्तमें उस आदि देवका वर्णन मनन करने योग्य है।

[सूक्त ३५]

(ऋषिः — १-१६ नोधाः (भरद्वाजः १) । देवता — इन्द्रः ।)

अस्मा इदु प्र तवसे तुराय प्रयो न हर्मि स्तोमं माहिनाय ।
ऋचीषमायाधिगव ओहमिन्द्राय ब्रह्माणि राततमा ॥ १ ॥
अस्मा इदु प्रय इव प्र यंसि भराम्याङ्गूषं बाधे सुवृक्ति ।
इन्द्राय हृदा मनसा मनीषा प्रत्नाय पत्ये धियो मर्जयन्त ॥ २ ॥
अस्मा इदु त्यमुपमं स्वर्षां भराम्याङ्गूषमास्येन ।
मंहिष्ठमच्छोक्तिभिर्मतीनां सुवृक्तिभिः सूरिं वावृधध्यै ॥ ३ ॥
अस्मा इदु स्तोमं सं हिनोमि रथं न तष्टेव तत्सिनाय ।
गिरश्च गिर्वाहसे सुवृक्तीन्द्राय विश्वमिन्वं मेधिराय ॥ ४ ॥
अस्मा इदु सप्तिमिव श्रवस्येन्द्रायार्कं जुह्वा३ समञ्जे ।
वीरं दानौकसं वन्दध्यै पुरां गूर्तश्रवसं दर्माणम् ॥ ५ ॥
अस्मा इदु त्वष्टा तक्षद्वज्रं स्वपस्तमं स्वर्य१ रणाय ।
वृत्रस्य चिद्विदद्येन मर्म तुजन्नीशानस्तुजता किये धाः ॥ ६ ॥

(सूक्त ३५)

(**अस्मै इत् उ तवसे तुराय**) इस बलवाले और स्फूर्ति देनेवाले और (**महिनाय**) महिमावाले इन्द्रके लिये (**प्रयः न**) हविष्यान्नके समान ये (**स्तोमं प्र हर्मि**) स्तोत्र मैं लाता हूं । (**ऋचीषामाय**) ऋचाओंमें जिसकी इच्छा की है (**अधिगवे**) जो आगे बढनेवाला है (**इन्द्राय**) उस इन्द्रके लिये यह (**ओहं**) स्तोत्र तथा (**राततमा ब्रह्माणि**) अर्पण करने योग्य ज्ञानवचन हैं ॥ १ ॥ (ऋ. १।६१।१)

(**अस्मै इन्द्राय**) इस इन्द्रके लिये (**इत् उ**) ही (**प्रय इव**) हविष्यान्नके समान (**आंगूषं प्र यंसि**) यह स्तोत्र अर्पण करता हूं । (**बाधे सुवृक्ति**) शत्रुको हटानेके लिये यह सुवचन रूपी स्तोत्र (**प्र भरामि**) भर देता हूं । (**प्रत्नाय प्रत्ये इन्द्राय**) पुरातन सनातन स्वामी इन्द्रके लिये ज्ञानी लोग (**हृदा मनसा मनीषा**) हृदय, मन और बुद्धिसे (**धियः मर्जयन्त**) अपनी बुद्धियोंको शुद्ध करते हैं ॥ २ ॥ (ऋ. १।६१।२)

(**अस्मै इत् उ**) इस इन्द्रके लिये (**त्यं उपमं स्वर्षां आंगूषं**) उस उत्तम दिव्य स्तोत्रको (**आस्येन भरामि**) अपने मुखसे भर देता हूं । (**मतीनां मंहिष्ठं सूरिं**) बुद्धिवानोंमें श्रेष्ठ विज्ञानकी (**वावृधध्यै**) प्रतिष्ठा बढानेके लिये (**सुवृक्तिभिः अच्छोक्तिभिः**) उत्तम दुःख निवारक उत्तम वचनोंसे यह सूक्त करता हूं ॥ ३ ॥ (ऋ. १।६१।३)

(**तष्टा इव रथं न**) सुतार जैसा रथ (**तत्सिनाय**) अपने स्वामीके लिये तैयार करता है (**तद् उ**) उस प्रकार (**गिर्वाहसे मेधिराय इन्द्राय**) स्तुतिके योग्य बुद्धिवान् इन्द्रके लिये (**सुवृक्ति विश्वं इन्वं स्तोमं**) दुःखोंको दूर करनेवाला सब सुखोंको प्राप्त करनेवाला स्तोत्र (**गिरः सं हिनोमि**) वाणीके द्वारा भेजता हूं ॥ ४ ॥ (ऋ. १।६१।४)

(**अस्मै इन्द्राय इत् इव**) इस इन्द्रके लिये (**अवस्या**) यशकी इच्छासे (**सप्तिं इव**) घोडेको रथमें जोतते हैं उस तरह (**अर्कं जुह्वा समञ्जे**) स्तोत्रको अपनी जिह्वासे प्रकट करता हूं । (**वीरं**) शूर (**दानौकसं**) दानके घर जैसे (**गूर्त-श्रवसं**) जिसका यश फैला है ऐसे (**पुरां दर्माणं**) शत्रुकी नगरियोंको तोडनेवाले इन्द्रको (**वन्दध्यै**) वन्दन करनेके लिये यह स्तोत्र करता हूं ॥ ५ ॥ (ऋ. १।६१।५)

(**अस्मा इत् उ**) इस इन्द्रके लिये ही (**रणाय**) युद्ध करनेके हेतुसे (**त्वष्टा**) त्वष्टा कारीगरने (**स्वर्यं स्वपस्तमं वज्रं तक्षत्**) दिव्य और बडा कार्य करनेवाले वज्रको बनाया ।

अस्येदु मातुः सवनेषु सद्यो महः पितुं पपिवां चार्वन्नाः ।
मुषायद्विष्णुः पचतं सहीयान्विध्यद्वराहं तिरो अद्रिमस्ता ॥ ७ ॥
अस्मा इदु ग्नाश्चिदेवपत्नीरिन्द्रायार्कमहिहत्य ऊचुः ।
परि द्यावापृथिवी जभ्र उर्वी नास्य ते महिमानं परि ष्टः ॥ ८ ॥
अस्येदेव प्र रिरिचे महित्वं दिवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात् ।
स्वराळिन्द्रो दम आ विश्वगूर्तः स्वरिरमत्रो ववक्षे रणाय ॥ ९ ॥
अस्येदेव शवसा शुषन्तं वि वृश्चद्वज्रेण वृत्रमिन्द्रः ।
गा न व्राणा अवनीरमुञ्चदभि श्रवो दावने सचेताः ॥ १० ॥
अस्येदु त्वेषसा रन्त सिन्धवः परि यद्वज्रेण सीमयच्छत् ।
ईशानकृद्दाशुषे दशस्यन्तुर्वीतये गाधं तुर्वणिः कः ॥ ११ ॥
अस्मा इदु प्र भरा तूतुजानो वृत्राय वज्रमीशानः कियेधाः
गोर्न पर्व वि रदा तिरश्ज्यन्नर्णांस्यपां चरध्यै ॥ १२ ॥

(कियेधाः ईशानः) अनेक भूमिकाओंमें रहनेवाले ईश्वर इन्द्रने (येन तुजता तुजन्) जिस वज्रको फेंकनेके समय (वृत्रस्य मर्म विदद्) वृत्रका मर्मस्थान पहचाना था॥६॥ (ऋ. १।६१।६)

(अस्य इद् उ मातुः सवनेषु) इसके माताके यज्ञोंमें (सद्यः) तत्काल ही (महः पितुं पविवान्) बडे सोम-रसको इसने पीया और (चारु अन्ना) उत्तम अन्न खाये । (सहीयान् विष्णुः) शक्तिमान् विष्णुने (पचतं मुषायत्) पकानेवालेको उठा लिया (अद्रिं अस्ता) वज्रको फेंकनेवालेने (वराहं तिरो विध्यत्) वराहको-मेघको बीचमें बींधा ॥ ७ ॥ (ऋ. १।६१।७)

(अस्मै इत् उ इन्द्राय) इसी इन्द्रके लिये (देवपत्नीः ग्नाः चित्) देवपत्नी स्त्रियोंने भी (अहिहत्ये अर्कं ऊचुः) अहिका वध करनेके समयमें मंत्र बोले । (द्यावा पृथिवी) द्युलोक और भूलोकपर (उर्वी परि जभ्रे) उसने बडा प्रहार किया, (ते अस्य महिमानं न परि ष्टः) वे दोनों लोक इसकी महिमाको घेर सकते नहीं ॥ ८ ॥ (ऋ. १।६१।८)

(अस्य इत् एव महित्वं) इसकी महिमा (दिवः पृथिव्याः अन्तरिक्षात्) द्यु, पृथिवी और अन्तरिक्षसे भी (परि प्र रिरिचे) बढ गई है । (विश्वगूर्तः स्वराड् इन्द्रः) सबके द्वारा स्तुति किया हुआ यह स्वराट् इन्द्र (दमे) अपने घरमें (स्वरिः अमत्रः) शक्तिमान और सामर्थ्यवान् होकर (रणाय आ ववक्षे) युद्धके लिये तैयार रहता है ॥ ९ ॥ (ऋ. १।६१।९)

(अस्य इत् एव शवसा) इसके अपने बलसे (वज्रेण) वज्रसे (शुषन्तं वृत्रं) डरते हुए वृत्रके (इन्द्रः वि वृश्चत्) इन्द्रने टुकडे कर डाले । (व्राणाः गाः न) रोकी हुई गौओंको जैसे खुली करते हैं उस तरह (सचेताः दावने) देनेमें चतुर उस इन्द्रने (श्रवः) यशके लिये (अवनीः अभि अमुञ्चत्) नदियोंको बहाया ॥ १० ॥ (ऋ. १।६१।१०)

(अस्य इत् उ त्वेषसा) इसीके बलसे (सिन्धवः रन्त) नदियां रमणीय बनी, (यत् वज्रेण सीं परि अयच्छत्) जब वज्रसे उनकी उन्होंने मर्यादा बनायी । (ईशानकृत्) राजाओंको बनानेवाले, (दाशुषे दशस्यन्) दाताको धन देनेवाले, (तुर्वणिः) त्वरासे कार्य करनेवाले इन्द्रने (तुर्वीतये गाधं कः) तुर्वीतिके लिये जलको गाध बनाया ॥ ११ ॥ (ऋ. १।६१।११)

(ईशानः कियेधाः) स्वामी और शक्तिमान् (तूतुजानः) तथा त्वरासे कार्य करनेवाला तू इन्द्र (अस्मा इत् उ वृत्राय) इसी वृत्रके ऊपर (वज्रं प्र भर) वज्रका प्रहार कर । (गोः न पर्व) गायके पर्वोंकी तरह (अपां चरध्यै)

अस्येदु प्र ब्रूहि पूर्व्याणि तुरस्य कर्माणि नव्य उक्थैः ।
युधे यदिष्णान आयुधान्यृघायमाणो निरिणाति शत्रून् ॥ १३ ॥
अस्येदु भिया गिरयश्च दृळ्हा द्यावा च भूमा जनुषस्तुजेते ।
उपो वेनस्य जोगुवान ओणिं सद्यो भुवद्वीर्याय नोधाः ॥ १४ ॥
अस्मा इदु त्यदनु दाय्येषामेको यद्वन्ने भूरेरीशानः ।
प्रैतशं सूर्ये पस्पृधानं सौवश्वये सुष्विमावदिन्द्रः ॥ १५ ॥
एवा ते हारियोजना सुवृक्तीन्द्र ब्रह्माणि गोतमासो अक्रन् ।
एषु विश्वपेशसं धियं धाः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ॥ १६ ॥ (२३१)

जलोंके प्रवाहित होनेके लिये (अर्णांसि इयन्) जलोंकी इच्छा करता हुआ तू (तिरश्चा वि रद) वज्रको तिरच्छा वृत्रपर मार ॥ १२ ॥ (ऋ. १।६१।१२)

(अस्य तुरस्य इत् उ) इस त्वरासे कार्य करनेवाले इन्द्रके (पूर्व्या कर्माणि) पूर्व समयके वीरताके कर्मोंकी (प्र ब्रूहि) स्तुति कर जो (उक्थैः नव्यः) स्तोत्रोंसे स्तुति करने योग्य है । (युधे यत् इष्णानः) युद्धमें जब इच्छा करता है तब (आयुधानि ऋघायमाणः) शस्त्रोंको प्रेरित करता है, तब वह (शत्रून् नि रिणाति) शत्रुओंको नीचे गिराता है ॥ १३ ॥ (ऋ. १।६१।१३)

(अस्य इत् उ भिया) इसके भयसे (गिरयः च दृळ्हा) पर्वत सुदृढ हुए और (द्यावा च भूमा) द्युलोक और भूलोक ये (जनुषः तुजेते) जन्मसे ही काँपते रहे हैं । (वेनस्य ओणिं) इस स्तुतियोग्यकी, रक्षाशक्तिकी (उप उ जोगुवानः) स्तुति करनेवाला (नोधाः सद्यः वीर्याय भुवत्) स्तोता तत्काल वीरताके कर्म करनेके लिये योग्य हुआ ॥ १४ ॥ (ऋ. १।६१।१४)

(अस्मै इत् उ) इसके लिये ही (एषां त्यत् अनुदायी) इनमेंसे वह एक स्तोत्र दिया गया, गाया गया । (भूरेः एकः ईशानः यत् वन्ने) बहुत धनके एक स्वामी इन्द्रने उसको चुना, स्वीकारा । (इन्द्रः) इन्द्रने (सुष्विं पतशं) उत्तम सोमरस निकालनेवाले एतश की (प्र आवत्) रक्षा की, (सौवश्वये सूर्ये पस्पृधानं) जब स्वश्वकी संतान सूर्यसे स्पर्धा कर रही थी ॥ १५ ॥ (ऋ. १।६१।१५)

हे (हारियोजन इन्द्र) घोडोंके जोडनेवाले इन्द्र ! (गोतमासः ते एव सुवृक्ति ब्रह्माणि अक्रन्) गोतमोंने तेरे लिये ही उत्तम भाववाली प्रार्थनाएं की हैं । (एषु विश्वपेशसं धियं आधाः) इनमें सब प्रकारकी अपनी बुद्धि डाल । (धियावसुः प्रातः मक्षु आजगम्यात्) बुद्धियोंसे बसनेवाला इन्द्र प्रातःकाल शीघ्र ही आ जाय ॥ १६ ॥ (ऋ. १।६१।१६)

इस सूक्तमें इन्द्रका वर्णन इन शब्दोंसे हुआ है—

१ तवसे तुराय महिनाय ऋचीषमाय अधिगवे इन्द्राय राततमा ब्रह्माणि प्र हर्मि (मं. १)— बलवान्, त्वरा करनेवाले, महिमायुक्त, मंत्रोंको चाहनेवाले, आगे बढनेवाले इन्द्रके लिये हम स्तोत्र करते हैं ।

२ प्रत्नाय पत्ये अस्मै इन्द्राय वाधे सुवृक्ति आंगूषं प्र भरामि (मं. २)— प्राचीन स्वामी ऐसे इन्द्रके लिये दुष्ट विचार दूर करनेके लिये स्तोत्र करता हूं । इस स्तोत्रके पाठसे पाठकके मनमें रहनेवाले सब दुष्ट विचार दूर हो सकते हैं और अच्छे विचार उसके मनमें आ सकते हैं । वेदके मंत्रोंमें इस तरह विचारोंको परिमार्जित करनेकी शक्ति है ।

३ हृदा मनसा मनीषा धियः मर्जयन्त (मं. २)- हृदय, मन, मनकी इच्छा और बुद्धियोंको वेदमंत्र परिशुद्ध करते हैं ।

४ मतीनां मंहिष्ठं सूरिं सुवृक्तिभिः अच्छोक्तिभिः वावृधध्यै (मं. ३)— बुद्धिवानोंमें श्रेष्ठ विद्वान् प्रभुकी दुःखनाशक उत्तम वचनोंसे हम प्रतिष्ठा बढाते हैं । वह स्तोत्र हमारे दुःखोंको दूर करता है और हमारे अन्दर अच्छे भाव उत्पन्न कर सकता है ।

५ तष्टा रथं तत्सिनाय न (मं. ४)— सुतार जैसा अपने स्वामीके लिये रथ बनाता है उस तरह हम (गिर्वा-

इसे मेधिराय इन्द्राय सुवृक्ति विश्वं इन्द्रं स्तोमं गिरः सं हिनोमि)— स्तुतियोग्य बुद्धिमान् इन्द्रके लिये उत्तम वचनोंवाला, सुख देनेवाला स्तोत्र हम अपनी भाषामें गाते हैं। ईशस्तुतिका स्तोत्र मनुष्यमें विचारोंकी शुद्धता करता है, इसलिये उसके पाठसे मनुष्यका लाभ होता है।

६ वीरं दानौकसं गूर्तश्रवसं पुरां दर्माणं वन्दध्यै अर्के जुह्वा समञ्जे (मं. ५)— वीर, दानी, यशस्वी, शत्रुके नगरोंको ताडनेवाले इन्द्रकी वन्दना करनेके लिये स्तोत्र हम अपनी जिह्वासे बोलते हैं। ऐसे सूक्त बोलनेसे हमारेमें शूरता, वीरता आती है।

७ कियेधाः ईशानः तुजता तुजन् वृत्रस्य मर्म विधत् (मं. ६)— अनेक स्थानोंमें रहनेवाला इन्द्र वज्रको शत्रुपर फेंकनेके समय उसका मर्मस्थान जानता है और उस मर्मस्थानपर अपना वज्र फेंकता है। इसी तरह शत्रुके मर्म-स्थानपर ही वीर अपना शस्त्र फेंके। शत्रुको मारनेकी यह विद्या है।

८ अद्रिं अस्ता वराहं तिरो विध्यत् (मं. ७)— वज्र फेंकनेवाला इन्द्र वराहरूपी शत्रुपर तिरछा अस्त्र फेंकता है। '**वराह**' (वह+आहर)— उदक ले चलनेवाला मेघ। शत्रु। शत्रुपर अपने शस्त्रास्त्र योग्य रीतिसे फेंकने चाहिये।

९ ते द्यावा पृथिवी अस्य महिमानं न परि स्तः (मं. ८)— द्युलोक तथा भूलोक इस प्रभुकी महिमाको घेर नहीं सकते। इसका महिमा द्यावा पृथिवीसे बहुत बडा है।

१० अस्य महित्वं दिवः अन्तरिक्षात् पृथिव्याः परि प्र रिरिचे—(मं.९) इस प्रभुकी महिमा द्यु, अन्तरिक्ष और पृथिवीसे बडा है।

११ शवसा इन्द्रः वज्रेण वृत्रं विवृश्चत् अवः अवनी अभि मुञ्चत् (मं. १०)— बलसे इन्द्रने वज्रसे वृत्रको काटा और अपना यश जलप्रवाहोंके रूपसे पृथ्वी पर छोडा।

मेघोंको विनष्ट किया और वृष्टिके द्वारा नदियां बहने लगीं। यही प्रभुका यश है। मेघके युद्धसे युद्ध करनेकी रीति यहां बताई है।

१२ अर[illegible] **सिन्धवः रन्त** (मं. ११)— इसके बलसे ना[illegible] गीं।

१३ ईशानकृत् दाशुषे दशस्यन्, तुर्वणिः तुर्वीतये गाधं कः (मं. १२)— शास्त्रोंको बनानेवाला प्रभु दाताको धन देता है, त्वरासे कार्य करनेवालेके लिये पार जाने-वाला जलप्रवाह बनाता है। अर्थात् पुरुषार्थ करनेवालेके लिये सर्वत्र सुगम मार्ग होता रहता है।

१४ अस्य तुरस्य पूर्व्या कर्माणि प्र ब्रूहि (मं. १३)— इस त्वरासे कार्य करनेवाले इन्द्रके पूर्व कर्मोंका वर्णन कर।

१५ युधे इष्णानः आयुधानि ऋघायमाणः शत्रून् नि रिणाति (मं. १३)— युद्धकी इच्छा करनेवाला वीर आयुधोंको शत्रुपर फेंकता हुआ शत्रुओंको गिराता है। युद्ध ऐसे करने चाहिये।

१६ वेनस्य ओर्णि उप जोगुवानः नोधा ऋषः वीर्याय भुवत् (मं. १४)— प्रशंसनीय वीरकी संरक्षण शक्तिका वर्णन करनेवाला वीर उसके स्तोत्र गानसे तत्काल वीरताके कर्म करनेके लिये योग्य होता है। वीर इन्द्रके काव्यका यह प्रभाव है, जो वह काव्य पढेगा वह स्वयं वीर बनकर वीरो-चित कार्य करने लगेगा।

१७ इन्द्रः सुश्विं एतशं प्र आवत् (मं. १५)— इन्द्र यज्ञकर्ताकी सुरक्षा करता है। वह यज्ञकर्ता '**सौवश्व्ये सूर्ये पस्पृधानः**' (मं. १५)— सूर्यके साथ स्पर्धा करता है। सूर्य जैसा नियमानुसार सब कार्य करता है वैसा जो कार्य करेगा उसकी सुरक्षा प्रभु अवश्य करेगा। सूर्य हमारा आदर्श है।

१८ गोतमासः ते सुवृक्ति ब्रह्माणि अक्रन् (मं. १६)— गौतमोंने तेरी उत्तम भाववाली स्तोत्रें की हैं। उनके गानेसे गानेवालेके मनमें उत्तम भाव स्थिर होते हैं और वह गायक श्रेष्ठ बनता है। इस तरह मंत्रपाठ मनुष्यको श्रेष्ठ बनानेवाला है।

१९ एषु विश्वपेशसं धियं धाः (मं. १६)— इन मंत्रोंमें अपनी सब कार्य करनेवाली बुद्धिको स्थिर रख। इससे मानव उन्नतिको प्राप्त होगा।

२० धियावसुः प्रातः मक्षु आजगम्यात् (मं. १६)— बुद्धियोंके साथ बसनेवाला प्रातः जलदी उठे और कार्य करनेके लिये आवे। कार्य शुरू करे। प्रातःकाल जलदी उठकर अपने कार्योंमें लगना चाहिये।

इस सूक्तमें अनेक बोध दिये हैं। पाठक उनको अपने जीवनमें धारण करें

[सूक्त ३६]

(ऋषिः — भरद्वाजः । देवता — इन्द्रः ।)

(ऋ. ६।२२।१-९)

य एक॒ इद्धव्य॑श्चर्षणी॒नामिन्द्रं॒ तं गी॒र्भिर॒भ्य॑र्च आ॒भिः ।
यः पत्य॑ते वृष॒भो वृष्ण्या॑वान्त्स॒त्यः सत्वा॑ पुरुमा॒यः सह॑स्वान् ॥ १ ॥
तमु॑ नः॒ पूर्वे॑ पि॒तरो॒ नव॑ग्वाः स॒प्त विप्रा॑सो अ॒भि वा॒जय॑न्तः ।
न॒क्ष॒द्दा॒भं तत॑ुरिं पर्वते॒ष्ठामद्रो॑घवाचं म॒तिभिः॒ शवि॑ष्ठम् ॥ २ ॥
तमी॑मह॒ इन्द्र॑मस्य रा॒यः पु॑रु॒वीर॑स्य नृ॒वतः॑ पुरु॒क्षोः ।
यो अस्कृ॑धोयुर॒जरः॒ स्व॑र्वा॒न्तमा भ॑र हरिवो माद॒यध्यै॑ ॥ ३ ॥

(सूक्त ३६)

(**यः इन्द्रः**) जो इन्द्र (**एक इत् आभिः गीर्भिः हव्यः**) एक ही निश्चयसे इन स्तुतियोंसे प्रार्थना करने योग्य है। (**तं इन्द्रं अभ्यर्चे**) उस इन्द्रकी अर्चना करता हूँ। (**यः वृषभः वृष्ण्यावान् सत्यः**) जो बल देनेवाला, स्वयं बलवान् और सत्यनिष्ठ है और (**सत्वा पुरुमायः सहस्वान् पत्यते**) अपने बलसे अनेक कौशल्यसे कर्म करनेवाला और शत्रुओंका पराजय करनेवाला है उस इन्द्रकी स्तुति की जाती है ॥ १ ॥

१ **एकः इन्द्रः इत् आभिः गीर्भिः हव्यः**— एक ही प्रभु इन स्तुतियोंसे प्रार्थना करने योग्य है।

२ **तं इन्द्रं अभ्यर्चे**— उस इन्द्रकी मैं अर्चना करता हूँ।

३ **यः वृषभः वृष्ण्यावान् सत्यः**— वही अद्वितीय बलवान् तथा सामर्थ्यशाली है और वही सत्य है।

४ **सत्वा पुरु-मायः सहस्वान् पत्यते**— वह सत्ववान् अनेक कौशल्योंसे युक्त, शत्रुका पराभव करनेवाला होनेके कारण वही सबका स्वामी हुआ है। वही स्तुति करने योग्य है।

मनुष्य बलवान्, सामर्थ्यवान्, सत्यनिष्ठ, सत्त्ववान् तथा अनेक कौशल्यके कार्य करनेवाला बने।

(**पूर्वे नव-ग्वाः**) पुरातन नव महिनेका यज्ञ करनेवाले (**सप्त विप्रासः**) सात बुद्धिमान् ज्ञानी (**वाजयन्तः**) हविष्यान्न सिद्ध करनेवाले (**नः पितरः**) हमारे पितरोंने (**नक्षत्-दाभं ततुरिं पर्वतेष्ठां**) शत्रुनाशक, तारक और पर्वतोंपर रहनेवाले, (**अद्रोघ-वाचं शविष्ठं तं उ**) द्रोहरहित भाषण करनेवाले, अतिशय बलवान् ऐसे उस इन्द्रकी (**मतिभिः अभि**) बुद्धिपूर्वक स्तुति की थी ॥ २ ॥

'**नक्षत्-दाभः**' आक्रमणकारी शत्रुको दबानेवाला। '**ततुरिः**' – तारक, तारणकर्ता। '**अ-द्रोह-वाक्**'– द्रोहरहित भाषण करनेवाला। '**नव-ग्वः**'– नौ गौएं जिसके पास हैं, नौ मास तक यज्ञ करनेवाला, नौ मासका हिसाब ऐसा है– ६ मास सूर्य प्रकाशके और प्रारंभिक उषा और अन्तिम सायंकालके प्रकाशके ३ मास मिलकर प्रकाशके ९ महिने उत्तर ध्रुवके पास होते हैं। ६ मास सूर्य किरणके हैं और ३ महिने उषःप्रकाश तथा सायं प्रकाशके बिना सूर्यके मिलकर ९ महिने यज्ञ करनेके समझनेवाले '**नव-ग्व**' कहलाते थे। इसी तरह '**दश-ग्व**' भी थे जो दस मास यज्ञ करते थे। अर्थात् इस पक्षके ऋषि और एक मास किंचित् प्रकाशका स्वीकार करते थे। और दस मास यज्ञ करते थे। '**नव-ग्व**' और '**दश-ग्व**' ये दो पक्ष थे यज्ञ विधिके संबंधमें। प्रकाशकी संभावना दस महिनेतक ही थी। इसके पश्चात् पूरे दो मास दीर्घतम-गाढ अन्धकार रहता था। इस कालमें पानीका प्रवाह बंद होना, बर्फसे भूमि आच्छादित होना आदि कष्ट होता था। यह असुर समय था। यह अयज्ञीय समय था। इस समय गौएं बाडेमें बंद रहती थीं। उषःकालके उदयके साथ गौएं खुली की जाती थीं। गौएं इसी समय चुरायीं जाती थीं, जिनको राजकर्मचारी चोरोंसे वापस लाते थे। ये सब बातें मन्त्रोंमें पाठक देख सकते हैं। '**नव-ग्वः**'– नौ गौवें जिनके पास हैं '**दश-ग्व**'– दस गौवें जिनके पास हैं।

'**नक्षत्-दाभं ततुरिं पर्वते-स्थां अद्रोघवाचं शविष्ठं तं मतिभिः अभि अर्च**— शत्रुको दबानेवाले, तारक, पर्वतपर रहनेवाले, द्रोहरहित भाषण करनेवाले, बलिष्ठ उस वीरकी बुद्धिपूर्वक उपासना कर। ऐसे वीरका सत्कार करना चाहिये।

(**पुरु-वीरस्य नृ-वतः पुरु-क्षोः अस्य**) बहुत वीरोंसे युक्त, बहुत सहायकोंसे युक्त, बहुत अन्नसे युक्त इस (**रायः**) धनको (**तं इन्द्रं ईमहे**) उस इन्द्रके पास हम

तन्नो वि वोचो यदि ते पुरा चिज्जरितारं आनशुः सुम्नमिन्द्र ।
कस्ते भागः किं वयो दुध्र खिद्वः पुरुहूत पुरूवसोऽसुरघ्नः ॥ ४ ॥
तं पृच्छन्ती वज्रहस्तं रथेष्ठामिन्द्रं वेपी वक्करी यस्य नू गीः ।
तुविग्राभं तुविकुर्मिं रभोदां गातुमिषे नक्षते तुम्रमच्छ ॥ ५ ॥
अया ह त्यं मायया वावृधानं मनोजुवा स्वतवः पर्वतेन ।
अच्युता चिद्वीलिता स्वोजो रुजो वि दृळ्हा धृषता विरप्शिन् ॥ ६ ॥

मांगते हैं। हे (हरिवः) अश्वयुक्त इन्द्र! (यः अस्कृधोयुः अजरः स्वर्वान्) जो धन अविनाशी, क्षीण न होनेवाला और सुख देनेवाला है। (तं मादयध्यै आ भर) वह धन हमें उपभोगके लिये भरपूर भर दे ॥ ३ ॥

१ तं इन्द्रं पुरुवीरस्य नृवतः पुरुक्षोः अस्य रायः ईमहे— उस प्रभुके पास हम ऐसा मांगते हैं कि जिसके साथ बहुत वीर रक्षणके लिये रहते हों, जो अनेक सहायकोंको अपने पास रखता है और जिसके साथ पर्याप्त अन्न होता है, अर्थात् हमें धन चाहिये, अन्न चाहिये, सहायक चाहिये और इनके संरक्षणके लिये संरक्षक वीर भी चाहिये।

२ वह धन (अ-स्कृधोयुः) विनष्ट न होनेवाला, (अ-जरः) क्षीण न होनेवाला और (स्वः-वान्) सुख बढानेवाला हो। इस धनसे (मादयध्यै) हमारा आनन्द बढता जाय। हमें किसी तरह दुःख न हो। ऐसा धन हमें चाहिये।

हे (इन्द्र) इन्द्र! (यदि ते जरितारः पुरा चित्) जो तेरे स्तोताओंने पहिले समयमें (सुम्नं आनशुः) सुख प्राप्त किया था (तत् नः वि वोचः) तो वह सुखका मार्ग हमें बताओ। हे (दुध्र) दुर्धर (खिद्वः) शत्रुओंका नाश करनेवाले (पुरु-हूत) बहुतोंसे बुलाये जानेवाले (पुरु-वसो) बहुत ऐश्वर्यवाले इन्द्र! (असुर-घ्नः ते) असुरोंका नाश करनेवाला तेरा (कः भागः, वयः किं) कर्तव्यका कौनसा भाग है तथा सामर्थ्यका भाग भी कौनसा है। वह भी कहो ॥ ४ ॥

१ ते जरितारः सु-म्नं आनशुः— तेरे स्तोतागण उत्तम मन प्राप्त करते हैं। प्रभुकी स्तुति गानेसे शोभन विचारवाला मन होता है।

२ दु-ध्र खित्-वः पुरु-हूत पुरु-वसो! असुर-घ्नः ते कः भागः? — शत्रुके लिये असह्य, शत्रुनाशक, बहुतोंसे प्रशंसित, बहुत धनवाले वीर! तेरे पास जो असुरोंका नाश करनेवाला शौर्यका भाग है वह कौनसा है? तुम जिस सामर्थ्यसे असुरोंका नाश करते हैं वह तुम्हारा सामर्थ्य कौनसा है?

३ ते वयः किं? — तेरी आयु क्या थी, तेरा सामर्थ्य कौन-सा था, जिससे तुम शत्रुका नाश करते हो?

मनुष्य अपना मन शुभ विचारवाला करे, शत्रुका नाश करनेका सामर्थ्य प्राप्त करे, बहुत धन कमावे, असुरोंका नाश करे।

(वज्रहस्तं रथेष्ठां तुविग्राभं तुविकुर्मिं रभोदां तं इन्द्रं) हाथमें वज्र धारण करनेवाले, रथारूढ बहुत शत्रुओंको पकडनेवाले, बहुत कर्म करनेवाले, बल देनेवाले उस इन्द्रकी (पृच्छन्ती वेपी) अर्चना करनेवाली यागादि कर्म करनेवाली (वक्करी गीः) गुणोंका वर्णन करनेवाली इस प्रकार स्तुति (यस्य) जिस यजमानकी होती है। वह (गातुं इषे) सुखको प्राप्त होता है और (तुम्रं अच्छ नक्षते) शत्रुका सामना करता है ॥ ५ ॥

१ वज्रहस्तं रथेष्ठां तुविग्राभं तुविकुर्मिं रभोदां तं इन्द्रं पृच्छन्ती वेपी वक्करी गीः यस्य, सः गातुं इषे, तुम्रं अच्छ नक्षते— वज्र हाथमें धारण करनेवाला, रथपर आरूढ होकर लडनेवाला, अनेक शत्रुओंको एक ही समयमें पकडनेवाला, अनेक प्रकारके कर्म करनेवाला, बल लडानेवाला वह इन्द्र है, इस तरह उस इन्द्रकी अर्चना जो करती है, तथा साथ साथ यज्ञ कर्मोंको करती है, ऐसी स्तुति जिसकी वाणी करती है, वह सुख प्राप्तिके मार्गसे आता है, और सुख प्राप्त करता है, और शत्रुका पराभव करनेका मार्ग भी ठीक तरह जानता है। तथा शत्रुका पराभव भी करता है।

उक्त प्रकारके गुणोंका ध्यान करनेसे वे गुण भक्तके अन्दर आते हैं, वह उक्त गुणोंसे युक्त होता है और उससे वह सुखी होता है और शत्रुको दूर करके निर्भय होता है। ईश्वरके गुणोंसे मनुष्यकी उन्नति इस तरह होती है।

हे (स्व-तवः) अपने निज बलसे युक्त इन्द्र! (मनो-जुवा पर्वतेन) मनोवेगी अपने आयुध वज्रसे (अया मायया ववृधानं त्यं) अपने कपट जालसे बढनेवाले उस शत्रुका तुमने (वि रुजः) विशेष प्रकारसे वध किया। हे

तं वो धिया नव्यस्या शविष्ठं प्रत्नं प्रत्नवत्परितंसयध्यै ।
स नो वक्षदनिमानः सुवह्नेन्द्रो विश्वान्यतिं दुर्गहाणि ॥ ७ ॥
आ जनाय द्रुह्वणे पार्थिवानि दिव्यानि दीपयोऽन्तरिक्षा ।
तपा वृषन्विश्वतः शोचिषा तान्ब्रह्मद्विषे शोचय क्षामपश्च ॥ ८ ॥
भुवो जनस्य दिव्यस्य राजा पार्थिवस्य जगतस्त्वेषसंदृक् ।
धिष्व वज्रं दक्षिण इन्द्र हस्ते विश्वा अजुर्य दयसे वि मायाः ॥ ९ ॥

(स्वोजः) अपनी शक्तिसे बलवान् (विरप्शिन्) महान् सामर्थ्यवान् इन्द्र ! तूने (अच्युता चित् वीळिता दृळहा) न हिलनेवाली, बलवाली और दृढ शत्रुकी पुरियोंको (धृषता) धर्षक शक्तिसे भग्न किया, तोड डाला ॥ ६ ॥

१ हे स्व-तवः ! मनोजुवा पर्वतेन अया ववृधानं त्यं वि रुजः— हे निज सामर्थ्यवान् इन्द्र ! मनके समान अत्यन्त वेगसे शत्रुपर प्रहार करनेवाले पर्ववान् वज्रसे, अपने कपटके कारण बढनेवाले उस शत्रुका तुमने नाश किया ।

' स्व-तवः ' अपने निज सामर्थ्यसे युक्त । **' पर्वत '— (पर्ववान्)**- जिसमें पर्व हैं ऐसा वज्र, जिसमें गाठें, नोकें तथा धाराएँ अनेक होती हैं वह वज्र । धारावाला शस्त्र ।

२ हे स्वोजः विरप्शिन् ! अच्युता वीळिता दृळहा धृषता विरुजः— हे अपने बलसे बलवान् और महाप्रतापी इन्द्र ! न हिलनेवाले सुस्थिर बलवान् और सुदृढ शत्रुके नागरिक कीलोंको अपने धर्षक सामर्थ्यसे तुमने तोड दिये ।

इस मन्त्रमें युद्धनीति कही है । शत्रुको अतितीक्ष्ण अस्त्रसे मारना योग्य है । तथा शत्रुकी नगरियोंको भी तोडना तथा अपने आधीन करना उचित है । इस मंत्रके पद वीरकी शक्तिका वर्णन करनेवाले हैं ।

(नव्यस्या धिया) इस अपूर्व बुद्धिपूर्वक की गई स्तुति द्वारा (शविष्ठं प्रत्नं वः तं) अत्यन्त बलवान् पुरातन उस इन्द्रका (प्रत्नवत् परितंसयध्यै) प्राचीन रीतिके अनुसार और यशका विस्तार करनेके लिये मैं प्रयत्न करता हूँ, इसको सुनकर (अनिमानः सुवह्वा) अपार महिमावाला, सुन्दर वाहनवाला (सः इन्द्रः) वह इन्द्र (विश्वानि दुर्गहाणि) समस्त संकटोंसे (नः अति वक्षत्) हमें पार ले जावे ॥ ७ ॥

१ नव्यसा धिया तं शविष्ठं प्रत्नं वः प्रत्नवत् परितंसयध्यै— अपूर्व और बुद्धिपूर्वक किये इस स्तोत्रसे उस बलवान् पुराणपुरुष इन्द्रका प्राचीनों जैसा यश फैलानेके लिये मैं काव्यगान करता हूँ ।

२ इस स्तोत्रको सुनकर ' अनिमानः सुवह्वा सः इन्द्रः विश्वानि दुर्गहाणि नः अति वक्षत् '— अपार महिमावाला और सुन्दर रथवाला वह इन्द्र सब प्रकारके संकटोंसे हमें बचाकर पार ले जावे ।

हे इन्द्र ! (द्रुह्वणे जनाय) सज्जनोंका द्रोह करनेवाले दुष्टोंको हटानेके लिये (पार्थिवानि दिव्यानि) पृथिवी और द्युलोक (अन्तरिक्षा) और अन्तरिक्षके स्थानोंको (आ दीपयः) अत्यन्त तप्त करे । हे (वृषन्) बलवान् देव ! (विश्वतः तान्) चारों ओरसे उन दुष्टोंको (शोचिषा तप) अपने तेजसे तपाओ । (ब्रह्मद्विषे क्षां च अपः) ज्ञानके द्वेषियोंको दग्ध करनेके लिये पृथिवी और जलोंको भी तपाओ ॥ ८ ॥

दुष्ट जहाँ होंगे वहाँसे उनको हटानेका प्रयत्न करना चाहिये । और उनको संतप्त करना चाहिये जिससे वे वहां न रहें ।

(त्वेषसंदृक् अ-जुर्य इन्द्र) दीप्तिमान्, जरारहित इन्द्र ! (दिव्यस्य जनस्य) दिव्य लोगोंका और (पार्थिवस्य जगतः) पृथ्वीपरके लोगोंका भी (राजा भुवः) तू राजा है । (दक्षिणे हस्ते वज्रं धीष्व) दाहिने हाथमें वज्रको धारण कर । और (विश्वाः मायाः वि दयसे) सब दुष्टोंके कपटजालोंका नाश कर ॥ ९ ॥

१ त्वेषसंदृक् अजुर्य इन्द्र— तेजःपुञ्ज दीखनेवाला जरा-क्षय आदि रहित इन्द्र है ।

२ दिव्यस्य जनस्य पार्थिवस्य जगतः राजा भुवः— द्युलोकमें तथा भूलोकमें रहनेवाले लोगोंका तू ही राजा हुआ है ।

३ दक्षिणे हस्ते वज्रं धीष्व— अपने दाहिने हाथमें वज्र धारण कर और उससे—

आ संयतमिन्द्र णः स्वस्तिं शत्रुतूर्याय बृहतीममृध्राम् ।
यया दासान्यार्याणि वृत्रा करो वज्रिन्त्सुतुका नाहुषाणि ॥ १० ॥
स नो नियुद्भिः पुरुहूत वेधो विश्ववाराभिरा गहि प्रयज्यो ।
न या अदेवो वरते न देव आभिर्याहि तूयमा मंद्रयद्रिक् ॥ ११ ॥ (१४२)

[सूक्त ३७]

(ऋषिः — १-११ वसिष्ठः । देवता — इन्द्रः ।)

यस्तिग्मशृङ्गो वृषभो न भीम एकः कृष्टीश्च्यावयति प्र विश्वाः ।
यः शश्वतो अदाशुषो गयस्य प्रयन्तासि सुष्वितराय वेदः ॥ १ ॥

---

४ विश्वाः मायाः वि दयसे— शत्रुके सब कपट-जालोंका नाश कर।

यह मंत्र राज्यशासनका उपदेश कर रहा है। अपने पास शस्त्रास्त्रोंका सुयोग्य संग्रह करना और शत्रुके कपट प्रयोगोंको दूर करना चाहिये।

हे (**इन्द्र**) इन्द्र! (**शत्रु-तुर्याय**) शत्रुओंके नाश करनेके लिये (**बृहतीं अ-मृध्रां**) बडी, अविनाशी, (**संयतं स्वस्तिं**) संयममें रहनेवाली और कल्याण करनेवाली संपत्ति (**नः आ भर**) हमें दे। हे (**वज्रिन्**) वज्रधारी इन्द्र! (**यया दासानि आर्याणि करः**) जिससे दासोंको आर्य बनाया जाता है और (**नाहुषाणि**) मनुष्योंके (**वृत्रा**) घेरनेवाले शत्रुओंको (**सुतुका**) सहजहीसे नष्ट-भ्रष्ट किया जाता है ॥ १० ॥

१ शत्रुतुर्याय बृहतीं अमृध्रां संयतं स्वस्तिं नः आ भर— शत्रुओंका नाश करनेके लिये विशाल, अविनाशी, स्वाधीन रहनेवाली और कल्याण करनेवाली संपत्ति हमें दे दो।

१ यया दासानि आर्याणि करः— जिससे दासोंके आर्य किये जाते हैं। '**दास**' — दास, सेवक, दस्यु, दुष्ट। इनको श्रेष्ठ आर्य नागरिक बनाया जाता है। राज्यशासन व्यवस्था और समाज व्यवस्था ऐसी चाहिये कि जिससे दुष्ट मनुष्य श्रेष्ठ आर्य नागरिक बन जाय।

३ नाहुषा वृत्रा सुतुका— मानवोंको घेरनेवाले शत्रु दूर किये जाये। वे फिरसे मनुष्योंको कष्ट न दे सकें ऐसी अवस्थामें वे पहुंचाये जाय।

दुष्टोंको सज्जन बनानेका भाव यहां है वह मनन करने योग्य है। प्रथम यह प्रयत्न किया जाय। उसमें यश न मिला तो दुष्टोंको दण्ड देना योग्य है।

हे (**पुरुहूत**) बहुत लोगोंसे बुलाने योग्य (**वेधः**) विधाता (**प्रयज्यो**) विशेष पूजनीय इन्द्र! (**सः**) तू (**विश्ववाराभिः नियुद्भिः**) सब लोगोंसे प्रशंसित अश्वोंसे (**नः आ गहि**) हमारे पास आओ। (**अदेवः**) असुर (**याः न वरते**) जिन घोडोंको रोक नहीं सकता, (**देवः न**) और देव भी नहीं रोक सकता, (**आभिः तूयं आ**) उन घोडोंसे शीघ्र ही (**मद्र्यद्रिक आ याहि**) मेरे पास आओ ॥ ११ ॥

रथके घोडे अच्छे हों। उत्तम शिक्षित हों जिससे उनकी उत्तम प्रशंसा होती रहे।

(सूक्त ३७)

(**यः तिग्मशृंगो वृषभो न भीमः**) जो तीखे सींगवाले बैलके समान भयंकर (**एकः विश्वाः कृष्टीः प्र च्यावयति**) अकेला ही सभी शत्रुओंको स्थानसे भ्रष्ट कर देता है। (**यः अदाशुषः शश्वतः गयस्य**) जो दान न देनेवालेके अनेक घरोंको भी स्थानभ्रष्ट कर देता है, वह (**सुष्वितराय वेदः प्रयंता असि**) तू यज्ञ करनेवालोंके लिये धन देता है ॥ १ ॥ (ऋ. ७।१९।१)

मानवधर्म— वीर तीक्ष्ण, सींगवाले बैलके समान बलवान् और भयंकर हो। वह सब शत्रुओंको स्थानभ्रष्ट करे। कोई शत्रु अपने स्थानपर स्थिर न रह सके। कंजूस तथा अनुदार लोगोंके स्थान भी स्थिर न हों। ऐसे लोग राष्ट्रमें बलवान् न होने पावें। जो यज्ञ करता है और दान देता है उसको पर्याप्त धन प्राप्त हो।

१ एकः भीमः विश्वाः कृष्टीः प्र च्यावयति— अकेला शूर वीर सब शत्रुओंको अपने स्थानसे उखाड देता है।

त्वं ह त्यदिन्द्र कुत्समावः शुश्रूषमाणस्तन्वा समर्ये ।
दासं यच्छुष्णं कुयवं न्यस्मा अरन्धय आर्जुनेयाय शिक्षन् ॥ २ ॥
त्वं धृष्णो धृषता वीतहव्यं प्रावो विश्वाभिरूतिभिः सुदासम् ।
प्र पौरुकुत्सिं त्रसदस्युमावः क्षेत्रसाता वृत्रहत्येषु पूरुम् ॥ ३ ॥
त्वं नृभिर्नृमणो देववीतौ भूरीणि वृत्रा हर्यश्व हंसि ।
त्वं नि दस्युं चुमुरिं धुनिं चास्वापयो दभीतये सुहन्तु ॥ ४ ॥

---

२ **अदाशुषः शश्वतः गयस्य च्यावयिता**— कंजूस-के घरोंको उखाडनेवाला वीर हो। कंजूस राष्ट्रमें न रहें।

३ **सुष्वितराय वेदः प्रयंता**— यज्ञकर्ताको धन दो। सब लोग यज्ञकर्ताको धनका दान करते रहें। धनके अभावके कारण यज्ञ बंद करना न पडे। राष्ट्रके दाता लोग राष्ट्रमें यज्ञ होते रहें इतना दान यज्ञकर्ताओंको देवे।

हे इन्द्र! (**त्वं ह त्यत् तन्वा शुश्रूषमाणः**) तूने तब अपने शरीरसे शुश्रूषा करके (**समर्ये कुत्सं आवः**) युद्धमें कुत्सकी सुरक्षा की। (**यत् आर्जुनेयाय अस्मै शिक्षन्**) उस अर्जुनीके पुत्र कुत्सको धन दिया और (**दासं शुष्णं कुवयं नि अरंधयः**) दास, शुष्ण और कुयवका नाश किया ॥ २ ॥ (ऋ. ७।१९।२)

'**दास**' उनको कहते हैं कि जो (**दस उपक्षये**) नाश करता है, घातपात करता है, लोगोंको नष्टभ्रष्ट करता है। समाजमें उपद्रव मचाता है। '**शुष्ण**' वह है कि जो लोगोंके धनों, भोगों और सुखोंका शोषण करता है। अपने सुखके लिये दूसरोंका नाश करता है। '**कु-यव**' वह है कि जो अपने बुरे सडे जौको अच्छे बताकर लोगोंको देता है। इससे खानेवालोंके स्वास्थ्यका बिगाड होता है। इनका समाजके हितके लिये नाश करना चाहिये।

१ **तन्वा शुश्रूषमाणः समर्ये कुत्सं आवः**— स्वयं अपने प्रयत्नसे युद्धमें अपने अनुयायी कुत्सकी रक्षा की। अपने जो अनुयायी होंगे उनकी सुरक्षा करनी चाहिये।

२ **दासं शुष्णं कुयवं निरंधयः**— घातपाती, शोषण-कर्ता तथा बुरे रोगोत्पादक धान्यका व्यवहार करनेवालोंका नाश कर। समाजसे इनको दूर कर।

३ **शिक्षन्**— इनको उत्तम शिक्षा दो। उनपर शुभ संस्कार कर, जिससे ये वैसे घातपातके कर्म न कर सकें ऐसा कर।

हे (**धृष्णोः**) शत्रुधर्षक इन्द्र! तूने (**धृषता वीतहव्यं सुदासं**) अपने बलसे अन्नका दान करनेवाले सुदासका (**विश्वाभिः ऊतिभिः प्र आवः**) अनेक संरक्षणके साधनोंसे संरक्षण किया। (**वृत्रहत्येषु क्षेत्रसाता**) वृत्र वध करनेके युद्धमें तथा क्षेत्रका बंटवारा करनेके समय (**पौरुकुत्सिं त्रसदस्युं पुरुं च प्र आवः**) पुरुकुत्सके पुत्र त्रसदस्यु तथा पुरुका संरक्षण किया ॥ ३ ॥ (ऋ. ७।१९।३)

१ **धृषता विश्वाभिः ऊतिभिः प्रावः**— शत्रुको उखाडनेके बलसे सब सुरक्षाके साधनों द्वारा प्रजाका संरक्षण करो। अर्थात् शत्रुको उखाड दो और संरक्षणके साधनोंसे प्रजाका संरक्षण करो।

हे (**नृ-मनः**) मनुष्योंके मनोंको आकर्षित करनेवाले इन्द्र! अथवा जिसका मन मनुष्योंका हित करनेमें लगा है ऐसे इन्द्र! (**देववीतौ त्वं नृभिः भूरीणि वृत्रा हंसि**) युद्धमें तू अपने वीरोंके द्वारा बहुत शत्रुओंको मारता है। हे (**हर्यश्व**) हरिद्वर्णके घोडोंवाले इन्द्र! तूने (**दभीतये सुहन्तु**) दभितिके लिये वज्रके द्वारा दस्यु, चुमुरि और धुनिको (**नि अस्वापयः**) सुलाया, मारा ॥ ४ ॥ (ऋ. ७।१९।४)

'**नृ-मनः**'– मनुष्योंका, प्रजाजनोंका हित करनेमें जिसका मन तत्पर रहता है, इसलिये प्रजाओंका मन जिसपर लगा है, जिसने प्रजाओंका मन आकर्षित किया है। '**देव-वीती**'– जहां देवोंका सत्कार होता है, व्यवहार करनेवाले जहां एकत्रित होते हैं, वीर जहां एकत्रित होते हैं। यज्ञ, सभा अथवा युद्ध। '**हर्यश्व**' लाल रंगके घोडे जिसके रथको जोते हैं। '**सु-हन्तु**'– जिससे शत्रु अच्छी तरह काटे जाते हैं वह शस्त्र, तीक्ष्ण धारावाला शस्त्र। '**दस्युः**'– घातपात करनेवाला। '**चु-मुरिः**'– चुभ चुभ कर, कष्ट दे देकर नाश करनेवाला, '**धुनिः**'– हिलानेवाला, भगानेवाला, जो अपने निवास स्थानमें सुखसे रहने नहीं देता, ये सब समाजके शत्रु हैं। इनको दूर

तव॑ च्यौ॒त्नानि॑ वज्रहस्त॒ तानि॒ नव॒ यत्पुरो॑ नव॒तिं च॑ स॒द्यः ।
नि॒वेश॑ने शतत॒मावि॑वेषीरह॑ञ्च वृ॒त्रं नमु॑चिमु॒ताह॑न् ॥ ५ ॥
सना॒ ता त॑ इन्द्र॒ भोज॑नानि रा॒तह॑व्याय दा॒शुषे॑ सु॒दासे॑ ।
वृष्णे॑ ते॒ हरी॒ वृष॑णा युनज्मि॒ व्यन्तु॒ ब्रह्मा॑णि पुरुशाक॒ वाज॑म् ॥ ६ ॥
मा ते॑ अ॒स्यां स॑हसाव॒न्परि॑ष्टावघा॒य भू॑म हरिवः परा॒दै ।
आ॒र्य॒स्व नोऽवृ॑केभि॒र्वरू॑थै॒स्तव॑ प्रि॒यास॑: सू॒रिषु॑ स्याम ॥ ७ ॥

करना चाहिये। **'द-भीतिः'**- दमनके कारण जो भयभीत हुआ है।

१ **नृ-मनः**— मनुष्योंका हित करनेके लिये अपना मन लगा। प्रजाका हित करनेमें तत्पर हो। प्रजाके मनोंको आकर्षित कर।

२ **देववीतौ नृभिः भूरीणि हंसि**— युद्धोंमें अपने वीरों द्वारा बहुत शत्रुओंका नाश कर।

३ **दस्युं चुमुरिं धुनिं नि अस्रापय**— घातपाती, कष्टदायी और घबराहट करानेवाले शत्रुओंका वध कर। ये फिरसे न उठें ऐसा कर।

४ **दभीतये भूरीणि हंसि**— दमनके कारण जो भयभीत हुआ है, उसकी सुरक्षा करनेके लिये बहुत दुष्टोंका वध कर। प्रजापर कोई दमन न करे ऐसा कर।

हे (**वज्रहस्त**) वज्रधारी इन्द्र ! (**तव तानि चौत्न्यानि**) तेरे वे प्रसिद्ध बल हैं कि जो (**यत् नव नवतिं च पुरः सद्यः**) तूने शत्रुके नौ और नव्वे नगरोंका भेदन तत्काल ही किया था और (**निवेशने शततमा अविवेषीः**) अपने ठहरनेके लिये जब सौवी नगरीमें तूने प्रवेश किया, उसी समय (**वृत्रं च अहन्**) वृत्रको तूने मारा और (**उत नमुचिं अहन्**) नमुचिको भी मारा ॥ ५ ॥

(ऋ. ७।१९।५)

मानवधर्म— शत्रुके किलों, प्राकारों तथा नगरोंका नाश करना चाहिये और उनपर अपना स्वामित्व स्थापन करना चाहिये। तथा उनमें जो नाना रूपोंमें कष्ट देनेवाले शत्रु रहते हों उनका नाश करना चाहिये।

'वज्र-हस्त'- हाथमें वज्र, तीक्ष्ण धारका शस्त्र धारण करनेवाला वीर। यह वीर **'नव च नवतिं पुरः'** शत्रुके न्यानवें नगरियोंका भेदन करता है, नगरीके बाहरके किलोंका तथा उनके प्राकारोंका नाश करके विजयी होकर, उन नगरियोंमें प्रवेश करता है और स्वयं सौवी नगरीमें प्रवेश करके वहां रहता है। **'वृत्र'** (**आवृणोति**) जो घेरकर हमला करता है और **'न-मुचि'** (**न मुञ्चति**) जो प्रयत्न करनेपर भी छोडता नहीं, किसी न किसी रूपमें वहां रहता है और कष्ट देता ही रहता है वह **'नमुचि'** है। ये सब शत्रु हैं। इनका नाश इन्द्र करता है।

हे इन्द्र ! (**ते रातहव्याय दाशुषे सुदासे**) तुझे हव्य देनेवाले दानी सुदासके लिये (**ता भोजनानि सना**) जो तूने भोगके योग्य धन दिये, वे सदा टिकनेवाले थे। हे (**पुरु-शाक**) बहुत शक्तिमान् वीर ! (**वृष्णे ते**) बलशाली ऐसे तुझे लानेके लिये रथको (**वृषणा हरी युनज्मि**) बलशाली घोडे जोतता हूं। (**ब्रह्माणि वाजं व्यन्तु**) स्तोत्र बलशाली ऐसे तेरे पास पहुंचें ॥ ६ ॥ (ऋ. ७।१९।६)

१ **दाशुषे सना भोजनानि**— दाताके लिये उपभोग लेने योग्य शाश्वत टिकनेवाले भोग दो।

२ **पुरु-शाकः**— बहुत शक्तिवान् बन। अपनेमें बहुत सामर्थ्य बढाओ। **'वृषा'**- बलवान्; बैल जैसा शक्तिवान्।

३ **वाजं ब्रह्माणि व्यन्तु**— बलवान् वीरके पास प्रशंसा के वर्णन पहुंचे। बलवान्की ही प्रशंसा होती रहे।

४ **वृषणा हरी रथे युनज्मि**— बलवान् घोडे मैं रथको जोतता हूं। रथमें बलवान् घोडे जोतने चाहिये।

हे (**सहसावन् हरिवः**) बलशाली और घोडोंवाले इन्द्र ! (**तव अस्यां परिष्टौ**) तेरी इस प्रशंसामें (**परादै अधाय मा भूम**) दूसरोंसे सहाय्य लेनेका पाप हमसे न हो। (**नः अवृकेभिः वरूथैः त्रायस्व**) हमें बाधा न करनेवाले संरक्षक साधनोंसे बचाओ। (**सूरिषु तव प्रियासः स्याम**) ज्ञानियोंमें हम तेरे अधिक प्रिय बनें ॥ ७ ॥

(ऋ. ७।१९।७)

प्रियास इत्ते मघवन्नभिष्टौ नरो मदेम शरणे सखायः ।
नि तुर्वशं नि याद्वं शिशीह्यतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन् ॥ ८ ॥
सद्यश्चिन्नु ते मघवन्नभिष्टौ नरः शंसन्त्युक्थशास उक्था ।
ये ते हवेभिर्वि पणीँरदाशन्नस्मान्वृणीष्व युज्याय तस्मै ॥ ९ ॥
एते स्तोमा नरां नृतम तुभ्यमस्मद्यञ्चो ददतो मघानि ।
तेषामिन्द्र वृत्रहत्ये शिवो भूः सखा च शूरोऽविता च नृणाम् ॥ १० ॥

मानवधर्म— मनुष्य शक्तिशाली बनें। दूसरेकी सहायता से ही सब कार्य करनेका पाप कोई न करें। अपनी शक्तिसे अपने कार्य करें। स्वावलंबनशील बनें। क्रूरता रहित संरक्षक साधनोंसे प्रजाजनोंका बचाव होता रहे और ज्ञानियोंमें भी अधिक विद्वान् बनकर प्रभुके प्यारे भक्त बनें।

१ **सहसावान्**— परिश्रम करनेकी शक्ति, शत्रुका पराभव करनेकी शक्ति ऐसी अनेक शक्तियोंसे युक्त। '**हरिवः**'— घोडे पास रखनेवाला वीर।

२ **परादै अघाय मा भूम**— दूसरोंसे सहायता लेकर ही अपने कार्य करनेकी स्थिति (**पर-आ-दा**) यह अत्यन्त निकृष्ट स्थिति है। अतः यह पापकी अवस्था है। ऐसी स्थितिमें हमें रहना न पडे। अर्थात् हम अपनी शक्तिसे ही अपने सब कार्य करें इतनी हमारी शक्ति बढ चुकी हो।

३ **अवृकेभिः वरूथैः त्रायस्व**— 'वृक्' क्रूरताका रूप है। अवृकसे क्रूरता रहित वीरताका बोध होता है। 'वरूथ' संरक्षणके साधनोंका नाम है। क्रूरता रहित रक्षाके साधनोंसे हमारा तारण हो।

४ **सूरिषु तव प्रियासः स्याम**— हम ज्ञानियोंमें अधिक ज्ञानी बनें और इस हमारे ज्ञानकी अधिकताके कारण हम प्रभुके प्यारे बनें।

हे (**मघवन्**) धनवान् इन्द्र! (**ते अभिष्टौ**) तेरी स्तुति करते हुए (**नरः सखायः प्रियासः शरणे इत् मदेम**) हम सब नेता समान कार्य करनेवाले तुम्हें प्रिय होकर अपने घरमें आनन्दसे रहें। (**अतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन्**) अतिथिसत्कार करनेवालेके लिये प्रशंसनीय सुखकी अवस्था निर्माण करके (**तुर्वशं याद्वं नि नि शिशीहि**) तुर्वश और याद्व इन शत्रुओंको अपने वशमें कर ॥ ८ ॥

(ऋ. ७।१९।८)

मानवधर्म— धनवान् बनो, क्योंकि धनसे सब कार्य होते हैं। अपने देशमें सुखसे रहो, अपने ही देशमें दुःख भोगनेका अवसर न आवे। अतिथिसत्कार करो। शत्रुओंको वशमें रखो। उनको बढने न दो।

१ **मघवन्**— धनवान् बनना चाहिये, क्योंकि धनसे ही सब कार्य होते हैं। '**मघवन्**' इन्द्र ही '**शतक्रतु**' सैकडों कार्य करनेवाला होता है।

२ **सखायः प्रियासः नरः शरणे मदेम**— हम सब एक कार्य करनेवाले, परस्पर प्रीति करनेवाले नेता, अग्रगामी होकर कार्यको संपन्न करनेवाले होकर अपने स्थानमें आनंदसे रहे। दुःखमें न रहें। हमें अपने देशमें दुःख भोगना न पडे।

३ **अतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन्**— अतिथिसत्कार करनेवालेका हित करो।

४ **तुर्वशं याद्वं नि शिशीहि**— त्वरासे वशमें होनेवाले तथा क्रूरकर्मा शत्रुओंको दूर करो। '**याद्वः**' (**यादोवान्**) जलोंमें जिसका स्थान है, द्वीपमें रहनेवाला शत्रु।

हे (**मघवन्**) धनवान् इन्द्र! (**ते नु अभिष्टौ**) तेरी स्तुति करनेके कार्यमें (**उक्थशासः ये नरः**) स्तोत्र बोलनेवाले जो नेता (**सद्यः चित् उक्था शंसति**) तत्काल ही स्तोत्रोंको बोलते हैं। (**ते हवेभिः पणीन् वि अदाशन्**) उन्होंने अपने दानोंसे पण्य करनेवालोंको भी दान करनेवाले बना दिया है। (**तस्मै युज्याय अस्मान् वृणीष्व**) उस मित्रताके लिये हमारा स्वीकार कर ॥ ९ ॥ (ऋ. ७।१९।९)

'**पणी**' वे होते हैं कि जो पण्य करते हैं। वस्तुका क्रय-विक्रय करते हैं। व्यापार-व्यवहार करनेवाले ये होते हैं। ये अपना धन बढाना चाहते हैं। ऐसे लोगोंको भी (**पणीन् वि अदाशन्**) पण्य व्यवहार करनेवालोंको भी दाता बना दिया। यह परिणाम स्तुतिके काव्य पढनेसे हुआ। इसलिये इन्द्रकी स्तुति करनी तथा पढनी चाहिये।

हे (**नृतम इन्द्र**) नेताओंमें अत्यंत श्रेष्ठ इन्द्र! (**तुभ्यं एते स्तोमाः मघानि ददतः**) तुम्हें ये संघ धन देते हुए (**अस्मद्यं चः**) हमारी ओर ला रहे हैं। (**तेषां वृत्रहत्ये**

नू इन्द्र शूर स्तवमान ऊती ब्रह्मजूतस्तन्वा वावृधस्व ।
उप नो वाजान्मिमीह्युप स्तीन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ११ ॥ (२५३)

॥ इति चतुर्थोऽनुवाकः ॥ ४ ॥

[सूक्त ३८]

(ऋषिः — १-३ हरिम्बिठिः ४-६ मधुच्छन्दाः । देवता — इन्द्रः ।)

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम् । एदं बर्हिः सदो मम ॥ १ ॥
आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना । उप ब्रह्माणि नः शृणु ॥ २ ॥

शिवः भूः) उनके लिये शत्रुका नाश करनेके युद्धमें तुम कल्याण करनेवाला हो, तथा उन (**नृणां सखा च शूरः अविता च**) मानवोंका मित्र और शूर संरक्षक हो ॥ १० ॥ (ऋ. ९।१९।१०)

मानवधर्म— मनुष्योंमें श्रेष्ठ बन । धनका दान कर । युद्धके समय मनुष्योंकी सहायता करके उनका कल्याण कर । मनुष्योंका संरक्षण कर और इसके लिये शूर बन तथा मनुष्योंके साथ मित्रवत् व्यवहार कर ।

१ **नृतमः**— नेताओंमें श्रेष्ठ नेता बन ।

२ **मघानि ददतः अस्मभ्यं चः**— धन देते हुए ये नेता हमारी ओर आ रहे हैं । हमें भी ये धन देंगे और उस धनसे हम यज्ञ करेंगे ।

३ **वृत्रहत्ये तेषां शिवः भूः**— युद्धमें उन दाताओंका कल्याण हो ऐसा करो । युद्धमें उनका नाश न हो ।

४ **नृणां सखा शूरः अविता च भूः**— मानवोंका मित्र तथा शूर संरक्षक हो ।

हे शूर इन्द्र ! (**स्तवमानः ब्रह्मजूतः**) स्तुतिसे और ज्ञानसे प्रेरित होकर (**तन्वा ऊती वावृधस्व**) अपने शरीरसे और संरक्षण शक्तिसे बढता जा । (**नः वाजान् उप मिमीहि**) हमें अन्न और बल दो । (**यूयं नः सदा स्वस्तिभिः पात**) आप हमें सदा कल्याणोंसे सुरक्षित करो ॥ ११ ॥ (ऋ. ७।१९।११)

मानवधर्म— मनुष्य शूर हों । देवताकी स्तुतिसे और ज्ञान विज्ञानसे उनको प्रशस्ततम कर्म करनेकी प्रेरणा मिलती रहें । शरीर स्वस्थ, नीरोग और बलवान् बने और उनमें संरक्षण करनेका सामर्थ्य बढे । अन्न ऐसे प्राप्त हों कि जिससे बल बढे । रहनेके लिये उत्तम घर हों । मानवोंका कल्याण हो और उनका संरक्षण भी हो ।

१ **शूरः**— नेता शूर हो, भीरु न हो ।

२ **स्तवमानः ब्रह्मजूतः**— स्तुति और ज्ञानसे उनको प्रेरणा मिले । प्रशस्त कार्य करनेकी प्रेरणा उसको (**स्तव**) ईश स्तुतिसे मिले । ईश्वर स्तुतिसे मैं ईश्वर जैसा बनूंगा इस भावसे सत्कर्मकी प्रेरणा मिलती है । वैसी प्रेरणा मिले ।

३ **तन्वा ऊती वावृधस्व**— अपना शरीर और अपने अन्दरकी संरक्षण करनेकी शक्ति बढायी जाय । देवताकी स्तुति और ज्ञानसे अपने शरीरके संवर्धनके उपाय तथा संरक्षणकी शक्ति बढानेके उपाय विदित होते हैं ।

४ **वाजान् नः उप मिमीहि**— अन्न और बल हमें प्राप्त हों । उत्तम बल बढानेवाले अन्न हमें मिलें और अन्न मिलनेपर उससे हमारे बल बढें । अन्नका उपयोग ऐसा किया जावे कि शरीरका बल बढे पर कभी न घटे ।

५ **स्तीन् उप मिमीहि**— रहनेके लिये घर हों । विना घरके जीवित रहना पडे ऐसा कभी न हो ।

६ **स्वस्तिभिः न पात**— कल्याण करनेवाले साधनोंसे हमारी सुरक्षा हो । ऐसा न हो कि हम सुरक्षित तो हों पर हमारी हानि ही हानि होती जाय । तात्पर्य हमारा कल्याण भी हो और हमारा उत्तम संरक्षण भी हो ।

॥ यहां चतुर्थ अनुवाक समाप्त ॥

(सूक्त ३८)

हे इन्द्र ! (**आ याहि**) आ, (**ते हि सुषुमा**) हमने तेरे लिये सोमरस निचोडा है । (**इमं सोमं पिब**) इस सोमको पी । (**मम इदं बर्हिः**) मेरा यह आसन है, (**आ सदः**) इस पर बैठ ॥ १ ॥ (ऋ. ८।१७।१)

हे इन्द्र ! (**केशिना**) बालोंवाले (**ब्रह्मयुजा हरी**) इशारेसे जुडनेवाले दो घोडे (**त्वा आ वहतां**) तुझे यहां ले आवें । (**नः ब्रह्माणि उप शृणु**) हमारी प्रार्थनाओंको सुन ॥ २ ॥ (ऋ. ८।१७।२)

ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः । सुतावन्तो हवामहे ॥ ३ ॥
इन्द्रमिद्राथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः । इन्द्रं वाणीरनूषत ॥ ४ ॥
इन्द्र इद्धर्योः सचा संमिश्ल आ वचोयुजा । इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥ ५ ॥
इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद्दिवि । वि गोभिरद्रिमैरयत् ॥ ६ ॥ (२५९)

[सूक्त ३९]

(ऋषिः — १ मधुच्छन्दाः, २-५ गोपूक्त्यश्वसूक्तिनौ । देवता — इन्द्रः ।)

इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः । अस्माकमस्तु केवलः ॥ १ ॥
व्यं१न्तरिक्षमतिरन्मदे सोमस्य रोचना । इन्द्रो यदभिनद्बलम् ॥ २ ॥
उद्गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन्गुहा सतीः । अर्वाञ्चं नुनुदे बलम् ॥ ३ ॥
इन्द्रेण रोचना दिवो दृळ्हानि दंहितानि च । स्थिराणि न पराणुदे ॥ ४ ॥
अपामूर्मिर्मदन्निव स्तोम इन्द्राजिरायते । वि ते मदा अराजिषुः ॥ ५ ॥ (२६४)

हे इन्द्र ! (**वयं सोमिनः ब्रह्माणः**) हम सोम लानेवाले ब्राह्मण (**सुतावन्तः**) सोमरस निकालनेपर (**त्वा सोमपां युजा हवामहे**) तुझ सोम पीनेवालेको अपने वज्रके साथ बुलाते हैं ॥ ३ ॥ (ऋ. ८।१७।२)

कोई अतिथि आया तो (**इदं बर्हिः** । मं. १) यह आसन आपके लिये है ऐसा बोलकर उसको बैठनेके लिये आसन देना चाहिये ।

'केशिना ब्रह्मयुजा हरी' (मं. २)— लंबे बालवाले इशारेसे रथके साथ जुडनेवाले घोडे हों । घोडे ऐसे सिखाये जांय ।

(**गाथिनः इन्द्रं इत्**) गाथा पढनेवाले इन्द्रका ही (**बृहत्**) ऊंचे स्वरसे गान करते हैं । (**अर्किणः अर्केभिः इन्द्रं**) मंत्रपाठ करनेवाले सूक्तोंसे इन्द्रकी ही स्तुति गाते हैं । (**वाणीः इन्द्रं अनूषत**) हमारी वाणियां इन्द्रकी ही स्तुति गाती हैं ॥ ४ ॥ (ऋ. १।७।१)

(**इन्द्रो वज्री हिरण्ययः**) इन्द्र वज्र धारण करता है और सुनहरी पोषाख करता है, वह इन्द्र (**वचोयुजा आ संमिश्लः**) वाणीके साथ जुडनेवाले (**हर्योः सचा इत्**) दो घोडोंका साथी ही है ॥ ५ ॥ (ऋ. १।७।२)

इन्द्रने (**दीर्घाय चक्षसे**) दूरका देखनेके लिये (**सूर्यं दिवि आ रोहयत्**) सूर्यको द्युलोकमें चढाया है और (**गोभिः**) गौवोंसे, किरणोंसे (**अद्रिं वि ऐरयत्**) पर्वतको-मेघको दूर किया ॥ ६ ॥ (ऋ. १।७।३)

१ **इन्द्रः वज्री हिरण्ययः**— इन्द्र वज्र धारण करता है और सुवर्णके भूषण धारण करता है, या सुवर्ण जैसा चमकनेवाला पोषाख करता है ।

२ **इन्द्रः हर्योः सचा**— इन्द्र घोडोंका मित्र है, घोडोंके साथ रहनेवाला है । **'वचोयुजा आ संमिश्लः'**– इशारेसे जुडनेवाले घोडोंके साथ वह रहता है ।

घोडे पालनेवाले घोडोंको अपने साथी समझें । घोडोंको इतने शिक्षित करें कि जिससे वे इशारेसे रथके साथ जुड जांय ।

३ **इन्द्रः दीर्घाय चक्षसे सूर्यं दिवि आ रोहयत्**– इन्द्रने दूरका दृश्य देखनेके लिये सूर्यको द्युलोकमें ऊपर चढाया है । इससे सूर्यसे इन्द्र पृथक् है यह सिद्ध होता है । इन्द्रने सूर्यको द्युलोकमें स्थापित किया है । सूर्यसे इन्द्र अधिक शक्तिवान् है ।

४ **गोभिः अद्रिं ऐरयत्**— किरणोंसे मेघको दूर किया । **गौ**– किरण, जल, भूमि । **अद्रि**– पर्वत, वज्र, मेघ । इस मंत्रभागका अर्थ समझना विचाराधीन है । सहज समझने योग्य यह मंत्र नहीं है ।

(सूक्त ३९)

(**विश्वतः परि जनेभ्यः**) सब ओरसे लोगोंसे पृथक् करके (**वः इन्द्रं हवामहे**) तुम्हारे लिये हम बुलाते हैं । (**केवलः अस्माकं अस्तु**) वह केवल हमारा होकर रहे ॥ १ ॥ (ऋ. १।७।१०)

२-५ (२६१-२६४) मंत्र अथर्व. २०।२८।१-४ देखो ।

[सूक्त ४०]

(ऋषिः — १-३ मधुच्छन्दाः। देवता — इन्द्रः मरुतश्च, २-३ मरुतः।)

इन्द्रेण॒ सं हि दृक्ष॑से संजग्मा॒नो अबि॑भ्युषा। म॒न्दू स॒मा॒नव॑र्चसा ॥ १ ॥
अन॒व॒द्यै॒र॒भि॒द्यु॒भि॒र्म॒खः सह॑स्वदर्चति। ग॒णैरिन्द्र॑स्य॒ काम्यैः ॥ २ ॥
आद॑ह॒ स्व॒धाम॒नु पुन॑र्गर्भ॒त्वमे॑रिरे। दधा॑ना॒ नाम॑ य॒ज्ञिय॑म् ॥ ३ ॥ (२६७)

[सूक्त ४१]

(ऋषिः — १-३ गोतमः। देवता — इन्द्रः।)

इन्द्रो॑ दधी॒चो अ॒स्थभि॑र्वृ॒त्राण्यप्र॑तिष्कुतः। ज॒घान॑ नव॒तीर्नव॑ ॥ १ ॥
इ॒च्छन्नश्व॑स्य॒ यच्छिरः॑ पर्व॒ते॒ष्वप॑श्रितम्। तद्वि॑दच्छर्य॒णाव॑ति ॥ २ ॥
अत्राह॒ गोर॑मन्यत॒ नाम॒ त्वष्टु॑रपी॒च्य॑म्। इ॒त्था च॒न्द्रम॑सो गृ॒हे ॥ ३ ॥ (२७०)

(सूक्त ४०)

(**अबिभ्युषा इन्द्रेण संजग्मानः**) निडर इन्द्रके साथ जानेवाला (**सं दृक्षसे हि**) तू दीखता है। (**मन्दू समानवर्चसा**) आनन्ददायक और समान कान्तिवाले तुम सब हो ॥ १ ॥ (ऋ. १।६।७)

(**अनवद्यैः**) दोष रहित (**अभिद्युभिः**) द्युलोककी ओर देखनेवाले (**इन्द्रस्य काम्यैः गणैः**) इन्द्रके प्रिय गणोंके साथ (**मखः सहस्वत् अर्चति**) यज्ञ बल बढानेवाले गीत गाता है। यज्ञमें बल बढानेवाले स्तोत्र गाये जाते हैं ॥ २ ॥ (ऋ. १।६।८)

(**आत् अह पुनः**) इसके नंतर पुनः (**स्वधां अनु**) अपनी धारण शक्तिके अनुसार वे (**यज्ञियं नाम दधानाः**) पूज्य नाम धारण करते हुए (**गर्भत्वं एरिरे**) गर्भ भावको प्राप्त हुए ॥ ३ ॥ (ऋ. १।६।४)

१ **अबिभ्युषा इन्द्रेण**— निडर इन्द्र है। वैसा निडर वीर हो।

२ **अबिभ्युषा संजग्मानः**— निडर वीरके साथ जाना योग्य है।

३ **मन्दू समानवर्चसा**– हर्षित और तेजस्वी वीर हों।

४ **अवद्यैः अभिद्युभिः गणैः**— निर्दोष और तेजस्वी मित्रगणोंके साथ रहना योग्य है।

५ **मखः सहस्वत् अर्चति**— यज्ञमें बलयुक्त गीत गाये जाते हैं।

६ **यज्ञियं नाम दधानाः**— पवित्र नाम धारण करके रहना उत्तम है।

यह मरुतोंका वर्णन है। मरुत् इन्द्रके साथ रहते हैं और वे युद्धादि करते हैं।

(सूक्त ४१)

(**इन्द्रः अप्रतिष्कृतः**) जिसका कोई सामना नहीं कर सकता ऐसे इन्द्रने (**दधीचो अस्थिभिः**) दधीचकी हड्डीयोंसे (**नवतीः नव वृत्राणि जघान**) निनानवे वृत्रोंको मारा ॥ १ ॥ (ऋ. १।८४।१३)

(**पर्वतेषु अपश्रितं**) पर्वतोंमें पडा हुआ (**यत् अश्वस्य शिरः इच्छन्**) जो घोडेका सिर था उसको प्राप्त करना चाहा (**तत् शर्यणावति विदत्**) उसको शर्यणावतिमें पाया ॥ २ ॥ (ऋ. १।८४।१४)

(**इत्था चन्द्रमसो गृहे**) इस तरह चन्द्रमाके घरमें (**अत्र अह**) यहीं (**त्वष्टुः अपीच्यं गोः नाम**) त्वष्टाकी-सूर्यकी गौ (**किरण**) को (**अमन्वत**) वह है ऐसा माना ॥ ३ ॥ (ऋ. १।८४।१५)

१ दधीचके हड्डीयोंका वज्र बनाकर निनानवे वृत्रोंको मारा। '**दधीच**' (दधि-अच्) दही जिससे होता है वह दूध है। दूध पीनेवालेकी हड्डी सैकडा निनानवे रोगोंको दूर करती है। दूध पीनेवालेकी हड्डीका चूर्ण औषधके रूपमें काम आता है। निनानवे वृत्र ये निःसंदेह मेघ नहीं हैं। हड्डीसे भी वज्र बन नहीं

[सूक्त ४२]

(ऋषिः — १-३ कुरुस्तुतिः । देवता — इन्द्रः ।)

वाचमष्टापदीमहं नवस्रक्तिमृतस्पृशम् । इन्द्रात्परि तन्वं मम े ॥ १ ॥
अनु त्वा रोदसी उभे क्रक्षमाणमकृपेताम् । इन्द्र यद्दस्युहाभवः ॥ २ ॥
उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वी शिप्रे अवेपयः । सोममिन्द्र चमू सुतम् ॥ ३ ॥ (१७३)

[सूक्त ४३]

(ऋषिः — १-३ भिशोकः । देवता — इन्द्रः ।)

भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः । वसु स्पार्हं तदा भर ॥ १ ॥
यद्वीलावि॑न्द्र यत्स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम् । वसु स्पार्हं तदा भर ॥ २ ॥
यस्य ते विश्वमानुषो भूरेर्दत्तस्य वेदति । वसु स्पार्हं तदा भर ॥ ३ ॥ (१७६)

सकता । वह औषध चिकित्सा विषयक मंत्र है। वैद्योंको इसका विचार करना चाहिये।

२ पर्वतोंमें पडा घोडेका सिर शर्यणावतिमें मिला । यह भी वैसी ही गूढ विद्या है। इसकी खोज होनी चाहिये।

३ चन्द्रमसः गृहे त्वष्टुः अपीच्यं गोः नाम अमन्वत— चन्द्रमाके घर त्वष्टाका दूर गया किरण मिल गया। सूर्यका किरण चन्द्रमामें पहुंचता है और वह किरण चन्द्रमाके घर मिलता है ।

यह सूक्त गूढ अर्थ बतानेवाला है अतः इसके विधानकी खोज विशेष होनी अत्यंत आवश्यक है ।

(सूक्त ४२)

(**अष्टापदीं**) आठ पदवाली, (**नव-स्रक्तिं**) नौ कोनोंवाली (**ऋत-स्पृशं**) सत्यको स्पर्श करनेवाली (**तन्वं वाचं**) सूक्ष्म वाणीको (**इन्द्रात् परि ममे**) इन्द्रसे सब ओरसे मापा है ॥ १ ॥ (ऋ. ८।७६।१२)

हे **इन्द्र** ! (**यत् दस्युहा अभवः**) जब तू दस्युओंका मारनेवाला हुआ तब (**उभे रोदसी**) दोनों द्यु और भूलोक (**त्वा**) तुझ (**क्रक्षमाणं अनु अकृपेतां**) कडक वीरके पीछे कांप गये ॥ २ ॥ (ऋ. ८।७६।११)

हे इन्द्र ! (**सुतं सोमं चमू पीत्वी**) सोमरसको चमसोंमें डाले हुएको पीकर (**ओजसा सह उत्तिष्ठन्**) बलके साथ उठते हुए तुमने (**शिप्रे अवेपयः**) दोनों हनुओंको कंपाया ॥ ३ ॥ (ऋ. ८।७६।१०)

१ अष्टापदीं नव-स्रक्तिं ऋतस्पृशं वाचं परि ममे— आठ पादवाली, नौ प्रकारकी रचनावाली, सत्य वर्णन करनेवाली कवितारूपी वाणी—काव्य रचनाको मापकर बनाता हूं। कविता इस तरह योग्य मापसे बनानी चाहिये। चरणोंमें अक्षर, ह्रस्व-दीर्घ मात्रा, चरणोंकी संख्या इनका विचार पद्यरचनामें करना आवश्यक होता है ।

२ यत् दस्युहा अभवः उभे रोदसी त्वा क्रक्षमाणं अनु कृपेतां— जब इन्द्र दस्युओंको मारने लगा, उस समय उसके पराक्रमको देखकर द्यावा पृथिवी कांपने लगी । शूर वीरको पराक्रम इस तरह करने चाहिये ।

३ सुतं सोमं चमू पीत्वी ओजसा सह उत्तिष्ठन् शिप्रे अवेपयः— सोमरस चमसोंसे पीकर जब इन्द्र बलसे उठने लगा तब उसके दोनों ऊपर और नीचेके हनु कांपने लगे।

'**शिप्र**' का अर्थ 'हनु और साफा' ये दो हैं । यहां '**उभे शिप्रे**' दोनों शिप्र हैं, इस कारण यहां 'शिप्र' का अर्थ हनु, जबडा हैं । वेगसे उठनेसे जबडा या हनु कांपते हैं ।

(सूक्त ४३)

(**विश्वा द्विषः अप भिन्धि**) सब शत्रुओंको चारों ओरसे भेद डाल । (**बाधः मृधः परि जहि**) बाधा करनेवाले शत्रुओंको मारकर हटा, (**तत् स्पार्हं वसु आ भर**) इच्छा करने योग्य धन लाकर भर दो ॥ १ ॥ (ऋ. ८।४५।४०)

हे इन्द्र ! (**यत् वीलौ**) जो बलशाली खजानेमें, (**यत् स्थिरे**) जो स्थिर स्थानमें, (**यत् पर्शाने**) जो भूमिमें रखा (**पराभृतं**) हुआ है वह इच्छा करने योग्य धन लाकर भर दो ॥ २ ॥ (ऋ. ८।४५।४१)

(**यस्य ते भूरेः दत्तस्य**) जो तेरे दिये गये बडे धनको (**विश्वमानुषः वेदति**) सब मनुष्य अपनाता है । वह इच्छा करने योग्य धन लाकर भर दो ॥ ३ ॥ (ऋ. ८।४५।४२)

[सूक्त ४४]

(ऋषिः — १-३ हरिम्बिठिः । देवता — इन्द्रः ।)

प्र सम्राजं चर्षणीनामिन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः । नरं नृषाहं मंहिष्ठम् ॥ १ ॥
यस्मिन्नुक्थानि रण्यन्ति विश्वानि च श्रवस्या । अपामवो न समुद्रे ॥ २ ॥
तं सुष्टुत्या विवासे ज्येष्ठराजं भरे कृत्नुम् । महो वाजिनं सनिभ्यः ॥ ३ ॥ (५३०)

[सूक्त ४५]

(ऋषिः — १-३ शुनःशेपो देवरातापरनामा । देवता — इन्द्रः ।)

अयमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम् । वचस्तच्चिन्न ओहसे ॥ १ ॥
स्तोत्रं राधानां पते गिर्वाहो वीर यस्य ते । विभूतिरस्तु सूनृता ॥ २ ॥

१ **विश्वाः द्विषः अप भिन्धिः**— सब शत्रुओंको काट डालो ।

२ **विश्वाः बाधः मृधः परि जहि**— सब बाधा करनेवाले दुष्ट शत्रुओंको पराजित करके दूर भगा दो ।

३ **यत् वीलौ स्थिरे, पर्शाने पराभृतं**— जो धन बलशाली स्थानमें, सुस्थिर स्थानमें और भूमिमें रखा है ।

४ **तत् स्पार्हं वसु आ भर**— वह स्पृहणीय धन लाकर भर दो ।

५ **यस्य ते भूरेः दत्तस्य विश्वमानुषः वेदति**— जिस तेरे दिये बडे धनको सब मनुष्य जानते हैं कि यह धन मिला है । वैसा धन हमें लाकर भर दो । धन इच्छा करने योग्य उन्नति करनेवाला हो । विनाशकारी न हो ।

(सूक्त ४४)

(**चर्षणीनां सम्राजं**) प्रजाजनोंके सम्राट् (**नृषाहं मंहिष्ठं नरं**) शत्रुके वीरोंको जीतनेवाले बडे सामर्थ्यवान् वीर (**नव्यं इन्द्रं**) दाता इन्द्रकी (**गीर्भिः स्तोता**) वाणीसे स्तुति करो ॥ १ ॥ (ऋ. ८।९६।१)

(**यस्मिन्**) जिस इन्द्रमें (**श्रवस्या विश्वानि उक्थानि**) यश देनेवाले सारे स्तोत्र (**रण्यानि**) रमणीय होती हैं (**अपां अवो समुद्रे न**) जैसे जलोंके प्रवाह समुद्रमें आनन्दसे मिलते हैं ॥ २ ॥ (ऋ. ८।९६।२)

(**तं ज्येष्ठराजं**) उस बडे राजा (**भरे कृत्नुं**) युद्धमें कुशल, (**सनिभ्यः महो वाजिनं**) दानोंके लिये बडे शक्तिमान् (**तं सुष्टुत्या विवासे**) उस इन्द्रको उत्तम स्तुतिसे प्रशंसित करते हैं ॥ ३ ॥ (ऋ. ८।९६।३)

इस सूक्तमें इन्द्रके ये गुण कहे हैं—

१ **चर्षणीनां सम्राजं**— लोगोंका सम्राट्,

२ **नृ-षाहं**— शत्रुके वीरोंका पराभव करनेवाला,

३ **मंहिष्ठं नरं**— बडा नेता वीर,

४ **ज्येष्ठ राजं**— श्रेष्ठ राजा

५ **भरे कृत्नुं**— युद्ध करनेमें अत्यंत कुशल,

६ **महो वाजिनं**— बडा बलवान्,

७ **यस्मिन् विश्वा उक्थानि श्रवस्या रण्यानि**— इस इन्द्रमें जो भी स्तुति की जाय वह वहां उसके यशका वर्णन करनेवाली होनेके कारण वह स्तोत्र रमणीय ही होते हैं । वे सब उसमें सार्थ होते हैं जैसे (**अपां अवो समुद्रे न**) जलोंके प्रवाह समुद्रमें अधिक नहीं होते । वे प्रवाह समुद्रमें मिल जाते हैं, वैसी ही वीर इन्द्रकी स्तुतियां इन्द्रमें सबकी सब सार्थ होती हैं ।

(सूक्त ४५)

(**अयं उते**) यह सोम तेरा है, (**सं अतसि**) इसकी ओर आ । (**कपोतः गर्भधिं इव**) जैसे कबूतर अपनी स्त्रीके पास जाता है, (**नः तत् वचः**) हमारे इस वचनको (**ओहसे**) तू स्वीकार करता है ॥ १ ॥ (ऋ. १।३०।४)

हे (**राधानां पते**) धनोंके स्वामी (**गिर्वाहः**) स्तुतिके स्वीकारनेवाले (**वीर**) वीर इन्द्र ! (**यस्यते स्तोत्रं**) जिस तेरा स्तोत्र (**सूनृता विभूतिः अस्तु**) हमारे लिये सच्ची सत्यकी विभूति हो ॥ २ ॥ (ऋ. १।३०।५)

ऊ॒र्ध्वो॑ स्ति॑ष्ठा न ऊ॒तये॒ऽस्मिन्वाजे॑ शतक्रतो । सम॒न्येषु॑ ब्रवावहै ॥ ३ ॥ (२८२)

[सूक्त ४६]

(ऋषिः — १-३ इरिम्बिठिः । देवता — इन्द्रः ।)

प्र॒णे॒तारं॒ वस्यो॒ अच्छा॒ कर्ता॑रं॒ ज्योतिः॑ स॒मत्सु॑ । सा॒स॒ह्वांसं॑ यु॒धामित्रा॑न् ॥ १ ॥
स नः॒ पप्रिः॑ पारयाति स्व॒स्ति ना॒वा पु॑रुहू॒तः । इन्द्रो॒ विश्वा॒ अति॒ द्विषः॑ ॥ २ ॥
स त्वं न॑ इन्द्र॒ वाजे॑भिर्दश॒स्या च॑ गातु॒या च॑ । अच्छा॑ च नः सु॒म्नं ने॑षि ॥ ३ ॥ (२८५)

[सूक्त ४७]

ऋषिः — १-३ सुकक्षः, ७-९ इरिम्बिठिः, ४-६, १०-२२ मधुच्छन्दाः, १३-२१ प्रस्कण्वः ।
देवता — इन्द्रः, १३-२१ सूर्यः ।)

तमिन्द्रं॑ वाजयामसि म॒हे वृ॒त्राय॒ हन्त॑वे । स वृषा॑ वृष॒भो भु॑वत् ॥ १ ॥

हे (**शतक्रतो**) सैंकडों कर्म करनेवाले इन्द्र ! (**अस्मिन् वाजे**) इस युद्धमें (**नः ऊतये**) हमारी रक्षाके लिये (**ऊर्ध्वः तिष्ठ**) खडा रह, (**अन्येषु सं ब्रवावहै**) अन्योंकी उपस्थितिमें भी हम तेरी ही प्रशंसा करेंगे ॥ ३ ॥ (ऋ. १।३०।६)

१ **राधानां पतिः**— धनोंका स्वामी इन्द्र है ।

२ **वीर ! यस्य ते स्तोत्रं सूनृता विभूतिः अस्तु**— हे वीर इन्द्र ! तेरा स्तोत्र हमारे लिये सच्ची विभूतिके रूपमें हमारे सामने रहे ।

३ **शतक्रतो**— सैंकडो कर्म करनेवाले इन्द्र ।

४ **अस्मिन् वाजे नः ऊतये ऊर्ध्वः तिष्ठ**— इस युद्धमें हमारी रक्षा करनेके लिये खडा रह और हमारी रक्षा करनेके लिये जो करना योग्य है वह सब कर ।

५ **अन्येषु सं ब्रवावहै**— अन्य लोग उपस्थित हों तो भी हम ऐसा ही तेरे विषयमें आदर भावके वचन ही बोलेंगे ।

(सूक्त ४६)

(**वस्यो अच्छ प्रणेतारं**) जो उत्तम वस्तुकी ओर ले चलता है, (**समत्सु ज्योतिः कर्तारं**) संग्रामोंमें ज्योति करता है, और (**युधा अमित्रान् सासह्वानं**) युद्धसे शत्रुओंको पराभूत करता है ॥ १ ॥ (ऋ. ८।१६।१०)

(**सः पुरुहूतः**) वह अनेकों द्वारा प्रार्थित हुआ (**पप्रिः इन्द्र**) प्रतिपालक इन्द्र (**नावा**) नौकासे (**नः स्वस्ति पारयाति**) हमें कल्याणके लिये पार ले जाता है, (**विश्वा द्विषः अति**) सब शत्रुओंको दूर करता है ॥ २ ॥ (ऋ. ८।१६।११)

हे इन्द्र ! (**सः त्वं**) वह तू (**नः**) हमें (**वाजेभिः च गातुया च**) अन्नोंसे और यज्ञसे (**दशस्य**) परिपूर्ण कर (**नः अच्छ सुम्नं नेषि**) और हमें आनन्दकी ओर ले जा ॥ ३ ॥ (ऋ. ८।१६।१२)

१ **वस्यो अच्छ प्रणेतारं**— इन्द्र उत्तमताकी ओर पहुंचाता है,

२ **समत्सु ज्योतिः कर्तारं**— युद्धोंमें ज्योति बताकर विजयका मार्ग दर्शाता है ।

३ **युधा अमि[illegible]सह्वानं**— युद्धसे शत्रुओंको पराभूत करता है ।

४ **स पुरुहूतः**— वह इन्द्र अनेकोंके द्वारा प्रार्थित होता है ।

५ **पप्रिः इन्द्रः**— वह सच्चा पालक है ।

६ **नावा नः स्वस्ति पारयाति**— नौकासे हमें कल्याणके लिये पार ले जा ।

७ **विश्वा द्विषः अति**— सब शत्रुओंको दूर कर ।

८ **सः त्वं वाजेभिः गातुया च दशस्य**— वह तू अन्नोंसे तथा यज्ञसे हमें परिपूर्ण कर ।

९ **नः अद्य सुम्नं नेषि** — हमें आज आनंदकी ओर ले जा ।

(सूक्त ४७)

(**महे वृत्राय हन्तवे**) बडे वृत्रके मारनेके लिये **इन्द्रं वाज** [illegible]) उस इन्द्रको हम बढाते हैं, (**स वृषा वृषभः भुव**[illegible] शक्तिशाली वीर होवे ॥ १ ॥ (ऋ. ८।९३।७)

इन्द्रः॒ स दाम॑ने कृ॒त ओजि॑ष्ठः॒ स मदे॑ हि॒तः । द्यु॒म्नी श्लो॒की स सो॒म्यः ॥ २ ॥
गि॒रा वज्रो॒ न संभृ॑तः॒ सब॑लो॒ अन॑पच्युतः । व॒व॒क्ष ऋ॒ष्वो अस्तृ॑तः ॥ ३ ॥
इन्द्र॒मिद्गा॒थिनो॑ बृ॒हदिन्द्र॑म॒र्केभि॑र॒र्किणः॑ । इन्द्रं॒ वाणी॑रनूषत ॥ ४ ॥
इन्द्र॒ इद्धर्यो॒ः सचा॒ संमि॑श्ल॒ आ व॑चो॒युजा॑ । इन्द्रो॑ व॒ज्री हि॑र॒ण्ययः॑ ॥ ५ ॥
इन्द्रो॑ दी॒र्घाय॒ चक्ष॑स॒ आ सूर्यं॑ रोहयद्दि॒वि । वि गोभि॒रद्रि॑मैरयत् ॥ ६ ॥
आ या॑हि सुषु॒मा हि त॒ इन्द्र॒ सोमं॒ पिबा॑ इ॒मम् । एदं ब॒र्हिः स॑दो॒ मम॑ ॥ ७ ॥
आ त्वा॑ ब्रह्म॒युजा॒ हरी॒ वह॑तामिन्द्र के॒शिना॑ । उप॒ ब्रह्मा॑णि नः शृणु ॥ ८ ॥
ब्र॒ह्माण॑स्त्वा व॒यं यु॒जा सो॑म॒पामि॑न्द्र सो॒मिनः॑ । सु॒ताव॑न्तो हवामहे ॥ ९ ॥
यु॒ञ्जन्ति॑ ब्र॒ध्नम॑रु॒षं चर॑न्तं॒ परि॑ त॒स्थुषः॑ । रोच॑न्ते रोच॒ना दि॒वि ॥ १० ॥
यु॒ञ्जन्त्य॑स्य॒ काम्या॒ हरी॒ विप॑क्षसा॒ रथे॑ । शोणा॑ धृ॒ष्णू नृ॒वाह॑सा ॥ ११ ॥
के॒तुं कृ॒ण्वन्न॑के॒तवे॒ पेशो॑ मर्या अपे॒शसे॑ । समु॒षद्भि॑रजायथाः ॥ १२ ॥
उदु॒त्यं जा॒तवे॑दसं दे॒वं व॑हन्ति के॒तवः॑ । दृ॒शे विश्वा॑य॒ सूर्य॑म् ॥ १३ ॥
अप॒ त्ये ता॒यवो॑ यथा॒ नक्ष॑त्रा यन्त्य॒क्तुभिः॑ । सूरा॑य वि॒श्वच॑क्षसे ॥ १४ ॥
अदृ॑श्रन्नस्य के॒तवो॒ वि र॒श्मयो॒ जनाँ॒ अनु॑ । भ्राज॑न्तो अ॒ग्नयो॑ यथा ॥ १५ ॥
त॒रणि॑र्वि॒श्वद॑र्शतो ज्योति॒ष्कृद॑सि सूर्य । विश्व॒मा भा॑सि रोचन ॥ १६ ॥
प्र॒त्यङ् दे॒वानां॒ विशः॑ प्र॒त्यङ्ङुदे॑षि॒ मानु॑षीः । प्र॒त्यङ् विश्वं॒ स्व॑र्दृ॒शे ॥ १७ ॥

(**इन्द्रः स दामने कृतः**) वह इन्द्र दानके लिये ही प्रसिद्ध है (**ओजिष्ठः स मदे हितः**) वह बलवान् और आनन्दमें रहता है । (**द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः**) वह तेजस्वी, यशस्वी और सोमके योग्य है ॥ २ ॥ (ऋ. ८।९३।८)

(**गिरा वज्रः संभृतः न**) स्तुतिसे वज्र जैसा वह तैयार हुआ है, (**स-बलः अनपच्युतः**) वह बडे बलवान् और न गिरनेवाला है, (**ऋष्वः अस्तृतः ववक्षे**) वह बडा, न जीता हुआ और ऊंचा है ॥ ३ ॥ (ऋ. ८।९३।९)

४-६ देखो २०।३८।४-६ । ७-९ देखो २०।३८।१-३ । १०-१२ देखो २०।३६।४-६ ।

(**केतवः त्यं जातवेदसं देवं सूर्यं**) किरण उस बने हुए जगत्को जाननेवाले सूर्य देवको (**विश्वाय दृशे**) समस्त संसारके देखनेके लिये (**उत् उ वहन्ति**) उच्च स्थानमें प्रकाशित करते हैं ॥ १३ ॥

(ऋ. १।५०।१; यजु. ७।४१; अथर्व. १३।२।१६)

(**यथा त्ये तायवः**) जैसे वे चोर (**नक्षत्रा अक्तुभिः अप यन्ति**) ये नक्षत्र रात्रीके साथ भाग जाते हैं और (**विश्वचक्षसे सूराय**) विश्वको प्रकाशित करनेवाले सूर्यके लिये स्थान करते हैं ॥ १४ ॥

(ऋ. १।५०।२; अथर्व. १३।२।१७)

(**यथा भ्राजन्तः अग्नयः**) जैसे चमकनेवाले अग्नि होते हैं (**अस्य केतवः रश्मयः**) इसके ध्वज रूपी किरण (**जनान् अनु वि अदृश्रन्**) लोगोंके प्रति जाते हैं ऐसा दीखता है ॥ १५ ॥

(ऋ १।५०।३; यजु. ८।४०; अथर्व. १३।२।१८)

हे (**रोचन सूर्य**) हे प्रकाशक सूर्य ! तू (**तरणिः विश्वदर्शतः** तारक और विश्वको दर्शानेवाला है तथा (**ज्योतिष्कृत् असि**) प्रकाश करनेवाला है । (**विश्वं आभासि**) जगत्को प्रकाशित करता है ॥ १६ ॥

(ऋ. १।५०।४)

(**देवानां विशः प्रत्यङ्**) देवोंकी प्रजाओंके प्रति और (**मानुषीः प्रत्यङ् उदेषि**) मानवी प्रजाओंके प्रति तू उदित

येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ अनु । त्वं वरुण पश्यसि ॥ १८ ॥
वि द्यामेषि रजस्पृथ्वहार्मिमानो अक्तुभिः । पश्यं जन्मानि सूर्य ॥ १९ ॥
सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य । शोचिष्केशं विचक्षणम् ॥ २० ॥
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्यः । ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः ॥ २१ ॥ (३०६)

[सूक्त ४८]

(ऋषिः — (१-६) खिलम्, ४-६ सर्पराज्ञी । देवता — सूर्यः गोः ।)

अभि त्वा वर्चसा गिरः सिञ्चन्तीराचरण्यवः । अभि वत्सं न धेनवः ॥ १ ॥
ता अर्षन्ति शुभ्रियः पृञ्चन्तीर्वर्चसा प्रियः । जातं जात्रीर्यथा हृदा ॥ २ ॥
वज्रापवसाध्यः कीर्तिं प्रियमाणमावहन् । मह्यमायुर्घृतं पयः ॥ ३ ॥
आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥ ४ ॥
अन्तश्चरति रोचना अस्य प्राणादपानतः । व्यख्यन्महिषः स्वः ॥ ५ ॥

होता है तथा (स्वः विशे विश्वं प्रत्यङ्) प्रकाशके दर्शनके लिये सब विश्वके प्रति तू जाता है ॥ १७ ॥ (ऋ. १।५०।५)

हे (पावक वरुण) पवित्र करनेवाले श्रेष्ठ देव ! (येन चक्षसा) जिस आंखसे (त्वं जनान् भुरण्यन्तं अनु पश्यसि) तू मनुष्योंमें भरण-पोषण करनेवाले मनुष्यको देखता है उससे मुझे देख ॥ १८ ॥ (ऋ. १।५०।६)

सूर्य ! (अक्तुभिः अहः मिमानः) रात्रियोंसे दिनको मापता हुआ (पृथु रजः द्यां पषि) विस्तृत अन्तरिक्ष लोकको और द्युलोकको प्राप्त होता है और (जन्मानि पश्यन्) सब जन्म लेनेवालोंको देखता है ॥ १९ ॥ (ऋ. १।५०।७)

हे सूर्य देव ! (सप्त हरितः) सात किरण (शोचिष्केशं विचक्षणं त्वा) शुद्ध करनेवाले किरण तथा दर्शक ऐसे तुझको (रथे वहन्ति) रथमें चलाते हैं ॥ २० ॥ (ऋ. १।५०।८)

(सूरः रथस्य) ज्ञानमय रथको (नप्तयः सप्त शुन्ध्युवः अयुक्त) सात शुद्ध करनेवाले किरण जोडे हैं । (ताभिः स्वयुक्तिभिः याति) उनसे अपनी योजनाओंसे वह जाता है ॥ २१ ॥ (ऋ. १।५०।९)

इस सूक्तमें १-१२ मंत्र इन्द्र देवताके हैं और १३-२१ तकके मंत्र सूर्य देवताके हैं ।

(सूक्त ४८)

(आचरण्यवः) बारंबार प्रवृत्त होनेवाली (गिरः) हमारी स्तुतियां (वर्चसा त्वा सिंचन्तीः) तेजका तेरे पास सिंचन करती हैं (वत्सं धेनवः अभि न) बछडेके पास जैसी गौवें बारंबार आती हैं ॥ १ ॥

(जातं जात्रीः यथा हृदा) उत्पन्न हुए बच्चेको जैसी माताएं हृदयके साथ मिलाती हैं, उस तरह हमारी स्तुतियां (वर्चसा पृञ्चन्तीः) तेजसे संयुक्त होती हैं (प्रियः शुभ्रियः ताः अर्षन्ति) और प्रिय शुभ्र स्वच्छ भावको प्रकट करती हैं ॥ २ ॥

(वज्रापवसाध्यः) शस्त्र, अस्वास्थ्य रोग आदि (कीर्तिः) तथा कीर्ति (प्रियमाणं आवहन्) मरनेवालेके पास जाते हैं । (मह्यं आयुः घृतं पयः) मुझे दीर्घ आयु, घी और दूध मिले ॥ ३ ॥

(आयं गौः) यह गतिशील चन्द्रमा (मातरं पुनः असदत्) अपनी माता भूमिको आगे करता है (पितरं च प्रयन्) और अपने पिता रूपी स्वयं प्रकाशी सूर्यकी चारों ओर घूमता हुआ (पृश्निः आक्रमीत्) आकाशमें भ्रमण करता है ॥ ४ ॥ (ऋ. १०।१८९।१)

(अस्य रोचना) इसकी ज्योती (प्राणात् अपानतः) प्राण और अपान करनेवालोंके (अन्तः चरति) अन्दर

त्रिंशद्धामा वि राजति वाक्पतङ्गो अशिश्रियत्। प्रति वस्तोरहर्द्युभिः ॥ ६ ॥ (३१२)

[सूक्त ४९]

(ऋषिः — १-७ खिलम्। ४-१ नोधाः; ६-७ मेध्यातिथिः।)

यच्छक्रा वाचमारुहन्नन्तरिक्षं सिषासथः । सं देवा अमदन्वृषा ॥ १ ॥
शक्रो वाचमधृष्टायोरुवाचो अधृष्णुहि । मंहिष्ठ आ मदर्दिवि ॥ २ ॥
शक्रो वाचमधृष्णुहि धामधर्मन्विराजति । विमदन्बर्हिरासदन् ॥ ३ ॥
तं वो दुस्मर्मृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः ।
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ॥ ४ ॥
घृक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं गिरिं न पुरुभोजसम् ।
क्षुमन्तं वाजं शतिनं सहस्रिणं मक्षू गोमन्तमीमहे ॥ ५ ॥
तत्त्वा यामि सुवीर्यं तद्ब्रह्म पूर्वचित्तये
येना यतिभ्यो भृगवे धने हिते येन प्रस्कण्वमाविथ ॥ ६ ॥
येना समुद्रमसृजो महीरपस्तदिन्द्र वृष्णि ते शवः ।
सद्यः सो अस्य महिमा न संनशे यं क्षोणीरनुचक्रदे ॥ ७ ॥ (३१९)

संचार करती है और वह (**महिषः स्वः वि अख्यत्**) बडे स्वयं प्रकाशी सूर्यको ही प्रकाशित करती है ॥ ५ ॥

(ऋ. १०।१८९।२)

(**वस्तोः त्रिंशत् धाम**) अहोरात्रके तीस धाम अर्थात् मुहूर्त (**अहः द्युभिः प्रति वि राजति**) निश्चयसे इसके प्रकाशसे प्रकाशित होते हैं। उसकी प्रशंसाके लिये (**वाक् पतङ्गः अशिश्रियत्**) हमारी वाणी सूर्यका आश्रय करती है ॥ ६ ॥ (ऋ. १०।१८९।३)

चन्द्र भूमिके चारों ओर भ्रमण करता है और भूमि सहित चन्द्र सूर्यकी चारों ओर घूमता है। इस प्रकार भूमि सहित चन्द्र सूर्यकी प्रदक्षिणा करता है और अपने मार्गसे आकाशमें संचार करता है।

इसके किरण सब स्थावर जंगमके ऊपर प्रकाशित होते हैं और वे सूर्य प्रकाशके महत्त्वको व्यक्त करते हैं।

अहोरात्रके तीस मुहूर्तोंमें इसीका प्रकाश सबको तेजस्वी बनाता है। इसलिये इस सूर्यकी प्रशंसा हमारी वाणीको करनी योग्य है।

(**सूक्त ४९**)

(**यत् शक्राः वाचं आरुहन्**) जब शक्तियोंने वाणीपर आरोहण किया (**अन्तरिक्षं सिषासथः**) अन्तरिक्षको जीतना चाहा, तब (**वृषा देवाः सं अमदन्**) बलवान् देवोंने आनंद मनाया ॥ १ ॥

(**शक्रः वाचं अधृष्टाय**) शक्तिवालेने वाणीको धैर्यवाली बनाया, (**उरुवाचः अधृष्णुहि**) बडी वाणीको प्रबल बनाया। (**मंहिष्टः दिवि आ मदः**) बडेने द्युलोकमें हर्ष बनाया ॥ २ ॥

(**शक्रो वाचं अधृष्णुहि**) शक्तिवालेने वाणीको प्रबल बनाया (**धामधर्मन् विराजति**) प्रति स्थानपर वह शासन करता है। (**विमदन् बर्हिः आसदन्**) आनन्द मनाता हुआ वह आसनपर बैठा है ॥ ३ ॥

४-७ देखो (२०।९।१-४)

१ **शक्रा वाचं आरुहन्**— शक्तियां वाणीपर चढीं। वाणीमें शक्ति रहना चाहिये। मानसिक शक्ति वाणीपर चढ गयी तो वाणीमें बडा सामर्थ्य उत्पन्न होता है।

[सूक्त ५०]

(ऋषिः — १-२ मेध्यातिथिः । देवता — इन्द्रः ।)

कण्वेभ्यो अतसीनां तुरो गृणीत मर्त्यः ।
नहो न्वस्य महिमानमिन्द्रियं स्वर्गृणन्त आनशुः ॥ १ ॥
कदु स्तुवन्त ऋतयन्त देवत ऋषिः को विप्र ओहते ।
कदा हवं मघवन्निन्द्र सुन्वतः कदु स्तुवत आगमः ॥ २ ॥ (३२१)

[सूक्त ५१]

(ऋषिः — १-२ प्रस्कण्वः ३-४ पुष्टिगुः । देवता — इन्द्रः ।)

अभि प्र वः सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे ।
यो जरितृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति ॥ १ ॥

---

२ अन्तरिक्षं सिषासथः— अन्तरिक्षको जीतनेकी शक्ति वाणीमें रहती है ।

३ वृषा देवा सं अमदन्— बलवान् देव इससे हर्ष करते हैं । किसीकी वाणीमें शक्ति उत्पन्न हुई तो देवता उससे हर्षित होते हैं और वे उसको सहायता करती हैं । उसकी वाणीमें दैवी शक्ति उत्पन्न होती है ।

४ शक्रः वाचं अधृष्टाय— सामर्थ्यवान अपनी वाणीको शक्तिशाली बनाता है ।

५ उरुवाचः अधृष्णुहि— वाणीकी अपनी शक्ति है उसको जो बढाता है वह शक्तिशाली होता है ।

६ मंहिष्ठः दिवि आमदः— शक्तिशाली द्युलोकमें हर्षको बढाता है । अपनी सामर्थ्यशाली वाणीसे द्युलोकमें भी हर्ष बढाता है ।

७ शक्रः वाचं अधृष्णुहि— सामर्थ्यवान्ने अपनी वाणीको बलवती बनाया ।

८ धामधर्मन् विराजति— उससे स्थान स्थानपर वह अपना शासन चलाता है ।

९ विमदन् बर्हिः आसदन्— आनंदित होकर वह आसनपर बैठता है, श्रेष्ठ स्थानपर विराजता है ।

(सूक्त ५०)

(तुरः मर्त्यः) त्वरासे कार्य करनेवाला मनुष्य (नव्यः) नवीन गीत (कं अतसीनां गृणीत) किस वेगसे प्रेरित होते हुए गायेगा ? (अस्य महिमानं इन्द्रियं गृणन्तः) इसकी महिमा और शक्तिका गान करते हुए कौन (स्वः नहो आनशुः) स्वर्गधाम नहीं पाता ? ॥ १ ॥ (ऋ. ८।३।१३)

त्वरासे कार्य करनेवाला भक्त अपनी बुद्धियोंसे नवीन गीत गाता है और उस प्रभुकी महिमाका गान करके वह भक्त स्वर्ग-धामको प्राप्त करता है । सुख प्राप्त करता है । मंत्रोंका गान करनेसे मनुष्य सुखी होता है ।

(कद् उ स्तुवन्तः) कब स्तुति करनेवाले (ऋतयन्तः) ऋतकी उपासना करनेवाले (देवता ऋषिः) देवता और ऋषि (कः विप्रः ओहते) कौन विशेष ज्ञानी करके तुम्हें बुलाते हैं ? हे इन्द्र ! हे (मघवन्) धनवान् ! (कदा सुन्वतः हवं) कब सोमरस निचोडनेवालेकी प्रार्थना सुनकर (कद् उ स्तुवतः आगमः) कब तुम स्तुति करनेवालेके पास जाते हैं ? (ऋ. ८।३।१४)

(सूक्त ५१)

(वः) तुम्हारे हितके लिये (सुराधसं इन्द्रं) बडे दानी इन्द्रका (यथा विदे) जैसा मालूम है उस तरह (अभि प्र अर्च) स्तोत्र गाओ । (यः पुरुवसुः मघवा) जो बहुत धनवाला इन्द्र (जरितृभ्यः सहस्रेण इव शिक्षति) स्तोताओंको सहस्र गुणा देता है ॥ १ ॥ (ऋ. ८।४९।१)

शतानीकेव प्र जिगाति धृष्णुया हन्ति वृत्राणि दाशुषे ।
गिरेरिव प्र रसा अस्य पिन्विरे दत्राणि पुरुभोजसः ॥ २ ॥
प्र सु श्रुतं सुराधसमर्चा शक्रमभिष्टये ।
यः सुन्वते स्तुवते काम्यं वसु सहस्रेणेव मंहते ॥ ३ ॥
शतानीका हेतयो अस्य दुष्टरा इन्द्रस्य समिषो महीः ।
गिरिर्न भुज्मा मघवत्सु पिन्वते यदीं सुता अमन्दिषुः ॥ ४ ॥ (३२५)

[सूक्त ५२]

(ऋषिः — १-३ मेध्यातिथिः । देवता — इन्द्रः ।)

वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः ।
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन्परि स्तोतार आसते ॥ १ ॥

(**शतानीक इव**) सैकडों सैनिक जिसके साथ हैं ऐसे वीरके समान (**धृष्णुया प्र जिगाति**) धैर्यसे वह आगे बढता है और (**दाशुषे वृत्राणि हन्ति**) दाताके लिये शत्रुओंको मारता है । (**गिरेः रसा इव**) पर्वतसे जल आता है उस तरह (**अस्य पुरुभोजसः दत्राणि प्र पिन्विरे**) इस बहुत भोग देनेवाले इन्द्रके दान फैलते हैं ॥ २ ॥ (ऋ. ८।४९।२)

(**श्रुतं सुराधसं शक्रं**) प्रसिद्ध दानी इन्द्रकी (**अभिष्टये**) विजयके लिये (**प्र सु अर्च**) अर्चना उत्तम प्रकार कर । (**यः**) जो (**सुन्वते स्तुवते**) सोमरस निकालनेवाले और स्तुति करनेवालेको (**काम्यं वसु**) इष्ट धन (**सहस्रेण इव मंहते**) सहस्र गुना देता है ॥ ३ ॥ (ऋ. ८।५०।१)

(**अस्य इन्द्रस्य**) इस इन्द्रकी (**महीः दुष्टराः**) बडी तथा दुस्तर (**समिषः**) इच्छाएं तथा (**शतानीका हेतयः**) सैकडों नोकोंवाले इसके शस्त्र हैं । (**यत् ईं सुताः अमन्दिषुः**) जब इस इन्द्रको सोमरस आनन्द देते हैं तब (**गिरिः न**) पर्वतके समान वह (**मघवत्सु भुज्मा पिन्वते**) दानीयोंको भोग देता है ॥ ४ ॥ (ऋ. ८।५०।२)

१ सुराधसं इन्द्र यथा विदे अभि प्र अर्च— उत्तम दान देनेवाले इन्द्रकी जैसी आती है वैसी स्तुति गाओ। उसका गुणवर्णन करो ।

२ पुरुवसुः मघवा जरितृभ्यः सहस्रेण इषः शिक्षति— बहुत धनवाला इन्द्र है वह स्तोताओंको सहस्र प्रकारके अन्न देता है। अतः उसकी स्तुति करना लाभदायक है।

३ शतानीक इव धृष्णुया प्र जिगाति— सैकडों सैनिकोंको अपने साथ रखनेवाला वीर जैसा धैर्यसे शत्रुसैन्यमें घुसता है वैसा वह इन्द्र युद्धमें घुसता है ।

४ दाशुषे वृत्राणि हन्ति— दाताकी रक्षा करनेके लिये शत्रुको मारता है, और दाताकी रक्षा करता है ।

५ गिरेः रक्षा इव अस्य पुरुभोजसः दत्राणि प्र पिन्विरे— पर्वतसे जैसा जल मिलता है, उस तरह इस बहुत भोग देनेवाले इन्द्रसे प्राप्त होनेवाले दान चारों ओर फैल रहे हैं।

६ श्रुतं सुराधसं शक्रं अभिष्टये प्र सु अर्च— सुप्रसिद्ध उत्तम दान देनेवाले इन्द्रकी अपने कल्याणके लिये उत्तम अर्चना कर ।

७ यः सुन्वते स्तुवते काम्यं वसु सहस्रेण इव मंहते— जो इन्द्र सोमरस निकालनेवाले स्तोताके लिये इष्ट धन सहस्र प्रकारसे देकर उसको बडा महान् बनाता है ।

८ अस्य इन्द्रस्य महीं दुष्टरा समिषः शतानीका हेतयः— इस इन्द्रके बडे दुस्तर मनोभाव है और सैकडों सैनिकोंके साथ रहनेवाले शस्त्र भी इसके साथ हैं।

९ यत् ईं सुता अमन्दिषुः गिरिः न मघवत्सु भुज्मा पिन्वते— जब इस इन्द्रको सोमरस आनन्दित करते हैं, तब वह पहाडके समान याजकोंको अनेक भोग देता है । पर्वत जैसे फल, मूल, फूल देता है वैसा यह इन्द्र भी नाना भोग देता है ।

(सूक्त ५२)

(**वयं सुतावन्तः वृक्तबर्हिषः**) हम सोमरस लिये, आसन बिछाए (**स्तोतारः**) तेरे स्तोतागण (**पवित्रस्य**

स्वर॑न्ति त्वा सु॒ते नरो॒ वसो॑ निरे॒क उ॒क्थिनः॑ ।
क॒दा सु॒तं तृ॑षा॒ण ओक् आ ग॑म॒ इन्द्र॑ स्व॒ब्दीव॒ वंस॑गः ॥ २ ॥
कण्वे॑भिर्धृष्ण॒वा धृ॒षद्वाजं॑ दर्षि सह॒स्रिण॑म् ।
पि॒शङ्ग॑रूपं मघवन्विचर्षणे म॒क्षू गोम॑न्तमीमहे ॥ ३ ॥ (३२८)

[सूक्त ५३]

(ऋषिः — १-३ मेध्यातिथिः । देवता — इन्द्रः ।)

क ईं॑ वेद सु॒ते सचा॒ पिब॑न्तं॒ कद्वयो॑ दधे ।
अ॒यं यः पुरो॑ विभि॒नच्योज॑सा मन्दा॒नः शि॒प्र्यन्ध॑सः ॥ १ ॥
दा॒ना मृ॒गो न वा॑र॒णः पु॑रु॒त्रा च॒रथं॑ दधे ।
नकि॑ष्ट्वा॒ नि य॑म॒दा सु॒ते ग॑मो म॒हाश्च॑र॒स्योज॑सा ॥ २ ॥
य उ॒ग्रः सन्ननि॑ष्टृत स्थि॒रो रणा॑य॒ संस्कृ॑तः ।
यदि॑ स्तो॒तुर्म॒घवा॑ शृ॒णव॒द्धवं॒ नेन्द्रो॑ योष॒त्या ग॑मत् ॥ ३ ॥ (३३१)

प्रस्रवणेषु) पवित्र जलधाराएं जहां चलती हैं वहां, हे (वृत्रहन्) वृत्रको मारनेवाले ! (आपः न) जलोंके समान (त्वा घ परि आसते) तेरे चारों ओर बैठते हैं ॥ १ ॥ (ऋ. ८।३३।१)

हे (वसो) निवासक ! (उक्थिनः एके नरः) स्तोत्र पाठ करनेवाले कई मनुष्य (सुते) सोमरस निकालने पर (त्वा निः स्वरन्ति) तुझे प्रेमसे बुलाते हैं। हे इन्द्र ! (कदा सुतं तृषाणः) कब सोमरसकी ओर प्यासा होकर (स्वब्दी वंसगः इव) सुन्दर शब्द करनेवाले बैलकी तरह (ओकः आगमः) घरमें तू आ जागया ॥ २ ॥ (ऋ. ८।३३।२)

हे (धृष्णो धृषत्) वीरोंके साथ वीर ! (कण्वेभिः सहस्रिणं वाजं आ दर्षि) कण्वोंके द्वारा प्रार्थित होनेपर तू सहस्र गुणा अन्न ला देता है। हे (विचर्षणे मघवन्) ज्ञानी शक्तिमान् इन्द्र ! हम (पिशङ्गरूपं गोमन्तं) पीले रंगवाले सोनेके समेत गौओंसे युक्त धन (मक्षू ईमहे) शीघ्र मिले ऐसा चाहते हैं ॥ ३ ॥

१ धृष्णो धृषत्— वीरके साथ वीर इन्द्र ।

२ विचर्षणे मघवन्— बुद्धिमान् धनवान् इन्द्र ।

३ पिशङ्गरूपं गोमन्तं मक्षू ईमहे— सोना और गौवें हमें शीघ्र मिले ऐसा चाहते हैं। 'पिशङ्गरूपं'- पीले रंगवाला सुवर्ण हमें चाहिये। गौवें भी चाहिये।

(सूक्त ५३)

(सुते सचा पिबन्तं ईं क वेद) सोमरस साथ बैठकर पीनेवालेको कौन ठीक तरह जानता है ? (कद् वयः दधे) उसने किस शक्तिको धारण किया है ? (अयं यः ओजसा पुरः विभिनत्ति) यह जो बलसे शत्रुके नगरोंके किलोंको तोडता है, वह (शिप्री अन्धसः मन्दानः) हनुवाला सोमरससे आनन्दित होनेवाला है ॥ १ ॥ (ऋ. ८।३३।७)

(वारणः मृगः न) मस्त हाथीकी तरह (दाना) मदमत्त होनेके कारण (पुरुत्रा चरथं दधे) इधर उधर भ्रमण करता है। (सुते आ गमः) सोमरसके स्थानपर तू आ गया तो (त्वा न किः आ नि यमत्) तुझे कोई रोक नहीं सकता। (महान् ओजसा चरसि) बडा होकर बलसे तू घूमता है ॥ २ ॥ (ऋ. ८।३३।८)

(यः उग्रः सन्) जो उग्रवीर है, (अनिष्टृतः) और स्थानसे पीछे हटाया नहीं जा सकता, (स्थिरः रणाय संस्कृतः) स्थिर रहकर संग्रामके लिये तैयार है। (मघवा) धनवान् इन्द्र (यदि स्तोतुः हवं शृणवत्) यदि वह स्तोताकी प्रार्थना सुनता है (इन्द्रः न योषति) तो इन्द्र दूर नहीं रहेगा (आ गमत्) पास आयेगा ही ॥ ३ ॥ (ऋ. ८।३३।९)

[सूक्त ५४]

(ऋषिः — १-३ रेभः । देवता — इन्द्रः ।)

विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरं सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे ।
क्रत्वा वरिष्ठं वर आमुरिमुतोग्रमोजिष्ठं तवसं तरस्विनम् ॥ १ ॥
समीं रेभासो अस्वरन्निन्द्रं सोमस्य पीतये ।
स्वर्पतिं यदीं वृधे धृतव्रतो ह्योजसा समूतिभिः ॥ २ ॥
नेमिं नमन्ति चक्षसा मेषं विप्रा अभिस्वरा ।
सुदीतयो वो अद्रुहोपि कर्णे तरस्विनः समृक्वभिः ॥ ३ ॥ (३३४)

१ **कद् वयः दधे**— वह इन्द्र किस तरहका सामर्थ्य धारण करता है, यह (कः वेद) कौन जानता है । उसके सामर्थ्यको कोई नहीं जानता ।

२ **अयं ओजसा पुरः विभिनत्ति**— यह इन्द्र अपने सामर्थ्यसे शत्रुकी नगरियोंको तोडता है, उनपर अपना प्रभुत्व स्थापन करता है। पहिले शत्रुकी नगरियां थीं, शत्रुका पराभव करके उनके किले इसने तोडे ।

३ **वारणः न पुरुभ्रा चरथं दधे**— हाथीके समान यह इन्द्र चारों ओर घूमता है ।

४ **त्वा न किः आ नि यमत्**— तुझे कोई रोक नहीं सकता ।

५ **महान् ओजसा चरसि**— तू बडी शक्तिसे विचरता है । वीरकी ऐसी शक्ति चाहिये । जिसे कोई उसे रोक न सके ।

६ **यः उग्रः सन् अनिष्टृतः**— जो वीर है और उसे कोई रोक नहीं सकता ।

७ **स्थिरः रणाय संस्कृतः**— वह वीर युद्धमें स्थिर रहकर युद्ध करनेमें संस्कार संपन्न है। कुशलतासे युद्ध करता है।

८ **मघवा इन्द्रः स्तोतुः हवं शृणवत् न योषति, आ गमत्**— इन्द्र धनवान् है, जब वह किसीकी पुकार सुनता है वह ठहरता नहीं, तत्काल उसके पास पहुंचता है । वीर ऐसे होने चाहिये ।

(सूक्त ५४)

(**विश्वाः पृतनाः अभिभूतरं नरं**) सब शत्रुकी सेनाओंका पराभव करनेवाले नेता (**इन्द्रं सजूः ततक्षुः**) इन्द्रको देवोंने मिलकर उत्पन्न किया और (**राजसे जजनुः च**) राज्यशासन करनेके लिये लगाया । (**वरे क्रत्वा वरिष्ठं**) श्रेष्ठ कार्योंमें कर्तृत्वसे श्रेष्ठ, (**आमुरिं**) युद्धमें शत्रुको मारनेवाले (**उत उग्रं**) उग्रवीर (**ओजिष्ठं तवसं तरस्विनं**) बलवान, सामर्थ्यवान् और साहससे युक्त ऐसा यह इन्द्र है ॥ १ ॥ (ऋ. ८।९७।१०)

(**ईं स्वर्पतिं इन्द्रं**) इस स्वर्गके पति इन्द्रकी (**सोमस्य पीतये**) सोमरस पीनेके लिये (**रेभासः सं अस्वरन्**) स्तोताओंने मिलकर स्तुति की । (**यत् धृतव्रतः ओजसा ऊतिभिः सं वृधे**) तब नियमोंके अनुसार चलनेवाला बलसे और संरक्षक साधनोंसे आगे बढा ॥ २ ॥ (ऋ. ८।९७।११)

(**अभिस्वरा विप्राः**) एक स्वरसे ब्राह्मण लोग (**चक्षसा**) अपनी दृष्टिसे (**मेषं नेमिं नमन्ति**) शूर वीरको अपना संरक्षक बनाते हैं । (**सुदीतयः अद्रुहः**) दीप्तिवाले द्रोहरहित (**तरस्विनः समृक्वभिः**) बलवान् स्तोताओंके साथ (**वः कर्णे**) आपके कानमें सुनाते हैं ॥ ३ ॥ (ऋ. ८।९७।१२)

वीर इन्द्र इन गुणोंसे युक्त है—

१ **विश्वाः पृतनाः अभिभूतरं नरं इन्द्रं सजूः ततक्षुः**— सब शत्रुसेनाओंका पराभव करनेवाले नेता इन्द्रको सब देवोंने मिलकर एकमतसे अपना अग्रगामी बना दिया ।

२ **राजसे जजनु**— राज्यशासन करनेके लिये निर्माण किया । चुनाव करके सबने एकमतसे पसंद किया ।

३ **क्रत्वा वरे वरिष्ठं आमुरिं उग्रं ओजिष्ठं तवसं तरस्विनं ततक्षुः**— पुरुषार्थसे श्रेष्ठ कार्य करनेवालोंमें वरिष्ठ, शत्रुका वध करनेवाले, उग्रवीर, सामर्थ्यवान्, बलवान्, शीघ्रतासे कार्य करनेवाले ऐसे वीर इन्दको सब देवोंने अपना राज्यशासन करनेके लिये चुनकर रखा ।

४ **धृतव्रतः ओजसा समूतिभिः ईं स्वर्पतिं वृधे**— नियमोंके अनुसार चलनेवाले, ओजस्वी, संरक्षणके साधनोंसे

[सूक्त ५५]

(ऋषिः — १-३ रेभः। देवता — इन्द्रः।)

तमिन्द्रं जोहवीमि मघवानमुग्रं सत्रा दधानमप्रतिष्कुतं शवांसि ।
मंहिष्ठो गीर्भिरा च यज्ञियो ववर्तद्राये नो विश्वा सुपथा कृणोतु वज्री ॥ १ ॥
या इन्द्र भुज आभरः स्वर्वाँ असुरेभ्यः ।
स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः ॥ २ ॥
यमिन्द्र दधिषे त्वमश्वं गां भागमव्ययम् ।
यजमाने सुन्वति दक्षिणावति तस्मिन्तं धेहि मा पणौ ॥ ३ ॥ (३३७)

युक्त ऐसे स्वर्गके राज्यके शासनपर अपनी बुद्धि हो इस इच्छासे देवोंने एकमतसे इन्द्रको नियुक्त किया।

५ अभिस्वरा विप्राः चक्षसा मेषं नेमिं नमन्ति— एक स्वरसे ज्ञानी लोग अपनी दृष्टिसे योग्य नेताको रक्षक नियुक्त करते हैं।

४ सुदीतयः अद्रुहः तरस्विनः समृक्वभिः वः कर्णे— उत्तम तेजस्वी, आपसमें द्रोह न करनेवाले वेगवान् देव ऋचाओंसे आपके कानमें कहते हैं कि यह इन्द्र श्रेष्ठ है।

(सूक्त ५५)

(**तं मघवानं**) उस धनवान् (**उग्रं सत्रा शवांसि दधानं**) उग्रवीर सदा बलोंको धारण करनेवाले (**अप्रतिष्कुतं**) पीछे न हटनेवाले (**इन्द्रं जोहवीमि**) इन्द्रको मैं बार बार बुलाता हूं। (**मंहिष्ठः**) वह महान् (**यज्ञियः**) पूजनीय इन्द्र (**नः राये**) हमें संपत्ति देनेके लिये (**गीर्भिः आ ववर्तद्**) स्तुतियोंसे हमारी ओर आ जाय। वह (**वज्री**) वज्रधारी (**नः विश्वा सुपथा कृणोतु**) हमारे सब मार्ग उत्तम बनावे ॥ १ ॥ (ऋ. ८।९७।१३)

हे (**स्वर्वान् इन्द्र**) तेजस्वी इन्द्र! (**या भुजः असुरेभ्यः आभरः**) जो भोग तूने असुरोंसे लाये हैं, हे (**मघवन्**) धनवान् इन्द्र! (**स्तोतारं अस्य वर्धय**) स्तोत्रपाठ करनेवालेके लिये इन भोगोंका वर्धन करो तथा (**ये च त्वे वृक्तबर्हिषः**) जो तेरे लिये आसन देते हैं ॥ २ ॥ (ऋ. ८।९७।१)

हे इन्द्र! (**यं त्वं**) जिसके लिये तू (**अश्वं गां अव्ययं भागं दधिषे**) घोडा, गौ तथा अव्यय भाग धारण करता है (**तस्मिन् दक्षिणावति सुन्वति यजमाने**) दक्षिणा देनेवाले, सोमरस निकालनेवाले यजमानमें (**तं धेहि**) उसको तू दे। (**मा पणौ**) पण्य व्यवहार करनेवालेको न दे ॥ ३ ॥ (ऋ. ८।९७।२)

१ तं उग्रं शवांसि सत्रा दधानं अप्रतिष्कुतं इन्द्रं जोहवीमि— उस उग्रवीर, सब बलोंको साथ साथ धारण करनेवाले, पीछे न हटनेवाले इन्द्रको बारंबार मैं बुलाता हूं। उसकी मैं बारंबार स्तुति करता हूं।

२ मंहिष्ठः यज्ञियः नः राये गीर्भिः आ ववर्तत्— महान् पूजनीय वह इन्द्र हमें धन देनेके लिये हमारी स्तुतियोंसे हमारी ओर आ जाय।

३ वज्री नः विश्वा सुपथा कृणोतु— वह वज्रधारी इन्द्र हमारे उन्नतिके सब मार्ग उत्तम निष्कंटक हमारे लिये सुखकर बनावें।

४ स्वर्वान् इन्द्र! या भुजः असुरेभ्यः आभरः— हे तेजस्वी इन्द्र! जो भोग तूने असुरोंसे लाये हैं। **स्तोतारं अस्य वर्धय**— स्तुति करनेवालोंको ये भोग अधिक प्रमाणमें मिलें ऐसा कर।

५ ये च त्वे वृक्तबर्हिषः— जो तेरे लिये आसन देते हैं उनको भी वे भोग अधिक प्रमाणमें मिलें।

राक्षसोंका पराभव करके उनको इन्द्र लुटे और जो भोग मिले वे भोग अपने अनुयायियोंको देवे।

६ यं त्वं अव्ययं भागं गां अश्वं दधिषे तं यजमाने धेहि, मा पणौ— जिस भागको, गौ, अश्व आदिको तू धारण करता है वह भाग यज्ञकर्ताको ही दे दो। कंजूसको न दो। दान देनेवालेको दो, दान न देनेवालेको, केवल व्यापार करनेवालेको ही न दे।

[सूक्त ५६]

(ऋषिः — १-६ गोतमः । देवता — इन्द्रः ।)

इन्द्रो॒ मदा॑य वावृधे॒ शव॑से वृत्र॒हा नृभिः॑ ।
तमिन्म॒हत्स्वाजि॒षूत॒ेमर्भे॑ हवामहे॒ स वाजे॑षु प्र नो॑ऽविषत् ॥ १ ॥
अ॒सि॒ हि वी॑र॒ सेन्यो॑ऽसि॒ भूरि॑ परादु॒दिः॑ ।
असि॑ दु॒भ्रस्य॑ चिद्बु॒धो यज॑मानाय शिक्षसि सुन्व॒ते भूरि॑ ते॒ वसु॑ ॥ २ ॥
यदु॒दीर॑त आ॒जयो॑ धृ॒ष्णवे॑ धीयते॒ धना॑ ।
युक्ष्वा म॑दच्यु॒ता हरी॑ कं ह॒नः कं वसौ॑ दधो॑ऽस्माँ इ॑न्द्र॒ वसौ॑ दधः ॥ ३ ॥
मदे॑मदे॒ हि नो॑ दु॒दिर्यू॒था गवा॑मृजु॒क्रतुः॑ ।
सं गृ॑भाय पुरू श॒तोभ॑याह॒स्त्या वसु॑ शिशी॒हि रा॒य आ भ॑र ॥ ४ ॥
मा॒दय॑स्व सु॒ते सचा॒ शव॑से शूर॒ राध॑से ।
वि॒द्मा हि त्वा॑ पुरूवसु॒मुप॑ कामा॑न्त्ससृ॒ज्महेऽथा॑ नोऽवि॒ता भ॑व ॥ ५ ॥
ए॒ते त॑ इन्द्र॒ ज॒न्तवो॒ विश्वं॑ पुष्यन्ति॒ वार्य॑म् ।
अ॒न्तर्हि॑ ख्यो॒ जना॑नाम॒र्यो वेदो॒ अदा॑शुषां॒ तेषा॑ नो॒ वेद॒ आ भ॑र ॥ ६ ॥ (३४३)

(सूक्त ५६)

(**नृभिः**) मनुष्योंने (**वृत्रहा इन्द्रः**) वृत्रको मारनेवाले इन्द्रको (**शवसे मदाय वावृधे**) बल और आनन्दके लिये बढाया है। (**तं इत् महत्सु आजिषु**) उसको हम बडे युद्धोंमें (**उत ईं अर्भे**) और उसे छोटे युद्धोंमें (**हवामहे**) बुलाते हैं, (**सः वाजेषु नः प्र अविषत्**) वह युद्धोंमें हमारी रक्षा करता है ॥ १ ॥ (ऋ. १।८१।१)

हे वीर ! तू (**सेन्यः असि हि**) अकेला सेनाके बराबर है। (**भूरि परादिः**) तू बहुत शत्रुओंको दूर करनेवाला है। तू (**दभ्रस्य वृधः चित् असि**) छोटेको बढानेवाला है। (**यजमानाय शिक्षसि**) यजमानके लिये तू धन देता है। (**सुन्वते ते भूरि वसु**) सोमरस निकालनेवालेके लिये तेरे पास बडा धन है ॥ २ ॥ (ऋ. १।८[illegible])

(**यत् आजयः उदीरत**) जब संग्राम शुरू होते हैं, (**धना धृष्णवे धीयते**) तब धन वीरके लिये रखे जाते हैं। (**मदच्युता हरी युक्ष्वा**) मद गिरानेवाले दो घोडोंको जोत, (**कं हनः**) किसको तूने मारा ? (**कं वसौ दधः**) किसको धनमें रखा ? हे इन्द्र ! (**अस्मान् वसौ दधः**) हमें धनमें रखा है ॥ ३ ॥ (ऋ. १।८१।३)

हे (**ऋजुक्रतुः**) सरल हृदय ! (**मदेमदे**) प्रसन्न होनेपर तू (**गवां युथा नः ददि हि**) गौवोंके झुंडोंको देता है। (**उभया हस्त्या**) दोनों हाथोंसे (**पुरू शता**) सैकडों प्रकारका (**वसु**) धन (**सं गृभाय**) इकट्ठा कर, (**शिशीहि**) हमें तीक्ष्ण बुद्धिमान् कर और हमें (**रायः आ भर**) धन लाकर दे ॥ ४ ॥ (ऋ. १।८१।७)

(**सुते मादयस्व**) सोमरस निकालनेपर अपनेको हर्षित कर दे। हे शूर ! (**शवसे राधसे सचा**) बल और धन देनेके लिये साथ साथ तैयार रह। (**त्वा पुरूवसुं विद्मा हि**) हम तुझे धनवाला करके जानते हैं। (**कामान् उप सस्रुज्महे**) अपनी कामनाएं तेरे पास रखी हैं। (**अथ नः [illegible] भव**) अब हमारा रक्षक हो ॥ ५ ॥ (ऋ. १।८१।८)

हे इन्द्र ! (**ते एते जन्तवः**) ये तेरे उपासक लोग (**विश्वं कार्यं पुष्यन्ति**) सब स्वीकार करने योग्य धनको बढाते हैं। (**जनानां अर्यः**) तू जनोंका स्वामी है। (**अदाशुषं जनानां वेदः**) कंजूश मानवोंके पासका धन (**अन्तः खयः हि**) ढूंढ निकाल, (**तेषां वेदः न आ भर**) उनका धन हमारे लिये भर दे ॥ ६ ॥ (ऋ. १।८१।९)

[सूक्त ५७]

(ऋषिः — १-३ मधुच्छन्दाः, ४-७ विश्वामित्रः, ८-१० गृत्समदः, ११-१६ मेध्यातिथिः । देवता — इन्द्रः ।)

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे । जुहूमसि द्यविद्यवि ॥ १ ॥
उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब । गोदा इद्रेवतो मदः ॥ २ ॥
अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम् । मा नो अति ख्य आ गहि ॥ ३ ॥

---

१ **नृभिः वृत्रहा इन्द्रः शवसे मदाय वावृधे**— मनुष्य शत्रुनाशक इन्द्रकी बल और आनंद बढानेके लिये महिमा गाते हैं । जो इस इन्द्रकी स्तुति गाते हैं उनका बल बढता है और बल बढनेसे हर्ष भी बढता है ।

२ **तं महत्सु आजिषु उत अर्भे हवामहे**— उस इन्द्रको जैसे हम बडे युद्धोंमें बुलाते हैं उसी तरह छोटी स्पर्धामें भी सहायताके लिये बुलाते हैं ।

३ **सः वाजेषु नः प्र अविषत्**— वह युद्धोंमें हमारी रक्षा करता है ।

४ **हे वीर ! सैन्यः असि**— हे वीर ! तू अकेला होता हुआ सैन्य जैसा प्रभावी है । सब सैन्यकी शक्ति तुम्हारी अकेलेकी शक्तिके बराबर है ।

५ **भूरि पराददिः**— बहुत शत्रुओंको दूर तू करता है ।

६ **दभ्रस्य वृधः असि**— छोटे सामर्थ्यवालेका सामर्थ्य बढानेवाला तू है ।

७ **सुन्वते यजमानाय भूरि वसु शिक्षसि**— यज्ञ करनेवालेको तू बहुत धन देता है ।

८ **यत् आजयः उद्धरत धना धृष्णवे धायते**— जब युद्ध छिड जाते हैं तब धन शूर वीरके लिये ही रखा जाता है । शूरका विजय होता है इसलिये उसको ही धन मिलता है ।

९ **कं हनः ?**— किस शत्रुको तूने मारा ?

१० **कं वसौ दधः ?**— किसको धनमें रखा है ?

११ **हे इन्द्र ! अस्मान् वसौ दधः**— हे इन्द्र ! तूने हमें धनमें रखा है ।

१२ **हे ऋजुक्रतुः ! मदेमदे गवां यूथा नः ददिः**— हे सरल हृदयवाले इन्द्र ! प्रसन्न होनेपर गौओंके झुण्ड तूने हमें दिये ।

१३ **उभया हस्त्या पुरुशता वसु सं गृभाय**— दोनों हाथोंसे सैकडों प्रकारके धन इकट्ठा करके हमें दे ।

१४ **शिशीहि, रायः आ भर**— हमें तीक्ष्ण बुद्धिमान् कर और हमें धन लाकर भर दे ।

१५ **शवसे राधसे सचा**— बल और धनके लिये तू तैयार है ।

१६ **त्वा पुरुवसुं विप्र**— तुझे बडा धनवाला हम जानते हैं ।

१७ **कामान् उप समृज्महे**— हमारी इच्छाएं तुम्हारे सामने रखते हैं ।

१८ **नः अविता भव**— हमारा रक्षक हो ।

१९ **हे इन्द्र ! ते एते जन्तवः विश्वं वार्यं पुष्यन्ति**— हे इन्द्र ! तेरे ये उपासक सब प्रकारके धनको बढाते हैं ।

२० **जनानां अर्यः अदाशुषां वेदः अन्तः ख्यः, तेषां वेदः नः भर**— तू जनोंका स्वामी है । कंजूसोंका धन ढूंढ निकाल और वह धन हमें दे दो । हम इस धनमें बडे बडे यज्ञ करेंगे जिनसे जगत्का कल्याण होगा ।

(सूक्त ५७)

(**गोदुहे सुदुघां इव**) दोहन करनेके समय जिस तरह उत्तम दूध देने [illegible] बुलाते हैं, उस तरह (**द्यवि द्यवि**) प्र [illegible] **सुरूपकृत्नुं ऊतये जुहूमसि**) उत्तम रूप करनेवाले इन्द्रको हम अपनी सुरक्षा करनेके लिये बुलाते हैं ॥ १ ॥ (ऋ. १।४।१)

(**नः सवना उप आ गहि**) हमारे यज्ञोंमें आओ । तू (**सोमपाः**) सोम पीनेवाला है अतः (**सोमस्य पिब**) सोमरस पी । (**रेवतः मदः गोदा इत्**) तुझ जैसे धनवालेका हर्ष गौओंको देनेवाला है ॥ २ ॥ (ऋ. १।४।२)

(**अथ ते अन्तमानां सुमतीनां विद्याम**) अब हम तेरी अन्दरकी सुमतियोंको हम प्राप्त करे । (**नः मा अति ख्यः**) हमें परे न हटा, (**मा गहि**) हमारे पास आ ॥ ३ ॥ (ऋ. १।४।३)

शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युम्निनं पाहि जागृविम् । इन्द्र सोमं शतक्रतो ॥ ४ ॥
इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु । इन्द्र तानि त आ वृणे ॥ ५ ॥
अगन्निन्द्र श्रवो बृहद्द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम् । उत्ते शुष्मं तिरामसि ॥ ६ ॥
अर्वावतो न आ गह्यथो शक्र परावतः । उ लोको यस्ते अद्रिव इन्द्रेह तत आ गहि ॥ ७ ॥
इद्धो अङ्ग महद्भयमभी षदप चुच्यवत् । स हि स्थिरो विचर्षणिः ॥ ८ ॥
इन्द्रश्च मृळयाति नो न नः पश्चादघं नशत् । भद्रं भवाति नः पुरः ॥ ९ ॥
इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत् । जेता शत्रून्विचर्षणिः ॥ १० ॥
क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद्वयो दधे ।
अयं यः पुरो विभिनत्योजसा मन्दानः शिप्र्यन्धसः ॥ ११ ॥
दाना मृगो न वारणः पुरुत्रा चरथं दधे
नकिष्ट्वा नि यमदा सुते गमो महाँश्चरस्योजसा ॥ १२ ॥
य उग्रः सन्ननिष्टृत स्थिरो रणाय संस्कृतः ।
यदिं स्तोतुर्मघवा शृणवद्धवं नेन्द्रो योषत्या गमत् ॥ १३ ॥
वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः ।
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन्परि स्तोतार आसते ॥ १४ ॥
स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः ।
कदा सुतं तृषाण ओक आ गम इन्द्र स्वब्दीव वंसगः ॥ १५ ॥
कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद्वाजं दर्षि सहस्रिणम् ।
पिशङ्गरूपं मघवन्विचर्षणे मक्षू गोमन्तमीमहे ॥ १६ ॥ (३५९)

[सूक्त ५८]

(ऋषिः — १-२ नृमेधः, ३-४ जमदग्निः । देवता — १-२ इन्द्रः, ३-४ सूर्यः ।)

आयन्त इव सूर्य विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।
वसूनि जाते जनमान ओजसा प्रति भागं न दीधिम ॥ १ ॥

४-१० देखो अथर्व. २०।२०।१-७ ।
११-१३ देखो अथर्व. २०।५३।१-३ ।
१४-१६ देखो अथर्व. २०।५२।१-३ ।

१ इन्द्र 'सुरूपकृत्नु'— उत्तम रूपोंवाले पदार्थोंको बनानेवाला है। जगत् भरमें जो सुन्दरता है वह उसकी बनाई है।

२ ऊतये द्यविद्यवि जुहूमसि— हम सुरक्षाके लिये प्रतिदिन उसको बुलाते हैं।

३ रेवतः मदः गोदाः— धनवान्का हर्ष धन देनेवाला होता है।

(सूक्त ५८)

(सूर्य आयन्त इव) सूर्यका आश्रय लेनेके समान (इन्द्रस्य विश्वा वसूनि इत् भक्षत्) इन्द्रके सब धनोंके हम भागी बनें। (जाते जनमाने) इस विश्वमें उत्पन्न हुए और उत्पन्न होनेवाले (प्रति भागं न) प्रत्येक भागको (ओजसा दीधिम) बलसे हम ध्यान करते रहते हैं ॥१॥
(ऋ. ८।९९।३)

अन॑र्शरातिं वसुदामुप॑ स्तुहि भ॒द्रा इन्द्र॑स्य रा॒तयः॑ ।
सो अ॑स्य॒ कामं॑ विध॒तो न रो॑षति॒ मनो॑ दा॒नाय॑ चोद॒यन् ॥ २ ॥
बण्म॒हाँ अ॑सि सूर्य॒ बडा॑दित्य म॒हाँ अ॑सि ।
महस्ते॑ स॒तो म॑हि॒मा प॑नस्यते॒ऽद्धा दे॑व म॒हाँ अ॑सि ॥ ३ ॥
बट् सू॑र्य॒ श्रव॑सा म॒हाँ अ॑सि स॒त्रा दे॑व म॒हाँ अ॑सि ।
मह्ना॑ दे॒वाना॑मसु॒र्यः॑ पु॒रोहि॑तो वि॒भु ज्योति॒रदा॑भ्यम् ॥ ४ ॥ (३.३)

[सूक्त ५९]

(ऋषिः — १-२ सेव्यातिथिः, ३-४ वसिष्ठः । देवता — इन्द्रः ।)

उदु॒ त्ये मधु॑मत्तमा॒ गिर॒ स्तोमा॑स ईरते ।
सत्रा॒जितो॑ धन॒सा अक्षि॑तोतयो वाज॒यन्तो॒ रथा॑ इव ॥ १ ॥
कण्वा॑ इव॒ भृग॑वः॒ सूर्या॑ इव॒ विश्व॒मिद्धी॒तमा॑नशुः ।
इन्द्रं॒ स्तोमे॑भिर्म॒हय॑न्त आ॒यवः॑ प्रि॒यमे॑धासो अस्वरन् ॥ २ ॥
उदिन्न्व॑स्य रिच्य॒तेंऽशो॒ धनं॒ न जि॒ग्युषः॑ ।
य इन्द्रो॒ हरि॑वा॒न्न द॑भन्ति॒ तं रिपो॒ दक्षं॑ दधाति सो॒मिनि॑ ॥ ३ ॥

(**अनर्शरातिं वसुदां उप स्तुहि**) जिसके दानको कभी हानि नहीं पहुंचती, उस धनदाती स्तुति कर । (**इन्द्रस्य रातयः भद्राः**) इन्द्रकी दानें उत्तम हैं । (**मनः दानाय चोदयन्**) अपने मनको वह दानके लिये प्रेरित करता है इस कारण (**अस्य कामं विधतः**) इसकी इच्छाके अनुसार कार्य करनेवाले पर वह (**न रोषति**) क्रोध नहीं करता ॥२॥

(ऋ. ८।९९।४)

हे सूर्य ! (**बट् महां असि**) तू निश्चयसे बडा है । हे आदित्य ! (**बट् महां असि**) तू निश्चयसे बडा है । (**ते सतः महः महिमा**) तुझ बडेका महिमा महान् (**पनस्यते**) गाया जाता है । हे देव ! (**अद्धा महां असि**) तू निश्चयसे बडा है ॥ ३ ॥ (ऋ. ८।१०१।११; अथर्व. १३।२।२९)

हे सूर्य ! (**श्रवसा बट् महां असि**) यशसे तू बडा है । हे देव (**सत्रा महां असि**) तू सदा महान् है । (**मह्ना**) महत्वसे (**देवानां असुर्यः पुरोहितः**) तू देवोंका शक्तिसे आगे हुआ अग्रेसर है, तेरी (**ज्योतिः**) तेजस्विता (**अदाभ्यं विभु**) न दबनेवाली और व्यापक है ॥ ४ ॥

(ऋ. ८।१०१।१२)

१ जाते जनिमाने प्रतिभागं न ओजसा दधिम— उत्पन्न हुए तथा उत्पन्न होनेवाले प्रत्येक भागको बलसे जैसा धारण करते हैं वैसा हम बलसे सबको धारण करेंगे । बलसे ही सबकी धारणा हो सकती है ।

२ अनर्शरातिं वसुदां उप स्तुति— जिसके दानमें कभी भी कमी नहीं होती वैसा धनदाता इन्द्रकी स्तुति कर ।

३ इन्द्रस्य भद्राः रातयः— इन्द्रके दान कल्याण करनेवाले हैं ।

४ मनः दानाय चोदयन्— मन दानके लिये प्रेरित कर ।

५ अस्य कामं विधतः न रोषति— इस इन्द्रके अनुकूल कार्य करनेवाले पर वह कदापि रोष नहीं करता ।

६ महान् असि— तू बडा है ।

७ देवानां असुर्यः पुरोहितः, अदाभ्यं विभु ज्योतिः— देवोंका वह बलवान् अग्रेसर है, उसका तेज न दबनेवाला और चारों ओर फैला है ।

(सूक्त ५९)

१-२ देखो (अथर्व. २०।१०।१-२) (ऋ. ८।३।१५-१६)

(**अस्य अंशः उत् रिच्यते इत् नु**) इसका धनका भाग बढता ही जाता है ना ? (**जिग्युषः धनं न**) विजयी वीरके धनके समान । (**यः इन्द्रः हरिवान्**) जो इन्द्र घोडोंवाला है, (**तं रिपः न दभन्ति**) शत्रु उसको नहीं

मन्त्रमखर्वं सुधितं सुपेशसं दधात यज्ञियेष्वा ।
पूर्वीश्चन प्रसितयस्तरन्ति तं य इन्द्रे कर्मणा भुवत् ॥ ४ ॥ (३६७)

[सूक्त ६०]

(ऋषिः — १-३ सुकक्षः, सुतकक्षो वा; ४-६ मधुच्छन्दाः । देवता — इन्द्रः ।)

एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः । एवा ते राध्यं मनः ॥ १ ॥
एवा रातिस्तुवीमघ विश्वेभिर्धायि धातृभिः । अधा चिदिन्द्र मे सचा ॥ २ ॥
मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुर्भुवो वाजानां पते । मत्स्वा सुतस्य गोमतः ॥ ३ ॥
एवा ह्यस्य सूनृता विरप्शी गोमती मही । पक्वा शाखा न दाशुषे ॥ ४ ॥
एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते । सद्यश्चित्सन्ति दाशुषे ॥ ५ ॥
एवा ह्यस्य काम्या स्तोम उक्थं च शंस्या । इन्द्राय सोमपीतये ॥ ६ ॥ (३७२)

दबा सकते। वह (**सोमिनी दक्षं दधाति**) सोमयाग करनेवालेमें शक्ति रखता है ॥ ३ ॥ (ऋ. ७।३२।१२)

(**अखर्वं सुधितं सुपेशसं मन्त्रं**) उत्तम ऊंचा और सुन्दर रूपवाला मंत्र (**यज्ञियेषु आ दधात**) यज्ञकर्मोंमें प्रयुक्त करो। (**ये इन्द्रे कर्मणा भुवत्**) जो इन्द्रमें कर्मसे आश्रित होते हैं वे (**पूर्वीः प्रसितयः चन तरन्ति**) बहुतसे बन्धनोंको पार करते हैं ॥ ४ ॥ (ऋ. ७।३२।१३)

१ **जिग्युषः धनं न अस्य अंशः उद् रिच्यते**— विजयी वीरका धन बढता है उस तरह इस इन्द्रका धन बढता ही जाता है। क्योंकि वह इन्द्र सदा विजयी रहता है।

२ **तं रिपः न दभन्ति**— उसको शत्रु नहीं दबाते क्योंकि वह विशेष शूर है।

३ **ये इन्द्रे कर्मणा भुवत् पूर्वीः प्रसितयः तरन्ति**— जो इन्द्रमें शुभ कर्मसे आश्रय करते हैं, उनके सब पूर्वके बंधन दूर होते हैं। यह इन्द्रका प्रभाव है।

(**सूक्त ६०**)

(**एव वीरयुः हि असि**) ऐसा तू वीरके साथ रहनेवाला है। (**शूरः उत स्थिरः एव**) तू शूर और सुदृढ है। (**एवा ते मनः राध्यं**) ऐसा तेरा मन आराधनीय है ॥ १ ॥ (ऋ. ८।९२।२८)

हे (**तुवीमघ**) बडे धनवाले! (**विश्वेभिः धातृभिः**) सब धारण करनेवालोंने (**एवा रातिः धायि**) तेरी देन धारण की है हे इन्द्र! (**अधा मे सचा चित्**) तू अब मेरे साथ रह ॥ २ ॥ (ऋ. ८।९२।२९)

हे (**वाजानां पते**) धनोंके स्वामिन्! (**ब्रह्मा इव**) ब्रह्माके समान (**तन्द्रयुः मा सु भुवः**) आलसी न हो (**गोमतः सुतस्य मत्स्व**) दूधसे मिले सोमरससे आनन्दित हो ॥ ३ ॥ (ऋ. ८।९२।३०)

(**पक्वा शाखा न**) पक्व फलोंवाली शाखाकी तरह (**दाशुषे**) दानीके लिये (**अस्य सूनृता विरप्शी मही गोमती एव**) इस इन्द्रकी बुद्धि दयालु, महिमाशाली और बडी गौओंवाली होती है ॥ ४ ॥ (ऋ. १।८।८)

हे इन्द्र! (**मावते**) मेरे जैसे (**दाशुषे**) दानीके लिये (**ते विभूतयः ऊतयः**) तेरी विभूतियां और रक्षाएं (**एवा ते सद्यः चित् सन्ति**) निःसंदेह तत्काल प्राप्त होनेवाली हैं ॥ ५ ॥ (ऋ. १।८।९)

(**सोमपीतये इन्द्राय**) सोमपान करनेवाले इन्द्रके लिये (**अस्य काम्या स्तोम उक्थं च शंस्या एव**) इसके प्रिय स्तोत्र और गीत गाने योग्य हैं ॥ ६ ॥ (ऋ. १।८।१०)

१ **वीरयुः शूरः उत स्थिर असि**- हे इन्द्र! तू वीरोंके साथ रहनेवाला शूर और युद्धमें स्थिर रहकर युद्ध करनेवाला है।

२ **एवा ते मनः राध्यं**— ऐसा तेरा मन आराधनीय है।

३ **हे तुवीमघ! विश्वेभिः धातृभिः एवा रातिः धायि**— हे धनवाले इन्द्र! सब उपासकोंने तेरी दानकी धारणा की है। उपासकोंका तेरी दान शक्तिपर विश्वास है।

४ **अधा मे सचा चित्**— अब मेरा मित्र होकर तू रह।

[सूक्त ६१]

(ऋषिः — १-६ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ । देवता — इन्द्रः ।)

तं ते॒ मदं॑ गृणीमसि॒ वृष॑णं पृ॒त्सु सा॑स॒हिम् । उ॒ लो॒क॒कृ॒त्नुम॑द्रिवो हरि॒श्रिय॑म् ॥ १ ॥
येन॒ ज्योतीं॑ष्या॒यवे॒ मन॑वे च वि॒वेदि॑थ । म॒न्दा॒नो अ॒स्य ब॒र्हिषो॒ वि रा॑जसि ॥ २ ॥
तद॒द्या चि॑त्त उ॒क्थिनोऽनु॑ ष्टुवन्ति पू॒र्वथा॑ । वृष॑पत्नीर॒पो ज॑या दि॒वेदि॑वे ॥ ३ ॥
तम्व॒भि प्र गा॑यत पुरुहू॒तं पु॑रुष्टु॒तम् । इन्द्रं॑ गी॒र्भिस्त॑वि॒षमा वि॑वासत ॥ ४ ॥
यस्य॑ द्वि॒बर्ह॑सो बृ॒हत्सहो॑ दा॒धार॒ रोद॑सी । गि॒रीँरज्राँ॑ अ॒पः स्व॑र्वृषत्व॒ना ॥ ५ ॥
स रा॑जसि पुरुष्टुतँ॒ एको॑ वृ॒त्राणि॑ जिघ्नसे । इन्द्र॒ जैत्रा॑ श्रव॒स्या॑ च॒ यन्त॑वे ॥ ६ ॥ (३७९)

---

५ तन्द्रयुः मा भुवः— आलसी न बन । उद्यमी होकर रह ।

६ पक्वा शाखा न, दाशुषे अस्य सूनृता विरप्शी मही गोमती एव— पके फलोंसे युक्त शाखाके समान दाताके लिये इसकी सुबुद्धि बडी लाभदायक और गौवें देनेवाली होती है ।

७ हे इन्द्र ! मावते दाशुषे ते विभूतयः ऊतयः सद्यः चित् सन्ति— हे इन्द्र ! मेरे जैसे दाताके लिये तेरी विभूतियां और तेरे संरक्षण तत्काल प्राप्त होते हैं ।

(सूक्त ६१)

हे (अद्रिवः) वज्रधारी ! (ते तं मदं गृणीमसि) हम तेरे उस आनन्दकी प्रशंसा करते हैं कि जो (वृषणं) बलवान्, (पृत्सु सासहिं) युद्धोंमें विजयी, (लोककृत्नुं) रहनेके लिये आश्रय देनेवाला और (हरिश्रियं) जो सुवर्णकी शोभावाला है ॥ १ ॥ (ऋ. ८।१५।४)

(येन ज्योतींषि) जिसने तेज (आयवे मनवे च विवेदिथ) आयु और मनुके लिये दिया, वह (मन्दानो) तू आनंदित होकर (अस्य बर्हिषो विराजसि) इस आसन पर विराजमान हो ॥ २ ॥ (ऋ. ८।१५।५)

(तद् अद्य) सो आज (उक्थिनः पूर्वथा अनु स्तुवन्ति) हम स्तोत्रपाठक पूर्वकी तरह स्तुति गाते हैं, तू (दिवे दिवे वृषपत्नीः अपः जय) प्रतिदिन किसानोंके पालक जलोंको जीत कर प्राप्त कर ॥ ३ ॥ (ऋ. ८।१५।६)

(तं उ पुरुहूतं पुरुष्टुतं) उस अनेकों द्वारा बुलाये और अनेकों द्वारा प्रशंसित (इन्द्रं) इन्द्रकी (गीर्भिः स्तविषं) स्तोत्रोंसे स्तुति किये हुए की (आ विवासत) पूजा करो ॥ ४ ॥ (ऋ. ८।१५।१)

(यस्य द्विबर्हसः बृहत् सहः) जिस द्विगुणित बलवाले इन्द्रके बडे सामर्थ्यने (रोदसी दाधार) द्युलोक और भूलोकका धारण किया है और (वृषत्वना) जिसकी शक्तिने (गिरीन् अज्रान्) पर्वतों और मैदानोंको (अपः स्वः) जलों और तेजको धारण किया है ॥ ५ ॥ (ऋ. ८।१५।२)

(स राजसि) वह तू अकेला शासन करता है । हे (पुरुष्टुत) बहुतों द्वारा स्तुति किये गये (एकः वृत्राणि जिघ्नसे) तू अकेला वृत्रोंको मारता है । हे इन्द्र ! (जैत्रा श्रवस्या च यन्तवे) विजय और यशके लिये ही यह तू करता है ॥ ६ ॥ (ऋ. ८।१५।३)

इस सूक्तमें इन्द्रके ये गुण कहे हैं—

१ अद्रिवः, वृषणं, पृत्सु सासहिं, लोककृत्नुं हरिश्रियं— वज्रधारी, बलवान्, युद्धोंमें विजयी, लोकोंको आश्रयस्थान देनेवाला और सुवर्णकी कान्तिवाला इन्द्र है ।

२ यस्य बृहत् सहः रोदसी दाधार— जिसके बलने द्युलोक और भूलोकका धारण किया है ।

३ वृषत्वना गिरीन् अज्रान् अपः स्वः— जिसके सामर्थ्यने पर्वत, मैदान, जलप्रवाह और ज्योतिका धारण किया है ।

४ स राजसि— वह इन्द्र तू शासन करता है ।

५ पुरुष्टुत ! एकः वृत्राणि जिघ्नसे— हे अनेकों द्वारा प्रशंसित इन्द्र ! तू अकेला ही अनेक वृत्रोंको- अनेक शत्रुओंको मारता है ।

६ जैत्रा श्रवस्या च यन्तवे— विजय और यश प्राप्त करता है ।

[सूक्त ६२]

(ऋषिः — १-४ सोभरिः; ५-७ नृमेधः; ८-१० गोपूक्त्यश्वसूक्तिनौ । देवता — इन्द्रः ।)

वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कञ्चिद्भरन्तोऽवस्यवः । वाजे चित्रं हवामहे ॥ १ ॥
उप त्वा कर्मन्नूतये स नो युवोग्रश्चक्राम यो धृषत् ।
त्वामिद्धर्थवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सानसिम् ॥ २ ॥
यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य आनिनाय तमु व स्तुषे । सखाय इन्द्रमूतये ॥ ३ ॥
हर्यश्वं सत्पतिं चर्षणीसहं स हि ष्मा यो अमन्दत ।
आ तु नः स बयति गव्यमश्व्यं स्तोतृभ्यो मघवा शतम् ॥ ४ ॥
इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत् । धर्मकृते विपश्चिते पनस्यवे ॥ ५ ॥
त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं सूर्यमरोचयः । विश्वकर्मा विश्वदेवो महाँ असि ॥ ६ ॥
विभ्राजं ज्योतिषा स्व१रगच्छो रोचनं दिवः । देवास्ते इन्द्र सख्याय येमिरे ॥ ७ ॥
तम्वभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतम् । इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत ॥ ८ ॥
यस्य द्विबर्हसो बृहत्सहो दाधार रोदसी । गिरीँरज्राँ अपः स्वर्वृषत्वना ॥ ९ ॥
स राजसि पुरुष्टुत एको वृत्राणि जिघ्नसे । इन्द्र जैत्रा श्रवस्या च यन्तवे ॥ १० ॥ (३८९)

[सूक्त ६३]

(ऋषिः — १-३ भुवनः साधनो वा, ३ (द्वि०) भरद्वाजः; ४-६ गोतमः; ७-९ पर्वतः । देवता — इन्द्रः ।)

इमा नु कं भुवना सीषधामेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ।
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सह चकल्पाति ॥ १ ॥

(सूक्त ६१)

१-४ देखो अथर्व २०।१४।१-४ ।

(**इन्द्राय साम गायत**) इन्द्रके लिये सामगान करो । (**बृहते विप्राय**) बडे ज्ञानी (**धर्मकृते विपश्चिते पनस्यवे**) धर्मका आचरण करनेवाले, ज्ञानी तथा स्तुतिके योग्यके लिये (**बृहत्**) बृहत् नामक साम गाओ ॥ ५ ॥ (ऋ. ८।९८।१)

हे इन्द्र ! (**त्वं अभिभूः असि**) तू विजयी है, (**त्वं सूर्यं अरोचयः**) तूने सूर्यको प्रकाशित किया है, तू (**विश्वकर्मा**) तू सबका बनानेवाला, (**विश्वदेवः महान् असि**) तू इस विश्वका देव और बडा है ॥ ६ ॥ (ऋ. ८।९८।२)

(**ज्योतिषा विभ्राजन्**) ज्योतिसे चमकते हुए (**दिवः रोचनं स्वः अगच्छः**) द्यौके चमकनेवाले तेजस्वी स्थानको तू पहुंचा है । हे इन्द्र ! (**देवाः ते सख्याय येमिरे**) देव तेरी मित्रताके लिये यत्न करते हैं ॥ ७ ॥ (ऋ. ८।९८।३)

८-१० देखो अथर्व २०.६१।४-६ ।

इन्द्रके ये गुण हैं—

१ **धर्मकृते, विपश्चिते पनस्यवे विप्राय**— धर्मका आचरण करनेवाला, ज्ञानी, स्तुत्य, विद्वान् ।

२ **अभिभूः विश्वकर्मा, विश्वदेवः महान् असि**— तू विजयी विश्वका निर्माण करनेवाला, विश्वका उपास्य देव और बडा इन्द्र है ।

३ **देवाः ते सख्याय येमिरे**— सब तेरी मित्रता करना चाहते हैं ।

(सूक्त ६३)

(**इन्द्रः विश्वे च देवाः**) इन्द्र और सब देव तथा हम (**इमा भुवना कं सीषधाम**) इन भुवनोंको आनंदयुक्त बनाकर वशमें करें । (**इन्द्रः आदित्यैः सह**) इन्द्र आदित्योंके साथ (**यज्ञं**) यज्ञको (**नः तन्वं**) हमारे शरीरको

आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्माकं भूत्वविता तनूनाम् ।
हत्वाय देवा असुरान्यदायन्देवा देवत्वमभिरक्षमाणाः ॥ २ ॥
प्रत्यञ्चमर्कमनयं छचीभिरादित्स्वधामिषिरां पर्यपश्यन् ।
अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः ॥ ३ ॥
य एक इद्विदयते वसु मर्ताय दाशुषे । ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग ॥ ४ ॥
कदा मर्तमराधसं पदा क्षुम्पमिव स्फुरत् । कदा नः शुश्रवद्गिर इन्द्रो अङ्ग ॥ ५ ॥
यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य आ सुतावाँ आविवासति । उग्रं तत्पत्यते शव इन्द्रो अङ्ग ॥ ६ ॥
य इन्द्र सोमपातमो मदः शविष्ठ चेतति । येना हंसि न्यत्रिणं तमीमहे ॥ ७ ॥
येना दशग्वमध्रिगुं वेपयन्तं स्वर्णरम् । येना समुद्रमाविथा तमीमहे ॥ ८ ॥
येन सिन्धुं महीरपो रथाँ इव प्रचोदयः । पन्थामृतस्य यातवे तमीमहे ॥ ९ ॥ (३९९)

(**प्रजां च**) और प्रजाको (**चीकॢपाति**) समर्थ बनावे ॥ १ ॥ (ऋ. १०।१५७।१)

(**आदित्यैः**) आदित्योंके साथ (**मरुद्भिः सगणः इन्द्रः**) मरुतोंके गणोंके साथ इन्द्र (**अस्माकं तनूनां अविता भूतु**) हमारे शरीरोंका रक्षक होवे। (**देवा असुरान् हत्वाय**) देवोंने असुरोंको मारकर (**यदा आयन्**) जब आये, तब (**देवत्वं अभिरक्षमाणाः देवाः**) देवोंने अपने देवत्वकी रक्षा की ॥ २ ॥ (ऋ. १०।१५७।२)

(**शचीभिः प्रत्यञ्चं अर्कं अनयन्**) अपनी शक्तियोंके साथ वे सूर्यको इधर लाये, (**आत् इत् इषिरां स्वधां पर्यपश्यन्**) इसके पश्चात् प्रिय स्वधाको उन्होंने देखा। (**अया देवहितं वाजं सनेम**) इससे देवोंसे रखे हुए बलको उन्होंने प्राप्त किया (**सुवीराः शतहिमाः मदेम**) अच्छे पुत्रपौत्रोंके साथ सौ वर्ष आनंदसे रहें ॥ ३ ॥ (ऋ. १०।१५७।३)

(**दाशुषे मर्ताय**) दानी मनुष्यके लिये (**यः एकः इत्**) जो अकेला ही (**वसु विदयते**) धन देता है (**अप्रतिष्कुतः ईशानः इन्द्रः अंग**) हे प्रिय ! वही किसीसे पराजित न होनेवाला ईश्वर इन्द्र ही है ॥ ४ ॥ (ऋ. १।८४।७)

हे (**अंग**) प्रिय ! (**कदा अराधसं मर्तं**) कब दान न देनेवाले मनुष्यको (**पदा क्षुम्पं इव स्फुरत्**) पांवसे खंभेकी तरह वह दबा देगा ? (**इन्द्रः कदा नः गिरः शुश्रवत्**) इन्द्र कब हमारी स्तुतियां सुनेगा ? ॥ ५ ॥ (ऋ. १।८४।८)

(**यः चित् हि**) जो कोई (**बहुभ्यः**) बहुतोंमेंसे (**सुतावान् त्वा आ आविवासति**) एक सोमयागसे तेरी सेवा करता है, (**तत् उग्रं शवः इन्द्रः पत्यते**) तब उग्र बलका स्वामी यह इन्द्र होता है हे (**अंग**) प्रिय ! ॥ ६ ॥ (ऋ. १।८४।९)

हे इन्द्र ! (**यः सोमपातमः शविष्ठः मदः चेतति**) जो तेरा सोमपान करनेसे बलशाली आनन्द प्रकट होता है, (**येन अत्रिणं नि हंसि**) जिससे तू खानेवाले शत्रुको मारता है, (**तं ईमहे**) उस सामर्थ्यकी हम मांग करते हैं ॥ ७ ॥ (ऋ. ८।१२।१)

(**येन दशग्वं अध्रिगुं**) जिससे दशग्व, अध्रिगुको (**वेपयन्तं स्वः नरं**) शत्रुको कंपाने प्रकाशके नेता वीरको तथा (**येन समुद्रं आविथ**) जिससे समुद्रकी सुरक्षा की (**तं ईमहे**) वह सामर्थ्य हम मांगते हैं ॥ ८ ॥ (ऋ. ८।१२।२)

(**येन सिन्धुं महीः अपः**) जिससे सिन्धु तथा जलप्रवाहोंको (**रथान् इव**) रथोंके समान (**ऋतस्य पन्थां यातवे**) सत्यके मार्गपर जानेके लिये (**प्रचोदयः**) प्रेरित किया (**तं ईमहे**) उस शक्तिकी मांग हम करते हैं ॥ ९ ॥ (ऋ. ८।१२।३)

१ **इन्द्रः नः यज्ञं तन्वं प्रजां स चीकॢपाति**— इन्द्र हमारे यज्ञको, हमारे शरीरोंको और प्रजाको समर्थ बनाता है।

२ **इन्द्रः अस्माकं तनूनां अविता भूतु**— इन्द्र हमारे शरीरोंका संरक्षक बने।

३ **असुरान् हत्वाय देवत्वं अभिरक्षमाणा देवा**

[सूक्त ६४]

(ऋषिः — १, ३ नृमेधः; ४-६ विश्वमनाः । देवता — इन्द्रः ।)

एन्द्र नो गधि प्रियः सत्राजिदगोह्यः । गिरिर्न विश्वतस्पृथुः पतिर्दिवः ॥ १ ॥
अभि हि सत्य सोमपा उभे बभूथ रोदसी । इन्द्रासि सुन्वतो वृधः पतिर्दिवः ॥ २ ॥
त्वं हि शश्वतीनामिन्द्र दर्ता पुरामसि । हन्ता दस्योर्मनोर्वृधः पतिर्दिवः ॥ ३ ॥
एदु मध्वो मदिन्तरं सिञ्चाध्वर्यो अन्धसः । एवा हि वीर स्तवते सदावृधः ॥ ४ ॥
इन्द्र स्थातर्हरीणां नकिष्टे पूर्व्यस्तुतिम् । उदानंश शवसा न भन्दना ॥ ५ ॥
तं वो वाजानां पतिमहूमहि श्रवस्यवः । अप्रायुभिर्यज्ञेभिर्वावृधेन्यम् ॥ ६ ॥ (४०४)

यदा आयन्— असुरोंको मार कर देवत्वकी रक्षा करनेवाले देव जब आ गये ।

४ अया देवहितं वाजं सनेम— इससे देवत्वरक्षक बल प्राप्त करेंगे ।

५ सुवीराः शतहिमा मदेम— उत्तम बालबच्चोंके साथ सौ वर्ष आनंदसे हम रहेंगे ।

६ दाशुषे मर्ताय य एकः वसु विदयते— दाता मानवके लिये वह अकेला ही इन्द्र धन देता है ।

७ अप्रतिष्कुतः ईशानः इन्द्रः— वह किसीसे पराजित न होनेवाला इन्द्र है ।

८ कदा अराधसं मर्तं पदा स्फुरत्— कब दान न देनेवाले मानवको पांवसे वह दबाता है ?

९ इन्द्रः कदा नः गिरः शृण्वत्— इन्द्र कब हमारी प्रार्थना सुनेगा ?

१० इन्द्रः उग्रं शवः पत्यते— इन्द्र उग्र बल प्राप्त करता है ।

११ यः शविष्ठः मदः चेतति, येन अत्रिणं निहंसि, तं ईमहे— जो सामर्थ्यवान् आनंद प्रकट करता है, जिससे खानेवाले शत्रुको वह मारता है वह बल हम मांग रहे हैं।

१२ येन आविथ तं ईमहे— जिससे सुरक्षा करता है वह बल हम प्राप्त करना चाहते हैं ।

१३ येन ऋतस्य पन्थां यातवे प्रचोदयः तं ईमहे— जिससे सत्य मार्ग पर जानेकी प्रेरणा वह लोगोंको देता है वह बल हम मांगते हैं ।

(सूक्त ६४)

हे इन्द्र ! (**आ गहि**) हमारे पास आ । तू (**प्रियः**) हमें प्रिय है (**सत्रा जित्**) तू सदा जीतनेवाला, (**अगोह्यः**) छिपकर न रहनेवाला, (**गिरिः न विश्वतः पृथुः**) पर्वतके समान चारों ओरसे पुष्ट (**दिवः पतिः**) द्युलोकका पति है ॥ १ ॥ (ऋ. ८।९८।४)

हे (**सत्य सोमपा**) सच्चे सोमके पीनेवाले इन्द्र ! (**उभे रोदसी अभि बभूथ हि**) तुम दोनों द्यु और भू लोकोंको पराजित करता है । हे इन्द्र ! तू (**दिवः पतिः**) द्युलोकका पति और (**सुन्वतः वृधः**) सोमयाग करनेवालेको बढानेवाला है ॥ २ ॥ (ऋ. ८।९८।५)

हे इन्द्र ! (**त्वं शश्वतीनां पुरां दर्ता असि हि**) तू शत्रुके सारे किलोंको तोडनेवाला है, (**दस्योः हन्ता**) शत्रुओंको मारनेवाला, (**मनोः वृधः**) मनुष्यको बढानेवाला और (**दिवः पतिः**) द्युलोकका पालक है ॥३॥ (ऋ. ८।९८।६)

हे (**अध्वर्यो**) अध्वर्यु ! (**अन्धसः मध्व मदिन्तरं आ सिञ्च इत् उ**) मधुर सोमरसके अधिक मीठे भागको इसमें डाल । (**सदावृधः वीरः एवा हि** स्तवते) सदा सहायक होनेवाला वीर इन्द्र इसी तरह प्रशंसित होता है ॥ ४ ॥ (ऋ. ८।२४।१६)

हे (**हरीणां स्थातः इन्द्र**) हे घोडोंके स्वामी इन्द्र ! (**ते पूर्व्यस्तुतिं**) तेरी पुरानी स्तुतिको (**न किः शवसा उदानश**) बलसे कोई नहीं पा सकता, (**न भन्दना**) न भलाईसे पा सकता है ॥ ५ ॥ (ऋ. ८।२४।१७)

(**अवस्यवः**) यश चाहनेवाले हम (**अप्रायुभिः यज्ञेभिः वावृधेन्यं**) सतत चलनेवाले यज्ञोंसे बढनेवाले (**तं वाजानां पतिं**) उस बलोंके स्वामी इन्द्रको (**अहूमहि**) बुलाते हैं ॥ ६ ॥ (ऋ. ८।२४।१८)

[सूक्त ६५]

(ऋषिः — १-३ विश्वमनाः । देवता — इन्द्रः ।)

एतो न्विन्द्रं स्तवाम सखाय स्तोम्यं नरम् । कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत् ॥ १ ॥
अगोरुधाय गविषे द्युक्षाय दस्म्यं वचः । घृतात्स्वादीयो मधुनश्च वोचत ॥ २ ॥
यस्यामितानि वीर्या३ न राधः पर्येतवे । ज्योतिर्न विश्वमभ्यस्ति दाक्षिणा ॥ ३ ॥ (४०७)

[सूक्त ६६]

(ऋषिः — १-३ विश्वमनाः । देवता — इन्द्रः ।)

स्तुहीन्द्रं व्यश्ववदनूमिं वाजिनं यमम् । अर्यो गयं महमानं वि दाशुषे ॥ १ ॥

इन्द्रके ये गुण इस सूक्तमें कहे हैं—

१ **प्रियः सत्राजित् अगोह्यः विश्वतः पृथुः दिवः पाते**— इन्द्र सबको प्रिय, सर्वदा विजयी, छिपकर न रहनेवाला, चारों ओरसे पुष्ट द्युलोकका स्वामी है। 'अ-गोह्यः' किसी तरह छिपकर न रहनेवाला, सदा प्रकट होनेवाला इन्द्र है।

२ **शश्वतीनां पुरां दर्ता त्वं असि**— शाश्वत नगरियोंको शत्रुके किलोंको तोडनेवाला है।

३ **दस्योः हन्ता**— शत्रुको मारनेवाला,

४ **मनोवृधः**— मननशील मानवोंका संवर्धन करनेवाला है।

५ **सदावृधः वीरः एव स्तवते**— जो सदा बढनेवाला वीर है उसकी ही प्रशंसा होती है।

६ **हरीणां स्थाता इन्द्रः**— घोडोंका रक्षक इन्द्र है। घोडोंकी पालना करनेकी विद्या वह जानता है।

७ **ते पूर्व्यस्तुतिं न किः शवसा उदानशे, न भन्दना**— तेरे जैसी स्तुतिको कोई बलसे नहीं प्राप्त कर सकता न सुखसे प्राप्त कर सकता है। तेरी जैसी प्रशंसा प्राप्त करना किसीको भी अशक्य है।

८ **अवस्यवः वाजानां पतिं त्वा अहूमहि**— यश चाहनेवाले हम सब बलोंके स्वामी इन्द्रको ही अपनी सुरक्षाके लिये बुलाते हैं।

(सूक्त ६५)

हे (**सखायः**) हे मित्रो ! (**आ इत नु**) आओ। (**स्तोम्यं नरं स्तवाम**) स्तुतिके योग्य वीर इन्द्रकी स्तुति करें। (**यः एकः इत्**) जो अकेला ही (**विश्वाः कृष्टीः अभ्यस्ति**) सब मनुष्योंपर विराजता है ॥ १ ॥

(ऋ. ८।२४।१९)

(**अ-गो-रुधाय**) जो कभी गौओंको रोकता नहीं, और (**गविषे**) गौओंको ढूंढ निकालनेवाला है (**द्युक्षाय**) उस द्युलोकमें रहनेवालेके लिये (**घृतात् मधुनः च स्वादीयः**) घी और शहदसे अधिक स्वादु (**दस्म्यं वचः वोचत**) सुन्दर स्तुतिके वचन कहो ॥ २ ॥ (ऋ. ८।२४।२०)

(**अस्य अमितानि वीर्या**) जिसके अपरिमित पराक्रम हैं, (**यस्य राधः न पर्येतवे**) जिसके धन दान घेरे नहीं जाते, जिसकी (**दक्षिणा ज्योतिः न**) दक्षिण ज्योतिके समान (**विश्वं अभ्यस्ति**) सबके ऊपर ज्योति है ॥ ३ ॥ (ऋ. ८।२४।२१)

१ **हे सखायः ! स्तोम्य नरं स्तवामः**— हे मित्रो ! आओ, प्रशंसनीय वीरकी ही प्रशंसा हम गाते हैं, तुम सब इसमें शामिल हो जाओ।

२ **यः एक इत् विश्वाः कृष्टीः अभ्यस्यति**— जो अकेला ही सब मानवोंके ऊपर रहता है।

३ **अ-गो-रुधाय गविषे द्युक्षाय**— जो गौओंको रोकता नहीं, परंतु गौवोंको खोजकर शत्रुओंसे लाता है। जो द्युलोकमें रहता है।

४ **दस्म्यं वचः वोचत**– उसकी स्तुति सुंदर वाणीसे करो।

५ **अस्य अमितानि वीर्या**— इस इन्द्रके पराक्रम अपरिमित हैं।

६ **यस्य राधः न पर्येतवे**— जिसके धन घेरे नहीं जाते, इतने वे अपरिमित हैं।

७ **दक्षिणा ज्योतिः न विश्वं अभ्यस्यति**-- दक्षिण ज्योतिके समान उसका तेज सर्वत्र फैलता है।

(सूक्त ६६)

(**व्यश्ववत्**) व्यश्वकी तरह (**अनूमिं वाजिनं यमं**) पीडा रहित, बलवान् और नियन्ता (**इन्द्रं स्तुहि**) इन्द्रकी स्तुति कर, जो (**दाशुषे**) दाताको (**अर्यः**) शत्रुका (**मंहमानं गयं**) बडा घर (**वि**) देता है ॥ १ ॥

(ऋ. ८।२४।२२)

एवा नूनमुप स्तुहि वैयश्व दशमं नवम् । सुविद्वांसं चर्कृत्यं चरणीनाम् ॥ २ ॥
वेत्था हि निर्ऋतीनां वज्रहस्त परिवृजम् । अहरहः शुन्ध्युः परिपदामिव ॥ ३ ॥ (४१०)

॥ इति पञ्चमोऽनुवाकः ॥ ५ ॥

[सूक्त ६७]

(ऋषिः — १-३ परुच्छेपः, ४-७ गृत्समदः । देवता — १ इन्द्रः, २ मरुत्, ३ अग्निः ।)

वनोति हि सुन्वन्क्षयं परीणसः सुन्वानो हि ष्मा यजत्यव द्विषो देवानामव द्विषः ।
सुन्वान इत्सिषासति सहस्रा वाज्यवृतः ।
सुन्वानायेन्द्रो ददात्याभुवं रयिं ददात्याभुवम् ॥ १ ॥
मो षु वो अस्मदभि तानि पौंस्या सना भूवन्द्युम्नानि मोत जारिषुरस्मत्पुरोत जारिषुः ।
यद्धश्चित्रं युगेयुगे नव्यं घोषादमर्त्यम् ।
अस्मासु तन्मरुतो यच्च दुष्टरं दिधृता यच्च दुष्टरम् ॥ २ ॥

हे (**वैयश्व**) व्यश्वके पुत्र ! (**नवं दशमं**) जो नववां या दसवां है तथा जो (**सुविद्वांसं चरणीनां चर्कृत्यं**) उत्तम विद्वान् है और प्रयत्नशील मानवोंके स्तुतिके योग्य है (**एवा नूनं उप स्तुहि**) इसकी निश्चयसे स्तुति कर ॥ २ ॥ (ऋ. ८।२४।२३)

हे (**वज्रहस्त**) वज्र हाथमें लेनेवाले इन्द्र ! तू (**निर्ऋतीनां परिवृजं वेत्थ हि**) आपत्तियोंका परिमार्जन करनेके उपायको जानता ही है, (**परिपदां अहः अहः शुन्ध्युः इव**) पावको लगे मलको जिस तरह प्रतिदिन शुद्ध करते हैं ॥ ३ ॥ (८।२४।२४)

१ अनूर्मिं वाजिनं यमं इन्द्रं स्तुहि— जिसमें लहरियोंके समान क्षोभ नहीं, जो बलवान् और नियामक है, उस इन्द्रकी स्तुति कर । **'अन्-ऊर्मिः'**- जिसमें लहरियां नहीं, जो क्षुब्ध नहीं होता, जो शान्त रहता है ।

२ दाशुषे मंहमानं अर्यः गयं वि— जो दाताके लिये शत्रुका बडा घर देता है । **'अर्यः'**- अरि = शत्रु । **अर्यः**- शत्रुका ।

३ नवं दशमं सुविद्वांसं चरणीनां चर्कृत्यं उप स्तुहि— नवम या दशम दशक (९० वें या १०० वें वर्ष) में विद्यमान उत्तम विद्वान् और कार्यकर्ताओंमें उत्तम प्रयत्नशील जो है उसकी स्तुति कर ।

४ हे वज्रहस्त ! निर्ऋतीनां परिव्रजं वेत्थ— हे वज्रधारी ! तू आपत्तियोंको दूर करनेका उपाय जानते हो ।

५ परिपदां अहः अहः शुन्ध्युः— पावपर मल लग। तो जैसा प्रतिदिन शुद्ध करते हैं वैसे प्रतिदिन प्रयत्न करनेवाले विपत्को दूर कर सकते हैं ।

॥ यहां पञ्चम अनुवाक समाप्त ॥

(सूक्त ६७)

(**सुन्वन् हि परीणसः क्षयं वनोति**) सोमयाग करनेवाला धन युक्त घरको प्राप्त करता है । (**सुन्वानः हि**) सोमयाग करनेवाला ही (**द्विषः अव,यजति स्म**) शत्रुओंको दूर करता है, (**देवानां द्विषः अव**) देवोंके शत्रुओंको दूर करता है । (**सुन्वानः अवृतः वाजी**) सोमयाग करनेवाला शत्रुसे घेरा न जाता हुआ बलवान् बनकर (**सहस्रा सिषासति इत्**) सहस्रों प्रकारके धनोंको जीतना चाहता है । (**इन्द्रः सुन्वानाय आभुवं रयिं ददाति**) इन्द्र सोमयाग करनेवालेको बहुत धन देता है, (**आभुवं ददाति**) पर्याप्त धन देता है ॥ १ ॥ (ऋ. १।५३।७)

(**अस्मत् अभि**) हमारे सामने (**वः तानि पौंस्या**) आपके ये पौरुष कर्म (**सना मा उ सु भुवन्**) पुराने न हों, (**उत द्युम्नानि मा जारिषुः**) और तुम्हारे तेज जीर्ण न हों । (**अस्मत् पुरः उत जारिषुः**) हमारे सामने जीर्ण न हों । (**यत् वः चित्रं युगे युगे नव्यं**) जो आपका आश्चर्यकारक कर्म युगयुगमें नया होता रहता है, (**अमर्त्यं घोषात्**) वह तुम्हारे देवत्वकी घोषणा करें । हे मरुतों ! (**यत्**

अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसुं सूनुं सहसो जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम् ।
य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा ।
घृतस्य विभ्राष्टिमनु वष्टि शोचिषाजुह्वानस्य सर्पिषः ॥ ३ ॥
यज्ञैः संमिश्लाः पृषतीभिर्ऋष्टिभिर्यामं छुभ्रासो अञ्जिषु प्रिया उत ।
आसद्या बर्हिर्भरतस्य सूनवः पोत्रादा सोमं पिबता दिवो नरः ॥ ४ ॥
आ वक्षि देवाँ इह विप्र यक्षि चोशन्होतर्नि षदा योनिषु त्रिषु ।
प्रति बीहि प्रस्थितं सोम्यं मधु पिबाग्नीध्रात्तव भागस्य तृप्णुहि ॥ ५ ॥
एष स्य ते तन्वो नृम्णवर्धनः सह ओजः प्रदिवि बाह्वोर्हितः ।
तुभ्यं सुतो मघवन्तुभ्यमाभृतस्त्वमस्य ब्राह्मणादा तृपत्पिब ॥ ६ ॥
यमु पूर्वमहुवे तमिदं हुवे सेदु हव्यो ददिर्यो नाम पत्यते ।
अध्वर्युभिः प्रस्थितं सोम्यं मधु पोत्रात्सोमं द्रविणोदः पिबर्तुभिः ॥ ७ ॥ (४१७)

च दुष्टरं अस्मासु दिधृत) जो दुस्तर कर्म है वह हममें स्थापित करो, (यत् च दुष्टरं) जो दुष्प्राप्य है वह हममें रखो ॥ २ ॥ (ऋ. १।१३६।१८)

(अग्निं होतारं मन्ये) अग्निको मैं होता मानता हूं । (दास्वन्तं वसुं सहसः सूनुं) वह दान देनेवाला, धनवान्, बलका पुत्र (जातवेदसं) उत्पन्न हुएको जाननेवाला, (जातवेदसं विप्रं न) ज्ञानी विशेष प्राज्ञ जैसा वह है । (यः ऊर्ध्वया देवाच्या कृपा स्वध्वरः देवः) जो ऊंचे दैवी सामर्थ्यसे युक्त उत्तम यज्ञ करनेवाला देव है । (आ जुह्वानस्य सर्पिषः शोचिषा) हवन किये गये घीके तेजसे (घृतस्य विभ्राष्टिं अनु वष्टि) घीकी तेजस्विताको प्राप्त करता है ॥ ३ ॥ (ऋ. १।१२७।१)

(यज्ञे संमिश्लाः) यज्ञोंमें लगे हुए (पृषतीभिः ऋष्टिभिः यामन्) चित्रकबरी घोडियोंपर बर्छियोंके साथ बैठकर जानेवाले (अञ्जिषु शुभ्रासः) आभूषणोंमें शोभनेवाले (उत प्रियाः) और प्यारे मित्र (भरतस्य सूनवः) भरतके पुत्रो ! हे (दिवः नरः) दिव्य नेताओ ! (बर्हिः आसद्य) आसनपर बैठकर (पोत्रात् सोमं आ पिबत) पोताके पात्रसे सोमरसको पीओ ॥ ४ ॥ (ऋ. २।३६।२)

(देवान् इह आ वक्षि) देवोंको यहां ले आओ । हे (विप्र) ज्ञानी ! (यक्षि च) उनका यजन कर । हे (होतः) होता ! (त्रिषु योनिषु आ निषद) तीनों स्थानोंमें बैठ । (प्रस्थितं सोम्यं मधु प्रति बीहि) तैयार किये गये मीठे सोमका स्वीकार कर । (आग्नीध्रात् पिब) अग्नीध्रके पात्रसे सोम पी और (तव भागस्य तृप्णुहि) अपने भागसे तृप्त हो ॥ ५ ॥ (ऋ. २।३६।४)

(एषः स्य) यह वह (ते तन्वः नृम्णवर्धनः) तेरे शरीरका पौरुष बढानेवाला है, (सहः ओजः प्रदिवि बाह्वोः हितः) बल और सामर्थ्य सदा तेरी बाहुओंमें रखा है । हे (मघवन्) धनवान् इन्द्र ! (तुभ्यं सुतः) यह सोमरस तेरे लिये निकाला है, (तुभ्यं आभृतः) तुम्हारे लिये भरकर रखा है । (अस्य ब्राह्मणात्) इस ब्रह्माके पात्रसे (त्वं आ तृपत् पिब) तू तृप्ती होनेतक पी ॥ ६ ॥ (ऋ. २।३६।५)

(यं उ पूर्वे हुवे) जिसको मैंने पहिले बुलाया था, (तं इदं हुवे) उसको इस समय मैं बुलाता हूं । (स इत् उ हव्यः) वही बुलाने योग्य है, (ददिः) वह दाता है, (यः नाम पत्यते) वह प्रसिद्ध रीतिसे शासन करता है । (अध्वर्युभिः सोम्यं मधु प्रस्थितं) अध्वर्युओंसे यह मधुर सोमरस तैयार किया गया है । हे (द्रविणोदः) धनके दाता ! (ऋतुभिः पोत्रात् सोमं पिब) ऋतुओंके साथ पोताके पात्रसे सोम पी ॥ ७ ॥ (ऋ २।३७।२)

[सूक्त ६८]

(ऋषिः — १-१२ मधुच्छन्दाः । देवता — इन्द्रः ।)

सुरूपकृ॑नुमूतये सुदुघा॑मिव गो॒दुहे॑ । जुहू॒मसि॒ द्यवि॑द्यवि ॥ १ ॥
उप॑ नः सव॒ना ग॑हि सो॒मस्य॑ सोमपाः पिब । गो॒दा इद्रे॑वतो॒ मदः॑ ॥ २ ॥
अथा॑ ते अन्तमा॒नां वि॒द्याम॑ सुमती॒नाम् । मा नो॒ अति॑ ख्य॒ आ ग॑हि ॥ ३ ॥
परे॑हि॒ विग्र॒मस्तृ॑तमिन्द्रं पृच्छा॒ वि॒पश्चि॑तम् । यस्ते॒ सखि॑भ्य॒ आ वर॑म् ॥ ४ ॥
उ॒त ब्रु॑वन्तु नो॒ निदो॒ निर॒न्यत॑श्चिदारत । दधा॑ना॒ इन्द्र॒ इद्दुवः॑ ॥ ५ ॥
उ॒त नः॑ सु॒भगाँ॑ अरि॒र्वो॑चेयु॒र्दस्म॑ कृ॒ष्टयः॑ । स्यामेदिन्द्र॑स्य॒ शर्म॑णि ॥ ६ ॥
एमा॑शुमा॒शवे॑ भर यज्ञ॒श्रिय॑ नृमा॒दन॑म् । पत॑यन्मन्द॒यत्स॑खम् ॥ ७ ॥
अ॒स्य पी॒त्वा श॑तक्रतो घ॒नो वृ॒त्राणा॑मभवः । प्रावो॒ वाजे॑षु वा॒जिन॑म् ॥ ८ ॥
तं त्वा॒ वाजे॑षु वा॒जिनं॑ वाजया॑मः शतक्रतो । धना॑नामिन्द्र सा॒तये॑ ॥ ९ ॥
यो रा॒यो॒३॒॑वनि॑र्म॒हान्त्सु॒पा॒रः सु॑न्व॒तः सखा॑ । तस्मा॒ इन्द्रा॑य गायत ॥ १० ॥
आ त्वे॒ता नि षी॑दतेन्द्र॒मभि प्र गा॑यत । सखा॑य॒ स्तोम॑वाहसः ॥ ११ ॥
पु॒रू॒तमं॑ पुरू॒णामीशा॑नं वार्या॑णाम् । इन्द्रं॒ सोमे॒ सचा॑ सु॒ते ॥ १२ ॥ (४१९)

(सूक्त ६८)

१-३ देखो अथर्व. २०।५७।१-३ ।

(**विप्रं अस्तृतं परा इहि**) ज्ञानी अपराजितके पास जा । (**विपश्चितं इन्द्रं पृच्छ**) ज्ञानी इन्द्रसे पूछ । (**ते सखिभ्यः वरं आ**) जो तेरे मित्रोंमें श्रेष्ठ है ॥ ४ ॥ (ऋ. १।४।४)

(**नः निदः उत ब्रुवन्तु**) हमारे निंदक बोलें कि (**अन्यतः चित् निः आरत**) वहांसे निकल जाओ (**इन्द्रे इत् दुवः दधानाः**) क्योंकि तुम इन्द्रमें भक्ति रखते हो ॥ ५ ॥ (ऋ. १।४।५)

हे (**दस्म**) दर्शनीय ! (**कृष्टयः**) मनुष्य तथा (**अरिः**) शत्रु भी (**उत नः सुभगां वोचेयुः**) हमें सौभाग्यवाले कहें, तथापि (**इन्द्रस्य शर्मणि इत् स्याम**) हम इन्द्रके ही आश्रयमें रहेंगे ॥ ६ ॥ (ऋ. १।४।६)

(**यज्ञश्रियं**) यज्ञकी शोभा बढानेवाले, (**नृमादनं**) वीरोंको आनंदित करनेवाले, (**पतयत् मन्दयत्सखं**) गति करानेवाले और मित्रोंका आनंद बढानेवाले (**ईं आशुं**) इस तेजस्वी सोमको (**आशवे भर**) तेजस्वी इन्द्रके लिये भर दे ॥ ७ ॥ (ऋ. १।४।७)

हे (**शतक्रतो**) सैंकडों कर्म करनेवाले इन्द्र ! (**अस्य पीत्वा**) इस सोमको पीकर (**वृत्राणां घनः अभवः**) वृत्रोंको तू मारनेवाला हुआ है अब (**वाजेषु वाजिनं प्रावः**) संग्रामोंमें योद्धाकी रक्षा कर ॥ ८ ॥ (ऋ. १।४।८)

हे (**शतक्रतो**) सैंकडों कर्म करनेवाले इन्द्र ! (**तं त्वा वाजेषु वाजिनं वाजयामः**) उस तुझको संग्रामोंमें बलवान बनाते हैं । हे इन्द्र ! (**धनानां सातये**) धनोंके दानके लिये यह हम करते हैं ॥ ९ ॥ (ऋ. १।४।९)

(**यः रायः महान् अवनिः**) जो धनोंका बडा रक्षक है, (**सुन्वतः सुपारः सखा**) सोमयाजीका दुःखसे पार करनेवाला मित्र है (**तस्मै इन्द्राय गायत**) उस इन्द्रके लिये मंत्रोंका गान करो ॥ १० ॥ (ऋ. १।४।१०)

हे (**स्तोमवाहसः सखायः**) स्तोत्रोंके गानेवाले मित्रो ! (**आ तु एत**) आओ, (**नि षीदत**) बैठो, (**इंद्रं अभि प्र गायत**) इन्द्रका गायन करो ॥ ११ ॥ (ऋ. १।५।१)

(**पुरूणां पुरूतमं**) धनीयोंमें धनी, (**वार्याणां ईशानं**) स्वीकार करने योग्य वस्तुओंके स्वामी (**इन्द्रं**) इन्द्रके स्तोत्र (**सोमे सचा सुते**) सोमरस तैयार होनेपर गाते रहो ॥ १२ ॥

[सूक्त ६९]

(ऋषिः — १-१२ मधुच्छन्दाः । देवता — इन्द्रः ।)

स घा नो योग आ भुवत्स राये स पुरंध्याम् । गमद्वाजेभिरा स नः ॥ १ ॥
यस्य संस्थे न वृण्वते हरी समत्सु शत्रवः । तस्मा इन्द्राय गायत ॥ २ ॥
सुतपात्रे सुता इमे शुचयो यन्ति वीतये । सोमासो दध्याशिरः ॥ ३ ॥
त्वं सुतस्य पीतये सद्यो वृद्धो अजायथाः । इन्द्र ज्यैष्ठ्याय सुक्रतो ॥ ४ ॥
आ त्वा विशन्त्वाशवः सोमास इन्द्र गिर्वणः । शं ते सन्तु प्रचेतसे ॥ ५ ॥
त्वां स्तोमा अवीवृधन्त्वामुक्था शतक्रतो । त्वां वर्धन्तु नो गिरः ॥ ६ ॥
अक्षितोतिः सनेदिमं वाजमिन्द्रः सहस्रिणम् । यस्मिन्विश्वानि पौंस्या ॥ ७ ॥
मा नो मर्ता अभि द्रुहन्तनूनामिन्द्र गिर्वणः । ईशानो यवया वधम् ॥ ८ ॥
युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः । रोचन्ते रोचना दिवि ॥ ९ ॥
युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे । शोणा धृष्णू नृवाहसा ॥ १० ॥
केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥ ११ ॥
आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे । दधाना नाम यज्ञियम् ॥ १२ ॥ (४४१)

(सूक्त ६९)

(**सः घ नः योगे आ भुवत्**) वह हमारे उद्योगमें साथ रहे (**सः राये**) वह धनमें, तथा (**स पुरन्ध्यां**) वह बड़ी महत्त्वाकांक्षाओंमें हमारे साथ रहे (**सः वाजेभिः नः आ गमत्**) वह शक्तियोंके साथ हमारे पास आ जावे ॥ १ ॥ (ऋ. १।५।३)

(**शत्रवः**) शत्रु (**समत्सु**) युद्धोंमें (**यस्य संस्थे हरी न वृण्वते**) जिसके जोते घोड़ोंको नहीं रोक सकते, (**तस्मै इन्द्राय गायत**) उस इन्द्रके गीत गाओ ॥ २ ॥ (ऋ. १।५।४)

(**इमे दध्याशिरः शुचयः सोमासः सुताः**) ये दही मिलाये शुद्ध चमकते हुए सोमरस (**सुतपात्रे धीतये यन्ति**) सोम पीनेवाले इन्द्रके भोगके लिये जाते हैं ॥ ३ ॥ (ऋ. १।५।५)

हे (**सुक्रतो इन्द्र**) उत्तम कर्म करनेवाले इन्द्र ! (**ज्यैष्ठ्याय**) श्रेष्ठ होनेके लिये और (**सुतस्य पीतये**) सोमरस पीनेके लिये (**सद्यः वृद्धः अजायथाः**) तत्काल बड़ा हो गया है ॥ ४ ॥ (ऋ. १।५।६)

हे (**गिर्वणः इन्द्र**) स्तुतिके योग्य इन्द्र ! (**आशवः सोमासः त्वा विशन्तु**) तीखे सोम तेरे अन्दर प्रवेश करें । (**ते प्रचेतसे शं सन्तु**) तुझ प्रज्ञावानके लिये ये कल्याण करनेवाले हों ॥ ५ ॥ (ऋ. १।५।७)

(**स्तोमाः त्वां अवीवृधन्**) स्तोत्रोंने तुझे बढाया है, हे (**शतक्रतो**) सैकड़ों कर्म करनेवाले इन्द्र (**उक्था त्वां**) उक्थाने तेरा वर्णन किया है । (**नः गिरः त्वां वर्धन्तु**) हमारी स्तुतियां तुझे बढावें ॥ ६ ॥ (ऋ. १।५।८)

(**यस्मिन् विश्वानि पौंस्या**) जिसमें सारे पौरुष हैं (**इमं सहस्रिणं वाजं**) वह यह सहस्रों बलोंको बढानेवाला सोमरस (**अक्षितोतिः इन्द्रः सनेत्**) जिसका रक्षण कभी कम नहीं होता वह इन्द्र स्वीकार करे ॥ ७ ॥ (ऋ. १।५।९)

हे (**गिर्वणः**) प्रशंसायोग्य इन्द्र ! (**मर्ताः नः तनूनां मा अभिद्रुहन्**) मानव हमारे शरीरोंका द्रोह न करें । तू (**ईशानः**) ईश्वर है (**वधं यावय**) शस्त्र हमसे दूर हटा दे ॥ ८ ॥ (ऋ. १।५।१०)

९-११ देखो अथर्व. २०।२६।४-६ ।

१२ देखो अथर्व. २०।४०।३ ।

[सूक्त ७०]

(ऋषिः — १-१० मधुच्छन्दाः । देवता — इन्द्रः ।)

वीळु चिदारुजत्नुभिर्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः । अविन्द उस्रिया अनु ॥ १ ॥
देवयन्तो यथा मतिमच्छा विदद्वसुं गिरः । महामनूषत श्रुतम् ॥ २ ॥
इन्द्रेण सं हि दृक्षसे संजग्मानो अबिभ्युषा । मन्दू समानवर्चसा ॥ ३ ॥
अनवद्यैरभिद्युभिर्मखः सहस्वदर्चति । गणैरिन्द्रस्य काम्यैः ॥ ४ ॥
अतः परिज्मन्ना गहि दिवो वा रोचनादधि । समस्मिन्नृञ्जते गिरः ॥ ५ ॥
इतो वा सातिमीमहे दिवो वा पार्थिवादधि । इन्द्रं महो वा रजसः ॥ ६ ॥
इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः । इन्द्रं वाणीरनूषत ॥ ७ ॥
इन्द्र इद्धर्योः सचा संमिश्ल आ वचोयुजा । इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥ ८ ॥
इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद्दिवि । वि गोभिरद्रिमैरयत् ॥ ९ ॥
इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च । उग्र उग्राभिरूतिभिः ॥ १० ॥
इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे । युजं वृत्रेषु वज्रिणम् ॥ ११ ॥
स नो वृषन्नमुं चरुं सत्रादावन्नपा वृधि । अस्मभ्यमप्रतिष्कुतः ॥ १२ ॥
तुञ्जेतुञ्जे य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः । न विन्धे अस्य सुष्टुतिम् ॥ १३ ॥

(सूक्त ७०)

(**वीळु चित् आरुजत्नुभिः वह्निभिः**) सुदृढोंको भी तोडनेवाले और उठा ले चलनेवाले मरुतोंके साथ रहनेवाले इन्द्र ! (**उस्रिया गुहा अनु अविन्द**) गौवोंको गुहामें तूने प्राप्त किया ॥ १ ॥ (ऋ. १।६।५)

(**देवयन्तः गिरः**) देवताकी भक्ति करनेवालोंकी वाणियोंने (**विदद्वसुं महां श्रुतं**) धन प्राप्त करनेवाले बडे यशस्वी इन्द्रकी (**यथा मतिं अच्छ अनूषत**) यथामति स्तुति की है ॥ २ ॥ (ऋ. १।६।६)

३-४ देखो अथर्व. २०।४०।१-२ । (ऋ. १।६।७-८)

हे (**परिज्मन्**) घूमनेवाले ! (**अतः आ गहि**) यहांसे आ । (**रोचनात् दिवः वा अधि**) अथवा तेजस्वी द्युलोकसे आ, (**अस्मिन् गिरः संसृजते**) यहां हमारी स्तुतियां उत्तम रीतिसे चल रही हैं ॥ ५ ॥ (ऋ. १।६।९)

(**इतः पार्थिवात् अधि**) यहां पृथिवीसे अथवा (**दिवः वा**) द्युलोकसे अथवा (**महः रजसः वा**) बडे अन्तरिक्षसे (**इन्द्रं सातिं ईमहे**) इन्द्रसे धन मांगते हैं ॥ ६ ॥ (ऋ. १।६।१०)

७-९ देखो अथर्व २०।३८।४-६ । (ऋ. १।७।१-३)

(**हे उग्र इन्द्र**) उग्रवीर इन्द्र ! (**उग्राभिः ऊतिभिः**) वीरताके संरक्षणोंसे (**सहस्रप्रधनेषु वाजेषु नः अव**) सहस्रों प्रकारके धन जिसमें मिलते हैं उन युद्धोंमें हमारी रक्षा कर ॥ १० ॥ (ऋ. १।७।४)

(**इन्द्रं वयं महाधने**) इन्द्रको हम बडे संग्राममें (**इन्द्रं अर्भे हवामहे**) इन्द्रको छोटे युद्धमें भी सहायतार्थ बुलाते हैं (**वृत्रेषु युजं वज्रिणं**) वृत्रोंको वज्रसे मारनेवाले हमारे मित्र इन्द्रको हम बुलाते हैं ॥ ११ ॥ (ऋ. १।७।५)

हे (**नः सत्रादावन् वृषन्**) हमारे लिये सदा देनेवाले बलवान् वीर ! (**सः**) वह तू (**अस्मभ्यं**) हमारे लिये (**अमुं चरुं अपा वृधि**) इस भोगको खोल दे (**अप्रतिष्कुतः**) तेरा प्रतिकार करनेवाला कोई नहीं है ॥ १२ ॥ (ऋ. १।७।६)

(**वज्रिणः इन्द्रस्य**) वज्रधारी इन्द्रकी (**तुञ्जे तुञ्जे ये उत्तरे स्तोमाः**) प्रत्येक युद्धमें जो ऊंचे स्तोत्र हैं उनमें (**अस्य सुष्टुतिं न विन्धे**) इसके योग्य स्तुतिको मैं प्राप्त नहीं करता ॥ १३ ॥ (ऋ. १।७।७)

वृषा यूथेव वंसगः कृष्टीरियर्त्योजसा । ईशानो अप्रतिष्कुतः ॥ १४ ॥
य एकश्चर्षणीनां वसूनामिरज्यति । इन्द्रः पञ्च क्षितीनाम् ॥ १५ ॥
इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः । अस्माकमस्तु केवलः ॥ १६ ॥
एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम् । वर्षिष्ठमूतये भर ॥ १७ ॥
नि येन मुष्टिहत्यया नि वृत्रा रुणधामहै । त्वोतासो न्यर्वता ॥ १८ ॥
इन्द्र त्वोतास आ वयं वज्रं घना ददीमहि । जयेम सं युधि स्पृधः ॥ १९ ॥
वयं शूरेभिरस्तृभिरिन्द्र त्वया युजा वयम् । सासह्याम पृतन्यतः ॥ २० ॥ (४६१)

(वृषा वंसगः यूथा इव) जैसा शक्तिमान् बैल गौओंके झुंडमें होता है वैसा जो (ओजसा कृष्टीः इयर्ति) सामर्थ्यसे सब मनुष्योंपर रहता है वह (अप्रतिष्कुतः ईशानः) प्रतिकार जिसका नहीं होता वैसा यह ईश्वर इन्द्र है ॥ १४ ॥ (ऋ. १।७।८)

(यः एकः) जो अकेला इन्द्र (पञ्च क्षितीनां) पांचों प्रकारके मानवोंका (चर्षणीनां वसूनां इरज्यति) सब मानवोंके धनोंका स्वामित्व करता है ॥ १५ ॥ (ऋ. १।७।९)

१६ देखो अथर्व. २०।३९।१। (ऋ. १।७।१०)

हे इन्द्र! (सानसिं) लाभ देनेवाले (सजित्वानं सदासहं रयिं) विजयी, शत्रुको पराभूत करनेवाले (वर्षिष्ठं) श्रेष्ठ धनको (ऊतये आ भर) हमारी सुरक्षाके लिये लाकर भर दे ॥ १७ ॥ (ऋ. १।८।१)

(येन मुष्टिहत्यया) जिसके मुष्टिप्रहारसे (वृत्रा नि रुणधामहै) शत्रुओंको रोक देते हैं (त्वा ऊतासः अर्वता नि) तुझसे सहायता दिये घोडेसे हम शत्रुको रोक दें ॥ १८ ॥ (ऋ. १।८।२)

हे इन्द्र! (त्वोतासः वयं) तेरे द्वारा सुरक्षित हुए हम (घना वज्रं आ ददीमहि) मारक वज्र पकडते हैं और उससे (युधि स्पृधः सं जयेम) युद्धमें शत्रुओंको जीतेंगे ॥ १९ ॥ (ऋ. १।८।३)

हे इन्द्र! (वयं अस्तृभिः शूरेभिः) हम अस्त्र फेंकनेवाले वीरोंके साथ तथा (त्वया युजा वयं) तेरे साथ हम रहकर (पृतन्यतः सासह्याम) सेनाके साथ चढाई करनेवाले शत्रुओंको परास्त करेंगे ॥ २० ॥ (ऋ. १।८।४)

इस सूक्तमें इन्द्रके ये गुण वर्णन किये हैं—

१ **देवयन्तः गिरः विदथसुं महां श्रुतं यथामतिं अच्छ अनुषत**— देवत्वकी प्राप्तिकी इच्छा करनेवाली हमारी वाणियां धनी और बडे प्रसिद्ध वीर इन्द्रकी प्रशंसा करते हैं।

२ **हे उग्र इन्द्र! उग्राभिः ऊतिभिः सहस्रप्रधनेषु वाजेषु नः अव**— हे वीर इन्द्र! वीरताके संरक्षण साधनोंसे सहस्रों प्रकारके धन जहां मिलते हैं उन युद्धोंमें हमारी रक्षा कर। '**सहस्रप्रधनं वाजं**'— युद्धमें हजारों प्रकारके धन मिलते हैं, ये धन शत्रुसे लूटनेसे मिलते हैं। इस लिये युद्धका नाम '**धन**' भी है और '**महाधन**' भी है।

३ **वयं वृत्रेषु युजं वज्रिणं इन्द्रं महाधने अर्भे च हवामहे**— हम शत्रुके ऊपर वज्र फेंकनेवाले इन्द्रको बडे और छोटे युद्धमें सहायताके लिये बुलाते हैं।

४ **सत्रादावन् वृषन्! अप्रतिष्कुतः अस्मभ्यं असुं चरुं अपा वृधि**— हे सदा दान देनेवाले बलवान् वीर! तू प्रतिबंध रहित होकर हमारे लिये यह भोग खुला कर दो। जिससे हम उसको प्राप्त करके उसका उपभोग लेंगे।

५ **वृषा वंसगः यूथा इव अप्रतिष्कुतः ईशानः ओजसा कृष्टीः इयर्ति**— बलवान् बैल जैसा गौओंके झुंडमें जाता है, उस तरह जिसका प्रतिकार नहीं किया जा सकता, ऐसा ईश्वर वह इन्द्र अपनी शक्तिसे शत्रुके सैनिकोंको पराभूत करता है।

६ **यः एकः पञ्च क्षितीनां चर्षणीनां वसूनां इरज्यति**— जो अकेला वीर इन्द्र पांचों मानवोंके धनोंका स्वामित्व करता है। सबके धनोंपर इसी अकेलेका अधिकार है।

७ **हे इन्द्र! सानसिं सजित्वानं सदासहं वर्षिष्ठं रयिं ऊतये आ भर**— हे इन्द्र! लाभदायक विजयी शत्रुका पराभव करनेवाले शक्तिशाली धनको हमारी सुरक्षाके लिये लाकर भर दो। धन ऐसा हो कि जो विजय देनेवाला, शत्रुका पराभव करनेवाला और श्रेष्ठ हो और वह हमारी रक्षा करनेवाला हो।

८ **येन मुष्टिहत्यया वृत्राणि रुणधामहै त्वाऊतासः अर्वता नि**— जिससे हम मुष्टियुद्धसे शत्रुको मारते

[सूक्त ७१]

(ऋषिः — १-१६ मधुच्छन्दाः । देवता — इन्द्रः ।)

महाँ इन्द्रः परश्च नु महित्वमस्तु वज्रिणे । द्यौर्न प्रथिना शवः ॥ १ ॥
समोहे वा य आशत नरस्तोकस्य सनितौ । विप्रासो वा धियायवः ॥ २ ॥
यः कुक्षिः सोमपातमः समुद्र इव पिन्वते । उर्वीरापो न काकुदः ॥ ३ ॥
एवा ह्यस्य सूनृता विरप्शी गोमती मही । पक्वा शाखा न दाशुषे ॥ ४ ॥
एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते । सद्यश्चित्सन्ति दाशुषे ॥ ५ ॥
एवा ह्यस्य काम्या स्तोम उक्थं च शंस्या । इन्द्राय सोमपीतये ॥ ६ ॥
इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः । महाँ अभिष्टिरोजसा ॥ ७ ॥
एमेनं सृजता सुते मन्दिमिन्द्राय मन्दिने । चक्रिं विश्वानि चक्रये ॥ ८ ॥
मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभिः स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे । सचेषु सवनेष्वा ॥ ९ ॥
असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत । अजोषा वृषभं पतिम् ॥ १० ॥

हैं और तुझसे सहायता दिये घोडोंसे हम शत्रुको दूर करते हैं । ऐसी शक्ति हमारे पास हो ।

९ हे इन्द्र ! त्वोतासः वयं घना वज्रं आ ददीमहि, युधि स्पृधः सं जयेम— हे इन्द्र ! तेरे द्वारा सुरक्षित हुए हम मारक वज्र पकडते हैं और उससे युद्धमें शत्रुओंको जीतते हैं ।

१० हे इन्द्र ! अस्तृभिः शूरेभिः वयं त्वया युजा पृतन्यतः सासह्याम— हे इन्द्र ! अस्त्र फेंकनेवाले वीरोंके साथ रहकर हम तेरी सहायतासे शत्रुओंको पराभूत करेंगे ।

(सूक्त ७१)

(इन्द्रः महान् परः च नु) इन्द्र महान है और श्रेष्ठ भी है । (वज्रिणे महित्वं अस्तु) वज्रधारी इन्द्रके लिये महत्व प्राप्त हो (द्यौः न शवः प्रथिना) द्युलोकके समान उसका यश फैला है ॥ १ ॥ (ऋ. १।८।४)

(ये समोहे आशत) जो युद्धमें लगे रहते हैं, (तोकस्य सनितौ वा ये नरः) अथवा पुत्रोंकी जीतमें जो व्यग्र रहते हैं, (धियायवः विप्रासः वा) जो बुद्धिके कार्य ज्ञानी करते हैं (वे इन्द्रकी स्तुति करते हैं) ॥ २ ॥ (ऋ. १।८।५)

(यः सोमपातमः कुक्षिः) जो अधिक सोम पीनेवाला पेट है, (समुद्र इव पिन्वते) समुद्रके समान जो फूलता है (काकुदः उर्वीः आपः न) दिशाओंमेंसे बडे जलप्रवाह जैसे आते हैं ॥ ३ ॥ (ऋ. १।८।६)

४-६ देखो अथर्व. २०।६०।४-६ ।

हे इन्द्र (आ इहि) आओ (मन्धसः विश्वेभिः सोमपर्वभिः) सारे सोमके भागोंसे (मत्सि) आनंदित हो । तू (ओजसा महान् अभिष्टिः) अपनी शक्तिसे बडे शत्रुको दबानेवाला है ॥ ७ ॥ (ऋ. १।९।१)

(सुते) रस निकालने पर (मन्दिने इन्द्राय) आनन्दित होनेवाले (विश्वानि चक्रये) सब कार्योंको करनेवाले इन्द्रके लिये (एनं मन्दिं चक्रिं आ सृजत) इस आनंददायक तथा उत्साहवर्धक रसको दे दो ॥ ८ ॥ (ऋ. १।९।[illegible])

हे (सुशिप्र विश्वचर्षणे) उत्तम हनुवाले और सब मनुष्योंके स्वामिन् इन्द्र ! (पेषु सवनेषु आ सच) इन यज्ञोंमें आकर संमिलित हो । और (मन्दिभिः स्तोमेभिः मत्स्व) हर्ष देनेवाले स्तोत्रोंसे आनन्दित हो ॥ ९ ॥ (ऋ. १।९।३)

हे इन्द्र ! (ते गिरः असृग्रं) तेरे लिये स्तोत्र रचे हैं । (त्वा प्रति उदहासते) तेरे पास वे जाते हैं (अजोषा वृषभं पतिं) जैसी अतृप्त स्त्रियां बलवान् पतिके समीप जाती हैं ॥ १० ॥ (ऋ. १।९।४)

❀

सं चोदय चित्रमर्वाग्राध इन्द्र वरेण्यम् । असदित्ते विभु प्रभु ॥ ११ ॥
अस्मान्त्सु तत्र चोदयेन्द्र राये रभस्वतः । तुविद्युम्न यशस्वतः ॥ १२ ॥
सं गोमदिन्द्र वाजवदस्मे पृथु श्रवो बृहत् । विश्वायुर्धेह्यक्षितम् ॥ १३ ॥
अस्मे धेहि श्रवो बृहद्द्युम्नं सहस्रसातमम् । इन्द्र ता रथिनीरिषः ॥ १४ ॥
वसोरिन्द्रं वसुपतिं गीर्भिर्गृणन्त ऋग्मियम् । होम गन्तारमूतये ॥ १५ ॥
सुतेसुते न्योकसे बृहद्बृहत एदरिः । इन्द्राय शूषमर्चति ॥ १६ ॥ (४७७)

॥ इति षष्ठोऽनुवाकः ॥ ६ ॥

हे इन्द्र ! (**चित्रं वरेण्यं राधः**) विलक्षण श्रेष्ठ धन हमारे (**अर्वाक् सं चोदय**) पास भेज दो । (**ते विभु प्रभु असद् इत्**) तेरे पास वह पर्याप्त और सामर्थ्यवाला है ॥ ११ ॥ (ऋ. १।९।५)

हे (**तुविद्युम्न इन्द्र**) बडे तेजस्वी इन्द्र ! (**रभस्वतः यशस्वतः अस्मान्**) प्रयत्नशील और यशस्वी हमको (**तत्र राये सु चोदय**) वहां धन प्राप्त करनेके लिये प्रेरित कर ॥ १२ ॥ (ऋ. १।९।६)

हे इन्द्र ! (**अस्मे बृहत् पृथु श्रवः**) हमें बडा विस्तृत यश दे जो (**गोमत् वाजवत्**) गौ आदि पशुओंसे तथा बलसे पूर्ण है । (**विश्वायुः अक्षितं धेहि**) जो संपूर्ण आयुतक रहनेवाला और समाप्त न होनेवाला हो ॥ १३ ॥ (ऋ. १।९।७)

हे इन्द्र ! (**सहस्रसातमं द्युम्नं बृहत् श्रवः**) सहस्रों आनंद देनेवाला तेजस्वी बडा यश तथा (**रथिनीः ताः इषः**) रथीयोंके साथ रहनेवाले वे अन्न (**अस्मे धेहि**) हमें दे ॥१४॥ (ऋ. १।९।८)

(**वसोः वसुपतिं**) धनके स्वामी (**ऋग्मियं**) स्तुति योग्य (**ऊतये गन्तारं इन्द्रं**) रक्षण करनेके लिये जानेवाले इन्द्रको (**गीर्भिः गृणन्तः होम**) स्तुति करते हुए हम बुलाते हैं ॥ १५ ॥ (ऋ. १।९।९)

(**सुते सुते**) प्रत्येक सोमयागमें (**बृहते ओकसे इन्द्राय**) बडे घरवाले इन्द्रके लिये (**बृहत् शूषं**) बडा स्तोत्र (**अरिः आ अर्चति इत्**) भक्त गाता है ॥ १६ ॥ (ऋ. १।९।१०)

इस सूक्तमें इन्द्रके ये गुण वर्णन किये हैं—

१ **इन्द्रः महान् परः च**— इन्द्र बडा श्रेष्ठ है ।

२ **वज्रिणे महित्वं अस्तु**— वज्रधारी इन्द्रका महत्त्व प्रकट हो ।

३ **द्यौः न शवः प्रथिना**— द्युलोकके समान उसका यश फैला है ।

४ **ओजसा महान् अभिष्टिः**— तू अपने बलसे शत्रुको दबाता है ।

५ **विश्वानि चक्रये चक्रिं आ असृजत**— सब पुरुषार्थ करनेवालेके लिये स्तुतिका चक्र चलाओ ।

६ **सुशिप्र विश्वचर्षणे**— उत्तम हनुवाला, या उत्तम साफा बांधनेवाला और मानवोंका हित करनेवाला स्वामी इन्द्र है ।

७ **वृषभः पतिः** बलवान् स्वामी ।

८ **ते विभु प्रभु चित्रं वरेण्यं राधः अस्मान् अर्वाक् सं चोदय**— तेरे पास व्यापक प्रभूत विलक्षण श्रेष्ठ धन है वह हमारे पास भेजो ।

९ **अस्मे गोमत् वाजवत् बृहत् प्रभु श्रवं विश्वायुः अक्षितं धेहि**— हमें गौवोंवाला, बलवाला बडा श्रेष्ठ और संपूर्ण आयुतक रहनेवाला अक्षय धन, अन्न या यश दे दो ।

१० **सहस्रसातमं द्युम्नं बृहत् श्रवः रथिनी इषः अस्मे धेहि**— सहस्रों आनंद देनेवाला बडा यशस्वी तथा रथके साथ रहनेवाला अन्न हमें दे दो ।

॥ यहां षष्ठ अनुवाक समाप्त ॥

[सूक्त ७२]

(ऋषिः — १-३ परुच्छेपः । देवता — इन्द्रः ।)

विश्वेषु हि त्वा सवनेषु तुञ्जते समानमेकं वृषमण्यवः पृथक्स्वञ्जः सनिष्यवः पृथक् ।
तं त्वा नावं न पर्षणिं शूषस्य धुरि धीमहि ।
इन्द्रं न यज्ञैश्चितयन्त आयव स्तोमेभिरिन्द्रमायवः ॥ १ ॥
वि त्वा ततस्रे मिथुना अवस्यवो व्रजस्य साता गव्यस्य निःसृजः सक्षन्त इन्द्र निःसृजः ।
यद्गव्यन्ता द्वा जना स्वर्यन्ता समूहसि ।
आविष्करिक्रद्वृषणं सचाभुवं वज्रमिन्द्र सचाभुवम् ॥ २ ॥
उतो नो अस्या उषसो जुषेत ह्यर्कस्य बोधि हविषो हवीमभिः स्वर्षाता हवीमभिः ।
यदिन्द्र इन्तवे मृधो वृषा वज्रिं चिकेतसि ।
आ मे अस्य वेधसो नवीयसो मन्म श्रुधि नवीयसः ॥ ३ ॥ (४८०)

[सूक्त ७३]

(ऋषिः — १-३ वसिष्ठः, ४-६ वसुक्रः । देवता — इन्द्रः ।)

तुभ्येदिमा सवना शूर विश्वा तुभ्यं ब्रह्माणि वर्धना कृणोमि । त्वं नृभिर्हव्यो विश्वधासि ॥ १ ॥

(सूक्त ७२)

(**विश्वेषु सवनेषु**) सब सोम यज्ञोंमें (**त्वा समानं एकं**) तुझ एकको ही (**पृथक् पृथक्**) अलग अलग (**वृष-मन्यवः**) बलयुक्त उत्साहवाले (**स्वः सनिष्यवः**) आनंद प्राप्त करनेकी इच्छा करनेवाले लोग (**तुञ्जते**) प्रशंसित करते हैं । (**तं त्वा**) उस तुझको ही (**पर्षणिं नावं इव**) पार ले जानेवाली नौकाके समान मानकर (**शूषस्य धुरि धीमहि**) बलके केन्द्र करके तुझे ही आगे ध्यानके लिये धरते हैं । (**आयवः यज्ञैः चितयन्तः**) मनुष्य यज्ञोंसे चेतना देते हुए (**इन्द्रं न**) इन्द्रकी ही जैसी स्तुति करते हैं, वैसी (**आयवः स्तोमेभिः इन्द्रं चितयन्तः**) मनुष्य स्तोत्रोंसे इन्द्रकी ही प्रशंसा करते हैं ॥ १ ॥ (ऋ. १।१३१।२)

(**अवस्यवः मिथुना**) संरक्षणकी इच्छा करनेवाले पति-पत्नीके जोडे जब (**त्वा वि ततस्रे**) तुझे स्तुतिसे उत्तेजित करते हैं । (**गव्यस्य व्रजस्य साता**) गौवोंके बाडेको चाहनेवाले, हे इन्द्र ! जब (**निः सृजः सक्षन्ते**) भेंट देते हैं जब (**निः सृजः**) तुझे भेंट देते हैं । (**यत् गव्यन्ता स्वर्यन्ता द्वा जना**) जब गौको चाहनेवाले, स्वर्ग प्राप्त करनेवाले दो जनोंको (**समूहसि**) तू इकट्ठा करता है तब (**वृषणं सचाभुवं वज्रं**) बलशाली साथ रहनेवाले वज्रको, (**सचाभुवं**) साथ रहनेवाले वज्रको तू (**आविः करिष्यत्**) प्रकट करता है ॥ २ ॥ (ऋ. १।१३१।३)

(**अस्याः उषसः**) इस उषाका, (**उत उ नः जुषेत**) वह हमें प्रेम करे, (**हवीमभिः हविषः अर्कस्य बोधि**) हमारे बुलावोंके साथ हवि और स्तोत्रको वह स्वीकारे । (**हवीमभिः स्वर्षाता**) बुलावोंके साथ स्वर्गकी प्राप्तिके लिये वह स्तोत्रको स्वीकारे । हे (**वज्रिन् इन्द्र**) वज्रधारी इन्द्र ! (**यत् वृषा मृधः हन्तवे चिकेतसि**) जब बलसे शत्रुओंको मारनेके लिये तू इच्छता है वहां (**मे अस्य नवीयसः वेधसः मन्म श्रुधि**) मेरे इस नवीन ऋषिके स्तोत्रको तू सुन (**नवीयस्यः**) नयेको तू सुन ॥ ३ ॥ (ऋ. १।१३१।६)

(**सूक्त ७३**)

हे शूर इन्द्र ! (**इमा सवना**) ये यज्ञ (**तुभ्य इत्**) तेरे लिये ही हैं । (**विश्वा ब्रह्माणि**) सब स्तोत्र (**तुभ्यं वर्धना कृणोमि**) तुम्हारी महिमा बढानेके लिये करता हूं, (**त्वं विश्वधा नृभिः हव्यः असि**) तू सब प्रकारसे मानवोंके द्वारा बुलाने योग्य है ॥ १ ॥ (ऋ. ८।२२।७)

नू चि॒न्नु ते॒ मन्य॑मानस्य द॒स्मोद॑श्नुवन्ति महि॒मान॑मुग्र । न वी॒र्य॑मिन्द्र ते॒ न राधः॑ ॥ २ ॥
प्र वो॑ म॒हे म॑हि॒वृधे॑ भरध्वं॒ प्रचे॑तसे॒ प्र सु॑म॒तिं कृ॑णुध्वम् । विशः॑ पू॒र्वीः प्र च॑रा चर्षणि॒प्राः ॥ ३ ॥
य॒दा वज्रं॒ हिर॑ण्य॒मिदथा॒ रथं॒ हरी॒ यम॑स्य॒ वह॑तो॒ वि सू॒रिभिः॑ ।
आ ति॑ष्ठति म॒घवा॒ सन॑श्रुत॒ इन्द्रो॒ वाज॑स्य दी॒र्घश्र॑वस॒स्पतिः॑ ॥ ४ ॥
सो चि॒न्नु वृ॒ष्टिर्यू॒थ्या॒३॒॑ स्वा सचाँ॒ इन्द्रः॒ श्मश्रू॑णि॒ हरि॑ता॒भि प्रु॑ष्णुते ।
अव॑ वेति सु॒क्षयं॑ सु॒ते मधूदिद्धू॑नोति॒ वातो॒ यथा॒ वन॑म् ॥ ५ ॥
यो वा॒चा विवा॑चो मृ॒ध्रवा॑चः पु॒रू स॒हस्राशि॑वा ज॒घान॑ ।
तत्त॒दिद॑स्य॒ पौंस्यं॑ गृणीमसि पि॒तेव॒ यस्तवि॑षीं वावृ॒धे शवः॑ ॥ ६ ॥ (४८१)

हे (**दस्म उग्र इन्द्र**) दर्शनीय उग्र इन्द्र ! (**ते मन्यमानस्य**) तेरी स्तुति होनेपर (**नु चित् नु**) निश्चयसे (**महिमानं उद अश्नुवन्ति**) तेरी महिमाको कोई प्राप्त नहीं होते, (**न वीर्यं**) तेरे पराक्रमको और (**न ते रायः**) न तेरे धनदानको कोई दूसरे पहुंचते हैं ॥ २ ॥ (ऋ. ८।२२।८)

(**वः महे महिवृधे प्र भरध्वं**) आपके बडे बडे महत्वके स्तोत्र करनेवालेके लिये आप दान दे दो, (**प्रचेतसे सुमतिं प्र कृणुध्वम्**) विशेष बुद्धिमान् इन्द्रके लिये स्तोत्र उच्चारो। (**चर्षणिप्राः**) प्रजाओंका पालनेवाला इन्द्र (**पूर्वीः विशः प्र चर**) पहिली प्रजाओंके पास उनकी रक्षाके लिये जाता है ॥ ३ ॥ (ऋ. ८।३१।१०)

(**यदा हिरण्यं वज्रं इत्**) जब सोनेके वज्रको इन्द्र धारण करता है, (**अथा यमस्य रथं हरी वहतः**) तब उस नियामकके रथको दो घोडे ले जाते हैं। (**वाजस्य दीर्घश्रवसः पतिः**) बलका और बडे यशका स्वामी (**सनश्रुतः मघवा इन्द्रः**) विख्यात दानी धनवान् इन्द्र (**सूरिभिः आ वि तिष्ठति**) नेताओंके साथ उस रथपर चढकर बैठता है ॥ ४ ॥ (ऋ. १०।२३।३)

(**वृष्टिः चित् नु**) वृष्टि (**युथ्या**) यूथके समान आती है तब (**इन्द्रः स्वा हरिता श्मश्रूणि सचां**) इन्द्र अपने हरे श्मश्रुओंपर- सोमवल्लीपर- साथ साथ (**अभि प्रुष्णुते**) वृष्टिको गिराता है। (**सुते सुक्षयं अववेति**) सोमका रस निकालनेपर वह उत्तम यज्ञघरको- यज्ञस्थानको- जानता है (**मधु उत् धुनोति**) उस मधुर रसको वह हिलाता है (**यथा वातः वनं**) जैसा वायु वनको हिलाता है ॥ ५ ॥ (ऋ. १०।२४।४)

(**वाचा विवाचा**) विरुद्ध बोलनेवाले (**मृध्रवाचा**) असत्य भाषण करनेवाले (**पुरू सहस्रा अशिवाः**) बहुतसे सहस्रों अशुभ बोलनेवालोंको (**यः जघान**) जिसने मारा है (**तत् तत् इत् पौंस्यं**) वह इसका पौरुष (**गृणीमसि**) हम प्रशंसित करते हैं, (**यः**) जो (**पिता इव**) पिताके समान (**तविषीं शवः वावृधे**) शक्तिको तथा सुखको बढाता है ॥ ६ ॥ (ऋ. १०।२३।५)

इस सूक्तमें इन्द्रके ये गुण वर्णन किये हैं—

१ हे दस्म उग्र इन्द्र ! ते महिमानं, वीर्यं, रायः न उत् अश्नुवन्ति— हे दर्शनीय उग्र इन्द्र ! तेरे महिमा, पराक्रम तथा धनदानकी कोई बराबरी नहीं कर सकता।

२ चर्षणिप्राः ! पूर्वीः विशः प्र चर— हे प्रजारक्षक ! तू पूर्ण प्रजाजनोंके पास जाकर, उनका निरीक्षण करता रह।

३ यदा हिरण्यं वज्रं, यमस्य रथं हरी वहतः, सनश्रुतः वाजस्य दीर्घश्रवसः पतिः,. मघवा इन्द्रः, सूरिभिः आ वि तिष्ठति— जब सुवर्णमय वज्र धारण करता है, तब उस नियामकके रथको दो घोडे जोते जाते हैं, तब प्रसिद्ध बल और यशका स्वामी धनवान् इन्द्र, ज्ञानियोंके साथ उस रथपर चढकर बैठता है।

४ वाचा विवाचा मृध्रवाचा पुरू सहस्रा अशिवा यः जघान तत् इत् अस्य पौंस्यं गृणीमसि, यः पिता इव तविषीं शवः वावृधे— असत्यभाषी सहस्रों अशुभ दुष्टोंको जिसने मारा वह इसका पौरुष हम वर्णन करते हैं। वह पिताके समान शक्ति और सामर्थ्य बढाता है।

[सूक्त ७४]

(ऋषिः — १-७ शुनःशेपः । देवता — इन्द्रः ।)

यच्चिद्धि सत्य सोमपा अनाशस्ता इव स्मसि ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ १ ॥
शिप्रिन्वाजानां पते शचीवस्तव दंसना ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ २ ॥
नि ष्वापया मिथूदृशा सस्तामबुध्यमाने ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ ३ ॥
ससन्तु त्या अरातयो बोधन्तु शूर रातयः ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ ४ ॥
समिन्द्र गर्दभं मृण नुवन्तं पापयामुया ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ ५ ॥
पतति कुण्डृणाच्या दूरं वातो वनादधि ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ ६ ॥
सर्वं परिक्रोशं जहि जम्भया कृकदाश्वम् ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ ७ ॥ (४९३)

(सूक्त ७४)

हे (**सत्य सोमपाः**) सच्चे सोम पीनेवाले इन्द्र । (**यत् चित् हि**) जो भी (**अनाशस्ता इव स्मसि**) हम निराश जैसे हुए हैं । हे (**तुवीमघ इन्द्र**) बहुत धनवाले इन्द्र ! (**गोषु अश्वेषु सहस्रेषु शुभ्रिषु**) गौवों और घोडोंमें तथा सहस्रों तेजस्वी धनोंमें (**नः तू आ शंसय**) हमें तू उत्साह युक्त बनाओ ॥ १ ॥ (ऋ. १।२९।१)

हे (**शिप्रिन् वाजानां पते शचीवः**) उत्तम हनुवाले, शक्तिशाली, सामर्थ्यवान् इन्द्र ! (**तव दंसना**) तेरे अद्भुत कर्म है ॥ ० ॥ २ ॥ (ऋ. १।२९।२)

(**मिथूदृशा नि ष्वापय**) परस्पर वैरभावसे देखनेवालोंको सुलाओ, (**अबुध्यमाने सस्तां**) वे न जागते हुई सो जाये ॥ ० ॥ ३ ॥ (ऋ. १।२९।३)

(**त्या अरातयः सस्तां**) वे शत्रु सोयें। हे शूर ! (**रातयः बोधन्तु**) दान देनेवालें जागें ॥ ० ॥ ४ ॥ (ऋ. १।२९।४)

(**अमुया पापया नुवन्तं**) इस पापभावसे स्तुति करनेवाले, हे इन्द्र ! (**गर्दभं सं मृण**) गद्देको पीस डालो ॥ ० ॥ ५ ॥ (ऋ. १।२९।५)

(**कुण्डृणाच्या दूरं पतति**) कुटिल शत्रु दूर जावे (**वातः वनात् अधि**) वायु जैसा वनसे दूर जाय ॥ ० ॥ ६ ॥ (ऋ. १।२९।६)

(**सर्वं परिक्रोशं जहि**) सब आक्रोश करनेवाले दुष्ट नष्ट कर (**कृकदाश्वं जंभय**) छिपकर मारनेवालेको पीस डाल ॥ ० ॥ ७ ॥ (ऋ. १।२९।७)

हे इन्द्र ! तू हमें उत्साहित कर, निराशाको हमसे दूर कर ।

[सूक्त ७५]

(ऋषिः — १-३ पुरुच्छेपः। देवता — इन्द्रः।)

वि स्वो ततस्रे मिथुना अवस्यवो व्रजस्य साता गव्यस्य निःसृजः सक्षन्त इन्द्र निःसृजः।
यद्गव्यन्ता द्वा जना स्वर्यन्ता समूहसि।
आविष्करिक्रद्वृषणं सचाभुवं वज्रमिन्द्र सचाभुवम् ॥ १ ॥
विदुष्टे अस्य वीर्यस्य पूरवः पुरो यदिन्द्र शारदीरवातिरः सासहानो अवातिरः।
शासस्तमिन्द्र मर्त्यमयज्युं शवसस्पते।
महीममुष्णाः पृथिवीमिमा अपो मन्दसान इमा अपः ॥ २ ॥
आदित्ते अस्य वीर्यस्य चर्किरन्मदेषु वृषन्नुशिजो यदाविथ सखीयतो यदाविथ।
चकर्थ कारमेभ्यः पृतनासु प्रवन्तवे।
ते अन्यामन्यां नद्यं सनिष्णत श्रवस्यन्तः सनिष्णत ॥ ३ ॥ (४९६)

[सूक्त ७६]

(ऋषिः — १-८ वसुक्रः। देवता — इन्द्रः।)

वने न वा यो न्यधायि चाकं छुचिर्वो स्तोमो भुरणावजीगः।
यस्येदिन्द्रः पुरुदिनेषु होता नृणां नर्यो नृतमः क्षपावान् ॥ १ ॥

(सूक्त ७५)

१ देखो अथर्व २०।७२।२ (ऋ. १।१३१।३)

हे इन्द्र! (**पूरवः ते अस्य वीर्यस्य विदुः**) लोग तेरे इस वीरताके कर्मको जानते हैं। हे इन्द्र! (**शारदीः पुरः अवातिरः**) जो शरदके किलोंका तूने नाश किया, (**सासहानः अवातिरः**) विजय करते हुए शत्रुका नाश किया। हे (**शवसस्पते इन्द्र**) बलवान् इन्द्र! (**तं अयज्युं मर्त्यं शासः**) उस यज्ञ न करनेवाले मनुष्यको तूने दण्ड दिया। (**महीं पृथिवीं**) बडी पृथिवीको और (**इमाः आपः अमुष्णाः**) इन जलप्रवाहोंको (**अमुष्णाः**) अपने आधीन कर लिया। हे (**मन्दसान**) आनंदमें रहनेवाले इन्द्र ॥ २ ॥ (ऋ. १।१३१।४)

हे (**वृषन्**) बलवान् इन्द्र! (**ते अस्य वीर्यस्य उशिजः आत् इत् चर्किरन्**) तेरे इस वीर्यके कार्यकी कीर्ति ऋत्विजोंने गायी है। (**यद् आविथ**) जब तूने उनकी सुरक्षा की, (**सखीयतः यत् आविथ**) मित्रता चाहनेवालोंकी जब तुमने सुरक्षा की थी। (**पृतनासु प्रवन्तवे**) सैन्योंमें जीतनेके लिये (**एभ्यः कारं चकर्थ**) इनके हितके लिये पुरुषार्थ किया। (**ते अन्यां अन्यां नद्यं सनिष्णत**) उन्होंने अन्य नदीप्रवाहको प्राप्त किया (**अवस्यन्तः सनिष्णत**) यश चाहनेवालोंने प्राप्त किया ॥ ३ ॥ (ऋ. १।१३१।५)

(सूक्त ७६)

(**यस्य इत्**) जिसके विषयमें (**नृणां नर्यः**) नेताओंमें मुख्य नेता, (**नृतमः**) वीरोंमें मुख्य (**क्षपावान्**) पृथिवीका अधिपति (**पुरुदिनेषु होता इन्द्रः**) बहुत दिनतक इच्छा करनेवाला इन्द्र चाह रखता है वह (**शुचिवः स्तोमः**) वह शुद्ध स्तोत्र है (**भुरणौ**) पुष्टि देनेवाले अश्विदेवों (**यां अजीगः**) तुम्हारे पास गया है तुमने वह किया है। (**यः वने न चाकं न्यधायि**) जिसने वनमें इष्ट रखा होता है उसकी ओर जैसा ध्यान रखा होता है ॥ १ ॥ (ऋ. १०।२९।१)

प्र तें अस्या उषसः प्रापरस्या नृतौ स्याम नृतमस्य नृणाम् ।
अनु त्रिशोकः शतमावहन्नृन्कुत्सेन रथो यो असत्ससवान् ॥ २ ॥
कस्ते मद इन्द्र रन्त्यो भूद्दुरो गिरो अभ्युग्र वि धाव ।
कद्वाहो अर्वागुप मा मनीषा आ त्वा शक्यासुपमं राधो अन्नैः ॥ ३ ॥
कदु द्युम्नमिन्द्र त्वावतो नृन्कया धिया करसे कन्न आगन् ।
मित्रो न सत्य उरुगाय भृत्या अन्ने समस्य यदसन्मनीषाः ॥ ४ ॥
प्रेरय सूरो अर्थं न पारं ये अस्य कामं जनिधा इव ग्मन् ।
गिरश्च ये ते तुविजात पूर्वीर्नरं इन्द्र प्रतिशिक्षन्त्यन्नैः ॥ ५ ॥
मात्रे नु ते सुमिते इन्द्र पूर्वी द्यौर्मज्मना पृथिवी काव्येन ।
वराय ते घृतवन्तः सुतासः स्वाद्मन्भवन्तु पीतये मधूनि ॥ ६ ॥
आ मध्वो अस्मा असिचन्नमत्रमिन्द्राय पूर्णं स हि सत्यराधाः ।
स वावृधे वरिमन्ना पृथिव्या अभि क्रत्वा नर्यः पौंस्यैश्च ॥ ७ ॥

(अस्याः उषसः प्र) इस उषाके (अपरस्याः प्र) और दूसरी उषाके (नृतौ) नाचनेमें (नृणां नृतमस्य स्याम) वीरोंके वीर इन्द्रके हम हों। (यः ससवान् असत्) जो विजयी था वह (त्रिशोकः रथः) तीन ज्योतीवाला रथ (कुत्सेन) कुत्सके साथ (शतं नॄन् अनु आवहत्) सौ वीरोंको साथ ले आवे ॥ २ ॥ (ऋ. १०।२९।२)

हे इन्द्र ! (कः मदः ते रत्न्यो भूत्) कौनसा आनंद तेरे लिये हर्षका कारण हुआ है ? तू (उग्रः) उग्रवीर है। (दुरः गिरः अभि वि धाव) हमारे द्वारों और स्तुतियोंके पास दौडता आ। (मा मनीषा कद् अर्वाग् उप वाहः) कब मेरा स्तोत्र तुझे मेरी ओर लायेगा ? (अन्नैः उपमं राधः त्वा आ शक्यां) मैं हविष्यान्नोंके साथ तेरे उत्तम धनदानको प्राप्त कर सकूं ॥ ३ ॥ (ऋ. १०।२९।३)

हे इन्द्र ! (कद् उ द्युम्नं त्वावतः नॄन्) कब उत्तम यश तेरे जैसे शूरोंको मिलेगा ? (कया धिया करसे) किस बुद्धिसे तू कार्य करेगा ? (कद् नः आगन्) कब तू हमारे पास आवेगा ? (सत्यः मित्रः न) सच्चे मित्रके समान, हे (उरुगाय) बडी गतिवाले इन्द्र ! (यत् मनीषाः असन्) जो बुद्धियां हैं (भृत्या अन्ने समस्य) उनको भरणपोषणके हेतु अन्नमें रख ॥ ४ ॥ (ऋ. १०।२९।४)

(प्रेरय) उनको प्रेरणा दे, (सूरः पारं अर्थं न) जैसा सूर्य परे स्थित लक्ष्यको पहुंचता है। (ये अस्य कामं जनिधा इव ग्मन्) जो इसकी इच्छाके साथ पति-पत्नीकी तरह मिले हैं। हे (तुविजात इन्द्र) अनेक प्रकारके कार्य करनेवाले इन्द्र ! (ये ते) और जो वे (पूर्वीः नरः गिरः च अन्नैः प्रतिशिक्षन्ति) पूर्व वीर अपनी स्तुतियोंको अन्नोंके साथ गाते हैं ॥ ५ ॥ (ऋ. १०।२९।५)

हे इन्द्र ! (ते मात्रे नु सुमिते) तेरे बडे दो माप अच्छे गिने हुए हैं। (द्यौः पूर्वी मज्मना) द्यौ पहिली तेरे बलसे और (काव्येन पृथिवी) तेरी प्रज्ञासे पृथिवी। (घृतवन्तः सुतासः ते वराय) घीसे मिले हुए सोमरस तेरे स्वीकारके लिये हों और (मधूनि पीतये स्वाद्मन् भवन्तु) मधुर रस तेरे पीनेके लिये मीठे हों ॥ ६ ॥ (ऋ. १०।२९।६)

(मध्वः पूर्णं अमत्रं) मधुका पूर्ण पात्र (अस्मा इन्द्राय) इस इन्द्रके लिये (आ असिञ्चन्) भर कर रखा है। (सः हि सत्यराधाः) वही सच्चा दानी है। (स पृथिव्या वरिमन्ना अभि ववृधे) वह पृथिवीकी श्रेष्ठतासे चारों ओरसे बढा, (पौंस्यैः च क्रत्वा नर्यः) वीरताके कर्मोंसे और प्रज्ञासे वह मानवोंका हितकारी है ॥ ७ ॥ (ऋ. १०।२९।७)

व्यानलिन्द्रः पृतनाः स्वोजा आस्मै यतन्ते सख्याय पूर्वीः ।
आ स्मा रथं न पृतनासु तिष्ठ यं भद्रया सुमत्या चोदयासे ॥ ८ ॥ (५०४)

[सूक्त ७७]

(ऋषिः — १-८ वामदेवः । देवता — इन्द्रः ।)

आ सत्यो यातु मघवाँ ऋजीषी द्रवन्त्वस्य हरय उप नः ।
तस्मा इदन्धः सुषुमा सुदक्षमिहाभिपित्वं करते गृणानः ॥ १ ॥
अव स्य शूराध्वनो नान्तेऽस्मिन्नो अद्य सवने मन्दध्यै ।
शंसात्युक्थमुशनेव वेधाश्चिकितुषे असुर्याय मन्म ॥ २ ॥
कविर्न निण्यं विदथानि साधन्वृषा यत्सेकं विपिपानो अर्चात् ।
दिव इत्था जीजनत्सप्त कारूनहा चिच्चक्रुर्वयुना गृणन्तः ॥ ३ ॥
स्वर्यद्वेदि सुदृशीकमर्कैर्महि ज्योती रुरुचुर्यद्ध वस्तोः ।
अन्धा तमांसि दुधिता विचक्षे नृभ्यश्चकार नृतमो अभिष्टौ ॥ ४ ॥

(स्वोजाः इन्द्रः) शक्तिशाली इन्द्र (पृतनाः व्यानट्) शत्रुकी सेनाओंको जीतता है (पूर्वीः अस्मै सख्याय आ यतन्ते) बहुतसी प्रजाएं इसकी मित्रताके लिये यत्न करती हैं। (यं भद्रया सुमत्या चोदयासे) जिसको तू अपनी सुमतिसे प्रेरित करता है (अस्मा पृतनासु रथं न आ तिष्ठ) इस पर युद्धोंमें रथपर बैठते हैं उस तरह बैठ ॥ ८ ॥ (ऋ. १०।१२९।८)

इस सूक्तमें इन्द्रके ये गुण वर्णन किये हैं—

१ नृणां नर्यः नृतमः क्षपावान्-- मनुष्योंमें श्रेष्ठ, मनुष्योंका हित करनेवाला पृथिवीपती इन्द्र है ।

२ यः ससवान् असत् । त्रिशोकः रथः शतं नॄन् अनु आवहत्— वह विजयी था । तीन ज्योतीवाले उस रथने सैकडों वीरोंको लाया ।

३ हे उरुगाय ! यत् मनीषा असन्, भृत्या अन्ने समस्य— हे शीघ्रगामी वीर, जो तेरी बुद्धियां हैं उनको हमारे भरणपोषणके लिये अन्नमें प्रेरित कर ।

४ पौंस्यैः क्रत्वा च नर्यः— पुरुषार्थो और बुद्धिसे वह मानवोंका हित करनेवाला है ।

५ स्वोजाः इन्द्रः पृतनाः व्यानट्— शक्तिशाली इन्द्र शत्रुके सैनिकोंको परास्त करता है ।

(सूक्त ७७)

(सत्यः ऋजीषी मघवान् आ यातु) सत्य सोमप्रिय धनवान् इन्द्र यहां आवे । (अस्य हरयः नः उप द्रवन्तु) इसके घोडे हमारे पास दौडते आ जाय । (तस्मै इत् सुदक्षं अन्धः सुषुमा) इसके लिये ही उत्तम बलवर्धक सोम रस निकाला है । (गृणानः इह अभिपित्वं करते) स्तुति करनेपर वह यहां पहुंचेगा ॥ १ ॥ (ऋ. ४।१६।१)

हे शूर ! (अव स्य) खोल दे [अपने घोडोंको] । (अध्वनः अन्ते न) मानो मार्गका अन्त हुआ है (नः अद्य अस्मिन् सवने मन्दध्यै) हमारे आज इस यज्ञमें आनन्द मनानेके लिये । (उशना इव वेधाः) उशनाकी तरह ऋत्विज (उक्थं शंसाति) गीत गाता है । वह (चिकितुषे असुर्याय मन्म) ज्ञानी बलवान् इन्द्रका वह स्तोत्र है ॥ २ ॥ (ऋ. ४।१६।२)

(वृषा यत् सेकं विपिपानो अर्चात्) बलवान् जब डाले सोमको पीता हुआ गाता है, (कविः न निण्यं विदथानि साधन्) कवि जैसा एकान्तमें यज्ञोंको करता हुआ [गाता है] । (दिवः इत्था सप्त कारून् जीजनत्) द्युसे इस तरह उसने सात स्तोताओंको उत्पन्न किया, (अह्ना चित् गृणन्तः वयुना चक्रुः) दिनभर स्तुति करते हुए उन्होंने दिनभर कर्म किये ॥ ३ ॥ (ऋ. ४।१६।३)

(अर्कैः सुदृशीकं स्वः यत् वेदि) स्तोत्रपाठोंके साथ जब दर्शनीय तेज दीख पडा, (यत् ह वस्तोः महि ज्योतिः रुरुचुः) जब दिनमें बडी ज्योतिको प्रकाशित

ववक्ष इन्द्रो अमितमृजीष्यु१भे आ पप्रौ रोदसी महित्वा ।
अतश्चिदस्य महिमा वि रेच्यभि यो विश्वा भुवना बभूव ॥ ५ ॥
विश्वानि शक्रो नर्याणि विद्वानपो रिरेच सखिभिर्निकामैः ।
अश्मानं चिद्ये बिभिदुर्वचोभिर्व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वव्रुः ॥ ६ ॥
अपो वृत्रं वव्रिवांसं परादन्प्रावत्ते वज्रं पृथिवी सचेताः ।
प्राणोसि समुद्रियाण्यैनोः पतिर्भवं छवसा शूर धृष्णो ॥ ७ ॥
अपो यदद्रिं पुरुहूत ददरावित्सरमा पूर्व्यं ते ।
स नो नेता वाजमा दर्षि भूरिं गोत्रा रुजन्नङ्गिरोभिर्गृणानः ॥ ८ ॥ (५२९)

किया, (**नृभ्यः विचक्षे**) मानवोंके देखनेके लिये (**अभिष्टौ नृतमः**) विजयी नेताओंके श्रेष्ठने (**अन्धा तमांसि दुधिता चकार**) घने अन्धकारको दूर किया ॥ ४ ॥ (ऋ. ४।१६।४)

(**ऋजीषी इन्द्रः अमितं ववक्ष**) सोमप्रिय इन्द्र अपरिमित बढ गया। (**महित्वा उभे रोदसी आ पप्रौ**) अपने महत्वसे उसने दोनों लोकोंको भर दिया। (**अतः चित् अस्य महिमा वि रेचि**) इससे इसकी महिमा बढ गयी, (**यः विश्वा भुवना अभि बभूव**) जिसने सारे भुवनोंको पराभूत किया ॥ ५ ॥ (ऋ. ४।१६।५)

(**शक्रः विश्वानि नर्याणि विद्वान्**) सामर्थ्यवान् इन्द्र सब मानवोंके हितके कार्य जानता है। (**निकामैः सखिभिः अपः रिरेच**) अपने निष्काम मित्रों- मरुतोंके साथ जलप्रवाहोंको उसने खोल दिया। (**ये वचोभिः अश्मानं चित् बिभिदुः**) जिन्होंने शब्दोंसे पत्थरोंको छिन्नभिन्न किया और (**उशिजः गोमन्तं व्रजं वि वव्रुः**) उन इच्छा करनेवाले [**मरुतोंने**] गौओंवाले बाडेको खोल दिया ॥ ६ ॥ (ऋ. ४।१६।६)

(**अपः वव्रिवांसं वृत्रं पराहन्**) उसने जलोंको रोकनेवाले वृत्रको मारा। (**सचेताः पृथिवी ते वज्रं प्रावत्**) चेतना युक्त प्रजावाली पृथिवीने तेरे वज्रकी रक्षा की। हे (**धृष्णो शूर**) शत्रुका पराभव करनेवाले इन्द्र! (**शवसा पतिः भवन्**) सामर्थ्यसे पति होकर (**समुद्रियाणि अर्णांसि प्र ऐनोः**) समुद्रीय जलोंको प्रवाहित किया, आगे बढाया ॥ ७ ॥ (ऋ. ४।१६।७)

हे (**पुरुहूत**) बहुतों द्वारा प्रार्थित इन्द्र! (**यत् अपः अद्रिं ददर्**) जब जलोंके पहाडको तुमने तोडा, तब (**सरमा ते पूर्व्यं आविः भुवत्**) सरमा तेरे सामने प्रकट हुई। (**अंगिरोभिः गृणानः**) अंगिरोंसे स्तुति किया हुआ (**गोत्रा रुजन्**) पहाडोंको तोडता हुआ (**सः नः नेता**) वह हमारा नेता इन्द्र (**भूरि वाजं आ दर्षि**) बहुत बल दिखाता है ॥ ८ ॥ (ऋ. ४।१६।८)

इस सूक्तमें इन्द्रके ये गुण कहे हैं—

१ **चिकितुषे असुर्याय मन्म**— ज्ञानी शक्तिमानके लिये यह सूक्त है।

२ **महित्वा उभे रोदसी आ पप्रौ**— अपने महत्वसे द्यावापृथिवीको भर दिया।

३ **अस्य महिमा वि रेचि**— इसका महिमा बढ गया।

४ **यः विश्वा भुवना अभि बभूव**— जिसने सब भुवनोंको पराभूत किया।

५ **शक्रः विश्वानि नर्याणि विद्वान्**— समर्थ इन्द्र मानवोंके हितके सब कार्य जानता है।

६ **धृष्णो शूर! शवसा पतिः भवन्**— शत्रुका पराभव करनेवाले शूर! बलसे तू स्वामी होता है।

७ **गोत्रा रुजन्**— पहाडोंको तोडा।

८ **सः नः नेता भूरि वाजं आ दर्षि**— वह हमारा नेता बहुत सामर्थ्य बताता है।

[सूक्त ७८]

(ऋषिः — १-३ शंयुः । देवता — इन्द्रः ।)

तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने । शं यद्गवे न शाकिने ॥ १ ॥
न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमतः । यत्सीमुप श्रवद्गिरः ॥ २ ॥
कुवित्सस्य प्र हि व्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत् । शचीभिरप नो वरत् ॥ ३ ॥ (५१५)

[सूक्त ७९]

(ऋषिः — १-२ वसिष्ठः शक्तिर्वा । । देवता — इन्द्रः ।)

इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।
शिक्षा णो अस्मिन्पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ॥ १ ॥
मा नो अज्ञाता वृजना दुराध्योऽ३ माशिवासो अव क्रमुः ।
त्वया वयं प्रवतः शश्वतीरपोऽति शूर तरामसि ॥ २ ॥ (५१७)

(सूक्त ७८)

(**सुते**) सोमरस निकालनेपर (**पुरुहूताय वः सत्वने**) बहुतों द्वारा बुलाये गये आपके बलवान् वीरके लिये (**सचा शं तत् गाय**) साथ साथ वह शान्तिप्रद या सुखदायी स्तोत्र गाओ, (**यद् शाकिने गवे न**) जैसा शक्तिशाली बैलके लिये गाया जाता है ॥ १ ॥ (ऋ. ६।४५।२२)

(**यत् सीं गिरः उप श्रवत्**) जब वह हमारी स्तुतियोंको सुनता है तब वह (**गोमतः वाजस्य दानं**) गौओंवाले धनके दानको तथा (**वसुः घ न नियमते**) धनको नहीं रोकता ॥ २ ॥ (ऋ. ६।४५।२३)

(**दस्युहा**) शत्रुओंको मारनेवाला इन्द्र (**कुवित्सस्य गोमन्तं व्रजं**) कुवित्सके गौओंवाले बाडेके पास (**हि प्र गमत्**) जायगा और (**शचीभिः नः अप वरत्**) अपनी शक्तियोंसे हमारे लिये उसे खोलेगा ॥ ३ ॥ (ऋ. ४५।२४)

१ यत् सीं गिरः उपश्रवत् गोमतः वाजस्य दानं वसुः नः नि यमते— जब वह इन्द्र हमारी स्तुतियोंको सुनता है तब गौओंवाले बलके दानको अथवा धनको देना वह बंद नहीं करेगा ।

२ दस्युहा गोमन्तं व्रजं प्र गमत् शचीभिः नः अप वरत्— शत्रुनाशक इन्द्र गौओंके बाडेके पास जाता है और अपनी शक्तियोंसे उनको हमारे लिये खोलता है ।

(**सूक्त ७९**)

हे इन्द्र ! (**नः क्रतुं आभर**) हमारे लिये कर्तृत्वबुद्धि भर दे (**यथा पिता पुत्रेभ्यः**) जैसा पिता पुत्रोंको देता है (**यामनि नः शिक्ष**) इस चढाईमें हमें शिक्षा दें (**जीवा ज्योतिः अशीमहि**) जीवित रहनेपर हम ज्योतिको प्राप्त करेंगे ॥ १ ॥ (ऋ. ७।३२।२६)

(**अज्ञाता वृजना दुराध्यः**) अज्ञात बुरा चाहनेवाले हमारे शत्रु (**मा नः**) हमें मत दबावें, (**अशिवासः मा अव क्रमुः**) अशुभ शत्रु हमपर आक्रमण न करें। हे शूर ! (**त्वया वयं**) तेरे साथ रहकर हम (**शश्वतीः प्रवतः अपः**) शाश्वत बहनेवाले जलप्रवाहोंको (**अति तरामसि**) तैर कर परे हो जाय ॥ २ ॥ (ऋ. ७।३२।२७)

१ हे इन्द्र ! नः क्रतुं आ भर— हे इन्द्र ! हमें कर्तृत्व करनेकी बुद्धि भरपूर दे । जिससे हम पुरुषार्थ प्रयत्न कर सकें ।

२ तथा पुत्रेभ्यः पिता क्रतुं— जैसा पिता पुत्रोंको कर्तृत्वशक्तिसे युक्त करता है । पिताका यह कर्तव्य है कि वह अपने पुत्रोंको कर्तृत्वशक्तिसे युक्त करे ।

३ अस्मिन् यामनि नः शिक्ष— शत्रुपर करनेके आक्रमणके विषयमें हमें योग्य और आवश्यक ज्ञान दे जिससे हम आक्रमण करके शत्रुको परास्त कर सकें ।

४ जीवा ज्योतिः अशीमहि— जीवित रहेंगे तो तेजस्विता प्राप्त करेंगे ।

५ अज्ञाता वृजना दुराध्यः अशिवासः मा अवक्रमुः— कोई अज्ञात दुष्ट दुर्जन शत्रु हमपर आक्रमण न करें ।

६ त्वया वयं शश्वती प्रवतः अपः अति तरामसि— तुम्हारे साथ रहकर हम शाश्वत नीचे बहनेवाले जल-

[सूक्त ८०]

(ऋषिः — १-२ शंयुः। देवता — इन्द्रः।)

इन्द्र ज्येष्ठं न आ भर ओजिष्ठं पपुरि श्रवः।
येनेमे चित्र वज्रहस्त रोदसी ओभे सुशिप्र प्राः ॥ १ ॥
त्वामुग्रमवसे चर्षणीसहं राजन्देवेषु हूमहे।
विश्वा सु नो विथुरा पिन्दना वसोऽमित्रात्सुषहान्कृधि ॥ २ ॥ (५१९)

[सूक्त ८१]

(ऋषिः — १-२ पुरुहन्मा। देवता — इन्द्रः।)

यद् द्यावः इन्द्र ते शतं शतं भूमीरुत स्युः।
न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी ॥ १ ॥
आ पप्राथ महिना वृष्ण्या वृषन्विश्वा शविष्ठ शवसा।
अस्माँ अव मघवन् गोमति व्रजे वज्रिं चित्राभिरूतिभिः ॥ २ ॥ (५२१)

(सूक्त ८०)

हे इन्द्र ! (नः) हमारे लिये (ज्येष्ठं ओजिष्ठं पपुरि श्रवः) श्रेष्ठ शक्तिशाली परिपूर्ण यश (आ भर) भर दे, हे (चित्र सुशिप्र वज्रहस्त) आश्चर्यकारक, उत्तम साफे-वाले तथा हाथमें वज्र धारण करनेवाले इन्द्र ! (येन इमे उभे रोदसी) जिससे ये दोनों द्यु और पृथिवीको तू (आ प्राः) भर देता है ॥ १ ॥ (ऋ. ६।४६।५)

हे राजन् ! (उग्रं चर्षणीसहं देवेषु त्वां) उग्रवीर शत्रुसेनाको जीतनेवाले देवोंमें तुझको (हूमहे) हम बुलाते हैं। हे (वसो) निवासक ! (नः विश्वा विथुरा पिन्दना) हमारे सब दुर्बलोंको सुदृढ बना दें, (अमित्रान् सुसहान् सु कृधि) हमारे सब शत्रुओंको सुखसे हम जीतें ऐसा कर ॥ २ ॥ (ऋ. ६।४६।६)

१ ज्येष्ठं ओजिष्ठं पपुरि श्रवः आ भर— श्रेष्ठ सामर्थ्यवान् परिपूर्ण यश हमें पूर्ण रीतिसे दे दो।

२ चित्र सुशिप्र वज्रहस्त ! येन उभे रोदसी आ प्राः तत् आ भर— हे विलक्षण उत्तम हनु या साफावाले वज्रधारी इन्द्र ! जिससे तू दोनों लोकोंको यशसे भर देता है वह यश हमें भरपूर भर दे।

३ उग्रं चर्षणीसहं देवेषु त्वां हूमहे— उग्र शत्रु-सेनाका पराभव करनेवाले ऐसे तुझ देवोंमें अकेले देवको मैं अपनी सहायताके लिये बुलाता हूं।

४ हे वसो ! नः विश्वा विथुरा पिन्दना, अमित्रान् सुसहान् सुकृधि— हे सबके निवासक ! हमारे सब निर्बल मनुष्योंको बलवान् बना दो, जिससे हमारे शत्रुओंको जीतना हमारे लिये सुखकर होगा।

(सूक्त ८१)

हे इन्द्र ! (यत् शतं द्यावः) यदि सौ द्युलोक हों, (उत शतं भूमीः स्युः) और सौ भूमियां हों, (सहस्रं सूर्या) हजार सूर्य हों या (रोदसी) दो ही द्यु और पृथिवी लोक हों हे (वज्रिन्) वज्रधारी इन्द्र ! (त्वा जातं न न अनु अष्ट) तुझ प्रकट होनेपर कोई तेरी बराबरी नहीं कर सकता ॥ १ ॥ (ऋ. ८।७०।५)

हे (वृषन् शविष्ठ) बलवान् और सामर्थ्यवान् ! (विश्वा शवसा वृष्ण्या महिना) सारे बलसे सामर्थ्य-युक्त महिमासे (आ पप्राथ) तूने सबको भर दिया है। हे (मघवन्) धनवान् (वज्रिन्) वज्रधारी इन्द्र ! (गोमति व्रजे) गोओंवाले बाडेमें (चित्राभिः ऊतिभिः) अद्भुत रक्षा साधनोंसे (अस्मान् अव) हमारी सुरक्षा कर ॥ २ ॥ (ऋ. ८।७०।६)

[सूक्त ८२]

(ऋषिः — १-२ वसिष्ठः । देवता — इन्द्रः ।)

यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय ।
स्तोतारमिद्दिधिषेय रदावसो न पापत्वाय रासीय ॥ १ ॥
शिक्षेयमिन्महयते दिवेदिवे राय आ कुहचिद्विदे ।
नहि त्वदन्यन्मघवन् न आप्यं वस्यो अस्ति पिता चन ॥ २ ॥ (५२३)

[सूक्त ८३]

(ऋषिः — १-२ शंयुः । देवता — इन्द्रः ।)

इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरूथं स्वस्तिमत् ।
छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावया दिद्युमेभ्यः ॥ १ ॥
ये गव्यता मनसा शत्रुमादभुरभिप्रघ्नन्ति धृष्णुया ।
अधा सा नो मघवन्निन्द्र गिर्वणस्तनूपा अन्तमो भव ॥ २ ॥ (५२५)

---

१ हे इन्द्र ! शतं द्यावः शतं भूमीः सहस्रं सूर्या त्वा जातं न अनु अष्ट— हे इन्द्र ! सौ द्यौ हों या सौ भूमियां हों, या सहस्र सूर्य हों तेरे प्रकट होनेपर तेरी बराबरी कोई कर नहीं सकता। ऐसा तेरा सामर्थ्य बडा विशाल है।

२ हे वृषन् शविष्ठ मघवन् वज्रिन् ! विश्वा शवसा वृष्ण्या महिना आ पप्राथ— हे बलवान् सामर्थ्यशाली धनवान् वज्रधारी इन्द्र ! तू अपनी सामर्थ्ययुक्त महिमासे सबको भरपूर भर दिया है।

३ गोमति व्रजे चित्राभिः ऊतिभिः अस्मान् अव- गौओंवाले बाडेमें हम रहें और वहां हमारी सुरक्षा तू अपने विलक्षण सुरक्षाके साधनोंसे कर। हमें गौ मिलें, और हमारा संरक्षण भी हो।

(सूक्त ८२)

हे इन्द्र ! (यत् यावतः त्वं) जितनेका तू (एतावत् अहं ईशीय) उतनेका मैं स्वामी होऊंगा, तो (स्तोतारं इत् दिधिषेय) स्तुति करनेवालेको मैं आश्रय देऊं, हे (रदावसो) धनके दाता इन्द्र ! (पापत्वाय न रासीय) पाप करनेके लिये नहीं छोडूंगा ॥ १ ॥ (ऋ. ७।३२।१८)

(दिवे दिवे महयते) प्रतिदिन स्तुति करनेवालेको मैं (रायः आ शिक्षेयं इत्) धन देऊंगा ही (कुह चिद् विदे) कहीं भी वह हो। हे (मघवन्) धनवान् इन्द्र ! (त्वत् अन्यत् आप्यं नहि) तेरे सिवाय दूसरा कोई बन्धु नहीं है, (वस्यो) धनवान् (पिता चन न अस्ति) पिता भी तुझसे बढकर नहीं है ॥ २ ॥ (ऋ. ७।३२।१९)

(सूक्त ८३)

हे इन्द्र ! (त्रिधातु त्रिवरूथं) तीन धातुवाला, तीन कवचोंवाला (स्वस्तिमत् शरणं) स्वास्थ्य रखनेवाला आश्रय स्थान (छर्दिः) घर (मघवद्भ्यः च मह्यं च) धनी लोगोंके लिये और मुझे (यच्छ) दे दो। (एभ्यः दिद्युं यावय) इनसे शत्रु दूर कर दे ॥ १ ॥ (ऋ. ६।४६।९)

(ये गव्यता मनसा) जो गौओंको चाहते हुए मनसे (शत्रुं आ दभुः) शत्रुको मारते हैं, और (धृष्णुया अभि प्रघ्नन्ति) धैर्यसे प्रहार करते हैं, हे (मघवन् गिर्वणः इन्द्र) धनवान् स्तुतिको सुननेवाले इन्द्र ! (अध नः अन्तमः तनूपाः भव स) हमारे शरीरोंका तू समीप स्थित रक्षक हो ॥ २ ॥ (ऋ. ६।४६।१०)

१ त्रिधातु त्रिवरूथं स्वस्तिमत् शरणं छर्दिः मह्यं मघवद्भ्यः यच्छ— तीन धातुओंका उपयोग जिसमें किया है, तीन बडे आश्रयस्थान जिनमें हैं, आरोग्यवर्धक ऐसा जो स्थान है वह रहनेका घर मुझे और धनिकोंको दे दो।

२ गव्यता मनसा शत्रुं आ दभुः— गौवें प्राप्त करनेवाली बुद्धिसे जो शत्रुको दबाते हैं, 'धृष्णुयाः अभि प्रघ्नन्ति'- धैर्यसे शत्रुपर जो प्रहार करते हैं उस समय 'नः अन्तमः तनूपाः भव'- हमारे समीप रहकर संरक्षण करनेवाला तू हो।

[सूक्त ८४]

(ऋषिः — १-३ मधुच्छन्दाः। देवता — इन्द्रः।)

इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः । अण्वीभिस्तना पूतासः ॥ १ ॥
इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः । उप ब्रह्माणि वाघतः ॥ २ ॥
इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः । सुते दधिष्व नश्चनः ॥ ३ ॥ (५२८)

[सूक्त ८५]

(ऋषिः — १-२ प्रगाथः, ३-४ मेध्यातिथिः। देवता — इन्द्रः।)

मा चिदन्यद्वि शंसत सखायो मा रिषण्यत ।
इन्द्रमित्स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत ॥ १ ॥
अवक्रक्षिणं वृषभं यथाजुरं गां न चर्षणीसहम् ।
विद्वेषणं संवननोभयंकरं मंहिष्ठमुभयाविनम् ॥ २ ॥
यच्चिद्धि त्वा जना इमे नाना हवन्त ऊतये ।
अस्माकं ब्रह्मेदमिन्द्र भूतु तेहा विश्वा च वर्धनम् ॥ ३ ॥
वि तर्तूर्यन्ते मघवन्विपश्चितोऽर्यो विपो जनानाम् ।
उप क्रमस्व पुरुरूपमा भर वाजं नेदिष्ठमूतये ॥ ४ ॥ (५३१)

(सूक्त ८४)

(**चित्रभानो इन्द्र**) हे आश्चर्यकारक तेजस्वी इन्द्र ! (**आ याहि**) आ, (**इमे सुता त्वायवः**) ये सोमरस तेरे लिये निकाले (**अण्वीभिः तना पूतासः**) और अंगुलियोंसे छीन कर पवित्र किये हैं ॥ १ ॥ (ऋ. १।३।४)

हे इन्द्र ! (**धिया इषितः**) बुद्धिसे प्रेरित हुआ (**विप्रजूतः**) ब्राह्मणोंसे उत्तेजित हुआ (**सुतावतः वाघतः ब्रह्माणि**) सोमरस निकालनेवाले स्तोताके स्तोत्रोंके (**उप आ याहि**) पास आ ॥ २ ॥ (ऋ. १।३।५)

हे (**हरिवः इन्द्र**) घोडोंवाले इन्द्र ! (**तूतुजानः**) त्वरा करता हुआ (**ब्रह्माणि उप आ याहि**) स्तोत्रोंके पाठके पास आ। (**नः सुते चनः दधिष्व**) हमारे सोमरसमें आनंद मान ॥ ३ ॥ (ऋ. १।३।६)

(सूक्त ८५)

हे (**सखायः**) मित्रो ! (**अन्यत् चित् मा वि शंसत**) किसी अन्यकी प्रशंसा न करो, (**मा रिषण्यत**) मत घबराओ। (**सुते**) सोमरस निकालने पर (**सचा**) साथ बैठकर (**वृषणं इन्द्रं इत् स्तोत**) सामर्थ्यवान् इन्द्रकी ही स्तुति करो। (**मुहुः उक्था च शंसत**) वारंवार उसके ही स्तोत्र गाओ ॥ १ ॥ (ऋ. ८।१।१)

(**अवक्रक्षिणं**) शत्रुको नीचे फेंकनेवाले, (**वृषभं**) बलवान्, (**अजुरं**) वृद्ध न होनेवाले, (**गां न यथा**) गौ जैसे उत्तम अन्न देनेवाले (**चर्षणीसहं**) शत्रुओंका पराभव करनेवाले, (**विद्वेषणं**) दुष्टोंका द्वेष करनेवाले (**संवनन- उभयंकरं**) श्रेष्ठोंकी सहायता करनेवाले, ये दोनों कार्य करनेवाले, (**मंहिष्ठं**) बडे श्रेष्ठ (**उभयाविनं**) दोनोंको मिलानेवाले इन्द्रके स्तोत्र गाओ ॥ २ ॥ (ऋ. ८।१।२)

(**इमे नाना जनाः**) ये नाना प्रकारके लोग (**ऊतये**) सुरक्षाके लिये (**यत् चित् हि त्वा हवन्ते**) जो कुछ तेरी ही प्रार्थना करते हैं। हे इन्द्र ! (**अस्माकं इदं ब्रह्म**) हमारा यह स्तोत्र (**इह ते विश्वा च वर्धनं भूतु**) यहां तेरा महत्त्व बढानेवाला हो ॥ ३ ॥ (ऋ. ८।१।३)

हे (**मघवन्**) धनवान् इन्द्र ! (**जनानां विपश्चितः विपः अर्यः**) लोगोंके बीचमें जो ज्ञानी श्रेष्ठ लोग (**वि**

[सूक्त ८६]

(ऋषिः — १ विश्वामित्रः । देवता — इन्द्रः ।)

ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा युनज्मि हरी सखाया सधमादे आशू ।
स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन्प्रजानन्विद्वाँ उप याहि सोमम् ॥ १ ॥ (५३३)

[सूक्त ८७]

(ऋषिः — १-७ वसिष्ठः । देवता — इन्द्रः ।)

अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धमंशुं जुहोतन वृषभाय क्षितीनाम् ।
गौराद्वेदीयाँ अवपानमिन्द्रो विश्वाहेदाति सुतसोममिच्छन् ॥ १ ॥
यद्दधिषे प्रदिवि चारु नाम दिवेदिवे पीतिमिदस्य वक्षि ।
उत हृदोत मनसा जुषाण उशन्निन्द्र प्रस्थितान्पाहि सोमान् ॥ २ ॥
जज्ञानः सोमं सहसे पपाथ प्र ते माता महिमानमुवाच ।
एन्द्र पप्राथोर्वन्तरिक्षं युधा देवेभ्यो वरिवश्चकर्थ ॥ ३ ॥
यद्योधया महतो मन्यमानान्साक्ष्याम तान्बाहुभिः शाशदानान् ।
यद्वा नृभिर्वृत इन्द्राभियुध्यास्तं त्वयाजिं सौश्रवसं जयेम ॥ ४ ॥

तर्तूर्यन्ते) विशेष स्तुति गाते हैं। उनके (उप क्रमस्व) पास आ। (ऊतये) उनके संरक्षणके लिये (नोदिष्टं पुरुरूपं वाजं) पासवाला अनेक रूपोंमें मिलनेवाला शक्तिवर्धक अन्न (आ भर) भरपूर भर दे ॥ ४ ॥ (ऋ. ८।१।४)

इस सूक्तमें द्वितीय मंत्र इन्द्रके गुणोंका वर्णन करता है।

(सूक्त ८६)

(ब्रह्मणा) ज्ञानसे (ब्रह्मयुजा सखाया ते हरी) इशारेसे जुडनेवाले मित्र रूप दोनों घोडे (आशू) शीघ्र जानेवाले (सधमादे युनज्मि) आनंद देनेवाले रथमें जोडता हूं। हे इन्द्र ! (स्थिरं सुखं रथं) सुदृढ सुखदायी रथपर (अधितिष्ठन्) चढकर (प्रजानन् विद्वान्) जानता हुआ ज्ञानी तू (सोमं उप याहि) सोमके समीप आ ॥ १ ॥ (ऋ. ३।३५।४)

(सूक्त ८७)

हे (अध्वर्यवः) अध्वर्युगण ! (क्षितीनां वृषभाय) सर्व मनुष्योंके मुख्य इन्द्रके लिये (दुग्धं अरुणं अंशुं) दोहे हुए लाल रसका (जुहोतन) हवन करो। (गौरात् अवपानं वेदीयान्) गौर मृगसे अधिक अच्छी तरह अपने पीनेके स्थानको जाननेवाला इन्द्र (सुतसोमं इच्छन्) सोम रस निकालनेवालेकी इच्छा करता हुआ (विश्वाहा इत् याति) प्रतिदिन उसके पास जाता है ॥ १ ॥ (ऋ. ७।९८।१)

(प्रदिवि यत् चारु अन्नं दधिषे) प्रतिदिन जिस सुन्दर अन्नकी इच्छा तू रखता है और (दिवे दिवे अस्य पीतिं इत् वक्षि) प्रतिदिन इसके पान करनेकी प्रशंसा करता है। हे इन्द्र ! (उत हृदा उत मनसा जुषाणः) हृदयसे और मनसे प्रीति करता हुआ और (उशन्) इच्छा करता हुआ तू (प्रस्थितान् सोमान् पाहि) फैलाये सोमरसोंको पी ॥ २ ॥ (ऋ. ७।९८।२)

(जज्ञानः सोमं सहसे प्र पपाथ) जन्मते ही सोमको बलके लिये पीया था। (माता ते महिमानं उवाच) तेरी माता– अदितिने तेरी महिमाका वर्णन किया था। हे इन्द्र ! (उरु अन्तरिक्षं आ पप्राथ) विस्तीर्ण अन्तरिक्षको तूने भर दिया और (युधा देवेभ्यः वरिवः चकर्थ) युद्धसे देवोंके लिये श्रेष्ठपन प्राप्त कर दिया ॥ ३ ॥ (ऋ. ७।९८।३)

(यत् महतो मन्यमानान् योधय) जब तूने अपने आपको बडे माननेवालोंको युद्धमें प्रवृत्त किया, (तान् शासदानान् बाहुभिः साक्ष्याम) उन घमंड माननेवालोंको हम अपने बाहुओंसे पराभूत करेंगे। (यत् वा) किंवा हे इन्द्र ! (नृभिः वृतः अभियुध्याः) वीरोंसे घिरा हुआ तू युद्ध करता है, (तं आजिं त्वया सौश्रवसं जयेम) उस युद्धको हम तेरे साथ रहकर यशस्वी रीतिसे जीतेंगे ॥ ४ ॥ (ऋ. ७।९८।४)

प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा कृतानि प्र नूतना मघवा या चकार।
यदेददेवीरसहिष्ट मायाऽथाभवत्केवलः सोमो अस्य ॥ ५ ॥
तवेदं विश्वमभितः पशव्यं१ यत्पश्यसि चक्षसा सूर्यस्य।
गवामसि गोपतिरेक इन्द्र भक्षीमहि ते प्रयतस्य वस्वः ॥ ६ ॥
बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य।
धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥ (५४०)

[सूक्त ८८]

(ऋषिः — १-६ वामदेवः। देवता — बृहस्पतिः।)

यस्तस्तम्भ सहसा वि ज्मो अन्तान्बृहस्पतिस्त्रिषधस्थो रवेण।
तं प्रत्नास ऋषयो दीध्यानाः पुरो विप्रा दधिरे मन्द्रजिह्वम् ॥ १ ॥
धुनेतयः सुप्रकेतं मदन्तो बृहस्पते अभि ये नस्ततस्रे।
पृषन्तं सृप्रमदब्धमूर्वं बृहस्पते रक्षतादस्य योनिम् ॥ २ ॥

(**इन्द्रस्य प्रथमा कृतानि**) इन्द्रके पहिले किये हुए कर्मोंका (**प्र वोचं**) मैं वर्णन करता हूं (**मघवा नूतना या प्र चकार**) और इन्द्रने जो नवीन कर्तव्य किये हैं। (**यदा अदेवीः मायाः इत् असहिष्ठ**) जब असुरोंके कपटोंको पराभूत किया (**अथ अस्य केवलः सोमः अभवत्**) तब केवल इसीका सोम हुआ ॥ ५ ॥ (ऋ. ७।९८।५)

(**इदं विश्वं पशव्यं अभितः तव**) तेरा यह सब पशुजगत् चारों ओर है। (**यत् सूर्यस्य चक्षसा पश्यसि**) जो तू सूर्यकी आंखसे देखता है (**इन्द्र ! गवां एकः गोपतिः असि**) हे इन्द्र ! तू गौओंका अकेला गोपालक है, (**ते प्रयतस्य वस्वः भक्षीमहि**) तेरे दिये धनका हम भोग करेंगे ॥ ६ ॥ (ऋ. ७।९८।६)

७ देखो अथर्व. २०।१७।१२। (ऋ. ७।९८।७)

इस सूक्तमें इन्द्रका विशेष वर्णन यह है—

१ यत् महतो मन्यमानान् योधय, तान् शासदानान् बाहुभिः साक्षाम— जब बडे घमंडी वीरोंसे युद्ध हुआ, तब उनको बाहुओंसे हमने पराभूत किया।

२ नृभिः वृतः अभियुध्याः तं आजिं त्वया सौश्रवसं जयेम— जब तू वीरोंके साथ युद्ध करने लगा तब उस युद्धमें तेरे साथ रहकर हम यशस्वी रीतिसे विजयी होंगे।

३ इन्द्रस्य प्रथमा कृतानि प्र वोचं— इन्द्रके पहिले पराक्रमोंका वर्णन मैंने किया।

४ मघवा नूतना या प्र चकार— इन्द्रने नये पराक्रम किये उनका भी वर्णन किया।

५ यदा अदेवीः माया असहिष्ठ— असुरोंकी कपट-नीतिका जब उसने पराभव किया।

६ इन्द्र ! गवां एकः गोपतिः असि, ते प्रयतस्य वस्वः भक्षीमहि— हे इन्द्र ! तू गौओंका एक स्वामी है, तेरे दिये धनका हम भोग करेंगे।

(सूक्त ८८)

(**त्रिषधस्थः बृहस्पतिः**) तीन स्थानोंमें रहनेवाले बृहस्पतिने (**ज्मः अन्तान्**) पृथिवीके अन्तोंको (**रवेण सहसा वि तस्तम्भ**) गर्जनाके साथ स्थिर किया। (**तं मन्द्रजिह्वं**) उस आनंदित भाषण करनेवाले बृहस्पतिको (**प्रत्नासः दीध्यानाः विप्राः ऋषयः**) प्राचीन ध्यान करनेवाले विशेष ज्ञानी ऋषियोंने (**पुरः दधिरे**) सामने स्थापन किया ॥ १ ॥ (ऋ. ४।५०।१)

हे बृहस्पते ! (**धुनेतयः सुप्रकेतं मदन्तः**) गतिमान् शुभ चिन्होंसे आनंदित होनेवाले (**ये नः अभि ततस्रे**) जिन्होंने हमपर दबाव डाला है, उनके (**पृषन्तं**) सिंचन करनेवाले (**सृप्रं अदब्धं ऊर्वं**) गतिमान् अहिंसित और विस्तीर्ण (**अस्य योनिं**) ऐसे इसके उत्पत्तिस्थानकी, हे बृहस्पते ! (**रक्षतात्**) सुरक्षा कर ॥ २ ॥ (ऋ. ४।५०।२)

बृहस्पते या परमा परावदत आ ते ऋतस्पृशो नि षेदुः ।
तुभ्यं खाता अवता अद्रिदुग्धा मध्व श्चोतन्त्यभितो विरप्शम ॥ ३ ॥
बृहस्पतिः प्रथमं जायमानो महो ज्योतिषः परमे व्योमन् ।
सप्तास्यस्तुविजातो रवेण वि सप्तरश्मिरधमत्तमांसि ॥ ४ ॥
स सुष्टुभा स ऋक्वता गणेन वलं रुरोज फलिगं रवेण ।
बृहस्पतिरुस्रिया हव्यसूदः कनिक्रदद्वावशतीरुदाजत् ॥ ५ ॥
एवा पित्रे विश्वदेवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः ।
बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ ६ ॥ (५४६)

[सूक्त ८९]

(ऋषिः — १-११ कृष्णः । देवता — इन्द्रः ।)

अस्तेव सु प्रतरं लायमस्यन्भूषन्निव प्र भरा स्तोममस्मै ।
वाचा विप्रास्तरत वाचमर्यो नि रामय जरितः सोम इन्द्रम् ॥ १ ॥
दोहेन गामुप शिक्षा सखायं प्र बोधय जरितर्जारमिन्द्रम् ।
कोशं न पूर्णं वसुना न्यृष्टमा च्यावय मघदेयाय शूरम् ॥ २ ॥

हे बृहस्पते ! (**या परमा**) जो दूर स्थान हैं, (**ते ऋतस्पृशः**) वे सत्यको स्पर्श करनेवाले (**परावत् अतः आ निषेदुः**) उस दूर स्थानसे आकर यहां बैठे हैं । (**तुभ्यं खाताः अवताः**) तेरे लिये खोदे कूवेके समान (**अद्रि दुग्धाः**) पत्थरोंसे कूटकर निकाली (**मध्वः विरप्शं अभितः श्चोतन्ति**) मधुर रसकी नहरें चारों ओर बह रही हैं ॥ ३ ॥ (ऋ. ४।५०।३)

बृहस्पति (**प्रथमं**) पहिले (**महो ज्योतिषः परमे व्योमन्**) बडी ज्योतीसे परम आकाशमें (**जायमानः**) उत्पन्न हुआ । (**सप्त-आस्यः**) सात मुखोंवाला (**तुवि जातः**) बहुतोंमें प्रकट हुआ इस (**सप्तरश्मिः**) सात किरणोंवालेने (**रवेण तमांसि अधमत्**) बडे शब्दसे अन्धकारको दूर किया ॥ ४ ॥ (ऋ. ४।५०।४)

(**स सुष्टुभा**) उसने उत्तम स्तुतिसे (**स ऋक्वता गणेन**) उसने स्तोत्रोंके गणोंके (**रवेण फलिगं वलं रुराज**) शब्दसे दुष्ट वलको तोड दिया । (**बृहस्पतिः**) बृहस्पतिने (**हव्यसूदः उस्रियाः**) हव्यको स्वादु बनानेवाली (**वावशतीः कनिक्रदत् उदाजत्**) शब्द करनेवाली गौओंको गर्जना करते हुए हांक दिया ॥ ५ ॥ (ऋ. ४।५०।५)

(**एवा वृष्णे पित्रे विश्वदेवाय**) इस तरह शक्तिमान् पिता विश्वदेवका (**यज्ञैः नमसा हविर्भिः विधेम**) यज्ञ नमस्कार और हविसे सत्कार करें । हे बृहस्पते ! (**सुप्रजा वीरवन्तः वयं स्याम**) उत्तम प्रजा और पुत्रपौत्रोंसे युक्त हम हों तथा हम (**रयीणां पतयः**) धनोंके स्वामी बनेंगे ॥ ६ ॥ (ऋ. ४।५०।६)

(**सूक्त ८९**)

(**अस्ता इव लायं प्रतरं सु अस्यन्**) जैसा बाण फेंकनेवाला बाणको दूर फेंकता है, कोई किसीको जैसा (**भूषन् इव**) सुभूषित करता है उस तरह (**अस्मै स्तोमं प्र भरं**) इस इन्द्रके लिये स्तोत्र अर्पण करो । हे (**विप्राः**) ज्ञानियो ! (**वाचा अर्यः वाचं तरत**) अपनी शुभवाणीसे शत्रुकी दुष्ट वाणीको तेर कर परे जाओ । हे (**जरितः**) स्तुति करनेवालो ! (**इन्द्रं सोमे नि रामय**) इन्द्रको सोममें रममाण करो ॥ १ ॥ (ऋ. १०।४२।१)

(**दोहे न गां**) दोहन कालमें जैसे गौको बुलाते हैं, उस तरह (**सखायं उप शिक्ष**) मित्र इन्द्रको अपने पास बुलाओ । हे (**जरितः**) स्तोता ! (**जारं इन्द्रं प्र बोधय**) प्यार करनेवाले इन्द्रको जगाओ । (**पूर्णं कोशं न**) धनसे

किमङ्ग त्वा मघवन्भोजमाहुः शिशीहि मा शिशयं त्वा शृणोमि ।
अग्नस्वती मम धीरस्तु शक्र वसुविदं भगमिन्द्रा भरा नः ॥ ३ ॥
त्वां जना ममसत्येष्विन्द्र संतस्थाना वि ह्वयन्ते समीके ।
अत्रा युजं कृणुते यो हविष्मान्त्सुन्वता सख्यं वष्टि शूरः ॥ ४ ॥
घनं न स्पन्द्रं बहुलं यो अस्मै तीव्रान्त्सोमाँ आसुनोति प्रयस्वान् ।
तस्मै शत्रून्त्सुतुकान्प्रातरह्नो नि स्वष्ट्रान्युवति हन्ति वृत्रम् ॥ ५ ॥
यस्मिन्वयं दधिमा शंसमिन्द्रे यः शिश्राय मघवा कामस्मे ।
आराच्चित्सन्भयतामस्य शत्रुर्न्यस्मै द्युम्ना जन्या नमन्ताम् ॥ ६ ॥
आराच्छत्रुमप बाधस्व दूरमुग्रो यः शम्बः पुरुहूत तेन ।
अस्मे धेहि यवमद्गोमदिन्द्र कृधी धियं जरित्रे वाजरत्नाम् ॥ ७ ॥
प्र यमन्तर्वृषसवासो अग्मन्तीव्राः सोमा बहुलान्तास इन्द्रम् ।
नाहं दामानं मघवा नि यंसन्नि सुन्वते वहति भूरि वामम् ॥ ८ ॥

पूर्ण भरे थैलेके समान (**वसुना न्यृष्टं शूरं**) धनके बोझसे नीचे झुके शूर इन्द्रको (**मघदेवाय आ भ्याभय**) धन देनेके लिये हिला दो ॥ २ ॥ (ऋ. १०।४२।२)

हे (**अंग मघवन्**) प्रिय धनवान् इन्द्र । (**किं त्वा भोजं आहुः**) क्या तुझे उदार दाता कहते हैं ? (**मा शिशीहि**) मुझे तीक्ष्ण कर । (**त्वा शिशयं शृणोमि**) तुझे तीक्ष्ण बनानेवाला करके सुनता हूं । हे (**शक्र**) समर्थ इन्द्र ! (**मम धीः अग्नस्वती अस्तु**) मेरी बुद्धि कर्म करनेमें प्रेम रखनेवाली हो । हे इन्द्र ! (**वसुविदं भगं नः आ भर**) धन देनेवाला भाग्य हमारे लिये ला दे ॥ ३ ॥ (ऋ. १०।४२।३)

हे इन्द्र ! (**जनाः ममसत्येषु संतस्थानाः**) लोग युद्धोंमें खडे रहे (**समीके त्वां विह्वयन्ते**) युद्धमें तुझे बुलाते हैं । (**अत्र यः हविष्मान्**) यहां जो हविष्यान्नका हवन करता है (**युजं कृणुते**) वह इन्द्र उसको मित्र बनाता है (**असुन्वता सख्यं शूरः न वष्टि**) सोम रस न निकालनेवालेके साथ शूर इन्द्र मित्रता नहीं करना चाहता ॥ ४ ॥ (ऋ. १०।४२।४)

(**यः प्रयस्वान्**) जो प्रयत्न करनेवाला (**बहुलं स्पन्द्रं घनं न**) बडे रथयुक्त धनकी तरह (**तीव्रान् सोमान् आ सुनोति**) तीव्र सोमरस निकालता है (**तस्मै अह्नः प्रातः**) उसके लिये दिनके सवेरेके समय (**सुतुकान् स्वष्ट्रान् शत्रून् नि युवति**) उत्तम संतानवाले और उत्तम अस्त्रवाले शत्रुओंको भी वह इन्द्र दूर करता है और (**वृत्रं हन्ति**) वृत्रको-घेरनेवाले शत्रुको-मारता है ॥ ५ ॥ (ऋ. १०।४२।५)

(**यस्मिन् इन्द्रे वयं शंसं दधिम**) जिस इन्द्रमें हम अपना स्तोत्र धरते या गाते हैं (**यः मघवा अस्मे कामं शिश्राय**) जो इन्द्र हमारे विषयमें प्रेम रखता है, (**अस्य शत्रुः आरात् चित् सन् भयतां**) इसका शत्रु दूरसे भी इसे डरता है, (**अस्मै द्युम्ना जन्या नि नमन्तां**) इसके सामने मानवोंके संबंधके सारे तेज विनम्र होकर रहेंगे ॥ ६ ॥ (ऋ. १०।४२।६)

(**शत्रुं आरात् दूरं**) शत्रुको दूरसे दूर, हे (**पुरुहूत**) बहुतों द्वारा बुलाये जानेवाले इन्द्र ! (**यः उग्रः शम्बः तेन**) जो तुम्हारा उग्र वज्र है उससे (**अप बाधस्व**) मार कर हटा दे । हे इन्द्र ! (**अस्मे यवमत् गोमत् धेहि**) हमें जौ और गौओंके साथ रहनेवाला धन दे । (**जरित्रे धियं वाजरत्नां कृधि**) स्तोताके लिये उसकी बुद्धिको अन्न और रत्नोंसे युक्त कर ॥ ७ ॥ (ऋ. १०।४२।७)

(**वृषसवासः यं अग्मतः**) बलवान् इन्द्रके अन्दर (**तीव्राः सोमाः बहुलान्तासः**) तीव्र सोम बहुत प्रकारसे

उत प्रहामतिदीवा जयति कृतमिव श्वघ्नी वि चिनोति काले ।
यो देवकामो न धनं रुणद्धि समित्तं रायः सृजति स्वधाभिः ॥ ९ ॥
गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन वा क्षुधं पुरुहूत विश्वां ।
वयं राजसु प्रथमा धनान्यरिष्टासो वृजनीभिर्जयेम ॥ १० ॥
बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः ।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु ॥ ११ ॥ (५५७)

[सूक्त ९०]

(ऋषिः — १-३ भरद्वाजः । देवता — बृहस्पतिः ।)

यो अद्रिभित्प्रथमजा ऋतावा बृहस्पतिराङ्गिरसो हविष्मान् ।
द्विबर्हज्मा प्राघर्मसत्पिता न आ रोदसी वृषभो रोरवीति ॥ १ ॥

(प्र अग्मन्) गये। (मघवा दामानं न अह नि यंसत्) धनवान् इन्द्र अपने दानको नहीं रोकता, (सुन्वते भूरि वामं नि वहति) सोमरस निकालनेवालेके लिये बहुत धन देता है ॥ ८ ॥ (ऋ. १०।४२।८)

९—१० देखो अथर्व ७।५० (५२)। ६-७;
११ देखो अथर्व ७।५१ (५३) १ ।

इस सूक्तमें इन्द्रके ये गुण दिखाये हैं—

१ **वसुना नृष्टं शूरं मघदेयाय आज्यावय**— धनवान् शूर इन्द्रको धन देनेके लिये प्रेरित कर ।

२ **त्वा शिशयं शृणोमि**— तू तीक्ष्ण करनेवाला है ऐसा मैं सुनता हूं ।

३ **वसुविदं भगं नः आ भर**— धनसे परिपूर्ण भाग्य हमें ला दे ।

४ **ममसत्येषु संस्थाना जना समीके त्वां विह्वयन्ते**— युद्धोंमें खडे रहे लोग युद्धके समय तुझे सहायतार्थ बुलाते हैं ।

५ **युजं कृणते**— वह मित्र करता है ।

६ **सुतुकान् स्वष्ट्रान् (सु-अक्षान्) शत्रून् नि युवति**— उत्तम वीर संतानवाले और उत्तम अस्त्रवाले शत्रुओंको भी वह दूर करता है ।

७ **वृत्रं हन्ति**— वृत्रको मारता है, घेरनेवाले शत्रुको मारता है ।

८ **अस्य शत्रुः आरात् चित् सन् भयतां**— इस इन्द्रके शत्रु दूरसे भी इसको डरते हैं ।

९ **अस्मै द्युम्ना जन्या नि नमन्तां**— इसके सामने मानवोंके सारे तेजस्वी प्रयत्न नम्र होते हैं ।

१० **हे पुरुहूत ! यः उग्रः शम्बः तेन आरात् शत्रुं दूरं अप बाधय**— हे बहुतों द्वारा बुलाये जानेवाले इन्द्र ! जो तुम्हारा उग्र वज्र है उससे दूरसे ही शत्रुको पराभूत कर ।

११ **अस्मै यवमत् गोमत् धेहि**— हमें जौ और युक्त धन दे ।

१२ **जरित्रे धियं वाजरत्नां कृधि**— स्तोताकी बुद्धिको अन्न और रत्नोंसे युक्त कर ।

१३ **मघवा दामानं न नि यंसत्**— इन्द्र दानको रोकता नहीं ।

१४ **सुन्वते भूरि वामं नि वहति**— यज्ञकर्ताको बहुत उत्तम धन देता है ।

(सूक्त ९०)

(**यः अद्रिभित्**) जो पहाडी किलोंको तोडनेवाला, (**प्रथमजाः**) प्रथम उत्पन्न, (**ऋतावा**) सरलतासे युक्त, (**हविष्मान्**) हविसे युक्त (**आंगिरसः बृहस्पतिः**) अंगिरसका पुत्र बृहस्पति (**द्विबर्हज्मा**) दो मार्गोंवाला, (**घर्मसद्**) यज्ञस्थानमें रहनेवाला (**नः पिता**) हमारा पिता (**वृषभः**) बलवान् (**रोदसी आ रोरवीति**) द्यौ और पृथिवीके मध्यमें बडा शब्द करता है ॥ १ ॥ (ऋ. ६।७३।१)

जनाय चिद्य ईवत उ लोकं बृहस्पतिर्देवहूतौ चकार ।
घ्नन्वृत्राणि वि पुरो ददरीति जयं छत्रूरमित्रान्पृत्सु साहन् ॥ २ ॥
बृहस्पतिः समजयद्वसूनि महो व्रजान्गोमतो देव एषः ।
अपः सिषासन्त्स्वरप्रतीतो बृहस्पतिर्हन्त्यमित्रमर्कैः ॥ ३ ॥ (५६०)

॥ इति सप्तमोऽनुवाकः ॥ ७ ॥

[सूक्त ९१]

(ऋषिः — १-१२ अयास्यः । देवता — बृहस्पतिः ।)

इमां धियं सप्तशीर्ष्णीं पिता न ऋतप्रजातां बृहतीमविन्दत् ।
तुरीयं स्विज्जनयद्विश्वजन्योऽयास्य उक्थमिन्द्राय शंसन् ॥ १ ॥
ऋतं शंसन्त ऋजु दीध्याना दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः ।
विप्रं पदमङ्गिरसो दधाना यज्ञस्य धाम प्रथमं मनन्त ॥ २ ॥

(यः बृहस्पतिः ईवते जनाय चित् लोकं उ) वह बृहस्पति उत्तम लोगोंके लिये खुला स्थान (देवहूतौ चकार) देवोंके आह्वान करनेके यज्ञमें करता है । (वृत्राणि घ्नन्) वृत्रोंको मारता है, (पुरः वि ददरीति) शत्रुके किलोंको तोडता है, (शत्रून् जयन्) शत्रुओंको जीतता है और (अमित्रान् पृत्सु साहन्) संग्रामोंमें अमित्रोंको पराभूत करता है ॥ २ ॥ (ऋ. ६।७३।२)

(बृहस्पतिः वसूनि समजयत्) बृहस्पतिने धनोंको जीत लिया । (एष देवः महो गोमतः व्रजान्) इस देवने बडे गौओंवाले बाडोंको जीता । (अपः सिषासन्) जलोंको प्राप्त करना चाहा और (स्वः) प्रकाशको प्राप्त करना चाहा (अप्रतीतः बृहस्पतिः) पीछे न हटनेवाले बृहस्पतिने (अर्कैः अमित्रं हन्ति) स्तोत्रोंसे-तेजोंसे-शत्रुको मारा ॥ ३ ॥ (ऋ. ६।७३।३)

बृहस्पतिके ये गुण इस सूक्तमें कहे हैं—

१ अद्रिभित् ऋतावा धर्मसत् हविष्मान् वृषभः द्विबर्हज्मा प्रथमजाः— शत्रुके किलोंको तोडता है, सत्य-मार्गसे जानेवाला, यज्ञमें बैठनेवाला, हविसे युक्त बलवान्, दोनों मार्गोंसे जानेवाला प्रथम उत्पन्न बृहस्पति है । **द्विबर्हज्मा**— दो शिखावाला, दो मार्गोंसे जानेवाला ।

२ वृत्राणि घ्नन्— वृत्रोंको मारता है ।

३ पुरः ददरीति— शत्रुके किलोंको तोडता है ।

४ शत्रून् जयन्— शत्रुओंको जीतता है ।

५ अमित्रान् पृत्सु साहन्— शत्रुको युद्धोंमें पराभूत करता है ।

६ बृहस्पतिः वसूनि समजयत्— बृहस्पति धनोंको जीतता है ।

७ एष देवः महो गोमतः व्रजान् समजयत्— इस देवने बडे गौओंवाले बाडोंको जीता ।

८ अप्रतीतः बृहस्पतिः अर्कैः अमित्रं हन्ति— पीछे न हटनेवाला, बृहस्पति अपने तेजस्वी साधनोंसे शत्रुको मारता है । **अर्क**- किरण, तेजस्वी शस्त्र ।

॥ यहां सप्तम अनुवाक समाप्त ॥

(सूक्त ९१)

(नः पिता) हमारे पिताने (इमां सप्तशीर्ष्णीं ऋतप्रजातां बृहतीं धियं) इस सात सिरोंवाली ऋतसे उत्पन्न हुई बडी स्तुतिको (अविन्दत्) प्राप्त किया । (अयास्यः इन्द्राय उक्थं शंसन्) अयास्यने इन्द्रके लिये स्तुति कहनेके समय, (विश्वजन्यः) सब मानवोंका हित करनेकी इच्छासे (तुरीयं स्वित् जनयत) चतुर्थको निर्माण किया ॥ १ ॥ (ऋ. १०।६७।१)

(ऋतं शंसन्तः) ऋतको कहनेवाले, (ऋजु दीध्यानाः) सरल रीतिसे सोचनेवाले, (असुरस्य वीराः) बलवान्के वीर (दिवस्पुत्रासः) द्युके पुत्र (विप्रं पदं दधानाः

हंसैरिव सखिभिर्वावदद्भिरश्मन्मयानि नहना व्यस्यन् ।
बृहस्पतिरभिकनिक्रदद्गा उत प्रास्तौदुच्च विद्वाँ अगायत् ॥ ३ ॥
अवो द्वाभ्यां पर एकया गा गुहा तिष्ठन्तीरनृतस्य सेतौ ।
बृहस्पतिस्तमसि ज्योतिरिच्छन्नुदुस्रा आकर्वि हि तिस्र आवः ॥ ४ ॥
विभिद्या पुरं शयथेमपाचीं निस्त्रीणि साकमुदधेरकृन्तत् ।
बृहस्पतिरुषसं सूर्यं गामर्कं विवेद स्तनयन्निव द्यौः ॥ ५ ॥
इन्द्रो वलं रक्षितारं दुघानां करेणेव वि चकर्ता रवेण ।
स्वेदाञ्जिभिराशिरमिच्छमानोऽरोदयत्पणिमा गा अमुष्णात् ॥ ६ ॥
स ईं सत्येभिः सखिभिः शुचद्भिर्गोधायसं वि धनसैरदर्दः ।
ब्रह्मणस्पतिर्वृषभिर्वराहैर्घर्मस्वेदेभिर्द्रविणं व्यानट् ॥ ७ ॥
ते सत्येन मनसा गोपतिं गा इयानासः इषणयन्त धीभिः ।
बृहस्पतिर्मिथोअवद्यपेभिरुदुस्रिया असृजत स्वयुग्भिः ॥ ८ ॥

अंगिरसः) विप्रका पद धारण करनेवाले अंगिरसोंने (**यज्ञस्य धाम प्रथमं मनन्त**) यज्ञके नियम प्रथम मनन किये अथवा माने ॥ २ ॥ (ऋ. १०।६७।२)

(**हंसैः इव**) हंसोंके समान (**वावदद्भिः सखिभिः**) बोलनेवाले मित्रोंके साथ [मरुतोंके साथ] (**अश्मन्मयानि नहना व्यस्यन्**) पत्थरोंके बन्धनोंको खोलकर (**बृहस्पतिः गाः अभिकनिक्रदत्**) बृहस्पतिने गौओंकी ओर गर्जना की (**उत् प्रास्तौत्**) और स्तुति की, (**विद्वान् उच्च अगायत्**) जानते हुए उसीने उच्च स्वरसे गायन किया ॥ ३ ॥ (ऋ. १०।६७।३)

(**अवः द्वाभ्यां**) नीचे दोनोंके साथ (**पर एकया**) और परे एकके साथ (**गुहा तिष्ठन्तीः अनृतस्य सेतौ**) गुहामें अनृतके सेतुमें रहनेवाली (**तिस्रः गाः**) तीन गौओंको (**बृहस्पतिः तमसि ज्योतिः इच्छन्**) बृहस्पतिने अन्धकारमें तेजकी इच्छा करके (**आवः वि आकः**) प्रकट किया ॥ ४ ॥ (ऋ. १०।६७।४)

(**अपाचीं पुरं विभिद्य**) पश्चिमी किलेको तोडकर (**ईं शयथ**) पास रहकर (**साकं त्रीणि उदधेः अकृन्तत्**) साथ साथ तीनोंको समुद्रसे निकाला । (**द्यौः इव स्तनयन्**) द्युके समान गर्जते हुए (**बृहस्पतिः**) बृहस्पतिने (**उषसं सूर्यं गां**) उषा, सूर्य, गौ और (**अर्कं विवेद**) विद्युत्को प्राप्त किया ॥ ५ ॥ (ऋ. १०।६७।५)

(**इन्द्रः दुघानां रक्षितारं वलं**) इन्द्रने गौओंके रक्षण करनेवाले वलको (**करेण इव रवेण वि चकर्त**) हाथसे तथा गर्जनासे काटा । (**स्वेदाञ्जिभिः आशिरं इच्छमानः**) आभूषणोंवाले मरुतोंके साथ दुग्धपानकी इच्छा करनेवाले इन्द्रने (**गाः अमुष्णात्**) गौओंको छीन लिया और (**पणिं आ अरोदयत्**) पणिको रुलाया ॥ ६ ॥ (ऋ. १०।६७।६)

(**सः ईं**) उसने (**सत्येभिः शुचद्भिः धनसैः सखिभिः**) सत्य शुचि धनके दान करनेवाले मित्रों [मरुतों] के साथ रहकर (**गो-धायसं वि अदर्दः**) गौओंको पकड कर रखनेवाले [वल] को फाड दिया । (**ब्रह्मणस्पतिः घर्मस्वेदेभिः वराहैः वृषभिः**) ब्रह्मणस्पतिने घर्मसे खेद जिनपर आया है, ऐसे बलवान् जलवाहक [मरुतों] के द्वारा (**द्रविणं व्यानट्**) धनको प्राप्त किया ॥ ७ ॥ (ऋ. १०।६७।७)

(**ते गाः इयानासः**) वे गौओंसे प्यार करते हुए (**सत्येन मनसा**) सच्चे मनसे (**धीभिः गोपतिं इषण्यन्तः**) और बुद्धिसे गौओंके पतिकी इच्छा करते हुए (**बृहस्पतिः अवद्यपेभिः स्वयुभिः**) बृहस्पतिने निर्दोष पान करनेवाले मित्रोंके साथ (**उस्रियाः असृजत**) गौओंको खोल दिया ॥ ८ ॥ (ऋ. १०.६७।८)

तं वर्धयन्तो मतिभिः शिवाभिः सिंहमिव नानदतं सधस्थे ।
बृहस्पतिं वृषणं शूरसातौ भरेभरे अनु मदेम जिष्णुम् ॥ ९ ॥
यदा वाजमसनद्विश्वरूपमा द्यामरुक्षदुत्तराणि सद्म ।
बृहस्पतिं वृषणं वर्धयन्तो नाना सन्तो बिभ्रतो ज्योतिरासा ॥ १० ॥
सत्यामाशिषं कृणुता वयोधे कीरिं चिद्ध्यवथ स्वेभिरेवैः ।
पश्चा मृधो अप भवन्तु विश्वास्तद्द्यावापृथिवी शृणुतं विश्वमिन्वे ॥ ११ ॥
इन्द्रो महा महतो अर्णवस्य वि मूर्धानमभिनदर्बुदस्य ।
अहन्नहिमरिणात्सप्त सिन्धून्देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः ॥ १२ ॥ (१७१)

(**संधस्थे सिंहं नानदतं इव**) सभामें शेरके समान गरजते हुएके समान (**शिवाभिः मतिभिः तं वर्धयन्तः**) शुभ स्तोत्रोंसे उसको बढाते हुए (**वृषणं जिष्णुं बृहस्पतिं**) बलवान् जयशील बृहस्पतिको (**भरे भरे शूरसातौ अनु मदेम**) प्रत्येक युद्धमें शूरोंको विजय देनेवाले संग्राममें आनन्द हो ऐसा करें ॥ ९ ॥ (ऋ. १०।६७।९)

(**यदा विश्वरूपं वाजं असनत्**) जब उसने सब प्रकारके बलको जीता और (**उत्तराणि सद्म द्यां अरुक्षत्**) जब वह द्यौमें ऊँचे घरोंपर वह चढा तब (**वृषणं बृहस्पतिं वर्धयन्तः**) बलशाली बृहस्पतिको बढाते हुए (**आसा ज्योतिः बिभ्रतः सन्तः नाना**) मुखसे ज्योतिको धारण करनेवाले नाना प्रकारके स्तोत्र बोलने लगे ॥ १० ॥ (ऋ. १०।६७।१०)

(**आशिषं सत्यां कृणुत**) आशीर्वादको सच्चा करो। (**स्वेभिः एवैः वयोधे कीरिं चित् हि अवथ**) आयुष्यका धारण करनेवाली अपनी गतियोंसे कविकी रक्षा करो। (**विश्वा मृधः पश्चा अप भवन्तु**) सब शत्रु पीछे भाग जांय। (**विश्वं इन्वे रोदसी**) सबके बनानेवाले द्यु और पृथिवी (**शृणुतं**) मेरी प्रार्थना सुनें ॥ ११ ॥ (ऋ. १०।६७।११)

(**इन्द्रः महा**) इन्द्रने अपनी महिमासे (**महतः अर्णवस्य अर्बुदस्य**) बडे सागर-अन्तरिक्ष-के अर्बुदका (**मूर्धानं वि अभिनत्**) सिरको तोडा, (**अहिं अहन्**) अहिको मारा, (**सप्त सिन्धून् अरिणात्**) सात नदियोंको बहाया (**द्यावापृथिवी देवैः**) द्यौ और पृथिवी सब देवोंके साथ (**नः प्रावतं**) हमारी रक्षा करें ॥ १२ ॥ (ऋ. १०।६७।१२)

इस सूक्तमें बृहस्पति और इन्द्रके ये गुण वर्णन किये हैं—

१ नः पिता इमां सप्तशीर्ष्णीं ऋतप्रजातां बृहतीं धियं अविन्दत्— हमारा पिता-बृहस्पति-ने सात सिरोंवाली सरलताके लिये प्रसिद्ध बडी बुद्धि प्राप्त की। **सप्तशीर्ष्णी धी**— सात सिरोंवाली बुद्धि, कर्मशक्ति, दो आंख, दो कान, दो नाक, एक मुख मिलकर मननशक्तिके सात सिर हैं। इस संकेतकी अधिक खोज होनी चाहिये। यह पद यहां स्पष्ट अर्थ बतानेवाला नहीं है। इसमें जो गूढता है वह सम्पक्षमें नहीं आयी है। विचारी पाठक अधिक खोज करें।

इस सूक्तका ऋषि अयास्य है। '**अयास्य आंगिरसः**' अर्थात् यह अयास्यका गोत्र आंगिरस है। इस प्रथम मंत्रमें '**नः पिता**' हमारा पिता ऐसा बृहस्पतिको उद्देशित करके कहता है ऐसा प्रतीत हो रहा है।

२ अयास्यः इन्द्राय उक्थं शंसन्— अयास्य इन्द्रकी स्तुति करता है '**विश्वजन्यः तुरीयं जनयत्**'- सब लोगोंका हित करनेकी इच्छासे चतुर्थ निर्माण किया। यह चतुर्थ क्या है इसका विचार निश्चित करना चाहिये। वह विद्वानोंका कार्य है।

३ ऋतं शंसन्तः ऋजु दीध्यानाः असुरस्य वीराः दिवस्पुत्रासः विप्रं पदं दधानाः अंगिरसः यज्ञस्य धाम प्रथमं मनन्ते— ऋतकी प्रशंसा करनेवाले, सीधी रीतिसे विचार करनेवाले बलवान्के वीर द्युके पुत्र विप्र पद धारण करनेवाले अंगिरसोंने यज्ञका प्रथम स्थान मनन करके निश्चित किया। अंगिरसोंने यज्ञकी विधि प्रथम प्रकट की।

४ वावदद्भिः सखिभिः अद्मन्मयानि नहना व्यस्यन्— बोलनेवाले मित्रोंने-मरुतोंने-पत्थरोंसे बने किले तोड दिये और '**बृहस्पतिः गाः अभिकनिक्रदत्**'-

[सूक्त ९२]

(ऋषिः — १-११ प्रियमेधाः १६-११ पुरुहन्मा । देवता — इन्द्रः ।)

अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे । सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ॥ १ ॥
आ हरयः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि । यत्राभि संनवामहे ॥ २ ॥
इन्द्राय गावं आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु । यत्सीमुपह्वरे विदत् ॥ ३ ॥
उद्यदब्रध्नस्य विष्टपं गृहमिन्द्रश्च गन्वहि । मध्वः पीत्वा सचेवहि त्रिः सप्त सख्युः पदे ॥ ४ ॥
अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत । अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत ॥ ५ ॥

बृहस्पतिने गर्जना करके गौओंको बुलाया । अर्थात् असुरोंने गौवोंको चुराकर पत्थरोंसे बने किलोंमें रखी थी। बृहस्पतिने मरुतोंके द्वारा वे किले तोडे और गौओंको बुलाया ।

५ अवः द्वाभ्यां पर एकया गुहा तिष्ठन्ती अनृतस्य सेतौ तिस्रः गाः बृहस्पतिः ज्योतिः इच्छन् आवः वि आकः— दो उरे एक परे ऐसी अवस्थामें गुहामें रहनेवाली असत्यवादी दुष्टके अधिकारमें तीन गौवें थीं, बृहस्पतिने ज्योतीकी इच्छा की और उन गौओंको बाहर निकाला ।

यहां प्रकाश किरणें गौवें प्रतीत हो रही हैं । उषाके पूर्व अन्धकार रहता है और प्रकाश किरण रूपी गौवें अन्धकारके कारण छिपी रहती है । उषःकाल होते ही अन्धकारका किला तूट जाता है और प्रकाशकी किरणें बाहर आती है । यह आलंकारिक वर्णन यहां है ऐसा प्रतीत हो रहा है ।

६ बृहस्पतिः उषसं सूर्यं गां अर्कं विवेद— बृहस्पतिने उषा, सूर्य, गौ (किरण) और विद्युत्को प्राप्त किया । इससे प्रकाश किरणें गौवें है ऐसा प्रतीत होता है ।

७ इन्द्रः वलं वि चकर्त, गाः अमुष्णात्, पणिं आरोदयत्— इन्द्रने वलको मारा, गौओंको छुडाया, पणिको रुलाया ।

वल और पणि ये गौओंको चुरानेवाले हैं, इन्द्रने वलको मारा, गौवें प्राप्त की और पणिको रुलाया । गौवें इन्द्रने प्राप्त की इसलिये पणि रोने लगे ।

८ सः सखिभिः गो धायसं वि अदर्दः— उस इन्द्रने अपने मित्रों-मरुतोंके द्वारा गौओंको पकडकर रखनेवालेको मार दिया ।

९ वृषभिः द्रविणं व्यानट्— बलवान् मरुतोंके द्वारा शत्रुसे द्रव्य प्राप्त किया । वल और पणि ये शत्रु हैं, इनको पराभूत करके उनका धन इन्द्रने या बृहस्पतिने अपने अधीन किया । शत्रुका धन लूटना यह युद्धनीतिका नियम ही है ।

१० वृषणं जिष्णुं बृहस्पतिं भरे भरे शूरसातौ अनु मदेम— बलवान् जीतनेवाले बृहस्पतिका प्रत्येक युद्धमें जहां शूर पुरुषोंका ही काम होता है उस युद्धमें हम अनुमोदन करें ।

११ वृषणं बृहस्पतिं वर्धयन्तः— बलवान् बृहस्पतिकी हम स्तुति करके उसकी महिमाको बढाते हैं ।

१२ इन्द्र महा अर्बुदस्य मूर्धानं वि अभिनत्— इन्द्रने अपनी महा शक्तिसे अर्बुदके सिरको काटा ।

१३ आहः अहन्— अहिको मारा ।

१४ सप्त सिन्धून् अरिणात्— सात नदियोंको बहाया ।

शत्रुको मारा और नदियोंको बहाया । इन वर्णनोंसे ये शत्रु मेघ या पहाडपर पडनेवाला बर्फ है ऐसा प्रतीत होता है ।

(सूक्त ९२)

१-३ देखो अथर्व २०।२२।४-६ (ऋ. ८।६९।४-६)

(**यद् ब्रध्नस्य विष्टपं गृहं**) जब चमकनेवाले सूर्यके ऊंचे स्थानपर (**इन्द्रः च**) इन्द्र और मैं (**उद् गन्वहि**) चढे (**मध्वः पीत्वा**) मधुर सोमरस पीकर (**सख्युः त्रिः सप्त पदे सचेवहि**) हम दोनों सखाके स्थानपर तीन बार सात- २१ बार इकट्ठे हुए ॥ ४ ॥ (ऋ. ८।६९।७)

(**अर्चत प्रार्चत**) उपासना करो, खूब उपासना करो । (**प्रियमेधासः अर्चत**) हे प्रिय मेधो, उपासना करो (**उत पुत्रकाः अर्चन्तु**) छोटे बच्चे भी उपासना करें । (**धृष्णु पुरं न अर्चत**) वह अभेद्य किला है, ऐसा मानकर उपासना करो ॥ ५ ॥ (ऋ. ८।६९।८)

अव॑ स्वरा॒ति॒ गर्ग॑रो गो॒धा परि॑ सनिष्वणत् । पिङ्गा॒ परि॑ चनिष्कद॒दिन्द्रा॑य॒ ब्रह्मो॒द्यत॑म् ॥ ६ ॥
आ यत्पत॑न्त्ये॒न्य॑: सु॒दुघा॒ अन॑पस्फुरः । अ॒प॒स्फुरं॑ गृभायत॒ सोम॒मिन्द्रा॑य॒ पात॑वे ॥ ७ ॥
अपा॒दिन्द्रो॒ अपा॑दु॒ग्निर्विश्वे॑ दे॒वा अ॑मत्सत ।
व॒रु॒ण॒ इ॒दि॒ह क्ष॑य॒त्तमापो॑ अ॒भ्य॑नूषत व॒त्सं सं॒शिश्व॑रीरिव ॥ ८ ॥
सु॒दे॒वो अ॑सि वरुण॒ यस्य॑ ते स॒प्त सिन्ध॑वः । अ॒नु॒क्षर॑न्ति॒ काकु॑दं॒ सूर्म्यं॑ सु॒षि॒रामि॑व ॥ ९ ॥
यो व्य॒तीँरफा॑णय॒त्सयु॑क्ताँ॒ उप॑ दा॒शुषे॑ । त॒क्को ने॒ता तदिद्वपु॑रुप॒मा यो अमु॑च्यत ॥ १० ॥
अती॑दु॒ शक्र॑ ओहत॒ इन्द्रो॒ विश्वा॒ अति॒ द्विषः॑ । भि॒नत्क॒नीन॑ ओद॒नं प॒च्यमा॑नं॒ परो॒ गि॒रा ॥ ११ ॥
अ॒र्भ॒को न कु॑मार॒कोऽधि॑ तिष्ठन्नवं॒ रथ॑म् । स प॑क्ष॒न्महि॑षं मृ॒गं पि॒त्रे मा॒त्रे वि॑भु॒क्रतु॑म् ॥ १२ ॥
आ तू सु॑शिप्र दंपते॒ रथं॑ तिष्ठा हिर॒ण्यय॑म् ।
अध॑ द्यु॒क्षं सचे॑वहि स॒हस्र॑पादमरु॒षं स्व॑स्ति॒गाम॑ने॒हस॑म् ॥ १३ ॥
तं घो॑मि॒त्था न॑मस्विन॒ उप॑ स्व॒राज॑मासते । अर्थं॑ चिदस्य सु॒धितं॒ यदे॑त॒व आव॒र्तय॑न्ति॒ द्रावने॑ ॥ १४ ॥

(**गर्गरः अव स्वराति**) वीणा बज रही है, (**गोधा परि सनिष्वणत्**) तंबुरेने स्वर मिलाया है, (**पिंगा परि चनिष्कदत्**) मधुर स्वरवालेने आलाप निकाले हैं (**इन्द्राय ब्रह्म उद्यतम्**) इन्द्रके लिये स्तोत्र गाये जा रहे हैं ॥ ६ ॥ (ऋ. ८।६९।९)

(**यत् पन्यः सुदुघाः अनपस्फुरः**) जब रंगोंवाली, उत्तम दूध देनेवाली, न हिलनेवाली, (**अनपस्फुरं आ पतन्ति**) चञ्चल न होनेवाली गौवें आकर दूध मिलाती हैं (**इन्द्राय पातवे सोमं गृभायत**) इन्द्रके पीनेके लिये सोमका ग्रहण करो ॥ ७ ॥ (ऋ. ८।६९।१०)

(**इन्द्रः अपात्**) इन्द्रने पीया है, (**अग्नि अपात्**) अग्निने पीया है, (**विश्वे देवाः अमत्सत**) सब देवोंको आनन्द हुआ है। (**वरुणः इत् इह क्षयत्**) वरुण तो यहीं रहा है। (**आपः तं अभ्यनूषत**) जल शब्द करते हुए उनके समीप पहुंचा है (**संशिश्वरीः वत्सं इव**) गौवें जैसी बछडेके पास जाती हैं ॥ ८ ॥ (ऋ. ८।६९।११)

हे (**वरुण ! सुदेवः असि**) वरुण ! तू उत्तम देव है। (**सप्त सिन्धवः यस्य ते काकुदं अनुक्षरन्ति**) सात नदियां जिसकी तालुकी ओर चलती हैं (**सूर्म्यं सुषिरां इव**) जैसी वह खुले मुंहवाली द्रोणी है ॥ ९ ॥ (ऋ. ८।६९।१२)

(**यः दाशुषे उप**) जो दाताके पास (**सुयुक्तान् व्यतीन् अफाणयत्**) उत्तम जुते तेज दौडनेवाले घोडोंको चलाता है, (**तक्कः नेता**) वह तेज नेता है, (**तत् इत् वपुः उपमा**) वह एक उपमा देने योग्य वीरका शरीर है, (**यः अमुच्यत**) जो दुष्टोंके द्वारा छोडा जाता है। दुष्ट उसको पकड नहीं सकते ॥ १० ॥ (ऋ. ८।६९।१३)

(**शक्रः इन्द्रः**) सामर्थ्यवान् इन्द्र (**विश्वाः द्विषः**) सब शत्रुओंको (**अति इत् अति ओहते**) दूर करता है। (**कनीनः**) छोटे होते हुए उस इन्द्रने (**गिरा पच्यमानं ओदनं परो भिनत्**) शब्दसे पकडनेवाला ओदन–मेघ–को तोड दिया ॥ ११ ॥ (ऋ. ८।६९।१४)

(**अर्भकः कुमारकः न नवं रथं अधि तिष्ठन्**) बहुत छोटा बालक होनेपर भी वह नये रथपर चढा। (**सः**) उसने (**पित्रे मात्रे**) अपने पिता और माताके लिये (**विभुक्रतुं महिषं मृगं**) बडी शक्तिवाले भैंस जैसे मृगको (**पक्षन्**) पकाया [काले मेघको तैयार किया] ॥ १२ ॥ (ऋ. ८।६९।१५)

हे (**सुशिप्र**) उत्तम हनुवाले इन्द्र ! हे (**दम्पते**) दमनशक्तिके स्वामिन् ! (**हिरण्ययं रथं आ तिष्ठ**) सुवर्णमय रथपर चढ, (**अध**) और पश्चात् हम (**द्यु-क्षं सहस्रपादं अरुषं**) द्युलोकमें रहनेवाले सहस्रों किरणोंवाले लाल (**स्वस्तिगां अनेहसं सचेवहि**) कल्याणमय गतिवाले निष्पाप [सूर्य] से मिलेंगे ॥ १३ ॥ (ऋ. ८।६९।१६)

(**तं स्वराजं घ ईं इत्था उप आसते**) उस स्वराट्की ऐसी उपासना करते हैं (**नमस्विने**) और उसको नमस्कार

अनु प्रत्नस्यौकसः प्रियमेधास एषाम् । पूर्वामनु प्रयतिं वृक्तबर्हिषो हितप्रयस आशत ॥१५॥
यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः । विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठो यो वृत्रहा गृणे ॥१६॥

इन्द्रं तं शुम्भ पुरुहन्मन्नवसे यस्य द्विता विधर्तरि ।
हस्ताय वज्रः प्रति धायि दर्शतो महो दिवे न सूर्यः ॥ १७ ॥
नकिष्टं कर्मणा नशद्यश्चकार सदावृधम् ।
इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृम्वसमधृष्टं धृष्णवोजसम् ॥ १८ ॥
अषाळ्हमुग्रं पृतनासु सासहिं यस्मिन्महीरुरुज्रयः ।
सं धेनवो जायमाने अनोनवुर्द्यावः क्षामो अनोनवुः ॥ १९ ॥
यद् द्यावः इन्द्र ते शतं शतं भूमीरुत स्युः ।
न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी ॥ २० ॥
आ पप्राथ महिना वृष्ण्या वृषन्विश्वा शविष्ठ शवसा ।
अस्माँ अव मघवन्गोमति व्रजे वज्रिं चित्राभिरूतिभिः ॥ २१ ॥ (५.३)

करते हैं जिससे (**अस्य सुधितं अर्थं चित् एतवे**) इसके शुभ अर्थको प्राप्त करनेके लिये और (**दावने आवर्तयन्ति**) दान देनेके लिये उसको इधर प्रेरित करते हैं ॥ १४ ॥ (ऋ. ८।६९।१७)

(**वृक्त बर्हिषः**) जिन्होंने आसन फैलाये हैं, (**हित-प्रयसः**) हविको जिन्होंने स्थापन किया है अथवा हितकर प्रयत्न जिनके हैं, ऐसे (**प्रियमेधासः**) प्रियमेधोंने (**एषां प्रत्नस्य ओकसः अनु**) इनके पुराने घरके अनुकूल (**पूर्वां प्रयतिं अनु आशत**) पूर्व पद्धतिको प्राप्त किया ॥ १५ ॥ (ऋ. ८।६९।१८)

(**यः चर्षणीनां राजा**) जो मनुष्योंका राजा है, (**अधिगुः**) जो आगे बढता है, (**रथेभिः याता**) रथोंसे जो जाता है, (**विश्वासां पृतनानां तरुता**) सारी शत्रु-सेनाको जीतनेवाला (**यः वृत्रहा ज्येष्ठः गृणे**) जो वृत्रको मारनेवाला श्रेष्ठ है, उसकी स्तुति की जाती है ॥ १६ ॥ (ऋ. ८।७०।१)

हे पुरुहन्मन् ! (**अवसे तं इन्द्रं शुम्भ**) अपनी सुरक्षाके लिये इन्द्रकी स्तुति कर। (**यस्य विधर्तरि द्विता**) जिसकी धारण शक्तिमें दोनों प्रकारकी व्यवस्था है, (**दिवे महः सूर्यः न**) जैसा द्युलोकमें सूर्य है उस तरह (**दर्शतः वज्रः**) दर्शनीय वज्र (**हस्ताय प्रति धायि**) जिसने हाथमें लिया है ॥ १७ ॥ (ऋ. ८।७०।२)

(**यः चकार**) जिसने यह किया है, उस (**सदावृधं**) सदा वृद्धि करनेवाले (**विश्वगूर्तं**) सबसे प्रशंसित, (**ऋम्व-पसं**) बडा कार्य करनेवाले, (**धृष्णु-ओजसं**) विजयी पराक्रम करनेवाले, (**अ-धृष्टं**) निडर, (**तं इन्द्रं**) उस इन्द्रका (**यज्ञैः कर्मणा**) यज्ञोंसे अथवा कर्मसे (**न किः नशत्**) कोई भी नाश नहीं कर सकता ॥ १८ ॥ (ऋ. ८।७०।३)

(**अ-षाळ्हं उग्रं**) अजेय उग्र (**पृतनासु सासहिं**) युद्धोंमें जीतनेवाला (**यस्मिन् महीः उरुज्रयः**) जिसमें बडी बडी स्तुतियां की जाती हैं (**जायमाने**) जिसके जन्मके समय (**धेनवः सं अनोनवुः**) अनेकोंकी वाणियोंने स्तुतियां की है, (**द्यावः क्षामः अनोनवुः**) द्यौ और पृथिवीने जिसकी स्तुति की ॥ १९ ॥ (ऋ.८।७०।४)

२०–२१देखो अथर्व २०।८१।१-२ (ऋ. ८।७०।५-६)

इस सूक्तमें नीचे लिखे वर्णन विशेष मननीय हैं—

१ **अर्चत, प्रार्चत, धृष्णु पुरं न अर्चत**— उपासना करो, स्तुति करो, विजयी अभेद्य किलेके समान उस विजयी इन्द्रकी स्तुति करो ।

२ **पुत्रकाः अर्चन्तु**— छोटे बालक भी अर्चना करें ।

गायनमें स्वरके साथ

३ **गर्गरः अवस्वराति**— वीणा स्वर दे रही है, गानेवालेके स्वरके साथ वीणाका स्वर मिलता रहे।

४ **गोधा परि सनिष्वसत्**— तंबूरा चारों ओरसे स्वर देता रहे। चर्मवाद्य स्वरसे स्वर मिलावे।

५ **पिंगा परि चनिष्कदत्**— मधुर स्वरवाला आलाप निकाले और स्वरमें स्वर मिलावे।

६ **इन्द्राय ब्रह्म उद्यतं**— इन्द्रके लिये स्तोत्र गाये जांय। इस समय वीणा, तंबूरा, मृदंग (चर्मवाद्य) आलाप देनेवाला इनके साथ हो। स्तोत्र ऐसे गाये जांय।

७ गौओंका दूध सोमरसके साथ मिलाया जाय और पश्चात् वह पिया जाय। '**इन्द्राय पातवे सोमं सुदुघाः आपतन्ति**'– इन्द्रके पीनेके लिये सोमरसमें गौवें आती हैं, और दूध देती हैं। सोमरसमें गौओंका दूध मिलाया जाता है।

८ इन्द्र, अग्नि, सब देव, वरुण इन सबने सोमरस पिया है। (मं. ८)

९ **वरुणः सुदेवः**— वरुण उत्तम देव है। '**सप्तसिन्धवः अस्य काकुदं अनुक्षरन्ति**'– सात नदियां जिसके तालुतक पहुंचती हैं। सात नदियोंका जल सोमरसमें मिलाया जाता है। वह रस पिया जाता है, उसके साथ नदीजल भी तालुको स्पर्श करता है।

१० **सुयुक्तान् व्यतीन् अफाणयत्, तक्वः नेता, वपुः उपमा, अमुच्यत**— उत्तम शिक्षित घोडोंको दौडाता हुआ इन्द्र आता है, वह बलवान् नेता है, उसका शरीर सुंदर है, सब दुष्ट शत्रु उसको छोड देते हैं, कोई शत्रु उसके सामने नहीं ठहरता।

११ **शक्रः इन्द्रः विश्वाः द्विषः अति ओहते**– सामर्थ्यवान् इन्द्र सब शत्रुओंको दूर करता है।

१२ **कनीनः गिरा पच्यमानं ओदनं परा भिनत्**— इन्द्र छोटा होता हुआ भी शत्रुके पकाये जानेवाले अन्नको पूर्ण रीतिसे विनष्ट करता है। पकाया अन्न लूटता है। या मेघको विनष्ट करता है। **पच्यमानं ओदनं**- पकनेवाला अन्न। मेघ जिससे वृष्टि होनेवाली हो।

१३ **अर्भकः नवं रथं अधि तिष्ठन्**— बालक होते हुए भी वह रथपर उत्तम रीतिसे चढकर बैठता है। बचपनसे ही वह शूर है।

१४ **सुशिप्र**— उत्तम हनुवाला, उत्तम साफेवाला इन्द्र।

१५ **हिरण्ययं रथं आ तिष्ठ**— सुवर्णके रथपर बैठ।

१६ **द्युक्षं सहस्रपादं अरुषं स्वस्तिगां अनेहसं सचेवहि**— द्युलोकमें रहनेवाले, हजारों किरणोंवाले, लाल, कल्याण देनेवाली जिसकी गति है, निष्पाप सूर्यको प्राप्त करेंगे।

१७ **स्वराजं उप आसते**— स्वयं तेजस्वीकी उपासना करते हैं। स्वराट्की उपासना करते हैं।

१८ **अस्य सुधितं अर्थं दावने आवर्तयन्ति**— इसके उत्तम रीतिसे प्राप्त किये धनका दान करनेके लिये उसको प्रेरित करते हैं। धन उत्तम रीतिसे प्राप्त किया जाय और उसका विनियोग उत्तम दानमें हो।

१९ **वृक्तबर्हिषः हितप्रयसः प्रियमेधासः प्रत्नस्य ओकस अनु पूर्वां प्रसितिं अनु आशत**— आसन फैलाकर यज्ञकी तैयारी करनेवाले प्रियमेधोंने- जिनको यज्ञ करना प्रिय है उन्होंने पुराने घरकी पुरानी रीतिके अनुसार कार्य करना प्रारंभ किया। पूर्व पद्धतिके अनुसार यज्ञ करना शुरू किया।

२० **यः चर्षणीनां राजा, अधिक्षितः, रथेभिः याता, विश्वासां पृतनानां तरुता ज्येष्ठः वृत्रहा गृणे**— लोगोंका राजा, प्रगति करनेवाला, रथमें बैठकर जानेवाला, सब शत्रुओंका पराभव करनेवाला, सबसे श्रेष्ठ और वृत्रको मारनेवाला इन्द्र है। उसकी स्तुति हो रही है।

२१ **अवसे तं इन्द्रं शुम्भ**— अपनी सुरक्षाके लिये उस इन्द्रकी स्तुति कर।

२२ **यस्य विधर्तरि द्विता**— जिसके धारण शक्तिमें दो गुण हैं। शत्रुको दूर करना और अपना संरक्षण करना।

२३ **दर्शतः वज्रः हस्ताय प्रति धायि**— सुन्दर वज्र वह हाथमें लेता है।

२४ **सदावृधं, विश्वगूर्तं, ऋभ्वपसं, धृष्णु-ओजसं अधृष्टं तं इन्द्रं कर्मणा न किः नशत्**— सदा बढनेवाले, सर्वदा स्तुत्य, बडे कार्य करनेवाले, शत्रुका पराभव करनेका सामर्थ्य जिसमें है, नित्य विजयी उस इन्द्रका नाश कोई भी अपने प्रयत्नसे कर नहीं सकता।

२५ **अषाळहं उग्रं पृतनासु सासहिं महीं उरुज्रयः**— अजेय उग्रवीर, युद्धोंमें शत्रुका पराभव करनेवाले इन्द्रकी बडी स्तुतियां हो रही हैं।

❀

[सूक्त ९३]

(ऋषिः — १-३ प्रगाथः, ४-८ देवजामयः । देवता — इन्द्रः ।)

उक्था मन्दन्तु स्तोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः । अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ १ ॥
पदा पणीँरराधसो नि बाधस्व महाँ असि । नहि त्वा कश्चन प्रति ॥ २ ॥
त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र त्वमसुतानाम् । त्वं राजा जनानाम् ॥ ३ ॥
ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते । भेजानासः सुवीर्यम् ॥ ४ ॥
त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः । त्वं वृषन्वृषेदसि ॥ ५ ॥
त्वमिन्द्रासि वृत्रहा व्यन्तरिक्षमतिरः । उद् द्यामस्तभ्ना ओजसा ॥ ६ ॥
त्वमिन्द्र सजोषसमर्कं बिभर्षि बाह्वोः । वज्रं शिशान ओजसा ॥ ७ ॥
त्वमिन्द्राभिभूरसि विश्वा जातान्योजसा । स विश्वा भुव आभवः ॥ ८ ॥ (६०१)

(सूक्त ९३)

(स्तोमाः त्वा उत् मदन्तु) हमारे स्तोत्र तुम्हें आनंदित करें। हे (अद्रि-वः) वज्रधारी इन्द्र! (राधः कृणुष्व) दान देनेका विचार कर। (ब्रह्मद्विषः अव जहि) ज्ञानका द्वेष करनेवालोंको मार हटा ॥ १ ॥ (८।५३।१)

(अराधसः पणीन् पदा नि बाधस्व) दान न देनेवाले पणियोंको पाँवसे कुचल, (महान् असि) तू बडा है। (कः चन त्वा प्रति नहि) कोई तेरे बराबर नहीं है ॥ २ ॥ (ऋ. ८।५३।२)

हे इन्द्र! (त्वं सुतानां ईशिषे) तू सोमरसोंका स्वामी है और (त्वं असुतानां) तू रस न निकाले सोमका भी स्वामी है, (त्वं जनानां राजा) तू प्रजाजनोंका राजा है ॥ ३ ॥ (ऋ. ८।५३।३)

(ईङ्खयन्ती अपस्युवः) जानेवाली तथा प्रयत्नशील [जलधाराएं] (इन्द्रं उपासते) इन्द्रकी उपासना करती हैं। (सुवीर्यं भेजानासः) उसके उत्तम पराक्रममें भाग लेती हैं ॥ ४ ॥ (ऋ. १०।१५३।१)

हे इन्द्र! (त्वं बलात् सहसः ओजसः अधि जातः) तू बल, साहस और सामर्थ्यके लिये उत्पन्न हुआ है। हे (वृषन्) शक्तिमान इन्द्र! (त्वं वृषा इत् असि) तू निःसंदेह बलवान् है ॥ ५ ॥ (ऋ. १०।१५३।२)

हे इन्द्र! (त्वं वृत्रहा असि) तू वृत्रको मारनेवाला है। (अन्तरिक्षं वि अतिरः) तूने अन्तरिक्षको फैलाया है। (ओजसा द्यां उत् अस्तभ्नाः) सामर्थ्यसे द्युलोकको स्थिर किया है ॥ ६ ॥ (ऋ. १०।१५३।३)

हे इन्द्र! (त्वं ओजसा वज्रं शिशान) बलसे वज्रको तीक्ष्ण करता है (सजोषसं अर्कं बाह्वोः बिभर्षि) और अपने प्रिय तेजस्वी वज्रको बाहुओंसे धारण करता है ॥ ७ ॥ (ऋ. १०।१५३।४)

हे इन्द्र! (त्वं विश्वा जातानि ओजसा अभिभूः असि) तू सब जन्मधारि प्राणियोंका अपनी शक्तिसे पराभव करनेवाला है, (सः विश्वा भुवः आभवः) वह तू सब स्थानोंको घेर कर रहा है ॥ ८ ॥ (ऋ. १०।१५३।५)

इस सूक्तमें नीचे दिये वर्णन मनन करने योग्य हैं—

१ हे अद्रिवः! राधः कृणुष्व— हे वज्रधारी! दान देनेका विचार कर।

२ ब्रह्मद्विषः अव जहि— ज्ञानसे द्वेष करनेवालोंको मार।

३ अराधसः पणीन् पदा नि बाधस्व— दान न देनेवाले कंजूस पणियोंको पाँवसे कुचल डाल।

४ महान् असि। कः चन त्वा प्रति नहि— तू बडा है। कोई भी तेरे समान नहीं है।

५ त्वं जनानां राजा— तू लोगोंका स्वामी है।

६ ईङ्खयन्तीः अपस्युवः इन्द्रं उपासते, सुवीर्यं भेजानासः— गतिमान प्रयत्नशील लोग इन्द्रकी उपासना करते हैं और इससे वे उत्तम शौर्य प्राप्त करते हैं।